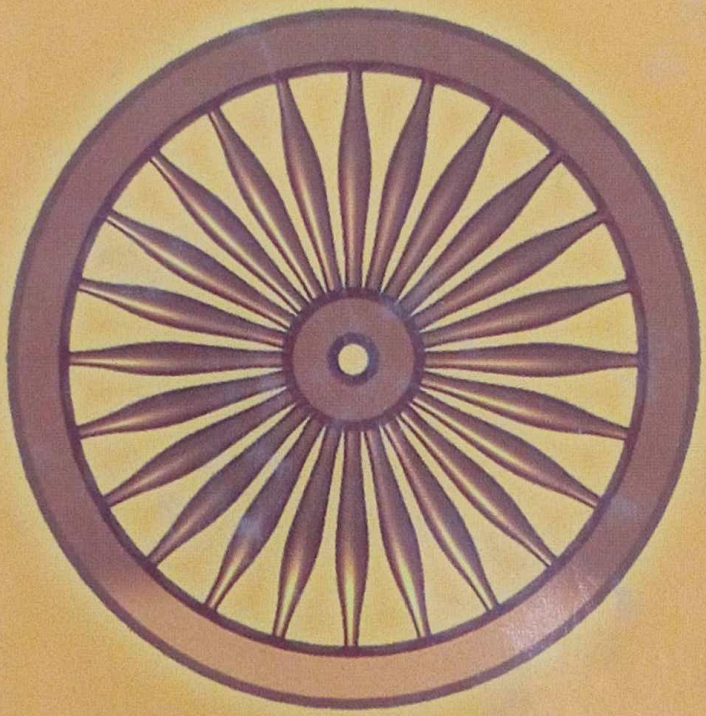
पाइअ-सद्द-कोसो

(प्राकृत डिक्शनरी- प्राकृत-रोमन-संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अंग्रेजी सहित)





पालि-अध्ययन-केन्द्रम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
Accredited by 'NAAC' with 'A' Grade
(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)
लखनऊ-परिसरः

पाइअ-सद्द-कोसो

(प्राकृत डिक्शनरी)

(संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी-सहित:)

संरक्षक:

प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्री, कुलपति:

कोशकर्त्री

डॉ0 पत्रिका जैन



पालि-अध्ययन-केन्द्रम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालय:)

NAAC द्वारा 'ए' श्रेण्यां प्रत्यायित:

(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)

लखनऊ-परिसर:, विशालखण्ड:-4, गोमतीनगरम्, लखनऊ (उ.प्र.)

पाइअ-सद्द-कोसो

(प्राकृत डिक्शनरी)

(संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी सहित:)

कोषकर्त्री - डॉ. पत्रिका जैन

प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक : प्रो. विजयकुमार जैन

© प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)

लखनऊ परिसर, विशाल खण्ड-4, गोमती नगर,
लखनऊ-226010 (उ. प्र.)
दूरभाष : 0522-2393748, फैक्स : 0522-2302993
E-mail : rkslucknow@yahoo.com

प्राप्ति स्थान :

1. प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
लखनऊ परिसर, विशाल खण्ड-4, गोमती नगर,
लखनऊ-226010 (उ. प्र.)
दूरभाष : 0522-2393748, फैक्स : 0522-2302993
E-mail : rkslucknow@yahoo.com
2. दिल्ली मुख्यालय, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान(मानित विश्वविद्यालय)
56-57, इंस्टीट्यूशन एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

ISBN : 978-81-937946-6-1

मूल्य : रु. 370/-

प्रथम संस्करण : 2018

मुद्रक : गणपति प्रिंटर एण्ड पैकेजर्स, कानपुर रोड, लखनऊ

PĀIA-SADDA-KOSO

(Prakrit Dictionary)

(Alongwith Sanskrit -Hindi & English Terms)

Patron

Prof. Parameshwara Narayana Shastry
Vice-Chancellor

Kośakartrī

Dr. Patrika Jain



Pali Study Centre
Rashtriya Sanskrit Sansthan, Deemed University
Accredited by NAAC with 'A' Grade
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
Lucknow Campus, Gomti Nagar, Lucknow- 226010 (U.P.)

PĀIA-SADDA-KOSO

(Prakrit Dictionary)

(Alongwith Sanskrit -Hindi & English Terms)

Kośakartrī Dr. Patrika Jain

Chief Editor & Publisher : Prof. Vijay Kumar Jain
© Principal
Rashtriya Sanskrit Sansthan,
Deemed University
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
Lucknow Campus,Gomti Nagar, Lucknow- 226010 (U.P.)
E-mail : rsksLucknow@yahoo.com

ISBN : 978-81-937946-6-1

Selas Counters :

1. Principal
Rashtriya Sanskrit Sansthan,Deemed University
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
Lucknow Campus,Gomti Nagar, Lucknow- 226010 (U.P.)
E-mail : rsksLucknow@yahoo.com
2. (HQ), The Sales Incharge
Rashtriya Sanskrit Sansthan, Deemed University
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi-110058
Phone:- (O) 28523949 (Fax(28521948

Price : Rs. 370/

First Edition : 2018

Printer : Ganpati Printer & Packagers, Kanpur Road, Lucknow

प्रो. पी.एन्. शास्त्री
कुलपति
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
('ए' ग्रेड के साथ राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं
प्रत्यायन परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त)

Prof. P.N. Shastry
Vice-Chancellor
RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN
Deemed to be University
(Under MHRD, Govt. of India)
(Accredited by NAAC with 'A' Grade)

पुरोवाक्

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) संस्कृत के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ पालि एवं प्राकृत भाषाओं के विकास के लिए भी कृतसंकल्प है। ये दोनों मध्यकालीन आर्यभाषाएँ हैं। पालि में भगवान् बुद्ध के प्रामाणिक वचन सुरक्षित हैं। भारतवर्ष में जिस प्रकार संस्कृत को धार्मिक भाषा के रूप में सम्मान प्राप्त है, ठीक वैसा ही सम्मान पालि को भी श्रीलङ्का, म्याँमार, थाईलैण्ड, कम्बोडिया, लाओस आदि देशों में प्राप्त है। यह पालि भाषा केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, अपितु ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी से ईस्वी पाँचवीं शताब्दी तक के भारतीय राजनीति, अर्थनीति, सामाजिक व्यवस्था, भौगोलिक स्थिति आदि विषयों को जानने के लिए भी इस भाषा में निबद्ध वाङ्मय सर्वोत्तम आंकड़े उपलब्ध करता है। इसलिए यह भाषा शोध की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वहीं प्राकृत भाषा में जैन धर्म का वाङ्मय निबद्ध है तथा संस्कृत नाटकों के साथ मध्यकालीन विपुल ग्रन्थ-भण्डार भी है। भारत के आधुनिक भाषाओं के विकास-क्रम को समझने तथा भारतीय संस्कृति की श्रमण-परम्परा को सम्यग् रूप से जानने का भी यह एक प्रामाणिक एवं प्राचीन स्रोत है।

सन् 2009 से भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा प्राप्त आर्थिक अनुदान से राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली ने पालि-प्राकृत भाषा एवं साहित्य के संरक्षण-संवर्धन के लिए दिल्ली, जयपुर और लखनऊ में पालि/प्राकृत अध्ययन केन्द्रों की स्थापना की है। लखनऊ-परिसरस्थ पालि-अध्ययन केन्द्र में पालि-तिपिटक (त्रिपिटक) की संस्कृतच्छाया, हिन्दी-अनुवाद तथा प्राकृत-ऑनलाइन-डिक्शनरी पर कार्य चल रहा है। अब तक त्रिपिटक के 10 ग्रन्थों का 7 भागों में प्रकाशन हो चुका है, जिसे पालि, प्राकृत एवं संस्कृतके मूर्धन्य विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से सराहना की है। पालि मूल का संस्कृतच्छाया और हिन्दी-अनुवाद सहित उपलब्धता से जहाँ अर्थबोध में सुविधा होती है, वहीं संस्कृतज्ञ एवं हिन्दी भाषी विद्वानों के लिए भी यह सुग्राह्य हो सकेगा।

प्रस्तुत प्रकाशन के सात भागों में से संयुत्तनिकायपालि (सळायतनवग्गो), संयुत्तनिकायपालि (महावग्गो), खुद्दकनिकायपालि का अपदानपालि-I (थेरापदानपालि-1-20 वग्गो), खुद्दकनिकायपालि का बुद्धवंसपालि. ये चार पालि-त्रिपिटकस्थ ग्रन्थ हैं। 'थूपवंस' पालि-भाषा में निबद्ध सुप्रसिद्ध वंससाहित्य का ग्रन्थ है। 'पालि-सल्लाप-सहस्सकं' संस्कृत एवं हिन्दी माध्यम से पालि बोल-चाल सिखाने वाली एक हजार सरल वाक्यों से समन्वित पुस्तिका है। मेरी इच्छा थी कि संस्कृत की भाँति पालि एवं प्राकृत भाषा का भी जन-जन में प्रचार-प्रसार हो। इस भाव को मैं पालि-प्राकृत भाषा के विद्वानों के समक्ष यदा कदा प्रकट करता रहा हूँ। आज इसको परिणत होता देखकर हर्षानुभूति हो रही है। 'पाइअ-सद्द-कोसो', यह प्राकृत शब्दों का रोमनीकरण, संस्कृतच्छाया, हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद से समन्वित प्राकृत-ऑनलाइन-डिक्शनरी के ऑनलाइन संस्करण का प्रथम भाग है। इसमें मुख्यरूप से संस्कृतनाटकों में प्रयुक्त प्राकृत शब्दों का समावेश किया गया है, जो पहले प्राप्त प्राकृत-कोशों में समाविष्ट नहीं थे।

मैं प्रकृत ग्रन्थों के अध्येता/अध्येत्री लेखक/लेखिकाओं को साधुवाद देते हुए सभी सहयोगियों एवं सम्पादकों का अभिनन्दन करता हूँ।

पी.एन. शास्त्री

(प्रो. पी. एन. शास्त्री)
कुलपति

56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi-110058 Ph.: (O) 28523949 (Fax) 28521948
EPABX : 28524993, 28521994, 28524995 E.Mail : rskspvc@yahoo.com

प्रकाशकीय

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के तत्कालीन यशस्वी कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय में संयुक्त सचिव रहीं डॉ. अनीता भटनागर के संयुक्त प्रयास से संस्थान में पालि/प्राकृत विकास के लिए विभिन्न योजनाएँ चलीं, पुनः वर्तमान कुलपति प्रो. पी. एन. शास्त्री जी एवं मंत्रालय के अधिकारियों के प्रति संस्कृत एवं श्रमण विद्या के प्रेमियों को कृतज्ञ होना चाहिए कि संस्कृत संस्थान में पालि/प्राकृत की परियोजनाएं चल रही हैं।

प्राकृत विद्या का अध्ययन/अध्यापन आज देश विदेश में हो रहा है। विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं में भी संगोष्ठियों एवं प्रकाशन के कार्य हो रहे हैं। लेकिन सामान्य जन अभी तक प्राकृत के महत्त्व से अवगत नहीं है। स्नातकोत्तर कक्षाओं में संस्कृत/हिन्दी के साथ पहले अनिवार्य रूप से पालि/प्राकृत पढ़ाई जाती थी, अब कुछ ही विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। प्राकृत भाषा ने सम्पूर्ण भारत को अपना क्षेत्र बनाया तथा विकास की धारा में आधुनिक भाषाओं में समा गई। आज प्राकृत भाषा का सम्यक् मूल्यांकन नहीं हो रहा है, उसे मात्र जैन ग्रन्थों की भाषा माना गया, तथा उसका जो सम्मान होना चाहिए था नहीं हो रहा है। आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में भाषा- वैज्ञानिक इसके योगदान को स्वीकारते हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृति को समझने के लिए भी प्राकृत साहित्य को जानना आवश्यक है।

वर्तमान में श्रवणबेलगोला स्थित प्राकृत शोध संस्थान भी प्राकृत विद्या का केन्द्र बनता जा रहा है। परमपूज्य भट्टारक स्वामी चारुकीर्ति जी महाराज इस संस्थान का चतुर्दिक विकास चाह रहे हैं। परमपूज्य आचार्य श्री १०८ विद्यानन्द जी महाराज तो विगत कई दशकों से प्राकृत विद्या को प्रोत्साहित करते रहे, आपकी कृपा का परिणाम है कि श्री लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली में स्वतंत्र प्राकृत विभाग की स्थापना हुई। श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी भी अपभ्रंश एवं प्राकृत के पत्राचार के साथ विभिन्न पुरस्कारों के माध्यम से प्राकृत विद्या को प्रोत्साहन दे रहे हैं। इसके लिए प्रो. कमलचन्द्र जी सोगानी का प्रयास स्तुत्य है। श्री बी. एल. इन्स्टीट्यूट आफ इन्डालाजी ने समर कोर्सों के माध्यम से २५ वर्षों से प्राकृत के पाठ्यक्रम चलाकर इस विद्या को जीवित रखने में सक्रिय योगदान दिया है। प्रो. प्रेमसुमन जैन के कुशल नेतृत्व में उदयपुर वि.वि. का प्राकृत विभाग बहुत फला फूला है। प्रो. जैन ने आधुनिक पद्धति से प्राकृत की पुस्तकें भी लिखकर इस विद्या को बहुत बढ़ाया है। प्राकृत शोध संस्थान वैशाली जो कुछ वर्षों से सुप्त हो गया था, प्रो. ऋषभ चन्द्र जैन के निदेशक पद पर विराजमान होते ही सक्रिय हो गया है। वैशाली में भगवान महावीर स्वामी का भव्य जिनमंदिर भी तैयार हो गया है। अहमदाबाद, जयपुर, वाराणसी, चेन्नई, मैसूर, लाडनूं आदि के विश्वविद्यालयों में भी अध्ययन/अध्यापन की व्यवस्थाएं हैं। वाराणसी में श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम प्रारम्भ से ही छात्रों को शोधाकार्य के लिए मानक रहा है। प्रो. दलसुख मालवाणिया, प्रो. मोहनलाल मेहता, डॉ. सागरमल जैन ने इसमें अपना योगदान दिया है।

एल.डी. इन्स्टीट्यूट आफ इण्डालाजी, अहमदाबाद प्राकृत की पाण्डुलिपियों के लिए प्रसिद्ध है। प्रो. जे. बी. शाह इस संस्थान के युवा निदेशक हैं। अहमदाबाद से प्रो. बेचरदास जी, मुनि पुण्य विजय जी, मुनि जिनविजय जी, पं. सुखलाल संघवी, प्रो. आर. के. चन्द्रा, प्रो. भयाणी जी जैसे आचार्यों के योगदान का परिणाम है कि प्राकृत पुनः अपनी धारा में आ सकी। वर्तमान में डॉ. दीनानाथ शर्मा जी भी अच्छा काम कर रहे है।

पूना में भण्डारकर ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट में प्राकृत कोश का कार्य चल रहा है। लखनऊ के पालि अध्ययन केन्द्र में प्राकृत आन लाइन डिक्शनरी की यह फलश्रुति है। जयपुर परिसर में विभिन्न प्राकृत ग्रन्थों की संस्कृतच्छाया का कार्य चल रहा है। विद्वानों के बीच सदैव यह मीमांसा का प्रश्न रहा है कि संस्कृतच्छाया की उपयोगिता क्या है? जहाँ एक ओर कुछ विद्वान इस आधार पर संस्कृतच्छाया पसन्द नहीं करते कि संस्कृतच्छाया उपलब्ध हो जाने पर विद्वज्जन प्राकृत नहीं पढ़ते, वहीं सुविदित तथ्य है कि जिन ग्रन्थों की संस्कृतच्छाया हो जाती है उनका अर्थ बोध करने में सुविधा होती है तथा पठन-पाठन, सन्दर्भ लेखन में प्रचलित हो जाते हैं अन्यथा सैकड़ों महत्वपूर्ण प्राकृत के ग्रन्थ भरे पड़े हैं जिनका कोई नाम नहीं जानता। आज आवश्यकता है कि प्राकृत के ग्रन्थों को विभिन्न भाषाओं में अनूदित कराकर उनको प्रचारित व प्रसारित किया जाय।

प्राकृत के कई शब्द कोश उपलब्ध हैं लेकिन काव्यों, नाटकों के ग्रन्थों में आगत प्राकृत शब्दों का समुचित समावेश उनमें नहीं हो पाया था, इस शब्द कोश को प्रारम्भ करते समय उक्त कमी की पूर्ति करने के साथ-साथ, आधुनिक तकनीकी कम्प्यूटर के माध्यम से आनलाइन उपलब्ध कराना भी इसका उद्देश्य था, जिसके प्रथम चरण में तैयार शब्दों का प्रकाशन किया जा रहा है। आगे संभव होगा तो योजना को आगे बढ़ाया जाएगा।

डॉ. पत्रिका जैन ने मनोयोगपूर्वक इस कार्य को सम्पन्न किया है। इस कार्य को अन्तिम रूप देने में प्रो. कमल कुमार जैन, प्रो. दीनानाथ शर्मा तथा प्रो. जगतराम भट्टाचार्य जी ने कार्यशाला के माध्यम से समुचित संशोधन तथा सक्रिय सहयोग प्रदान किया है। संस्थान सभी विद्वत्जनों के प्रति कृतज्ञ है। प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्रो. जी. बी. शाह, प्रो. एस. पी. शर्मा, प्रो. धरमचन्द्रजी जोधपुर, प्रो. एस. पी. नारंग ने भी इस योजना को आगे बढ़ाने में अपने अमूल्य सुझाव दिए हैं।

हमारे सम्माननीय कुलपति जी पालि प्राकृत भाषाओं को संस्कृत के समान समुन्नत देखना चाहते हैं मंत्रालय भी सभी भाषाओं का विकास चाहती है। यही कारण है कि राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के पालि/प्राकृत केन्द्र चल रहे हैं। पालि/प्राकृत परियोजना में संस्थान मुख्यालय का सक्रिय सहयोग रहता है। इसमें प्रो. श्रीयांस सिंघई, डॉ. धर्मेन्द्र जैन, डॉ. रजनीश शुक्ला, डॉ. मुरलीकृष्ण कानाम उल्लेखनीय है। वर्तमान में पेरियोजना देख रही डॉ. मालाचन्द्रा जी तो इस परियोजना के चतुर्मुखी विकास में पूरा सहयोग दे रही हैं।

प्राकृत भाषा के अध्ययन में यह कार्य भी सहयोगी हो सका तो सम्पादिका का परिश्रम सफल हो सकेगा।

- विजय कुमार जैन

कृतज्ञता ज्ञापन

भारत सरकार ने जो प्राकृतादिक भाषाओं के संरक्षण हेतु ध्यान आकृष्ट किया वह महत्वपूर्ण है। संस्थान के पूर्वकुलपति आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी की इस संकल्पना को मूर्तरूप देने में प्रयत्न व हर रूप में सहयोग अकथ्य है। वर्तमान कुलपति प्रो. पी. एन. शास्त्री के प्रति हृदय से आभारी हैं। पूर्व परियोजना अधिकारी डॉ. शुक्ला मुखर्जी एवं वर्तमान प्रभारी डॉ. माला चन्द्रा का सहयोग व उत्साहवर्धन प्रशंसनीय रहा है।

लखनऊ परिसर के पूर्वप्राचार्यों प्रो. सुरेन्द्र झा, प्रो. अर्कनाथ चौधरी, प्रो. सुरेन्द्र पाठक का समाचार लेना व सहयोग वंदनीय रहा है। वर्तमान जैन-बौद्ध एवं सर्वदर्शन संकायाध्यक्ष एवं प्राचार्य प्रो. विजयकुमार जैन का समय-समय पर सतत् सशक्त निरीक्षण कार्य को गति प्रदान करता है तथा उनका बहुविध सहयोग उल्लेखनीय व प्रमुख है। वर्तमान बौद्धदर्शन विभागाध्यक्ष डा. अवधेश कुमार चौबे एवं पालि प्रभारी डा. गुरुचरण सिंह नेगी, लखनऊ का मार्गदर्शन महत्वपूर्ण है।

पाइअ-सद्द-कोसो को त्रुटिरहित बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग देने वाले डा. कमल कुमार जैन पूना, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य लाडनू, प्रो. सर्वनारायण झा, डॉ. दीनानाथ शर्मा, अहमदाबाद, प्रो. वृषभ प्रसाद जैन, प्रो. रामसागर मिश्र, लखनऊ, डॉ. व्रजभूषण ओझा, डॉ. राका जैन, श्री जगन्नाथ झा लखनऊ एवं परिसरस्थ सभी अध्यापकों को मन से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

पालि अध्ययन केंद्र के सहयोगी डॉ० मोहन मिश्र, डॉ० जयवन्त खण्डारे, डॉ० राहुल अमृतराज, डॉ० वेद व्यास पाण्डेय, डॉ० प्रदीप द्विवेदी डॉ० प्रियंका, श्री प्रिंस कुमार जैन, श्री प्रदीप शर्मा लुईटेल के प्रति हृदय से आभारी हूँ उनका हर पल सहयोग के लिए तत्पर रहना अद्वितीय है।

तकनीकी सहयोग देने वाले श्री अभिषेक मिश्र, श्री काशीनाथ द्विवेदी, श्री विकास जैन और जो भी सहयोगी रहे उनके प्रति विशेष रूप से आभारी हूँ जिसके परिणामस्वरूप यह कोश नए रूप में आ सका। कोश के संशोधन में सहयोग देने वाली मैत्री जैन एवं वैदूर्य जैन, डॉ. आनन्द जैन, पति श्री गौरव जैन व परिवार के प्रति विशेष रूप हृदय से आभारी हूँ जो मुझे हर क्षण सम्बल प्रदान करते रहे।

– डॉ० पत्रिका जैन

कोश के सन्दर्भ में

भाषाओं के साथ जुड़ने में शब्दकोश की अहम भूमिका है। प्रश्न है- शब्दकोश क्या है? शब्दकोश अर्थात् शब्दों का खजाना जहाँ सम्बद्ध भाषा के बहुत सारे शब्दों का भंडार होता है जिसमें शब्दों के साथ उनके अनेक अर्थादि की महत्वपूर्ण जानकारी रहती है।

पाणिनीय व्याकरण के अनुसार दिवादिगणीय कुश संश्लेषणे, चुरादिगणीय कुशि भाषार्थः तथा क्रियादिगणीय कुश-निष्कर्षे धातु से धञ् या अच् प्रत्यय के साथ कोश (कोष) शब्द बनता है। हलायुधकार ने कोश की परिभाषा दी है- कोषः शब्दादिसंग्रहः, यथा अमरकोषः अर्थात् शब्दों के संग्रह को कोश कहते हैं। अभिधान राजेन्द्र के अनुसार शब्द पर्याय ज्ञायक अभिधान को कोश कहते है। जिसमें विशिष्ट क्रमानुसार शब्दों का संग्रह हो तथा जिसके अध्ययन से शब्दों की प्रकृति, विभिन्न अवयवों एवं अर्थों का बोध होता हो ।

कोश-साहित्य आवश्यक क्यों है ? - वैदिक परम्परा में शब्द-अर्थ के सम्बन्ध को नित्य माना गया है वह तात्पर्य केवल इतना ही है कि प्रत्येक शब्द के साथ उसका कोई न कोई अर्थ निश्चित रूप से रहता है महाकवि कालिदास ने कहा भी है- 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ' यानी वाणी और अर्थ की तरह मिले हुए। वाणी और अर्थ का यह परस्पर संयोग शिव और पार्वती के संयोग की तरह बताने का उनका अभिप्राय यद्यपि स्तुतिपरक है, पर यह शब्दार्थ के नित्य साहचर्य को व्यक्त करने के लिए उपमा का उत्कृष्ट प्रयोग है। प्रत्येक शब्द की अपनी एक विशिष्ट शक्ति है, संकेत है और अर्थ उसी शक्ति या संकेत का ग्रहण है। सिद्धान्त मुक्तावली एवं शब्दशक्ति प्रकाशिका में संकेतग्रह के आठ साधनों में से कोश को एक प्रमुख साधन माना गया है।

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानात् कोशाप्तवाक्यान् व्यवहारतश्च।
सान्निध्यतः सिद्धपदस्य धीराः वाक्यस्य शेषात् विवृतेर्वदन्ति ।। - अमरकोश

कोश से शब्दों के यथा संभव प्रयोगार्ह सभी सम्यक् अर्थों का बोध होता है। जैसे मार को शंकर जी ने भस्मीभूत किया था तो यहाँ पर मार का अर्थ कोश की सहायता से कामदेव जान सकेंगे।

- शब्दों एवं उनके अर्थों के आधार पर किसी देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक आदि परिस्थितियों का भी ज्ञान हो सकता है।

- भाषा का ऐतिहासिक विकास भी कोश से होता है जैसे- घृणा, असुर, अनुज आदि शब्द। भाषा विज्ञान की तो एक शाखा ही कोश-विज्ञान है।

- कोश विज्ञान Lexicology- इसमें कोश रचना का प्रकार बताते हैं। शब्दों की व्युत्पत्ति क्या है? शब्दों का अर्थ कैसे निर्धारित किया जाता है? प्रत्येक शब्द का किन अर्थों में प्रयोग होता है? एकार्थक, अनेकार्थक, विषमार्थक शब्दों की व्याख्या आदि इसके अंग हैं, व्युत्पत्तिशास्त्र Etymology भी कोश विज्ञान के अन्तर्गत आता है। इसके लिए संस्कृत का निरुक्त 'शब्द' प्रचलित है। निरुक्त की वेद के षडंगों में गणना है।

- कोश लोक व्यवहार में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों का परिरक्षण, विद्वानों द्वारा शब्दों की नवीन रचना तथा व्याकरण के अनुसार शब्दों की व्युत्पत्ति हमारे सामने शब्दों के खजाने को प्रस्तुत करता है। यह

उस खजाने को लेकर उसके अर्थ एवं लिंग, प्रयोग आदि की एक मान्य व्यवस्था करता है जिससे आम आदमी उन शब्दों के प्रयोग में व्याकरण के नियमों अथवा भाषा के अनुशासन का उल्लंघन न करे। प्रयोक्ता के समीप शब्दकोश के जरिए उस भाषा की समृद्धता का (भण्डार) स्वरूप रहता है जिससे आवश्यकता पड़ने पर उसकी सहायता से शब्दों का सम्यक् अर्थ बोध कर लेता है। जैसा कि कहा भी गया है- **'शक्ति ग्रहं व्याकरणोपमान कोशाप्त वाक्यादृ व्यवहारतश्च'** अर्थात् शब्दों के अर्थ का निश्चय व्याकरण, उपमान, कोश, आप्त वाक्य तथा लोक में अर्थों के प्रयोग की परम्परा को देखकर किया जाता है।

- शब्दकोश कैसे हो सकते हैं?
- एक भाषिक- द्विभाषिक - बहुभाषिक ।

अधिकतर शब्दकोशों में शब्दों के उच्चारण के लिए भी व्यवस्था होती है जैसे- अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक लिपि I.P.A. देवनागरी में या आडियो संचिका के रूप में। कुछ शब्दकोशों में चित्रों की सहायता भी ली जाती है। शब्दकोश अलग-अलग विषय क्षेत्र के लिए अलग-अलग हो सकते हैं जैसे- विज्ञान शब्दकोश, चिकित्सा शब्दकोश, गणित शब्दकोश आदि।

कोश की प्राचीनता- सबसे पहले शब्दकोशों का निर्माण भारत में हुआ। यह शानदार परंपरा वेदों के समान लगभग पाँच हजार साल पुरानी है।

प्रजापति कश्यप का निघंटु संसार का प्राचीनतम कोश हैं इसमें १८ सौ वैदिक शब्दों को इकट्ठा किया है। निघंटु पर महर्षि यास्क की व्याख्या 'निरुक्त' संसार का पहला शब्दार्थकोश (Dictionary) एवं विश्वकोश (Encyclopedia) है। इसी श्रृंखला में छठी या सातवीं सदी में अमर सिंह कृत नामलिंगानुशासन या त्रिकांड है जिसे संसार में अमरकोश के नाम से जाना जाता है। अमरकोश विश्व का प्रथम समान्तरकोश (Thesaurus) है। भारत के बाहर प्राचीन प्रयास अक्कादियाई कोश है। यह शायद ईसा पूर्व सातवीं सदी का है। ईसा से तीसरी सदी पूर्व का चीनी भाषा कोश है। आधुनिक कोशों में इंग्लैंड के सैमुअल जानसन ने १७५५ में सैमुरल जौन्संस डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज (A Dictionary of the English Language & Samuel Johnson १७५५) ने कोशकारिता को नई उड़ान दी। असली आधुनिक कोश १८०६ में अमेरिका में नोहा वैब्स्टर्स का नोहा वैब्स्टर्स ए कंपैडियस डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज (A compendious Dictionary of the English Language & Noah Webster १८०६) प्रकाशित हुआ। इसके बाद बहुत सारे कोश आये।

वर्तमान युग में कोश विद्या का अत्यंत व्यापक परिवेश विकसित हो रहा है। सामान्य तौर पर इसकी दो विधाऐं हैं- (१) शब्दकोश (२) ज्ञानकोश (वृहत्तम विश्वकोश इन्साइक्लोपीडिया) इसके अन्तर्गत चरित कोश, कथाकोश, इतिहासकोश आदि सम्मिलित हैं। आज की कोश विधा अपने आप में भाषा विज्ञान, व्याकरणशास्त्र, साहित्य, अर्थविज्ञान, शब्दप्रयोगीय, ऐतिहासिक विकास, संदर्भ सापेक्ष अर्थविकास और नाना शास्त्रों तथा विज्ञानों में प्रयुक्त विशिष्ट अर्थों के बौद्धिक और जागरूक शब्दार्थ संकलन का परिणाम है।

प्राकृतकोश का उद्भव- प्राचीन काल में कोश का कोई अलग साहित्य नहीं था। गुरु-शिष्य परम्परा से ज्ञान गंगा बहती थी। आचारांग, सूत्रकृतांग आदि में कई जगह एक ही शब्द के कई रूप मिलते हैं। भगवती सूत्र

में शताधिक शब्दों के पर्याय प्राप्त होते हैं। भगवती सूत्र को प्राकृत साहित्य का सबसे प्राचीन कोश कहा जा सकता है। आगमों एवं उपांगादि में तथा उनकी विभिन्न टीकाओं में भी एकार्थक एवं निरुक्तिमूलक शब्दों का प्रयोग हुआ है। आगम एवं उनके व्याख्या साहित्य को प्राकृत कोश साहित्य के उद्गम स्थल के रूप में देख सकते हैं।

•धनपाल की पाइयलच्छीनाममाला प्राकृत साहित्य का प्रथम कोश ग्रन्थ है। इसकी रचना विक्रम संवत् १०२९ में की गई थी। इसमें २७९ गाथाऐं हैं। इसमें एक शब्द के कई नाम हैं, जैसे- हाथी के दस नाम, पार्वती के बारह नाम आदि। विषय, स्थान आधार पर केवल नामशब्दों का चयन किया है, जैसे-

पीलू गओ मयगलो मायंगो सिंधुरो करेणू य। दोघट्टो दंती वारणो करी कुंजरो हत्थी।।

•विक्रम संवत् १२१४-१५ ई. में (११५९) में देशीनाममाला की रचना हेमचन्द्र ने की। उन्होंनें व्याकरण, दर्शन, साहित्य आदि अनेक विधाओं संस्कृत एवं प्राकृत में प्रमाणित ग्रंथों की रचना की। हेमचन्द्र की प्रमुख रचनाऐं हैं- सिद्धहेमशब्दानुशासन, अभिधानचिन्तामणि, अनेकार्थसंग्रह, देशीनाममाला, निघण्टु, द्वयाश्रयकाव्य, काव्यानुशासन, छन्दोऽनुशासन, प्रमाणमीमांसा, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित, योगशास्त्र एवं स्तोत्र आदि। देशीनाममाला में देशी शब्दों का संकलन है। इसके कुछ शब्द शैल, संथाल, मुण्डा, द्रविड आदि भाषाओं से मिलते हैं। कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका कहीं प्रयोग नहीं हुआ है। उक्तिव्यक्तिप्रकरण का बनारस के विद्वान् दामोदर शास्त्री ने अपने शिष्यों के लिए १२वीं शताब्दी में कोश ग्रंथ के रूप में निर्माण किया। इसका दूसरा नाम प्रयोगप्रकाश है लोकभाषा में प्रचलित देशज शब्द कैसे संस्कारित होकर शुद्ध रूप या संस्कृत रूप धारण करते हैं, इसमें सरल रूप से समझाया गया है। व्याकरण की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। जैसे-

आथि इति कर्तृनिष्ठा कीज इति साध्यगा क्रिया तस्मात।
अस्ति-करोति धातु अकर्मक-सकर्मका एवम् ।।९।।

•१७वीं शताब्दी के एक जैन विद्वान् साधु सुन्दरगणि ने उक्तिरत्नाकर ग्रंथ की रचना की। इसमें देशज उक्तिमूलक शब्दों का संग्रह किया गया है। इसका दूसरा नाम औक्तिक पद हैं इसमें शब्दों का संस्कृत रूप भी है जैसे- छावडउ-शावक, रीसालू-ईर्ष्यालू आदि। कुछ ऐसे शब्द हैं जो संस्कृत से प्राकृत में गढ़े गए जैसे- वड़ी-वाटिका, मिठाई-मृष्टाटिका ।

• जैन कक्को कोश' द्विभाषिक कोश है इसमें प्राकृत शब्दों का गुजराती में अनुवाद किया गया है। इसे वल्लभी छगनलाल ने अहमदावाद में १८१२ में निर्माण कर प्रकाशित कराया।

•आधुनिक युग में स्वतंत्र प्राकृत कोश निर्माण की आवश्यकता है। अभिधानराजेन्द्रकोश-विजयराजेन्द्रसूरि का एक वृहत्कोश है इसकी श्लोक संख्या साढ़े चार लाख हैं इसका अंतिम खंड १९२४ ई. में प्रकाशित हुआ। आकारादिक्रम में लगभग साठ हजार प्राकृत शब्दों का संग्रह है। प्राकृत शब्दों का संस्कृत में अनुवाद, लिंग निर्देश, संदर्भ एवं जैनागमों के अनुसार उनका अर्थ आदि प्रस्तुत किया गया है। जैसे-प्राकृत शब्द- एगगंध, संस्कृत छाया- एकगंध, व्याकरणिक कोटि- त्रिकालिक, संदर्भ- सुगन्धीतरान्यतरगन्धोपेते, उत्त. १ अ.।

• सचित्र अर्धमागधी कोश, साधु मुनिरत्नचन्द्र ने गुजराती में लिखा था। हिंदी एवं अंग्रेजी रूपान्तर प्रीतमलाल आदि विद्वानों ने किया। यह पाँच भागों में है। यह पंचभाषा कोश हैं प्राकृत के शब्द संस्कृत, गुजराती

एवं अंग्रेजी भाषाओं में रूपांतरित किए हैं। जैसे- अर्धमागधी शब्द- अंगुलिज्जग, व्याकरणिक कोटि- संज्ञा (नपुं.), संस्कृतछाया- अङ्गुलीयक, गुजराती अर्थ, हिंदी अर्थ- अंगुलियों का गहना, अंगूठी वगैरह, अंग्रेजी अर्थ- A ring, संदर्भ- जीवा. ३, ३य नाया. १ य ओव. ३१ य कप्प. ४, ६२ ।

•पाइअसद्दमहण्णंवो कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्राध्यापक पं. हरगोविंददास त्रिकमचंद सेठ ने रचना की। इसमें ३०० ग्रंथों का उपयोग हुआ है। इसमें अभिधानराजेन्द्र कोश के दोष दूर करने का प्रयास किया गया है प्रत्येक ग्रंथ के साथ किसी न किसी ग्रंथ का प्रमाण है परन्तु उदाहरण में कई स्थानों पर संदर्भ ही मिलते हैं पूरा उदाहरण नहीं। जैसे- प्राकृत शब्द- अंगुलिअ/अंगुलिज्जक/अंगुलिज्जग, व्याकरणिक कोटि-संज्ञा (नपुं.), संस्कृत छाया- अङ्गुलीयक, हिंदी अर्थ- अंगूठी (दे. ६, कप्पय पि २५२)

• प्राकृत हिंदी कोश को डॉ० के. आर. चन्द्र ने पाइअसद्दमहण्णवो का संक्षिप्त एवं लघुकाय आकार कोश रूप में निर्माण किया। जो अहमदाबाद से १८८७ में प्रकाशित हुआ। इसमें प्राकृत शब्दों के बाद कोष्ठक में संस्कृत रूप, इसके बाद हिंदी अन्य अर्थों को भी दिया गया है। एक शब्द के अन्य अर्थों को भी दिया है। जैसे- प्राकृत शब्द- अंगुलिअ/अंगुलिज्जक/अंगुलिज्जग, संस्कृत छाया- अङ्गुलीयक, व्याकरणिक कोटि- संज्ञा (पुं., नपुं.), हिंदी अर्थ- अंगूठी

• एकार्थक कोश श्रमणी कुसुम प्रज्ञा द्वारा सम्पादित विश्वभारती लाडनूं से १९८४ में प्रकाशित हुआ। जैन पारिभाषिक शब्दों के अर्थज्ञान के लिए यह कोश उपयोगी हैं। जैसे- प्राकृत शब्द- अंगुलेयक, हिंदी अर्थ- अंगूठी, संदर्भ- अंगुलेयकं मुद्देयकं वेंटकं। अंगविज्जा

• देशी शब्दकोश का सम्पादन तथा इसका प्रकाशन महाप्रज्ञ जी द्वारा विश्वभारती लाडनू में १९८८ में हुआ। इससे पूर्व १९८४ में आपका निरुक्त कोश प्रकाशित हुआ। निरुक्तकोश लगभग ४०० पृष्ठों का है। मूल ग्रंथ में प्राकृतशब्दों के बाद कोष्ठक में संस्कृत रूप देकर संस्कृत या प्राकृत में निर्वचन प्रस्तुत किया गया है। निर्वचन का हिन्दी अनुवाद भी है। अर्धमागधी आगमों के शब्दों के लिए यह कोश विशेष उपयोगी है। हेमचन्द्र के बाद यह सबसे उत्तम देशी कोश है। इसमें लगभग १० हजार शब्दों का संग्रह है। जैसे- प्राकृत शब्द- अंगुत्थल, हिंदी अर्थ- अंगूठी, संदर्भ- (दे. १/३१)

• कुन्दकुन्द कोश- प्रो. उदयचन्द्र जैन उदयपुर ने १९९१ में निर्माण कर प्रकाशित कराया। इसमें कुंदकुंद साहित्य में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या दी गई है। जैसे- प्राकृत शब्द- अइसय, व्याकरणिक कोटि- (संज्ञा पुं.) , संस्कृत छाया- (अतिशय), हिंदी अर्थ- सर्वश्रेष्ठ, अति उत्तम, आधिक्य, प्रमुखता, उत्कृष्टता, अत्य अधिक, बहुत वड़ा (प्र. व. १३ द. २९ वो. ३१) ।

•A comprehensive and critical Dictionary of the Prakrit Language पूना में भंडारकर ओरियन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट से ४ volume में प्रकाशित हो चुकी है और कार्य चल रहा है यह अपने में मुख्य है। जैसे- प्राकृत शब्द- अंगुलेज्जग angulejjaga, अंग्रेजी अर्थ- a fingerring, संदर्भ- अंगुलेज्जग ललियंगयलयिकयाभरणे दश. (४ संदर्भ अन्य), छमू Entry- अंगुलेयग anguleyaga, २ संदर्भ।

•प्राकृत हिन्दी शब्दकोश- प्रो. उदयचन्द्र जैन उदयपुर ने बनाया, इसमें प्राकृत शब्द- अंगुलीअअ, व्याकरणिक कोटि- विशेषण, हिंदी अर्थ- अंगूठीयुक्त (मा. २२)

प्रस्तुत पाइय-सद्दकोस राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान लखनऊ परिसर की आनलाइन के लिए तैयारी है। जिसमें प्राकृत साहित्य के हर क्षेत्र से शब्दों को देने का प्रयास किया जाएगा। अभी तो मात्र काव्य ग्रन्थों का समावेश हो पाया है विशेषकर संस्कृत नाटक आदि। हमारा यहाँ लक्ष्य पाठक को प्रकृत के शब्द का सामान्यरूप से अर्थबोध कराना है तथा इंटरनेट के माध्यम से प्राकृत भाषा को पाठक से सहजरूप से जोड़ना है। आज की व्यस्त जीवन पद्धति में पुस्तकों तक पहुँच पाना कठनाई से संभव होता है। अतएव इसी बात को ध्यान में रखकर इस कार्य की योजना बनाई गयी थी। प्रस्तुत कोश उसका छोटा सा नमूना है। उदाहरणार्थ-

प्राकृत शब्द-

अंगुलीअअ/अंगुलिअ/अंगुलिज्जक/अंगुलिज्जग/अंगुलेयय

angulnaa / angulia / angulijjaka / angulijjaga / anguleyaya

संस्कृतच्छाया- अङ्गुलीयक व्याकरणिक कोटि- संज्ञा (नपुं.) Noun,

हिन्दी अर्थ- अंगूठी, मुद्रिका अंग्रेजी अर्थ- a finger-ring

प्रयोग- (अनसूया-) ता इदो अहिण्णाणं अंगुलीअअं से विसज्जेम ?

(तदितोऽभिज्ञानमङ्गुलीयकं तस्य विसृजाव) अभि.शाकु., पृष्ठ २६६/४

संदर्भ ग्रन्थ- अमरकोश भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्रपाइयलच्छीनाममाला देशीनाममाला उक्तिव्यक्तिप्रकरण उक्तिरत्नाकर अभिधानराजेन्द्रकोश सचित्र अर्धमागधी कोश पाइअसद्दमहण्णरव प्राकृत हिंदी कोश- डॉ० के. आर चन्द्र एकार्थक कोश देशी शब्दकोश कुन्दकुन्द कोश A comprehensive and critical Dictionary of the Prakrit Languages.

प्राकृत हिन्दी शब्दकोश- इस कार्य के दौरान बहुत सी जटिल समस्यायें आई परन्तु यह हमारा लक्ष्य प्राकृत कोश की आवश्यकता पर बात करना है उन्हें चिन्हित करना नहीं। वर्तमान समय में हर व्यक्ति के पास समय कम है वह इस अल्प समय में किस प्रकार भाषाओं से जुड़े इसके लिए इंटरनेट के माध्यम से बहुत सारी भाषाओं का प्रयोग कर सकता है। उनसे जुड़ सकता हैं अभी तक प्राकृत की कोई ऑनलाइन डिक्सनरी नहीं थी इसीलिए इतने सारे कोश होने पर भी इस कोश को बनाने की आवश्यकता प्रतीत हुई। बहु सारे ऐसे शब्द हैं जो होते हैं परन्तु वे विशेषण प्रतीत होते हैं जैसे- आकिदिविसेस (आकृतिविशेष), खेम (क्षेम), दीहाउ (दीर्घायु)। लिंग निर्धारण करने में भी भ्रांति होती है। बहुत से शब्द दोनों लिंगों में होते हैं तो कुछ दिखते पुं. जैसे पर होते नपुंसक लिंग हैं जैसे- सखिन् शब्द पुं. और स्त्रीलिंग दोनों में होता है। कांसताल पुंलिंग शब्द है।

वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या रही मूल टेक्सट का शुद्ध न होना, जैसे इमस्स अस्या तीन मृच्छकरिकम् के एडिशन में दिया हुआ है जबकि इमस्स के लिए अस्य होना चाहिए। अन्य परेशानी सॉफ्टवेयर की रही जो समय-समय पर डॉ. मोहन जी जैसे मित्रों द्वारा द्वारा सुलझाई जाती रही, तथापि पूरी तरह से साफ्टवेयर को विकसित नहीं किया जा सका, अतः साफ्ट प्रति के रूप में ही प्रकाशित करना उचित समझा, अभी भी अभिलाषा है कि 'ऑनलाइन प्राकृतकोश' की योजना को आगे बढ़ाऊँगी।

- डॉ० पत्रिका जैन

भाषान्तर पद्धति-

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ ऋ ॠ ऌ ॡ

a a i i u u e ai o au r r l l

क ख ग घ ङ

k kh g gh n

च छ ज झ ञ

c ch j jh n

ट ठ ड ढ ण

t th d dh h

त थ द ध न

t th d dh n

प फ ब भ म

p ph b bh m

य र ल व म

y r l v m

श ष स ह

s s s h

ं ः

m h

संकेत सूची-

√	-	धातु निशान
पुं.	-	पुलिंग
स्त्री.	-	स्त्रीलिंग
नपुं.	-	नपुंसकलिंग
भू.कृ.	-	भूतकालिक कृदन्त
सक.	-	सकर्मक क्रिया
अक.	-	अकर्मक क्रिया
प्रे.	-	प्रेरक
वि.	-	विशेषण
सं.	-	संज्ञा

ग्रन्थ संकेत सूची

ग्रंथ	ग्रंथ नाम	संदर्भ का प्रकार
अभि.शाकु.	अभिज्ञान शाकुन्तलम्	श्लोक, पृष्ठ संख्या/अंक
अभिषेक.	अभिषेकनाटकम्	श्लोक/अंक, पृष्ठ संख्या
ऊरुभङ्ग.	ऊरुभङ्गम्	श्लोक/अंक, पृष्ठ संख्या
अविमार.	अविमारकम्	श्लोक/अंक, पृष्ठ संख्या
अट्ठ.	अट्ठपाहुडं	पाहुड/पृष्ठ संख्या
उत्तर.	उत्तररामचरितम्	श्लोक/अंक, पृष्ठ संख्या
कर्णभार.	कर्णभार म्	श्लोक/अंक, पृष्ठ संख्या
कत्ति.	कत्तिगेयाणुपेक्खा	गाथा संख्या/ पृष्ठ संख्या
कर्पूर.	कर्पूरमंजरी	जवनिका, पृष्ठ संख्या/अंक
गउड.	गउडवहो	गाथा संख्या/पृष्ठ संख्या
गाहा.	गाथासप्तशती	गाथा संख्या, पृष्ठसंख्या/शतक
चारु.	चारुदत्तम्	गाथा संख्या/अंक, पृष्ठ संख्या
तिलो.	तिलोयपण्णति	महाधिकार, गाथा संख्या/पृष्ठ संख्या
दसवेया.	दसवेयालियसुत्तं	अध्ययन/गाथा संख्या, पृष्ठ संख्या
नाट्य.	नाट्यशास्त्रम्	श्लोक/अध्याय, पृष्ठ संख्या
पंचा. प्राभृत	पञ्चास्तिकाय प्राभृतं	गाथा संख्या/पृष्ठ संख्या
पञ्चरात्र.	पञ्चरात्रम्	अंक/पृष्ठ संख्या
पण्णा.	पण्णावणासुत्तम्	भाग, पद/सूत्र, पृष्ठ संख्या
प्रतिमा.	प्रतिमानाटकम्	अंक, पृष्ठ संख्या
बाल.	बालचरितम्	श्लोक/अंक, पृष्ठ संख्या

भारतीय पुरा.	भारतीय पुरालेखों का अध्ययन	शिलालेख नम्बर, पृष्ठ संख्या
मध्यम.	मध्यमव्यायोगम्	श्लोक/अंक, पृष्ठ संख्या
मालविका.	मालविकाग्निमित्रम्	श्लोक/अंक, पृष्ठ संख्या
मुद्रा.	मुद्राराक्षसम्	श्लोक, पृष्ठ संख्या/अंक
मूला.	मूलाचारं	पृष्ठ संख्या/गाथा संख्या
मृच्छ.	मृच्छकटिकम्	पृष्ठ संख्या/अंक
वज्जालग्ग.	वज्जालग्गं	पृष्ठ संख्या/गाथा संख्या
विक्रमो.	विक्रमोवर्शीयम्	श्लोक/अंक, पृष्ठ संख्या
वेणी.	वेणीसंहारम्	श्लोक/अंक, पृष्ठ संख्या
समण.	समणसुत्तं	पृष्ठ संख्या/गाथा संख्या
समराइ.	समराइच्चकहा	पृष्ठ संख्या/अंक
सिरिकुम्मा	सिरिकुम्मापुत्तचरियं	गाथा संख्या/पृष्ठ संख्या
सूत्र.	सूत्रकृतांगसूत्रम्	श्रुतस्कंध/अध्ययन/सूत्र संख्या
सेतुबन्ध	सेतुबन्धं	गाथा/आश्वासक, पृष्ठ संख्या
स्वप्न.	स्वप्नवासवदत्तम्	श्लोक/अंक, पृष्ठ संख्या
हेम.	हेमचन्द्र व्याकरण	अध्याय/सूत्र संख्या, पृष्ठ संख्या

अ

अ a अ < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत वर्णमाला का प्रथम अक्षर- विष्णु, कृष्ण, निषेध अर्थ में the first letter of Prakrit Alphabet, Vishnu, Krishna, negative sence, etc. {म.} एओआरपराणि*अ* अंआर-पारं *अ* पाअए णत्थि। (एओकारपराणि च आ अकारपरं च प्राकृते नास्ति) नाट्य., श्लोक-7/17, पृष्ठ-541 {म.} पहओ वि चुम्बइ बला, *अ*लज्जए कह णु कुप्पिस्सं। (प्रहतोऽपि चुम्बति बलात् अलज्जके कथं नु कुप्पिष्यामि) गाहा., गाथा-982, पृष्ठ 46

अ a च < अव्यय [Indeclinable] और, तथा, गाथा का चरण पूरा करने के काम में आने वाला and, also, a letter used at end of select cantos. {शौ.} (भानुमती-) तदो अहं तस्स अदिसइददिव्वरूविणो णउलस्स दंसणेण उच्छुआ जादा हिदहिअआ *अ*। (ततोऽहं तस्यातिशयितदिव्यरूपिणो नकुलस्य दर्शनेनत्सुका जाता हृतहृदया च) वेणी . श्लोक-10/2, पृष्ठ 59 {म.} चत्तर धरिणी पिअपसणा *अ* तरुणी पउत्थपइआ *अ*। (चत्वरगृहिणी प्रियदर्शना च तरुणी प्रोषितपतिका च) गाहा, गाथा.-36/1, पृष्ठ 19

अ a इव< अव्यय [Indeclinable] इन अर्थों को बताने वाला अव्यय उपमा, सादृश्य, उत्प्रेक्षा define these meaning- simile, analogy, imagination metaphor, etc. {म.} अज्ज व्वेअ पउत्थो उज्जाअरओ जणस्स अज्जे अ। (अद्यैव प्रोषित उज्जागरको जनस्याद्यैव) गाहा., गाथा-58/1, पृष्ठ 29

अंक aṅka अङ्क < संज्ञा (पुं.) [Noun] गोद, उत्संग, चिह्न, लांछन, निशानी, एक से नौ तक के अंक a lap, sign or mark, stigma, numerals from one to nine {शौ.} (विदूषक-) णं क्खु दिट्ठमेत्तस्स तुह *अंकं* समारोहदि। (न खलु दृष्टमात्रस्य तवाङ्कं समारोहति) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-11,पृष्ठ 32/2

अंग aṅga अंग< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] शरीर, शरीर के मस्तक आदि अवयव, आचारांग सूत्रादि बारह जैन आगम-ग्रंथ, वेद के शिक्षादि छः अंग, वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाने वाला अव्यय, विहार प्रदेश (अंग देश का एक भाग) the body, a limb or parts of body, a part or portion, Jain Agama text, a state called Bihar, etc. {म.} रुणरुणइ वलइ वेल्लइ पक्खउडं धुणइ खिवइ *अंगाइं* । (रुणरुणायते वलति वेल्लति पक्षपुटं धुनोति क्षिपत्यङ्गानि) वज्जालग्गं, इंदिंदिरवज्जा, पृष्ठ 82/240

अंगद aṅgada अङ्गद< संज्ञा (पुं.) [Noun] किष्किंधा के वानरराज बालि का पुत्र, उर्मिला से उत्पन्न लक्ष्मण का पुत्र Aṁgada, son of Bāli, the king of Kiskindhā, mountain, etc. {शौ.} (बिलमुख-) तेसं दक्खिणा-पहमुहस्स कुमारस्स *अंगदस्स* पवुत्तिं जाणिअ सिग्घं आअच्छदि। (तेषां दक्षिणापथमुखस्य कुमारस्याङ्गदस्य प्रवृत्तिं ज्ञात्वा शीघ्रमागच्छति) अभिषेक., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 329

अंगारय aṅgāraya< अङ्गारक संज्ञा (पुं.) [Noun] मंगल ग्रह, पहला महाग्रह, अंगारा Mars planet, Tuesday, etc. {म.} *अंगारयं* न याणइ न हु बुज्झइ हत्थचित्तसंचारं। (अङ्गारकं न जानाति न खलु बुध्यति हस्तचित्रासंचारम् (हस्तचित्रसंचारम्)) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 172/507

अंगुलि aṅguli अङ्गुलि< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] उंगली, अंगुली finger {म.} कलियामिसेण उब्भेवि *अंगुलिं* मालईइ महमहियं। (कालिकामिषेणोर्ध्वीकृत्याङ्गुलिं मालत्या गन्ध-प्रसृतम्) वज्जालग्गं, मालईवज्जा, पृष्ठ 80/233

अंगुलिमुद्दिआ aṅguli-muddiyā अंगुलि-मुद्रिका<संज्ञा (स्त्री.) [Noun] अंगुलिमुद्रिका, अंगुली की अंगूठी {मा.} (चर-) तस्स अ कुमारसंरोह-संभमप्पचलिदंगुलिदो करादो पुरिसंगुलि-परिणाहप्पमाणघडिआ विअलिदा इअं *अंगुलिमुद्दिआ*देहलीबन्धम्मि णिपडिआ, ताए अणवबुद्धंत ज्जेव्व मम चलणपासं समागच्छिअ पणामणिहु आ णव-बहु ब्ब णिच्चला संवुत्ता। (तस्याश्च कुमारसंरोध-सम्भ्रमप्रचलिताङ्गुलेः करात् पुरुषाङ्गुलि-परिणाहप्रमाणघटिता विगलितेयमङ्गुलि-मुद्रिका देहलीबन्धे निपतिता, तया स्त्रिया अनवबुध्यमानैव मम चरणपार्श्वं समागत्य प्रणामनिभृता नववधूरिव निश्चला संवृता) मुद्रा., श्लोक-19/1, पृष्ठ 10

अंगुलीअअ (अंगुलिअ/ अंगुलिज्जक/ अंगुलिज्जग/ अंगुलेयय) aṅgulīaa (aṅgulia/) aṅgulijjaka/ aṅgulijjaga/ aṅguleyaya अङ्गुलीयक< संज्ञा (नपुं.) [Noun] अंगूठी, मुद्रिका a finger-ring {शौ.} (अनसूया-) ता इदो अहिण्णाणं अंगुलीअअं से विसज्जेम ?(तदितोऽभिज्ञान-मङ्गुलीयकं तस्य विसृजाव:) अभि.शाकु., पृष्ठ 269/4

अंजणसिद्ध añjaṇa-siddha अञ्जनसिद्ध< विशेषण [Adjective] आँख में अंजन-विशेष लगाकर अदृश्य होने की शक्तिवाला (अंजन चोर) (जैन परम्परानुसार) endowed with spiritual powers (Aṁjana cora) (according to jain tradition) {म.} दीसंति जोयसिद्धा अंजणसिद्धा वि के वि दीसंति। (दृश्यन्ते योगसिद्धा अञ्जनसिद्धा अपि केचन दृश्यन्ते) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा, पृष्ठ 48/141

अंडअबंध aṇḍaa-bandha अंडकबन्ध< संज्ञा (पुं.) [Noun] मंदिर आदि के शीर्ष पर अर्द्धवृत्ताकार रूप धरण करता अण्डाकार गुम्बज an egg shaped dome on temples, etc. {म.} एको असो जहा वो *अंडअ-बंधाअए* मउली। (एकश्च स यथा वोऽण्डक बन्ध्यायते) गउडवहो, गाथा-248, पृष्ठ 40

अंतराअ (अंतराय) antarāa (antarāya) अंतराय < संज्ञा (पुं.) [Noun] रोकटोक, यज्ञ दानादि में विघ्न करना, व्यवधान hurdle, impediment, interruption, etc. {शौ.} (उर्वशी-) तेण हि आदिसीअदु मग्गो जेण तहिं गच्छन्तीणं *अंतराओ* ण भवे। (तेन ह्यादिश्यतां मार्गो येन यत्र गच्छन्त्योरन्तरायो न भवेत्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/2, पृष्ठ 159

अंतरिक्ख antarikkha अन्तरिक्ष< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] अन्तरिक्ष, आकाश और पृथ्वी के बीच का मध्यवर्ती प्रदेश cosmos, etc. {शौ.} (विदूषक-) *अन्तरिक्ख*-पासाददो ओदरदि भअवं चन्दो। (अन्तरिक्ष-प्रासादाद् अवतरति भगवान् चन्द्रः) मृच्छ., पृष्ठ 153/3

अंतरिद antarida अन्तरित< विशेषण [Adjective] अन्तर्हित, छिपना, गायब hidden, lurk, become hidden, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) अलं आवेएण। *अंतरिदा* दाणिं वयं। (अलमावेगेन। अन्तरिते इदानीमावाम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-11/3, पृष्ठ 183

अंतरिदसरीर antarida-sarīra अन्तरित-शरीर< विशेषण [Adjective] छिपा हुअ/ हुए शरीर वाला, छिपा one with covered body, to hide, to conceal, etc. {शौ.} (पुरुष-) ता जाव इमेहिं जिण्णुज्जाणपादवेहिं *अंतरिद-सरीरो* पेक्खामि कहिं आसणपरिग्गह करेदि त्ति। (तद्यावदेभिर्जीर्णोद्यानपादपैरन्तरित-

शरीरः प्रेक्षे कुत्रासनपरिग्रह करोतीति) मुद्रा., श्लोक 4, पृष्ठ 84/6

अंतेवुर (अंतेउर) antevura (anteura) अन्तःपुर< संज्ञा (नपुं.) [Noun] राजस्त्रियों का निवासगृह, रानियों का स्थान inner apartment of a palace (set a part for women) seraglio, female or woman's apartment, harem (so called from their being situated in the heat of the town for purpose of safety) {शौ.} (विजया-) हळा णन्दिणिए! भणेहि भणेहि! अज्ज कोसळ्ळापुरोगेहि सव्वेहि *अन्तेवुरेहि* पडिमागेहं दिट्ठं गदेहि तहि किळ भट्टिदारओ भरदो दिट्ठो। (हला नन्दिनिके! भण भण। अद्य कौसल्यापुरागैः सर्वैरन्तपुरैः प्रतिमागेहं द्रष्टुं गतैस्तत्र किल भर्तदारको भरतो दृष्टः) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-4, पृष्ठ 283

अंधआर (अंधयार) andhaāra (andhayāra) अन्धकार< संज्ञा (पुं.) [Noun] अंधेरा, अंधकार darkness, murk {शौ.} (विदूषक-) एसो वि *अंधआरस्स* विअ अवआसं देंतो। (एषोऽपि अन्धकारस्यैव अवकाशं ददत्) मृच्छ., पृष्ठ 151/3

अंबरअल ambara-ala अंबरतल< संज्ञा (नपुं.) [Noun] आकाश की सतह, आकाश sky, space, etc. {शौ.} (अप्सरा-) अज्जा! परित्ताअध परित्ताअध जो सुरपक्खवादी जस्स वा *अंबरअले* गई अत्थि। (आर्याः! परित्रायध्वं परित्रायध्वं यः सुरपक्षपाती यस्य वाम्बरतले गतिरस्ति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-1, पृष्ठ 140

अइधीर ai-dhīra अतिधीर< विशेषण [Adjective] अत्यअधिक धैर्यवाला, गम्भीर स्वभाव, विद्वान very patient, much fortitude, steady, scholar, etc. {शौ.} (सीता-) हद्धि *अदिधीरा* खु म्हि मन्दभाआ। (हा धिग् अतिधीरा खल्वस्मि मन्दभागा) अभिषेक., भासनाटक., श्लोक-1/2, पृष्ठ 330

अइर aira अचिर< क्रियाविशेषण [Adverb] अचिर, शीघ्र, जल्दी soon, without delay, shortly, etc. {शौ.} (विदूषक-) फलं वि *अइरेण* दक्खिस्ससि। (फलमप्यचिरेण द्रक्ष्यसि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/1, पृष्ठ 247

अउव्व auvva अपूर्व< विशेषण [Adjectve] अपूर्व, अनोखा, अद्वितीय unprecedented, unusual, uncommon, etc.{म.} अणिमित्त-वइरियाणं खलाणं मग्गो च्चिय *अउव्वो*।

(अनिमित्तवैरिकानां खलानां मार्ग एवापूर्वः) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 20/56

अओज्झा (अउज्झा / अज्झा) aojjhā (aujjhā / ajjhā) अयोध्या< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] अयोध्या, प्राचीन भारतीय नगरी Ayodhyā, an ancient Indian city {शौ.} (कैकेयी-) धण्णा खु म्हि। इदं अब्भुदअं *अओज्झाअं* पेक्खिदुं इच्छामि। (धन्या खल्वस्मि। इममभ्युदयमयोध्यायां प्रेक्षितुमिच्छामि) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-13/7, पृष्ठ 317

अकज्ज a-kajja अकार्य< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] जो करने योग्य न हो, अकरणीय improper action; not fit to be done, etc. {शौ.} (वधू-) दलिद्ददाए अज्जउत्तेण ज्जेव ईदिसं *अकज्जं* अणुचिट्ठिदं त्ति। (दरिद्रतया आर्यपुत्रेणैव ईदृशम-कार्यमनुष्ठितम्) मृच्छ., पृष्ठ 182/3

अकय्य a-kayya अकार्य< संज्ञा (नपुं.) [Noun] अकार्य, अनुचित या बुरा काम evil deed, improper work, etc. {शौ.} (गणिका-) संतप्पेदि ति तक्केमि एदेण *अकय्यं* किदं त्ति। (संतप्यत इति तर्कयामि एतेनाकार्यं कृतमिति) चारु., भासनाटक., गाथा-5/4, पृष्ठ 242

अकाल a-kāla अकाल< संज्ञा (पुं.) [Noun] अकाल, अयुक्त, दुष्काल, अनवसर, असमय, बुरा वक्त, गोचरी (भिक्षा) के लिये निषिद्ध काल, कुसमय famine, improper time, unfavorable time, prohibited time not proper for begging food, etc. {शौ.} (कुटुम्बिनी-) ता *अकालो* दाणिं एसो कुलवहूजणस्स णिवत्तिदुं। (तस्मादाकाल इदानीमेष कुलवधूजनस्य निवर्तितुम्) मुद्रा., श्लोक 3, पृष्ठ 94/7

अकिदत्थ a-kidattha अकृतार्थ< विशेषण [Adjective] अकृतार्थ, असफल, असन्तुष्ट, अप्रसन्न with his object unaccomplished, unsuccessful, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) वअस्स! तहा णाम अमच्चरक्खसो णन्दरज्जपच्चणअणे किदव्वअसाओ णिक्कमिअ संपदं *अकिदत्थो* पुणो कहं इमं ज्जेव कुसुमउरं आअदो ? (वयस्य! तथा नाम अमात्यराक्षसो नन्दराज्यप्रत्यनयने कृतव्यवसायो निष्क्रम्य सांप्रतमकृतार्थः पुनरपि

कथमिदमेव कुसुमपुरमागतः) मुद्रा., श्लोक 3, पृष्ठ 83/6

अकूणिअ akūṇia अकूणित< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] निमीलित, असंकुचित, खुला हुआ not contracted, opened, etc. {म.} सा चडुला कह णु गुणुज्जलेसु लच्छी *अकूणिअं* कुणउ। (सा चटुला कथं नु गुणोज्वलेषु लक्ष्मीरकूणितां करोतु) गउडवहो, पृष्ठ 138/933

अक्कंत akkanta आक्रान्त< विशेषण [Adjective] आक्रान्त, बलवान् के द्वारा दबाया हुआ, घेरा हुआ, ग्रस्त attacked, assaulted, defeated, subjugated, troubled, afflicted {म.} तह जंतिएण जंतं *अक्कंतं* नेहणिब्भररसेण। (तथा यान्त्रिकेण यन्त्रमाक्रान्तं स्नेहनिर्भररसेन) वज्जालग्गं, जंतियवज्जा, पृष्ठ 184/536

अक्कन्द (आकंद) akkanda (ākanda) आ √क्रन्द, क्रिया [अक.] [Verb] रोना, चिल्लाना, क्रन्दन करना crying, weeping, shouting, loud noises, etc. {शौ.} (चन्दनदास-) अज्जे अह किं एत्थ *अक्कन्दसि*। (आर्ये अथ किमत्राक्रन्दसि) मुद्रा., श्लोक 4, पृष्ठ 95/7

अक्कोश (अक्कोस) akkośa (akkosa) आक्रोश [आ √क्रुश्]< संज्ञा/ क्रिया [Noun/ Verb] गुस्सा करना, क्रोध to be angry, anger, etc. {मा.} (शकार-) भावे! पेक्ख पेक्ख *अक्कोशदि* मं। (भाव! प्रेक्षस्व प्रेक्षस्व आक्रोशति माम्) मृच्छ., पृष्ठ 377/6

अक्खर akkhara अक्षर< संज्ञा (पुं, नपुं.) [Noun] अक्षर, वर्ण, ज्ञान, चेतना, जिसका नाश नहीं होता a letter of the alphabet, a syllable, imperishable, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) सलाहणिआइं एदाइं *अक्खराइं*। (श्लाघनीयानि एतानि अक्षराणि) मृच्छ., पृष्ठ 427/8

अक्खि akkhi अक्षि< संज्ञा (नपुं.) [Noun] आँख, अक्षि eye {शौ.} (विदूषक-) वामं खु मे *अक्खि* फन्देदि। (वामं खलु मेऽक्षि स्पन्दते) चारु., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 228

अक्खित्त akkhitta आक्षिप्त< विशेषण [Adjective] आक्षेप लगाया हुआ, झपट्टा मारा हुआ thrown, blamed, censured, snatched, etc. {म.} (नेपथ्ये-) हद्धी हद्धी। दुऊलुतुरच्छदे तालवेंटाधारे णिक्खिविअ

णीअमाणो मए भट्टिणो अब्भंतरविलासिणी-मोलिरअणजोग्गो आमिससंकिणा गिद्धेण *अक्खित्तो*। (हा धिक् हा धिक्। दुकूलोत्तरच्छदे तालवृन्ताधारे निक्षिप्य नीयमानो मया भर्तुरभ्यन्तरविलासिनी-मौलिरत्नयोग्यो मणिरामिष-शङ्किना गृध्रेनाक्षिप्त:) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-5, पृष्ठ 219

अक्खिदुक्खिद akkhi-dukkhida अक्षि-दु:खित< विशेषण [Adjective] आँखों से दु:खी, जिसकी आँखे आ गई हों suffering from some eye disease such as ophthalmic {शौ.} (विदूषक-) ण क्खु *अक्खिदुक्खिदो* अहिमुखे दीवसिहं सहेदि। (न खल्वक्षिदु:खितोऽभिमुखे दीपशिखां सहते) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-21/2, पृष्ठ 173

अखंडिद a-khaṇḍida अखण्डित/ अखंडित< विशेषण [Adjective] अखंड, विघ्नरहित, बाधा रहित, न टूटा हुआ unbroken, undivided, continuous, etc. {शौ.} (निपुणिका-) भट्टिणीए *अखंडिदादो* पणआदो। (भट्टिन्या अखण्डितात्प्रणयात्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 277/3

अग्गदो aggado अग्रत< क्रियाविशेषण [Adverb] सामने, के आगे, के ऊपर, आगे, की उपस्थिति में, प्रथम front, foremost, forward, frontal, in front of, pre-eminent, top most, etc. {शौ.} (विदूषक-) णं भवं *अग्गदो* मे वट्टदि। (ननु भवानग्रतो मे वर्तते) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 7, पृष्ठ 30/2

अग्गभूमि agga-bhūmi अग्रभूमि< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] आगे की भूमि, मुंडेर frontal land, parapet, etc. {शौ.} (प्रतिहारी-) अदिट्ठरूवेण केण वि सत्तेण अदिक्कमिअ मेहप्पडिच्छन्दस्स पासादस्स *अग्गभूमिं* आरोविदो। (अदृष्टरूपेण केनापि सत्त्वेनाति-क्रम्य मेघप्रतिच्छन्दस्याग्रभूमि-मारोपित:) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-25/6, पृष्ठ 112

अग्गि aggi अग्नि< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] अग्नि, आग, पेट की अग्नि fire, the fire in the stomach {म.} पत्त वि नयरदाहे भण कस्स न वल्लहो *अग्गी*। (प्राप्तेऽपि नगरदाहे भण कस्य न वल्लभोऽग्नि:) वज्जालग्गं, कुट्टिसिक्खावज्जा, पृष्ठ 190/557

अग्गिसरण aggi-saraṇa अग्निशरण< संज्ञा (नपुं.) [Noun] आग की शरण, आग में जलना shelter of fire, burns on fire {शौ.} (प्रियंवदा-) *अग्गिसरणं* पविट्ठस्स सरीरं छंदोमईए वाणिआए। (अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या) अभि.शाकु., पृष्ठ 272/4

अग्घ aggha अर्घ्य< विशेषण [Adjective] पूजा में दिया जाने वाला जलादि द्रव्य, मूल्यवान a respectful offering or oblation to a diety or venerable person {म.} (स्थापक-) *अग्घं* सिग्घं व दैंतो जअइ गिरिसुआपाअपड्केरुहाणं। (अर्घ्यं शीघ्रमिव ददज्जयति गिरिसुतापादपड्केरुहयोः) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 5/4

अग्घोदय agghodaya अर्घोदक< संज्ञा (नपुं.) [Noun] अर्घोदक, पूजा का जल venerable water, water for worship, etc. {शौ.} (अनसूया-) गच्छ पादेसु पणमिय णिवत्तेहि णं जाव अहं *अग्घोदअं* उपकप्पेमि। (गच्छ, पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनम् यावदहमर्घोदकमुपकल्पयामि) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-1, पृष्ठ 54/4

अच्चाहिद (अच्चाहिअ) accāhida (accāhia) अत्याहित< विशेषण [Adjective] महाभय, महाभीति, झूठा, ऐसा जख्मी कार्य जिसमें प्राणहानि की संभावना हो great fear, furious act, deadly job, etc. {शौ.} (धात्री-) किं एत्थ *अच्चाहिदं।* (किमत्रात्याहितम्) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/2, पृष्ठ 15

अच्छरा (अच्छरसा) accharā (accharasā) अप्सरस्< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] अप्सरा, स्वर्ग की नर्तकी, देवी, परी nymph, angel, female dancer in the heaven, fairy, etc. {शौ.} (विदूषक-) अत्थि उव्वसि त्ति *अच्छरा।* (अस्त्युर्वशीत्यप्सराः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 152

अच्छराकामुअ accharā-kāmua अप्सराकामुक< संज्ञा (पुं.) [Noun] अप्सरा का प्रेमी lover of Apsarās {शौ.} (देवी-) एत्थ इमिणा एव्व उवाअणेण दं *अच्छराकामुअं* पेक्खामि। (अत्रानेनैवोपायनेन तमप्यसराकामुकं प्रेक्षे) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-18/2, पृष्ठ 170

अच्छरिअ (अच्छरिज्ज / अच्छरीअ) accharia (accharijja / accharīa)

आश्चर्य< संज्ञा (नपुं.) [Noun] आश्चर्य, विस्मय, चमत्कार wonder, surprise, etc. {शौ.} (विदूषक-) *अच्छरिअं अच्छरिअं* ! कुदो दाणि एदस्स आगमो। (आश्चर्यमाश्चर्यम्! कुत इदानीमेतस्यागमः) भासनाटक., अविमार., गाथा-21/4, पृष्ठ 160

अच्छि acchi अक्षि< संज्ञा (त्रिलिंगी) [Noun] आँख, नेत्र, अक्षि an eye {म.} तइया वारिज्जंती पियसि पइं उल्लिरीहि *अच्छीहिं*। (तदा वार्यमाणा पिबसि पतिमाद्राभ्र्यामक्षिभ्याम्) वज्जालग्गं, बालासंवरणवज्जा, पृष्ठ 186/545

अजुत्त a-jutta अयुक्त< विशेषण [Adjective] अयुक्त, अनुचित, अयोग्य improper, unfair, not united, unqualified, not fit for {शौ.} (पद्मावती-) अय्य! पढमं उग्घोसिअ को किं इच्छदित्ति *अजुत्तं* दाणिं विआरिदुं। (आर्य! प्रथममुद्घोष्य कः किमिच्छतीत्ययुक्तमिदानीं विचारयितुम्) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-10/1,पृष्ठ 6

अज्ज ajja आर्य< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] आर्य-गोत्र में उत्पन्न, आदरणीय, सम्माननीय, कुलीन, शिष्ट-जनोचित, निर्दोष, उच्चपदस्थ, पति respectable male individual, born in a clan termed as Arya, husband, etc. {शौ.} (वधू-) *अज्ज*! वंदामि। (आर्य! वन्दे) मृच्छ.,पृष्ठ 184/3

अज्जआ (अज्जा / अज्जिया) ajjaā (ajjā / ajjiyā) आर्या< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] आदरणीय महिला, पार्वती, छन्द respectable woman, etc. {शौ.} (चेटी-) एसा *अज्जआ* चित्तफलअ-णिसण्ण-दिट्ठी मदणिआए सह किं पि मंतअंती चिट्ठदि। (एषा आर्य्या चित्रफलक-निषण्णदृष्टि-र्मदनिकया सह किमपि मन्त्रयन्ती तिष्ठति) मृच्छ., पृष्ठ-190/4

अज्झा [देशज] **ajjhā** प्रौढयुवति< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] प्रौढयुवती, स्त्री adult woman {म.} फलियं मिव पीणपओहरेहि *अज्झाइ* लावण्णं। (फलितमिव पीन-पयोधराभ्यां प्रौढयुवत्या लावण्यम्) वज्जालग्गं, लावण्णवज्जा, पृष्ठ 106/313

अट्ट [देशज] **aṭṭa** √ क्वथ्< क्रिया [अक.] [Verb] खौलना, उबलना to boil, etc. {म.} एक्कं व सेल-सिहरं *अट्टइ* कुलिसंमि गिरि-जालं। (एकमिव शैलशिखरं क्वथति कुलिशे गिरिजालम्) गउडवहो,पृष्ठ 26/153

अट्टालअ (अट्टालग / अट्टालय) aṭṭālaa (aṭṭālaga / aṭṭālaya) अट्टालक< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] महल का उपरिभाग, अटारी uppermost storey or floor, attic, big building mansion {म.} नयरं न होइ *अट्टालएहि* पायारतुंगसिहरेहिं। (नगरं न भवत्यट्टालकै: प्राकारतुङ्गशिखरै:) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 92/270

अट्ठम aṭṭhama अष्टम विशेषण [Adjective] आठवाँ eighth {शौ.} (चेटी-) इमं *अट्ठमं* पओट्ठं पविसदु अज्जो। (इमम् अष्ठमं प्रकोष्ठं प्रविशतु आर्य:) मृच्छ., पृष्ठ 242/4

अडवी (अडवि) aḍavī (aḍavi) अटवी/ अटवि< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गहरा वन, भयंकर जंगल dense forest, place to roam about, forest, jungle, etc. {शौ.}(विदूषक-) तुमं दाव *अडवीदो* अडवीं आहिण्डंतो णरणासिआलोलुवस्स जिण्णरिच्छस्स कस्स वि मुहे पडिस्ससि। (त्वं तावदटवीतो sटवीमाहिण्डमानो नरनासिकालोलुपस्स जीर्णर्क्षस्यः कस्यापि मुखे पतिस्यसि) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 5, पृष्ठ 28/2

अणंग aṇaṅga अनंग< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] कामदेव, देहरहित, अशरीरी, आकृतिहीन, बारह अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन शास्त्र (जैन परम्परानुसार) cupid or kāmadeva (because kāmdeva was reduced to ashes by a curse of shiva) bodiless, incorporeal {म.} सब्भावेण य नेहो पंच वि बाणा *अणंगस्स*। (सद्भावेन च स्नेह: पञ्चापि बाणा अनङ्गस्य) वज्जालग्गं, अणंगवज्जा,पृष्ठ 132/391

अणत्थ (अणट्ठ) aṇattha (aṇaṭṭha) अनर्थ< संज्ञा [Noun] व्यर्थ, हानिकारक meaningless, useless, harmful {म.} सच्चो खु लोअप्पवादो सङ्घआरिणो *अणत्थ* त्ति। (सत्यः खलु लोकप्रवादः 'सङ्घचारिणो sनर्था' इति) अविमार.,भास., गाथा-5,पृष्ठ 118/2

अणद्धाअ aṇaddhāa अनध्याय< संज्ञा (नपुं.) [Noun] अवकाश का दिन, न पढना, पढ़ाई में विराम, वह समय जब कि इस प्रकार का विराम होता है या होना चाहिए, किसी पूज्य अतिथि के सम्मान में दिया गया अवकाश the day of taking off from the study, day for vacation, etc. {शौ.}

(विदूषक-) अहं अट्ठमीए *अणद्धाए* धारइस्सं। (अट्टमष्टम्यामनध्याये धारयिष्यामि) चारु. भासनाटक., गाथा-28/1, पृष्ठ 212

अणभिप्पेद aṇabhippeda अनभिप्रेत< विशेषण [Adjective] अनभिप्रेत, अप्रिय undesired, unintended, etc. {शौ.} (चर-) तुमं दाव एत्तिअं जाणासि कमलाणं चन्दो *अणभिप्पेदो* त्ति। (त्वं तावदेतावत् जानासि कमलानां चन्द्रोऽनभिप्रेत इति) मुद्रा., श्लोक-18/1, पृष्ठ 7

अणरह aṇaraha अनर्ह< विशेषण [Adjective] अयोग्य, नालायक, अनर्ह unfit, unworthy {म.} ते *अणरह* व्व गव्वस्स उत्तुणा कहं ण लज्जंति। (तेऽनर्हा इव गर्वस्य गर्विण: कथं न लज्जन्ते) गउडवहो, पृष्ठ 15/83

अणवत्था aṇavatthā अनवस्था< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] अस्थिरता, अवस्था का अभाव, अव्यवस्था, एक तर्क दोष restlessness, vacillation, confusion, etc. {शौ.} (धात्री-) अहो *अणवत्था* किदन्तस्स। (अहो अनवस्था कृतान्तस्य) भास नाटक., अविमार., अंक-6, पृष्ठ 173

अणवराध aṇavarādha अनपराध< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] निरपराध, अपराध रहित innocent, guiltless {शौ.} (चन्दनक-) एसो *अणवराधो* सरणाअदो अज्जचारुदत्तस्स पवहणं आरूढो पाणप्पदस्स मे अज्जसव्विलअस्स मित्तं, अण्णदो राअ-णिओओ। (एसोऽनपराध: शरणागत: आर्यचारुदत्तस्य प्रवहणमारूढ: प्राणप्रदस्य मे आर्यशर्विलकस्य मित्रम्, अन्यतो राजनियोग:) मृच्छ., पृष्ठ 345/6

अणवेक्खिद (अणवेक्खिय) aṇavekkhida (aṇavekkhiya) अनपेक्षित< विशेषण [Adjective] अनावश्यक, नहीं सोचा हुआ disregarded, unexpected, not required, etc. {शौ.} (उर्वशी-) अम्महे! लहुअं तुए *अणवेक्खिदं* उज्झिदम्हि। (अहो! लघु त्वयानवेक्षितमुज्झितास्मि) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15/2, पृष्ठ 165

अणारिय (अणज्ज) aṇāriya (aṇajja) अनार्य< विशेषण [Adjective] अनार्य, आर्यभिन्न, खराब, पापी, जो गुणवान सज्जन न हो non-Aryan, impious, non-cultured, who is not virtuous person, etc. {अर्ध मा.} अणारिय दंसणतो पडिया।

(अनार्या दर्शनतः पतिताः) सूयगडंगसुत्तं 2/6/804

अणिट्ठ aṇiṭṭha अनिष्ट< विशेषण [Adjective] विशेषण [Adjective] अनिष्ट, न चाहा हुआ, अननुकूल, अनर्थ, दुर्भाग्यपूर्ण, अमंगलसूचक evil, harmful, etc. {शौ.} (सीता-) *अणिट्ठाणि* णिमित्ताणि अ दिस्सन्ति। (अनिष्टानि निमित्तानि च दृश्यन्ते) अभिषेक., भासनाटक., श्लोक-3/5,पृष्ठ 355

अणिदिट्ठकालण a-niḍiṭṭha-kālaṇa अनिर्दिष्टकारण< संज्ञा (नपुं.) [Noun] बिना कारण बताये without indicating the reason, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) हला! कहिं दाणिं *अणिदिट्ठकालणं* गच्छीअदि। (हला! क्वेदानीमनिर्दिष्टकारणं गम्यते) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/2, पृष्ठ 159

अणिरिण a-ṇiriṇa अनृण< विशेषण [Adjective] ऋणमुक्त, ऋण-वर्जित, कर्ज-रहित debtless, loan free {शौ.} (चेटी-) किंणु खु तस्स जणस्स दादव्वं भविस्सदि त्ति एदण्णिमित्तं भट्टिदारओ सन्तप्पदि त्ति भट्टिदारिआ तव हत्थे दइअ अय्यउत्तं *अणिरिणं* करिस्सामि त्ति एवं करेदि। (किन्नु खलु तस्मै जनाय दातव्यं भविष्यती त्येतन्निमित्तं भर्तृदारकः संतप्यत इति भर्तृदारिका तव हस्ते दत्वार्यपुत्रमनृणं करिष्यामीत्येवं करोति) चारु., भासनाटक., श्लोक-15/3, पृष्ठ 234

अणुइदवेअणा aṇuida-veaṇā अनुचित-वेदना< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] अयोग्य पीडा, अनुचित दुःख, बिना कारण की परेशानी unfair, anxiety, improper, worry, etc. {शौ.} (चेटी-) ण मं *अणुइदवेअणं* दुक्खिदं अवलोअदि त्ति। (न मामनुचितवेदनां दुःखितामवलोकयतीति) विक्रमो.,कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 152

अणुऊल aṇuūla अनुकूल< विशेषण [Adjective] अनुकूल, अप्रतिकूल, प्रसन्न favourable, congenial, etc. {शौ.} (विदूषक-) जदा पुणो वि देव्वं *अणुऊलं* भविस्सदि। (यदा पुनरपि दैवमनुकूलं भविष्यति) मृच्छ., पृष्ठ 77/1

अणुकंप aṇu-kampa अनु √कम्प्< क्रिया [सक.] [Verb] दया करना, भक्ति करना, हित करना to act with full of kindness, to show mercy, etc. {शौ.} (चन्दनदास-) सग्गं गदा खु ते देवा णन्दा जे दुक्खिदं जणं

अणुकंपंति। (स्वर्गं गताः खलु ते देवा नन्दा ये दुःखितं जनमनुकम्पन्ते) मुद्रा., श्लोक 4, पृष्ठ 95/7

अणुकिद aṇukida अनुकृत< विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] अनुकरण किया हुआ, नकल किया हुआ imitated, copied, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) *अणुकिदं* अणेण पिदुणो रूवं। (अनुकृतमनेन पितुः रूपम्) मृच्छ., पृष्ठ 319/6

अणुक्कोस aṇukkosa अनुक्रोश< संज्ञा (पुं.) [Noun] दया mercy, pity {शौ.} (विदूषक-) अणणुरूवदाए पदाणस्स *अणुक्कोसो* विअ पडिभादि। (अननुरूपतया प्रदानस्यानुक्रोश इव प्रतिभाति) चारु., भासनाटक., गाथा-15/3, पृष्ठ 234

अणुग्गह aṇuggaha अनुग्रह< संज्ञा (पुं.) [Noun] अनुग्रह, प्रसाद, कृपा, उपकार, आभार, स्वीकृति, सेना के पृष्ठभाग की रक्षा करने वाला दल a favour, kindness, etc. {शौ.} (सख्यौ-) अज्ज *अणुग्गहो* विअ इअं अब्भत्थणा। (आर्य अनुग्रह एवेयमभ्यर्थना) अभि.शाकु., पृष्ठ 149/1

अणुचिट्ठ aṇucitṭha अनु √स्था (अनुतिष्ठ)< क्रिया [सक.] [Verb] समीप रहना, पीछे चलना to perform accordingly, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) ता अजाणंतेण एदिणा एव्वं *अणुचिट्ठिदं*। (तदजानता एतेन एव-मनुष्ठितम्) मृच्छ., पृष्ठ 214/4

अणुचिद (अणुचिय) aṇucida (aṇuciya) अनुचित< विशेषण [Adjective] अनुचित, अयोग्य improper, unreasonable, unbecoming, unseemly, undue, unfair, unjust, etc. {शौ.} (चन्दनदास-) किं ण जाणादि अज्जो जह *अणुचिदो* उवआरो परिहवादो वि महन्तं दुःखं उप्पादेदि। (किं न जानस्यार्यो यथानुचित उपचारः परिभवादपि महद् दुःखमुत्पादयति) मुद्रा., श्लोक-21, पृष्ठ 14/1

अणुणअ aṇuṇaa अनुनय< संज्ञा (पुं.) [Noun] अनुनय, विनय, प्रार्थना entreaty, persuasion, solicitation, supplication {शौ.} (गणिका-) *अणुणओ* वि खु से भाएदि। (अनुनयोऽपि खल्वस्य भाययति) चारु. भासनाटक., गाथा-14/1, पृष्ठ 201

अणुप्पेसिद (अणुप्पेसिय / अणुप्पेसिअ) aṇu-ppesida (aṇu-ppesiya / aṇu-

ppesia) अनुप्रेषित< विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] अनुप्रेषित, पीछे से भेजा हुआ sent, supplied, furnished, dispatched {शौ.} (चेटी-) अज्जए! जेण पदहणेण सह सुवण्ण-दससाहस्सिओ अलंकारओ *अणुप्पेसिदो*। (आर्ये! येन प्रवहणेन सह सुवर्ण-दशसाहस्रिकोऽलङ्कार: अनुप्रेषित:) मृच्छ., पृष्ठ 193/4

अणुमद (अणुमय / अणुमन्निय) aṇu-mada (aṇu-maya / aṇu-manniya) अनुमत< विशेषण [Adjective] समर्थन, सम्मत permitted, allowed, approved, etc. {शौ.} (अनुसूया-) जह अहं देक्खामि तह तस्स *अणुमदं* भवे। (यथाऽहं पश्यामि तथा तस्यानुमतं भवेत्) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., पृष्ठ 52/4

अणुरत्त (अणुरक्क) aṇu-ratta (aṇu-rakka) अनुरक्त< विशेषण [Adjective] अनुरक्त, अनुराग प्राप्त, प्रेम प्राप्त attached to, fond of, addicted to {शौ.} जिणवयणे *अणुरत्ता* जिणवयणं जे करेंति भावेण। (जिनवचनेऽनुरक्ता:, जिनवचनं ये कुर्वन्ति भावेन) समणसुत्तं,पृष्ठ 8/21 {म.} जस्स तुमं अणुरत्ता सो तुज्झ य मंदहणेहओ पुत्ति। (यस्य त्वमनुरक्ता सो तुज्झ य मन्दस्नेह: पुत्रि) वज्जालग्गं, बालासंवरणवज्जा, पृष्ठ 186/543

अणुराअ (अणुराय / अणुराग) aṇu-rāa (aṇu-rāya / aṇu-rāga) अनुराग< संज्ञा (पुं.) [Noun] परस्पर प्रेम, अत्यन्त प्रीति, आसक्ति, मोह attachment, love, affection, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) गुणो क्खु *अणुराअस्स* कालणं। (गुण: खलु अनुरागस्य कारणम्) मृच्छ., पृष्ठ 52/1

अणुलग्ग aṇu-lagga अनुलग्न< विशेषण [Adjective] पीछे लगा हुआ, अनुलग्न, जुडा हुआ attached, etc. {शौ.} (मदनिका-) जेण अज्जआए सुसिणिद्धा दिट्ठी *अणुलग्गा*। (येन आर्याया: सुस्निग्धा दृष्टिरनुलग्ना) मृच्छ., पृष्ठ 191/4

अणुलेवणमल्ल aṇulevaṇa-malla अनुलेपनमाल्य< संज्ञा (नपुं.) [Noun] चन्दन की माला garland of sandal wood, etc. {शौ.} (विदूषक-) ता जाव तत्तभवदो अलंकरीअमाणस्स *अणुलेवणमल्ले* अग्ग-भागी होमि। (तद्यावत्तत्रभवतो ऽलंक्रियमाणस्यानुलेपमाल्येऽग्रभागी

भवामि) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-5, पृष्ठ 219

अणुवन्द aṇuvanda √ अनुवन्द्< क्रिया [सक.] [Verb] वन्दना करना to pray, to salute {शौ.} (विदूषक-) भो चारुदत्त! राअसाळो सण्ठाणो सवट्टेण सीसेण *अणुवन्दिअ* विण्णवेदि। (भोः चारुदत्त! राजश्यालः संस्थानः सपट्टेन शीर्षेणानुवन्द्य-विज्ञापयति) चारु., भासनाटक., गाथा-27/1, पृष्ठ 210

अणुव्वय aṇu-vvaya अणुव्रत< संज्ञा (नपुं.) [Noun] अणुव्रत, हिंसादि पाँच पापों का स्थूल रूप से या एकदेश त्याग करना, साधुओं के महाव्रतों की अपेक्षा लघु व्रत [पुं.] श्रावक धर्म/ अनुसारी व्रत minor vows like to desist from killing, etc. {म.} *अणुव्वय-*दिस-देसाऽणत्थदण्डविरई-सामाइय-पोसहोववासोवभोग-परिभोगा-ऽतिहि-संविभागकलिया। (अणुव्रत-दिग्देश-ऽनर्थदण्ड-विरति-सामायिक-प्रोषधोप-वासोपभोगापरिभोगा ऽतिथिसंविभाग-कलिता) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 4

अणुहव aṇu-hava अनु √भू< क्रिया [अक.] [Noun] अनुभव करना to feel, to experience, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) हला! दिट्ठो मए एसो मणोरहलद्धपिआ-समाअमसुहं *अणुहवंतो* उवहोअक्खमे ओआसे चिट्ठदि त्ति। (हला! दृष्टो मया एष मनोरथलब्धप्रियासमागम-सुखमनुभवन्नुपभोगपक्षमेऽवकाशे तिष्ठतीति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/3, पृष्ठ 180

अणेगंतवाय aṇeganta-vāya अनेकान्तवाद< संज्ञा (पुं.) [Noun] अनेकान्तवाद, एक तत्त्व के बहुत सारे पहलुओं पर विचार करने वाला सिद्धान्त, स्याद्वाद-वस्तु के अनेक धर्मो का कथन करना, स्याद्वाद का सैद्धान्तिक नाम relative pluralism, description of properties of a matter from different aspects, termed as aṇekāntvāda, etc. {शौ.} तस्स भुवणेक्कगुरुणो, णमो *अणेगंतवायस्स*। (तस्य भुवनेकगुरोः, नमो अनेकान्तवादाय) समणसुत्तं,गाथा 660

अणेयंत (अणेगंत) aṇeyanta (aṇeganta) अनेकान्त< संज्ञा (पुं.) [Noun] अनेकान्त, अनिश्चय, नियम का अभाव, एक ही वस्तु में

परस्पर विरोधी अनेक धर्मों की नयापेक्षया अविरोध रूप से प्रतीति, यह जैन धर्म का मूल सिद्धांत है doctrine of manifold predications, relative pluralism, non-absolutism, etc. {शौ.} संति अणंताणंता तीसु वि कालेसु सव्व-दव्वाणि सव्वं पि *अणेयंतं।* (सन्ति अनन्तानन्ता त्रिषु अपि कालेषु सर्वद्रव्याणि सर्वम् अपि अनेकान्तम्) कत्ति.,224, पृष्ठ 156

अण्ण aṇṇa अन्य< सर्वनाम [Pronoun] दूसरा, द्वितीय other, second, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) *अण्णं* बंभणं उवणिमंतेदु भवं। (अन्यं ब्राह्मणमुपनिमन्त्रयतु भवान्) मृच्छ., पृष्ठ 52/1

अण्णधा (अण्णह / अण्णहा) aṇṇadhā (aṇṇaha / aṇṇahā) अन्यथा< अव्यय [Indeclinable] अन्य प्रकार से, विपरीत रीति से otherwise, in another way or manner, etc. {शौ.} (विदूषक-) *अण्णधा* इध उज्जइणीए को अम्हाणं घरविहवं ण जाणादि। (अन्यथा इह उज्जयिन्यां क अस्माकं गृहविभवं न जानाति) मृच्छ., पृष्ठ 176

अण्णय्य (अण्णाय) aṇṇayya (aṇṇāya) अन्याय्य< विशेषण [Adjective] न्याय विरुद्ध, अन्याय unjust, wrongful, unlawful, improper, etc. {शौ.} (देवी-) अइरोवणीदा दे सिस्सा। अवरिणिट्ठिदस्स उवदेसस्स उण *अण्णय्यं* पआसणं। (अचिरोपनीता ते शिष्या। अपरिनिष्ठितस्योपदेशस्य पुनरन्याय्यं प्रकाशनम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17/1, पृष्ठ 253

अण्णा aṇṇā आज्ञा< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] आदेश, अनुमति, आज्ञा order, permission {शौ.} (वीरक-) राअ-*अण्णा* एसा। (राजाज्ञा एषा) मृच्छ., पृष्ठ 348/6

अण्णाणि aṇṇāṇi अज्ञानिन्< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] अज्ञानी, नासमझ, गंवार, मूर्ख, अनजान, चैतन्यता शून्य ignorant (person), fool, etc. {शौ.} सो तेण हु *अण्णाणी* आदसहावा हु विवरीओ। (सः तेन तु अज्ञानी आत्मस्वभावात्तु विपरीतः) अट्ठपाहुड मोक्खपाहुड पृष्ठ 314/55

अण्णापिआसमागम aṇṇā-piā-samāgama अन्याप्रियासमागम< विशेषण [Adjective] दूसरे प्रिय से मिलना, दूसरी प्रेमिका/ प्रेमी से मिलना to meet the second lover, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) मुद्धे! का उण चिंता तुए विणा *अण्णापिआसमाअस्स*। (मुग्धे! का पुनश्चिन्ता त्वया विनान्याप्रिया-समागमस्य) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/3, पृष्ठ 181

अण्णेस aṇṇesa अनु √इष् (अन्वेषय्)< क्रिया [सक.] [Verb] ढूँढना, खोजना, चाहना, वांछना, प्रार्थना करना to search, to look for, to investigate, expected to produce, to pray, etc. {शौ.} (चेटी-) अय्ये! आवन्तिए! को काळो, तुमं *अण्णेसामि*। (आर्ये! आवन्तिके! कः कालः, त्वामन्विष्यामि) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/3, पृष्ठ 17

अण्णोण्ण aṇṇoṇṇa अन्योन्य< सर्वनाम [Pronoun] परस्पर, आपस में, एक दूसरे को mutual, reciprocal, one another, each other {शौ.} (विदूषक-) भो! विवहन्ता इव सअडिअं दुव्विणीदवळीवद्दा *अण्णोण्णं* सङ्किलेसन्ति। (भोः! विवहन्ताविव शकटिकां दुर्विनीतवलीवर्दावन्योन्यं क्लेशयतः) चारु., भासनाटक., गाथा-28/1, पृष्ठ 211

अत्तकेरअ attakeraa आत्मीय< विशेषण [Adjective] अपना, आत्मीय own, self relation {शौ.} (मदनिका-) अज्जए! *अत्तकेरअं* पि ण जाणामि ? (आर्ये! आत्मसम्बन्धनिमपि न जानामि ?) मृच्छ., पृष्ठ 219/4

अत्ता (अत्त) [देशज] **attā (atta)** माता (मातृ)< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] माता, सासू, बुआ, सखी, पूजनीय महिला a mother, as a term of respect or endearment, mother-in-law, etc. {शौ.} (प्रथमा चेटी-) अज्जए! *अत्ता* आणवेदि। (आर्ये! माता आज्ञापयति) मृच्छ., पृष्ठ 192/4

अत्तिआ [देशज] **attiā** माता (मातृ)< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] माता, सासू, बुआ, सखी, पूजनीय महिला a mother, as a term of respect or endearment, mother-in-law, etc. {शौ.} (चेटी-) अज्ज! एसा क्खु अम्हाणं अज्जाआए *अत्तिआ*। (आर्य! एषा खल्वस्माकम् आर्याया माता) मृच्छ.,पृष्ठ 244/4

अत्थ attha अर्थ< संज्ञा (पुं.) [Noun] अर्थ, धन property, money, meaning, etc. {म.} *अत्थो* जसो न लब्भइ सो वि अमित्तो कओ होइ। (अर्थो यशो न लभ्यते स [अपि] चामित्र: कृतो भवति) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 28/82

अत्थ attha अस्त< विशेषण [Noun/ Adjective] अस्त, जहाँ सूर्य अस्त होता है वह पर्वत, अविद्यमान set, sunk, etc. {शौ.} (विदूषक-) *अत्थं* आसादिदो भअवं सुय्यो दीसइ दहिपिण्डपण्डरेसु पासादेसु अग्गापणाळिन्देसु पसारिअगुळमहु रसङ्कदो विअ। (अस्तमासादितो भगवान् सूर्यो दृश्यते दधिपिण्डपाण्डरेषु प्रासादेष्व-ग्रापणालिन्देषु प्रसारितगुल-मधुरसङ्कत इव) अविमार., भास., गाथा-7/2, पृष्ठ 128

अत्थणिमित्त attha-ṇimitta अर्थनिमित्त< संज्ञा (नपुं.) [Noun] धन के विषय में, धन के निमित्त, पैसों के लिए for money, puspose of wealth {शौ.} (गणिका-) ण खु अय्येण *अत्थणिमित्ता* चिन्ता कादव्वा। (न खल्वार्येणार्थनिमित्ता चिन्ता कर्त्तव्या) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 220

अत्थाह atthāha अस्ताघ< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] अगाध, थाहरहित, गंभीर, नासिका के ऊपरी भाग तक डूब सकने वाला गहरा जलाशय very deep, etc. {म.} चिंतामंदरमंथाणमंथिए वित्थरम्मि *अत्थाहे*। (चिन्तामन्दरमन्थानमथिते विस्तारेऽस्ताघे) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 3/19

अत्थाहिलास atthāhilāsa अस्ताभिलाष< संज्ञा (पुं.) [Noun] अस्त होने की अभिलाषा वाला, अस्ताचल की अभिलाषा वाला desire to set, sunken wish, etc. {म.} (पुरुष-) अमच्च *अत्थाहिलासी* सूरो। (अमात्य अस्ताभिलाषी सूरः) मुद्रा., श्लोक 19, पृष्ठ 62/4

अत्थि atthi अस्ति < अव्यय [Indeclinable] है, विद्यमान, मौजूद, सत्व सूचक अव्यय है, प्रदेश, अवयव to be, live, exist, belong to, to fall, to the share of, to arise, spring out, occur, to reside, etc. {म.} (पुरुष-) देव *अत्थि* मे कुडुम्बभरणपज्जत्तो अत्थो। (देव अस्ति मे कुटुम्बभरणपर्याप्तोऽर्थः) मुद्रा.,श्लोक 15,पृष्ठ 89/6

अदक्खिण adakkhiṇa अदक्षिण< विशेषण [Adjective] अदक्ष, भोला-भाला, नादान, सरल inefficient, incompetent, unskillful, etc. {शौ.} (उर्वशी-) सहि! *अदक्खिणं* संदेहदि मे हिअअं। (सखि अदक्षिणं संदेग्धि मे हृदयम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/3, पृष्ठ 181

अदिक्कन्द adi-kkanda अतिक्रान्त< विशेषण [Adjective] उल्लंघन किया हुआ, आगे बढ़ा हुआ, आगे गया हुआ, परे पहुँचा हुआ आदि, जीता हुआ, अतीत विषय infringed, violated, exceeded, forwarded, etc. {शौ.} (वासवदत्ता-) अय्यउत्त- पक्खवादेण *अदिक्कन्दो* समुदाआरो। (आर्यपुत्रपक्षपातेनातिक्रान्तः समुदाचारः) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/2, पृष्ठ 14

अदिघोर adi-ghora अतिघोर < विशेषण [Adjective] अतिघोर, अति कठिन, बड़ा संकट, अति भयंकर, विकट huge, horrible, monstrous, dreadful, etc.{शौ.} (धारिणी-) *अदिघोरे* क्खु पुत्तओ सेनावदिणा णिउत्तो। (अतिघोरे खलु पुत्रकः सेनापतिना नियुक्तः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-14/5, पृष्ठ 324

अदिदुब्बळ adi-dubbaḷa अतिदुर्बल< विशेषण [Adjective] अतिदुर्बल, अत्यंत कमजोर, शक्तिहीन extremely weak, etc. {शौ.} (नन्दगोप-) भट्टा! *अदिदुब्बळा* मे बाहा मन्दळषदिषं वाळअं गह्णिदुं ण षमत्था। (भर्तः! अतिदुर्बलौ मे बाहू मन्दरसदृशं बालकं ग्रहीतुं न समर्थौ) बाल., भासनाटक., श्लोक-20/1, पृष्ठ 521

अदिमुद्ध adi-muddha अतिमुग्ध< संज्ञा (नपुं.) [Noun] भोला-भाला simple and honest, innocent, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) *अदिमुद्धो* दाणिं तुमं जो अमच्चरक्खसेण वि अणवगाहिदपुव्वं अज्जचाणक्कबुद्धिं अवगाहिदुं इच्छसि। (अतिमुग्ध इदानीं त्वं योऽमात्यराक्षसेनाप्यनवगाहितपूर्वामार्य चाणक्यबुद्धिमवगाहितुमिच्छसि) मुद्रा., श्लोक 3, पृष्ठ 83/6

अदिहि adihi अतिथि < संज्ञा (पुं.) [Noun] अतिथि, आगन्तुक, जो एक रात रहे guest, etc. {शौ.} (अनसूया-) हला सउन्दले! उइदं णो पज्जुवासणं *अदिहीणं।* (हला शकुन्तले!

उचितं नः पर्युपासनमतिथीनाम्) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-23, पृष्ठ 16/1

अदिहिजण (अइहिजण, अतिहिजण) adihi-jaṇa (aihi-jaṇa, atihi-jaṇa) अतिथिजन < संज्ञा (पुं.) [Noun] जिसके आने की तिथि नियत न हो वह, पाहुन, यात्री, भिक्षुक (तापसी) guests, visitors, etc. {शौ.} तवोवणाणि नाम *अदिहिजणस्स* सअगेहं। (तपोवनानि नामातिथिजनस्य स्वगेहम्) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-7/1, पृष्ठ 4

अद्ध addha अर्ध/ अर्द्ध < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] आधा, अंश half, semi, hemi {म.} अद्धं महीइ पडियं तुरंगपिट्ठिट्ठियं *अद्धं*। (अर्धं मह्यां पतितं तुरंगपृष्ठ-स्थितमर्धम्) वज्जालग्गं, सुहउवज्जा, पृष्ठ 60/174

अद्धरत्त addha-ratta अर्धरात्र < संज्ञा (पुं.) [Noun] आधी रात, मध्य रात्रि का समय, निशीथ midnight, etc. {शौ.} (नलिनिका-) संवुत्तं *अद्धरत्तं*। (संवृत्तोऽर्धरात्रः) अविमार., भास., गाथा-18/3, पृष्ठ 143

अधण्ण a-dhaṇṇa अधन्य < विशेषण [Adjective] अधन्य, दुर्भाग्यशाली, अभागा unlucky chap, unfortunate, ill fated, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) कुदो से *अधण्णस्स* मोक्खो। (कुतोऽस्याधन्यस्य मोक्षः) मुद्रा., श्लोक 3, पृष्ठ 83/6

अधिअ (अधिग) adhia (adhiga) अधिक< विशेषण [Adjective] अधिक, ज्यादा, विशेष more, etc. {शौ.} (विदूषक-) *अधिअं* उस्सुक्कावेदि मं साहिज्जमाण-बहु विह-भक्ख-भोअण-गन्धो। (अधिकमुत्सुकायते मां साध्यमानबहु विध-भक्ष्य-भोजनगन्धः) मृच्छ., पृष्ठ 236/4

अधिअदर adhia-dara अधिकतर < विशेषण [Adjective] अतिरिक्त, बहुत अधिक more, in a greater degree {शौ.} (विदूषक-) भोदि! को एसो पट्टपावारअपाउदो *अधिअदरं* अच्चब्भुदपुणरुत्तालंकारालंकिदो अंगभंगेहि परिक्खलंतो इदो तदो परिब्भमदि। (भवति! क एष पट्टप्रावारक-प्रावृतो अधिकतरमत्यद्भुपुनरुक्तालङ्कारा-लङ्कृतः अङ्गभङ्गैः परिस्खलन्नितस्ततः परिभ्रमति) मृच्छ., पृष्ठ 243/4

अधिअरणभोइअ adhiaraṇa-bhoia अधिकरणभोजक < संज्ञा (पुं.) [Noun] न्यायाधीश a court dignitary, a judge

{शौ.} (शोधनक-) एदु एदु *अधिअरणभोइओ* एदु। (एतु एतु अधिकरणभोजक एतु) मृच्छ., पृष्ठ 459/9

अन्तजा antajā अन्त्यज< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] अन्त्यज, शूद्र, सात नीच जातियों (चांडाल आदि) में से एक a low caste man, one of the seven inferior tribes (chāṇḍāla) {शौ.} (विदूषक-) सा राअ-दारिआ सअं *अन्तज* त्ति। (सा राजदारिका स्वयमन्त्यज इति) अविमार., भास., गाथा-5/2, पृष्ठ 118

अन्नेसणकज्ज annesaṇa-kajja, अन्वेषणकार्य< संज्ञा (नपुं.) [Noun] अन्वेषणकार्य, शोधकार्य, ढूंढने का काम अन्वेषणकार्य, शोधकार्य, ढूंढने का काम investigation work, research work, etc. {म.} तुह *अन्नेसणकज्जम्मि* सुहय सा हरिसवियसियकवोला। (तवान्वेषणकार्ये सुभग सा हर्षविकसितकपोला) वज्जालग्गं, ओलग्गावियावज्जा, पृष्ठ 144/424

अपंडिद a-paṇḍida अपण्डित < विशेषण [Adjective] अपण्डित, जो विद्वान या बुद्धिमान न हो, मूर्ख, अनाड़ी, जिसमें रुचि तथा गुणों की सराहना करने का अभाव हो not learned or wise, foolish, ignorant, wanting in skill, taste, appreciation, etc. {शौ.} (विदूषक-) भो वअस्स! सव्वहा तुवं भणासि, मुक्खो मेत्तेओ *अपंडिदो* मेत्तेओ त्ति। (भो वयस्य! सर्वथा त्वं भणसि, मूर्खो मैत्रेयोऽपण्डितो मैत्रेय इति) चारु., भासनाटक., गाथा-15/3,पृष्ठ 231

अपराजिदा (अपराइया) aparājidā (aparāiyā) अपराजिता < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] एक प्रकार की औषधि जो कि ताबीज के रूप में भुजा में बांधी जाती है, आठवें बलदेव की माता, एक दिशा कुमारीदेवी, अंजनाद्रि पर्वत पर स्थित एक पुष्करिणी (जैन परम्परानुसार) a kind of herbal plant fasten round the wrist and serving as a charmer, an amulet, a kind medicine, a herb, etc. {शौ.} (प्रथमा-) सुणादु महाराओ! एसा *अपराजिदा* णाम ओसही इमस्स जातकम्मसमए भअवदा मारीएण दिण्णा। (शृणोतु महाराजः। एषाऽपराजिता नामौषधिरस्य जातकर्मसमये भगवता मारीचेन दत्ता) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/7, पृष्ठ 127

अप्पआस (अप्पगास) a-ppaāsa (a-ppagāsa) अप्रकाश< संज्ञा (पुं.) [Noun]

अप्रकाश, अन्धकार darkness, gloom, etc. {शौ.} (बकुलावलिका-) अज्ज गोदम। अहं अप्पआसे चिट्ठामि। (आर्य गौतम! अहमप्रकाशे तिष्ठामि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 302/4

अप्पओअण a-ppaoaṇa अप्रयोजन< विशेषण [Adjection] उद्देश्यरहित, बिना प्रयोजन के aimless, without purpose {शौ.} (चेटी-) *अप्पओअणदाए* गणि-आभावस्स अज्जुआ कं पि कामेदि त्ति तक्केमि। (अप्रयोजनतया गणिका-भावस्याज्जुका कमपि कामयत इति तर्कयामि) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 213

अप्पडिलोम a-ppaḍi-loma अप्रतिलोम< विशेषण [Adjective] अनुकूल, अनजान favourable, suitable, unknown, unfamiliar, etc. {शौ.} (तापसी-) अपरिइद स वि दे *अप्पडिलोमो* संवुत्तो त्ति। (अपरिचितस्यापि तेऽप्रतिलोमः संवृत्त इति) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19/7, पृष्ठ 125

अप्पमत्त a-ppamatta अप्रमत्त< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] जो प्रमादी न हो not intemperate, etc. {म.} (नेपथ्ये-) *अप्पमत्ता* सएसु सएसु गुम्मट्ठाणेसु होध। (अप्रमत्ताः स्वकेषु स्वकेषु गुल्मस्थानेषु भवत) मृच्छ., पृष्ठ 326/6

अप्पमुळळ (अप्पमुल्ल) appamuḷḷa (appamulla) अल्पमूल्य< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] अल्प मूल्य, सस्ता low price, cheap {शौ.} (विदूषक-) अहो *अप्पमुळळस्स* सुवण्णभण्डअस्स किदे सदसहस्स मुळळा मुत्तावळी णीआदइदव्वा। (अहो अल्पमूल्यस्य सुवर्णभाण्डकस्य कृते शतसहस्रमूल्या मुक्तावली निर्यातयितव्या) चारु., भासनाटक., गाथा-18/3, पृष्ठ 236

अप्पसण्ण a-ppasaṇṇa अप्रसन्न< विशेषण [Adjective] अप्रसन्न, उदासीन displeased, unhappy, out of sorts {शौ.} (विदूषक-) वअस्स! दिट्ठिआ इमस्स अविणअस्स *अप्पसण्णा* गदा एसा। (वयस्य! दिष्ट्यानेनाविनयेनाप्रसन्ना गतैषा) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-22, पृष्ठ 288/3

अप्पहिय appahiya आत्महित< विशेषण [Adjective] आत्महित, अपने लिए, हितकर

self interest, etc {म.} *अप्पहियं* कायव्वं जइ सक्कइ परहियं च कायव्वं। (आत्महितं कर्त्तव्यं यदि शक्यते परहितं च कर्तव्यम्) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 28/83

अप्पा (अप्प/ अत्ता/ आया) appā (appa/ attā/ āyā) आत्मन्< संज्ञा (पुं.) [Noun] आत्मा, जीव, चेतन soul, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) एत्थ मए *अप्पा* सअं ज्जेव रक्खिदव्वो। (अत्र मया आत्मा स्वयमेव रक्षितव्यः) मृच्छ., पृष्ठ 45/1

अप्पाभरण appābharaṇa अल्पाभरण< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] अल्प आभूषण, थोड़े से आभूषण sporadic ornament, less embellishment, etc. {शौ.} (उर्वशी-) हला चित्तलेहे! अवि रोअदि दे अअं मम *अप्पाभरण*भूसिदो णीलंसुअ-परिग्गहो अहिसारिआवेसो। (हला चित्रलेखे! अपि रोचते तेऽयं ममाल्पाभरणभूसितो नीलांशुकपरिग्रहो ऽभिसारिकावेषः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/3, पृष्ठ 180

अप्पिअ (अप्पिय) appia (appiya) अप्रिय< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] अप्रीतिकर, मन का दुःख, चित्त की शंका, अप्रिय disliked, disagreeable, unkind, offensive, grieve, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) अप्पिअं एव्व संवुत्तं। (अप्रियमेव संवृत्तम्) अभि.शाकु., पृष्ठ 262/4

अपुव्व a-puvva अपूर्व< विशेषण [Adjective] अनोखा, असाधारण, जैसा पहले न हुआ हो, अद्वितीय not having existed before, wonderful, extraordinary, incredible, etc. {शौ.} (नटी-) पढमं एव्वं आणत्तं अहिण्णाणसाउन्दलं णाम *अपुव्वं* णाडअं पओए अधिकरीअदु त्ति। (प्रथममेवाज्ञप्तमभिज्ञान-शाकुन्तलं नामापूर्वं नाटकं प्रयोगेऽधिक्रियतामिति) अभि.शाकु., पृष्ठ 112/1

अप्पुल्लअ appullaa आत्मीय< विशेषण [Adjective] अपना, आत्मीय related to one's own self or family, own {म.} रमइ अ चरिए *अप्पुल्लअम्मि* खिज्जइ अ णिअअ-सीलेण। (रमते च चरिते आत्मीये खिद्यते च निजकशीलेन) गउडवहो, पृष्ठ 147/998

अप्फुण्ण [देशज] **apphuṇṇa** अपूर्ण< विशेषण [Adjective] अपूर्ण, अधूरा incomplete, etc. {म.} दूमिअमिव *अप्फुण्णं* व पहरिसुच्चं व इह हिअअं।

(दूनमिवापूर्णमिव प्रहर्षोच्चमिवेह हृदयम्) गउडवहो, पृष्ठ 17/98

अबला abalā अबला< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] शक्तिहीना, अबला powerless, woman, etc. {शौ.} (मदनिका-) सहीजणचित्ताणुवत्ती *अबला*जणो भोदि। (सखीजनचित्तानुवर्ती अबलाजनो भवति) मृच्छ., पृष्ठ 192/4

अब्भंतर abbhantara आभ्यन्तर< विशेषण/ संज्ञा [Noun/ Adjective] भीतर की/ का, भीतरी, समीप का, भीतर में inner, inside, nearest, internal {म.} साहेइ अंगणं चिय घरस्स *अब्भंतरे* लच्छिं। (कथयत्यङ्गणमेव गृहस्याभ्यन्तरे लक्ष्मीम्) वज्जालग्गं, पियाणुरायवज्जा, पृष्ठ 136/403

अब्भत्थिद (अब्भत्थिय) abbhatthida (abbhatthiya) अभ्यर्थित< विशेषण [Adjective] prayed, solicited, requested {शौ.} (सूत्रधार-) अय्ये! किं अत्थि अब्भत्थिदं। (आर्ये! किमस्त्यभ्यर्थितम्) चारु., भासनाटक., अंक-1,पृष्ठ 4

अब्भवहार abbhavahāra अभ्यवहार< संज्ञा (पुं.) [Noun] पकवान, भोजन fried delicacy, any cooked article rich with fat, a type of cookie, delicious cooked food, etc. {शौ.} (विदूषक-) तहि पंचविहस्स *अब्भवहारस्स* उवणदसंभारस्स जोअणं पेक्खमाणेहि सक्कं उक्कंठं विणोदेदुं। (तत्र पञ्चविधस्याभ्य-वहारस्योपनतसंभारस्य योजनां प्रेक्षमाणाभ्यां शक्यमुत्कण्ठां विनोदयितुम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2/2, पृष्ठ 154

अब्भुक्ख abbhukkha अभि √उक्ष्< क्रिया [सक.] [Verb] सींचना, सिचाई करना to irrigate, to water, to spring {म.} रइमंदिरम्मि बाला *अब्भुक्खंती* परिब्भमइ। (रतिमन्दिरे बालाभ्युक्षन्ती परिभ्रमति) वज्जालग्गं, ओलग्गाविया-वज्जा, पृष्ठ 142/422

अब्भुदअ abbhudaa अभ्युदय< संज्ञा (पुं.) [Noun] अभ्युदय, उन्नति, उदय rise, commencement, growth, prosperity, etc. {शौ.} (धारिणी-) एदं किं अच्छरिअं। साहारणो क्खु ताणं मह अ अअं *अब्भुदओ।* (एतत्किमाश्चर्यम्। साधारणः खलु तासां मम चायमभ्युदयः) मालविका.,कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17/5, पृष्ठ 326

अभअ (अभय) a-bhaa (a-bhaya) अभय< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] भय का अभाव, निर्भय, भयमुक्त, धैर्य, जीवन-मरण का अभाव [वि.] निर्भीक free from fear or danger, secure, safe, audacious, etc. {मा.}(भिक्षु-) जेण मे *अभअं* दिण्णं। (येन मे अभयं दत्तम्) मृच्छ., पृष्ठ 447/8

अभअपदाइ abhaa-padāi अभयप्रदायिन्< विशेषण [Adjective] अभय प्रदान करने वाले, बचाने वाले to give fearlessness, to save {शौ.} (चित्रलेखा-) सहि! *अभअप्पदाई* महाराओ जाणादि। (सखि! अभयप्रदायी महाराजो जानाति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10/1, पृष्ठ 145

अभाइणी abhāiṇī अभागिनी< विशेषण [Adjective] अभागिनी, दुर्भाग्यशाली स्त्री unfortunate woman, unlucky{शौ.} (गणिका-) *अभाइणी* अहं अब्भन्तर-प्पवेसस्स। (अभागिन्यहमभ्यन्तरप्रवेशाय) चारु., भासनाटक., गाथा-26/1, पृष्ठ 209

अभिणव abhiṇava अभिनव< विशेषण [Adjective] नया, नूतन, अभिनव recent, new {शौ.} (मागधिका-) भट्टिदारिए! *अभिणवा* खु कहा। (भर्तृदारिके! अभिनवा खलु कथा) अविमार., भासनाटक., गाथा-13/3, पृष्ठ 134

अभिणिवेस abhi-ṇivesa अभिनिवेश< संज्ञा (पुं.) [Noun] संकल्प, आग्रह resolution, pledge, resolve, determination {शौ.} (गणिका-) एसो मे *अभिणिवेसो* अभिजणेण तुळीअदि। (एष मेऽभिनिवेशोभिजनेन तोल्यते) चारु. भासनाटक.,गाथा-17/1,पृष्ठ 202

अभिदो abhido अभित:< क्रियाविशेषण/ अव्यय [Adverb/ Indeclinable] चारों ओर से, सामने से, सब ओर से, निकट from all sides or directions from front side, etc. {शौ.} (वासवदत्ता-) *अभिदो* विअ दे अज्ज वरमुखं पेक्खामि। (अभित: इव ते अद्य वरमुखं पश्यामि) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/2, पृष्ठ 13

अभिप्पाअ (अभिप्पाय / अहिप्पाय) abhippāa (abhippāya / ahippāya) अभिप्राय< संज्ञा (पुं.) [Noun] अभिप्राय, आशय, परिणाम intention, purpose, aim, import, intent, object, etc. {शौ.} (धात्री-) हळा! जाणामि दे *अभिप्पाअं*, अवत्थं

जाणिअ सव्वहा इमं एदेण जोजेहि त्ति। (हला! जानामि तेऽभिप्रायम्, अवस्थां ज्ञात्वा सर्वथेमामेतेन योजयेति) अविमार., भास., गाथा-5/2, पृष्ठ 123

अभिमद (अभिमय) abhi-mada (abhi-maya) अभिमत< विशेषण [Adjective] अभिमत, आदर पाना, इष्ट, अभिप्रेत opinion, view, consent, etc {शौ.} (अदिति-) जादे! भत्तुणो *अभिमदा* होहि। अवस्सं दीहाऊ वच्छओ उहअकुलणन्दणो होदु। (जाते! भर्तुरभिमता भव। अवश्यं दीर्घायुर्वत्सक उभयकुलनन्दनो भवतु) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-28/7, पृष्ठ 132

अभिरम abhi-rama अभिरम [अभि √रम्]< क्रिया [अक.] [Verb] तल्लीन होना, आसक्ति करना, प्रीति करना, संभोग करना, क्रीड़ा करना to be engrossed, to be pleased or delighted, to please or gratify oneself, etc. {शौ.} (मदनिका-) जदो दाव अज्जआए दिट्ठी इध *अभिरमदि* हिअअं अ, तस्स कारणं किं पुच्छीअदि ? (यतस्तावद् आर्याया दृष्टिरिह अभिरमते हृदयञ्च, तस्य कारणं किं पृच्छयते ?) मृच्छ., पृष्ठ 191/4

अभिवाद (अभिवादअ / अभिवाय) abhi-vāda (abhi-vādaa / abhi-vāya) अभि √वादय्< क्रिया [सक.] [Verb] प्रणाम करना, नमस्कार करना to salute, etc. {म.} (हिडिम्बा-) उम्मत्तअ! *अभिवादेहि* पितरं। (उन्मत्तकं! अभिवादय पितरम्) मध्यम., भासनाटक., श्लोक-1/1, पृष्ठ 437

अभीलस (अभिळस) ahīlasa (abhaiḷasa) अभि√लष्< क्रिया [सक.] [Verb] अभिलाषा करना, चाहना to wish, to desire, to longing {शौ.} (वासवदत्ता-) अह केण खु दाणिं *अभीळसदि*। (अथ केन खल्विदानीम-भिलषति) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/2, पृष्ठ 14

अभूमि a-bhūmi अभूमि< संज्ञा (नपुं.) [Noun] अभूमि, अविषय, आश्रय रहित, खाली स्थान no subject for, vacant post, etc. {म.} (पुरुष-) सन्तुं पावं। *अभूमी* खु एसो अविणअस्स। (शान्तं पापम्। अभूमिः खल्वेषोऽविनयस्य) मुद्रा., श्लोक 15, पृष्ठ 88/4

अमच्च amacca अमात्य< संज्ञा (पुं.) [Noun] मंत्री, अमात्य secretary, minister (in ancient times) {शौ.} (धात्री-) सुदं च

मए भट्टिणीए समीवे *अमच्चेहि* किळ भणिदं ण सो तादिसो दुक्खुळजो त्ति। (श्रुतं च मया भट्टिन्याः समीपेऽमात्यैः किल भणितं न स तादृशः दुष्कुलज इति) अविमार., भासनाटक., गाथा-4/2, पृष्ठ 123

अमच्चरक्खस amacca-rakkhasa अमात्यराक्षस< संज्ञा (पुं.) [Noun] अमात्यराक्षस, घनानंद का प्रमुख मंत्री, राक्षस Amātya Rakkshasa chief minister of Ghanānanda (of Nanda dynasty) {शौ.} (चर-) किंदु उण अत्थि एत्थ णअरे *अमच्चरक्खसेण* सह पढमं समुप्पण्ण-सिणेहबहुमाणा तिण्णि पुरिसा देवस्स चन्दसिरिणो सिरिं ण सहन्दि। (किंतु पुन अस्त्यत्र नगरेऽमात्यराक्षसेन सह प्रथमं समुत्पन्नस्नेह बहुमानास्त्रयः पुरुषाः देवस्य चन्द्रश्रिय: श्रियं न सहन्ते) मुद्रा., श्लोक-19/1, पृष्ठ 8

अमच्चवग्ग amacca-vagga अमात्यवर्ग< संज्ञा (पुं.) [Noun] अमात्यवर्ग, मंत्रीवर्ग group of ministers {म.} (तारा-) ता *अमच्चवग्गेण* सह सम्मन्तिअ गन्तव्वं। (तदमात्यवर्गेण सह संमन्त्र्य गन्तव्यम्) अभिषेक., भासनाटक., गाथा-9/1, पृष्ठ 323/1

अमल amala अमल< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] निर्मल, स्वच्छ, मल रहित, भगवान् ऋषभदेव के एक पुत्र का नाम (जैन परम्परानुसार) clear, clean, stainless, etc. {म.} *अमला* असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्तसंसारी। (अमला असक्लिष्टाः, ते भवन्ति परीतसंसारिणः) समणसुत्तं, पृष्ठ 8/21

अमिअ (अमिय / अमय) amia (amiya / amaya) अमृत< संज्ञा (नपु.) [Noun] अमृत, क्षीर समुद्र का जल nectar, ambrosia, water of milky sea or kṣīrasāgara, rector-like pleasant, etc. {शौ.} (उर्वशी-) *अमिअं* क्खु दे वअणं। (अमृतं खलु ते वचनम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 11, पृष्ठ 145/1

अमिअगब्भ amia-gabbha अमृतगर्भ, विशेषण [Adjective] अमृत से भरी हुई अमृत से परिपूर्ण full of nectar, full of sweetness, etc. {शौ.} (विदूषक-) णं इमे *अमिअगब्भा* सेवीअंदु चंदवादा। (नन्वेतेऽमृतगर्भाः सेव्यन्तां चन्द्रपादाः)

विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/3, पृष्ठ 181

अमुणिअ (अमुणिय) amuṇia (amuṇiya) अज्ञात< विशेषण [Adjective] अज्ञात, अविदित, मूर्ख not known, ignorant, foolish {म.} इअ *अमुणिअ* वेहव्वागमाहि आलोइऊण ता जस्स। (इति अज्ञात-वैधव्यागमाभिरालोक्य ततः यस्य) गउडवहो, पृष्ठ 31/191

अम्ब amba आम्र< संज्ञा (नपुं., पु.) [Noun] आम फल, आम का पेड़ mango, mango tree {शौ.} (विदूषक-) अहिअ-महु रस्स *अम्बस्स* अजोग्गदाए अट्ठी ण भक्खीअदि त्ति। (अधिकमधुरस्य आम्रस्य अयोग्यतया अस्थि न भक्ष्यत इति) चारु., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 194

अम्हे amhe आवाम् (अस्मद्-प्रथमा-द्विवचन-बहु वचन)/ वयम्< सर्वनाम [Pronoun] हम दोनों, हम सब both of us, we{शौ.} (विदूषक-) उववेसिदा ज्जेव *अम्हे।* (उपवेशिता एव वयम्) मृच्छ., पृष्ठ 76/1

अरण्ण (रण्ण) araṇṇa (raṇṇa) अरण्य< संज्ञा (नपुं.) [Noun] अरण्य, वन, जंगल forest, jungle {शौ.} (विदूषक-)*अरण्णे* मए रुदिअं आसि। (अरण्ये मया रुदितमासीत्) अभि.शाकु., श्लोक-2/2, पृष्ठ 176

अरह (अरिह / अरुह) araha (ariha / aruha) अर्हत्< विशेषण [Adjective] अर्हत्, आदर योग्य, अधिकारी, आदरणीय, जैन धर्म के पूज्य देवता adorable, honourable, etc. {अर्ध मा.} कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थ अज्झत्तदोसा। एताणि चत्ता *अरहा* महेसी ण कुव्वई पावं ण कारवेई। (क्रोधं च मानं च तथैव माया लोभं चतुर्थ अध्यात्म-दोषा। एतानि चत्वारि अर्हत्-महर्षिः नाकुर्वन् पापं न कारयन्) सूय. 1/1/6/26 {शौ.} (उर्वशी-) इअं भअवदे *अरिहणा।* (इयं भगवतेऽर्हणा) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19/5, पृष्ठ 232

अरहंत (अरिहंत / अरुहंत) arahanta (arihanta / aruhanta) अर्हत्< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] अर्हत्, पूजा के योग्य, पूज्य, तीर्थंकरदेव, जिन भगवान्, तीर्थंकर (जो पंचकल्याणक रूप पूजा के योग्य होता है। छियालीस गुण सहित और अठारह दोष रहित समवशरण में विराजमान केवली भगवान्, शरीर सहित जीवनमुक्त

परमेष्ठी दो प्रकार के होते हैं, सामान्य अर्हत् और तीर्थंकर the omniscient Lord, adorable, etc. {शौ.} वंदित्तु तिजगवंदा *अरहंता* भव्वजीवेहिं। (वंदित्वा त्रिजग-द्वंदितान् अर्हत: भव्यजीवै:) अट्ठपाहुड, गाथा-1, पृष्ठ 75

अरिह ariha √ अर्ह्< क्रिया [सक.] [Verb] योग्य होना, पूजा के योग्य होना, पूजा करना to be adorable, to worship, etc. {शौ.} (तारा-) पसीअउ पसीअउ महाराओ। इमस्स जणस्स अणुग्गहं दाव करेउं *अरिहदि* महाराओ।(प्रसीदतु प्रसीदतु महाराज:। अस्य जनस्यानुग्रहं तावत् कर्तुमर्हति महाराजः) अभिषेक., भासनाटक., गाथा-10/1, पृष्ठ 324

अरुणसतपत्त aruṇa-sata-patta अरुणशतपत्र< संज्ञा (नपुं.) [Noun] लाल कमल, लाल रंग के सौ पत्रों वाला red lotus, a red lotus with hundred leafs {मा.} (वकुलावलिका-) सहि! *अरुणसतपत्तं* विअ सोहदि दे चलणं। (सखि अरुणशत-पत्रामिवशोभते ते चरणम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13, पृष्ठ 279/3

अलंकार alaṅkāra अलङ्कार< संज्ञा (पुं.) [Noun] गहना, शोभा, अलंकार, सजावट, सजाने या अलंकृत करने की क्रिया, साहित्यशास्त्र का एक तत्त्व an ornament, act of decorating or ornamenting, jewel, etc. {शौ.} (चेटी-) किं तु जो सो वेस्साजणकेरको *अलंकारको* सो अवहिदो। (किन्तु य: स वेश्याजनस्य अलङ्कारक: सोऽपहृत:) मृच्छ., पृष्ठ 182/3

अलंकिद alaṅkida अलङ्कृत< विशेषण [Adjective]विभूषित, सुशोभित decorated, beautified {शौ.} (दारक-) ता कीस *अलंकिदा* ? (तत् कस्माद् अलङ्कृता?) मृच्छ., पृष्ठ 321/6

अलंकिय (अलंकिअ) alaṅkiya (alaṅkia) अलंकृत< विशेषण [Adjective] विभूषित, सुशोभित decorated, beautified {म.} जं च सविज्जो नमिरो तिसु तेसु *अलंकिया* पुहवी। (यच्च सविद्यो नम्रस्त्रिभिस्तै-रलङ्कृता पृथ्वी) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 30/87

अलंघ a-laṅgha अलङ्घ्य< विशेषण [Adjective] उल्लंघन करने के अयोग्य, उल्लंघन करने के अशक्य not

unsurpassable, not passable, insurmountable, etc. {मा.} (सहजन्या-) सव्वधा णत्थि विहिणो *अलंघणिज्जं* णाम जेण तारिसस्स अणुराअस्स अअं एव्व एक्कवदे अणारिसो पलिणामो संवुत्तो। (सर्वथा नास्ति विधेरलङ्घनीयं नाम येन तादृशस्यानुरागस्यायमेवैकपदेऽन्यादृश: परिणाम: संवृत्त:) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक- 2/3, पृष्ठ 195

अलंवुसा alaṁvusā अलंवुसा< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गुल्म विशेष, एक प्रकार की लता, एक दिक्कुमारी देवी का नाम (जैन परम्परानुसार) a kind of creeper, etc. {म.} रविणो *अलंवुसा*-कुसुम पाडलो बिंबपरिणाहो। (रवेरलंवुषाकुसुमपाटलो बिम्बपरिणाह:) गउडवहो, गाथा-272, पृष्ठ 43

अलिअ (अलिय) alia (aliya) अलीक< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] असत्य वचन, [वि.] खोटा, निष्फल, निरर्थक falsehood, untruth, lie, etc.{शौ.}(दारक-) *अलिअं* तुमं भणासि। (अलीकं त्वं भणसि) मृच्छ., पृष्ठ 321/6

अलीअदक्खिण alia-dakkhiṇa अलीकदक्षिण< विशेषण [Adjective] झूठ बोलने में कुशल skillful liar, clever {शौ.}(मदनिका-) सो ज्जेव *अलीअदक्खिणो* भोदि ? (स एव अलीकदक्षिणो भवति ?) मृच्छ., पृष्ठ 191/4

अले ale अरे< अव्यय [Indeclinable] सम्बोधन में प्रयोग (अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त) used in speech, for expression {मा.} (रक्षिणौ-) *अले* कुम्भीलआ ! कहेहि कहिं तुए एशे मणिबंधणुक्कण्णिणामहेए लाअकीए अंगुलीअए शमाशादिए। (अरे कुम्भीरक! कथय कुत्र त्वयैतन्मणि-बन्धनोत्कीर्णनामधेयं राजकीयमङ्गुलीयकं समासादितम्) अभि. शाकु., पृष्ठ 364/6

अल्लीण allīṇa आलीन< विशेषण [Adjective] आश्लिष्ट, आगत, प्रविष्ट, संगत, योजित, थोड़ा लीन, आश्रित, तल्लीन, तत्पर concealed, hidden, dependent, etc. {म.} *अल्लीणा* रहसागम-परिवत्तिअ-केसवंसुअ-धर व्व। (अलीना रभसागमपरिवर्तित-केशवांशुकधरेव) गउडवहो,गाथा-252,पृष्ठ 40

अवअणीअ a-vaaṇīa अवचनीय< विशेषण [Adjective] अवचनीय, वे सिर पैर की बातें, न कहने योग्य, अश्लील अथवा अनुचित non commitment, improper, dirty, etc. {शौ.} (मालविका-) हला! मा *अवअणीअं* मंतेहि। (सखि! मा अवचनीयं मन्त्रयस्व) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13, पृष्ठ 280/3

अवआस (अवगास / अवयास) avaāsa (avagāsa / avayāsa) अवकाश< संज्ञा (पुं.) [Noun] अवकाश, फुरसत, स्थान, अवस्थान leave, vacation, recess, leisure {शौ.} (मागधिका-) अत्थि *अवआसो*। (अस्त्यवकाशः) अविमार., भास., गाथा-1/3, पृष्ठ 138

अवइद avaida अपकृत< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] अपकृत, अपकार, अहित, जिसका अहित किया गया हो वह misdeed, harmed, injured, wronged {मा.} (संवाहक-) अप्पं वि सुमरदि, बहु अंपि *अवइदं* विसुमरदि। (अल्पमपि स्मरति, बहु कमप्यपकृतं विस्मरदि) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 217

अवइद avaida अवचित< विशेषण [Adjective] अवचित, एकचित gathered, filled, inhabited, collated, etc. {शौ.} (प्रियवंदा-) सहि! *अवइदाइँ* वलिकम्म-पज्जत्ताइँ कुसुमाइँ। (सखि! अवचितानि बलिकर्मपर्याप्तानि कुसुमानि) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., पृष्ठ 53/4

अवऊहण avaūhaṇa अवगूहन< संज्ञा (नपुं.) [noun] आलिंगन embracing, hugging {म.} जइ वच्चसि वच्च तुमं एण्हिं *अवऊहणेण* न हु कज्जं। (यदि व्रजसि व्रज त्वम् इदानीमवगूहनेन न खलु कार्यम्) वज्जालग्गं, पवसियवज्जा, पृष्ठ 124/367

अवक्कन्त ava-kkanta अपक्रान्त< विशेषण [Adjective] बाहर गया हुआ, पीछे हटा हुआ, वापस लौटा हुआ, निकृष्ट escaped, to go back, to back out, etc. {शौ.} (चर-) तिदीओ अमच्चरक्खसस्स दुदीअं हिअअं पुप्फचत्तरणिवासो मणिआरसेट्ठी चन्दणदासो णाम जस्स गेहे कलत्तं णासीकदुअ अमच्चरक्खसो णअरादो *अवक्कन्तो।* (तृतीयोऽमात्यराक्षसस्य द्वितीयं हृदयं पुष्पचत्वरनिवासी मणिकारश्रेष्ठी चन्दनदासो नाम यस्य गेहे

कलत्रं न्यासीकृत्यामात्यराक्षसो नगराद-पक्रान्तः) मुद्रा., श्लोक-19/1, पृष्ठ 9

अवचुण्ण avacuṇṇa अव √चूर्ण< क्रिया (अक.) [Verb] कण बिखेरना, फैलाना, तोड़ना sprinkle powder {म.} *अवचुण्णेति* व दर-रूढ-संठिए वम्महप्पहरे। (अवचूर्णयन्तीव ईषद् रूढसंस्थितान् मन्मथप्रहारान्) गउडवहो, गाथा-766, पृष्ठ 114

अवञ्चिद avañcida अवञ्चित< विशेषण [Adjective] अवञ्चित, अचूक successful, unerring, unmistakable {शौ.} (गणिका-) सुट्ठु तुए किदं। *अवञ्चिदा* दे दिट्ठी। (सुष्ठु त्वया कृतम। अवञ्चिता ते दृष्टिः) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 213

अवणीद (अवणीय) avaṇīda (avaṇīya) अपनीत< विशेषण [Adjective] निकाला हुआ, दूर किया हुआ removed, eliminated, etc.{शौ.} (उर्वशी-) अम्महे सल्लं विअ मे हिअआदो *अवणीदं।* (अहो शल्यमिव मे हृदयादपनीतम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19/5, पृष्ठ 233

अवत्था avatthā अवस्था< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] अवस्था, दशा, अवस्थिति condition, state, position, stage, age {शौ.} (विदूषक-) जइ ईदिसी *अवत्था* अत्थाणं, जादीए दरिद्दो एव्व होमि। (यदीदृश्यवस्थार्थानां, जात्या दरिद्र एव भवामि) चारु., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 228

अवमाणिद avamāṇida अपमानित< विशेषण [Adjective] तिरस्कृत, अपमानित insulted {शौ.} (विदूषक-) अअं अण्णदरो *अवमाणिदो* विअ कुलीणो दीहं णीससदि सेरहो। (अयमन्यतरः अपमानित इव कुलीनो दीर्घः निःश्वसिति सैरिभः) मृच्छ., पृष्ठ 232/4

अवर avara अपर< सर्वनाम [Pronoun] अन्य, दूसरा, तद्भिन्न, पिछला काल या देश, पाश्चात्य, पश्चिम दिशा में स्थित another, different, other, more, second, like, etc. {शौ.} (विदूषक-) को *अवरो* अवदेसो तुह रण्णो ? (कोऽपरोऽपदेशः तव राज्ञः) अभि. शाकु., पृष्ठ 195/2; {शौ.} (वसन्तसेना-) सो अअं अवरो उवाओ। (सोऽयमपर उपायः) मृच्छ., पृष्ठ 217/4

अवरज्झ avarajjha अपराद्ध< विशेषण [Adjective] गुनाह, अपराध, गलती होना mistake, culprit, etc. {शौ.} (अवदातिका-) जेदु भट्टिणी! भट्टिणि ण खु अहं *अवरज्झा।* (जयतु भट्टिनी! भट्टिनि न खल्वहमपराद्धा) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-1, पृ. 251

अवरद्ध avaraddha अपराध< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] अपराध, गलत आचरण criminal, offence, etc. {म.} *अवरद्धेसु* वि खमिउं सुयणो च्चिय नवरि जाणेइ। (अपराधेष्वपि क्षन्तुं सुजन एव केवलं जानाति) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 16/44

अवराइद (अवराइअ) avarāida (avarāia) अपराजित< विशेषण [Adjective] जो जीता न गया हो, अपराजित unconquered, invincible, unsurpassed {शौ.} (पारिपार्श्विक-) सुणसु, वण्णिदो ज्जेव तक्कालकईणं मज्झम्मि मिअङ्कलेहा-कधाकारेण *अवराइदेण।* (श्रृणु वर्णित एव तत्कालकवीनां मध्ये मृगाङ्कलेखाकथा-कारेण अपराजितेन) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 12/1

अवराह avarāha अपराध< संज्ञा (पुं.) [Noun] अपराध, गुनाह, अनिष्ट, बुराई crime, offence, wrong, etc. {मा.} (संवाहक-) पेक्खदु अय्या, भीदाहवा पधरिसिदाहवा आवण्णाहवा सुळभचारित्त-वञ्चण्णहवा *अवराहेदुं* समत्था होन्ति। (पश्यत्वार्या, भीता अथवा प्रधर्षिता अथवा आपन्ना अथवा सुलभचारित्रवञ्चना अथवा अपराधयितुं समर्था भवन्ति) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 216

अवराहि avarāhi अपराधिन् (अपराधी)< विशेषण [Adjective] अपराधी, दोषी, गुनाह करने की प्रवृत्ति वाला व्यक्ति guilty, criminal, etc. {म.} (विदूषक-) *अवराही* सासणीओ। (अपराधी शासनीयः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2/5, पृष्ठ 220

अवलाह ava-lāha अपराध< संज्ञा (पुं.) [Noun] अपराध, जुर्म an offence, a fault, crime, sin, etc. {मा.} (भिक्षु-) एक्केण भिक्खुणा *अवलाहे* किदे अण्णं वि जहिं जहिं भिक्खुं पेक्खदि तहिं तहिं गोणं विअ णासं विन्धिअ ओवाहेदि। (एकेन भिक्षुणा अपराधे कृते अन्यमपि यस्मिन् यस्मिन् भिक्षुं प्रेक्षते, तस्मिन् तस्मिन् गामिव

नासिकां विद्ध्वा अपवाहयति) मृच्छ., पृष्ठ 375/8

अवलेह avaleha अवलेह< संज्ञा (पुं.) [Noun] चटनी, अवलेह licking, lapping, medicine (in the form of jelly) {म.} अग्गंगुलीइ दिज्जउ *अवलेहो* माउलिंगस्स। (अग्राङ्गुल्या दीयतामवलेहो मातुलिंगस्य (मातृलिंगस्य)) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 176/514

अवलोइद ava-loida अवलोकित [अव √लोक्+क्त]< विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] विलोकन किया हु आ, देखा हु आ seen, etc. {आवन्ती} (वीरक-) मए *अवलोइदं* तुए अवलोइदं भोदि ? (मया अवलोकितं त्वया अवलोकितं भवति) मृच्छ., पृष्ठ 343/8

अवसर avasara अवसर< संज्ञा (पुं.) [Noun] अवसर, समय, काल, मौक़ा occasion, opportunity, etc. {म.} एयं वज्जालग्गं सव्वं जो पढइ *अवसरम्मि* सया। (एतद्व्रज्यालग्नं सर्वं यः पठत्यवसरे सदा) वज्जालग्गं, पृष्ठ 2/5

अवसाण avasāṇa अवसान< संज्ञा (नपुं.) [Noun] अवसान, अन्त भाग, बाद में, नाश end, termination, close, death, demise, etc. {शौ.} (विदूषक-) ण विसुरामि। किंतु सव्वं कहिअ *अवसाणे* उण तुए परिहासविअप्पओ एसो ण भूदत्थे ति आचक्खिदं। (न विस्मरामि। किंतु सर्वं कथयित्वाऽवसाने पुनस्त्वया परिहास-विजल्प एष न भूतार्थं इत्याख्यातम्) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-8/6, पृष्ठ 100

अवस्सं avassam अवश्यम्< अव्यय [Indeclinable] जरूर, निश्चय ही, आवश्यक रूप से, अनिवार्य रूप से, यकीनन necessarily, inevitably, surely, certainly {शौ.} (विदूषक-) तहि दीहाउणा *अवस्सं* संभाविदव्व त्ति। (तत्र दीर्घायुषावश्यं संभावितव्या इति) अभि.शाकु., पृष्ठ 203/2

अवहत्थिदलज्जा avahitthida-lajjā अपहस्तितलज्जा< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] सब लाज छोड़ा हु आ, लज्जा रहित brazen, shameless, brazen-faced, etc. {शौ.} (उर्वशी-) अह इं! अअं मे *अवहत्थिदलज्जो* ववसाओ। (अथ किम्! अयं मेऽपहस्तित-

लज्जो व्यवसायः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/2, पृष्ठ 159

अवहाण avahāṇa अवधान< संज्ञा (नपुं.) [Noun] अवधान, ध्यान, ख्याल, उपयोग, ज्ञान, जानना careful attention, caution, use, knowledge, know, etc. {म.} (विदूषक-) *अवहाणेण* दिट्ठिं देहि। (अवधानेन दृष्टिं देहि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-4, पृष्ठ 271/3

अवहिद (अवहिय / अवहिअ) ava-hida (ava-hiya / ava-hia) अपहृत[अप √हृ+क्त]< विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] अपहृत, छीन लिया हुआ, जबरन लिया हुआ taken away, carried off, taken away by force, stolen {शौ.} (विदूषक-) अण्णधा दासीए पुत्रेण *अवहिदं* भवे। (अन्यथा दास्याः पुत्रेण अपहृतं भवेत्) मृच्छ., पृष्ठ 178/3

अविणय a-viṇaya अविनय< विशेषण [Adjective] अविनय, अविनीत, दुर्विनीत, अशिष्ट, शिष्टता या शालीनता का अभाव, दुर्व्यवहार, उजड्डपन, अभद्रता, अशिष्टाचार, अनादर, अपराध, जुर्म, दोष, घमंड impoliteness, rudeness, indecorum, impudence, arrogance, immodesty, etc. {शौ.} (विदूषक-) बउलावलिए! गहीदत्थाए तुइ अत्तहोदी ईरिसं *अविणअं* करन्ती कीस णं णिवारिदा। (बकुलावलिके! गृहीतार्थया त्वयात्रभवतीदृश्यामविनयं कुर्वन्ती कस्मान्न निवारिता) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17, पृष्ठ 283/3

अवेदिअ (अवेदिग) avedia (avediga) अवैदिक< विशेषण [Adjective] अवैदिक, वेद को नहीं मानने वाला non-Vedic {शौ.} (चेटी-) तुवं किळ *अवेदिओ*। (त्वं किलावेदिकः)अविमार.,भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 118

अव्वोच्छिण्ण avvocchiṇṇa अव्युच्छिन्न/ अव्यवच्छिन्न< विशेषण [Adjective] अविच्छिन्न, सतत, नित्य, अव्याहत continuous, uninterrupted, etc. {म.} अंगुलि-पिहिआण खो *अव्वोच्छिण्णो* व्व कण्णाण। (अङ्गुलिपिहितानां खलु s व्योच्छिन्न इव कर्णानाम्) गउडवहो, गाथा-937, पृष्ठ 129

अशुह (असुह) aśuha (asuha) अशुभ< संज्ञा / विशेषण [Noun / Adjective] अमंगल, अनिष्ट, पाप कर्म, खराब, असुन्दर

inauspicious, ominous, unpropitious, evil, calamity, etc. {मा.} (वज्रलोमा-) अय्या तेण हि अवधालेध शे *अशुहं* गदिं। (आर्याः तेन ह्यवधारयतास्याशुभां गतिम्) मुद्रा., श्लोक 1, पृष्ठ 93/7

असंत a-santa अशान्त< विशेषण [Adjective] अशान्त, जिसका अस्तित्व न हो, दुष्ट restless, perturbed, agitated, etc. {म.} (चन्दनदास-) अज्ज किं मे भयं दावेसि। सन्तं वि गेहे अमच्चरक्खसस्स घरअणं ण समप्पेमि किं उण *असंतं*। (आर्य किं मे भयं दर्शयसि। सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि किं पुनरसन्तम्) मुद्रा., श्लोक-22, पृष्ठ 17/1

असंतुट्ठ a-santuṭṭha असन्तुष्ट< विशेषण [Adjective] असंतुष्ट, अतृप्त dissatisfied, discontented, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) सुणु *असंतुट्ठे!* सुणु। (शृणु, असन्तुष्टे! शृणु) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10/3, पृष्ठ 182

असंभावणीय (असम्भावणिज्ज) asambhāvaṇīya (asambhāvaṇijja) असंभावनीय< विशेषण [Adjective] जिसकी संभावना हो न सके ऐसा inconceivable, unexpected {शौ.} (मदनिका-) अइ असंबद्ध-भासअ! *असंभावणीए* कुप्पसि। (अयि असम्बद्धभाषक! असम्भावनीये कुप्यसि) मृच्छ., पृष्ठ 212/4

असण asaṇa अशन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] भोजन, खाद्य पदार्थ eating, food, meal {शौ.} (विदूषक-) किं भणासि- सम्पण्णं *असणं* अह्मिदव्वं भविस्सदि त्ति। (किं भणसि- सम्पन्नमशनमशितव्यं भविष्यतीति) चारु., भासनाटक., अंक-1,पृष्ठ 194

असमारण asamāraṇa असमारचन< विशेषण [Adjective] केशों को सवॉरने का अभाव, श्रृंगार का अभाव less want of arranging, dressing or combing (hair) {म.} *असमारण*-मूलुब्भिज्जमाण-पम्हग्ग-मडहिअ-णडाले।(असमारचनमूलोद्यद्भिमान-पक्ष्माग्राल्पी-कृतललाटान्) गउडवहो,गाथा-840,पृष्ठ 125

असरण a-saraṇa अशरण< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] बिना शरण के, अनाथ helpless, orphan, fatherless,

orphaned {शौ.} (प्रियंवदा-) *असरण* म्हि। (अशरणास्मि) अभि.शाकु.,पृष्ठ 243/3

असलाहण a-salāhaṇa अश्लाघन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] अप्रशंसा non-admiration, non-appreciation {म.} *असलाहणे* खलु च्चिअ अलिअ-पसंसाए दुज्जणो विउणं। (अश्लाघने खल्वेव अलीकप्रशंसया दुर्जनो विगुणम्) गउडवहो, गाथा-979, पृष्ठ145

असूआपरम्मुह asūā-parammuha असूयापराङ्मुख< विशेषण [Adjective] असूया से विमुख, ईर्ष्या रहित void of jealousy, non-malign, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) साहु *असूआपरम्मुहं* मंतिदं तुए। (साधु असूयापराङ्मुखं मन्त्रितं त्वया) विक्रमो. कालिदास ग्रन्था.,अंक-3,पृष्ठ 184

असेस asesa अशेष< विशेषण [Adjective] पूर्ण नि:शेष, सर्व, अशेष endless, boundless, limitless, all {म.} भमिओ चिरं *असेसो* गामो मइ सहियओ सयं वारं।

(भ्रान्तश्चिरमशेषो ग्रामो मया सख्य: शतवारम्) वज्जालग्गं, जंतियवज्जा, पृष्ठ 186/541

असोअ (असोग) asoa (asoga) अशोक< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] अशोक, वृक्ष विशेष, लाल फूलों वाला एक प्रसिद्ध वृक्ष (कविधारणा है कि सुन्दर स्त्रियों के चरणस्पर्श से इसमें फूल खिल जाते हैं), जो किसी प्रकार के रंज या शोक का अनुभव न करता हो, मौर्यवंश का एक प्रसिद्ध राजा, शोक रहित Aśoka a tree (It flourishes when kicked by young woman or damsel), fearless, happy man, a king of Maurya dynasty, etc. {म.} उब्भज्जिइ सहयारो वियसइ कुंदो य वियसइ *असोओ*। (उद्भिद्यते सहकारो विकसति कुन्दश्च विकसत्यशोक:) वज्जालग्गं, वसंतवज्जा, पृष्ठ 216/632

असोउमल्ल a-soumalla असौकुमार्य< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] सुकुमारता का अभाव, कर्कश, कठोर want of softness or delicacy, rough, etc. {म.} संभाविअ-काम-हरो जप्पेइ रसं *असोउमल्लो* वि। (संभावितकामभरोऽर्पयति रससौ-कुमार्योऽपि) गउडवहो, गाथा-1151, पृष्ठ 169

अस्ताहिमुहे astāhimuhe अस्ताभिमुखे< विशेषण [Adjective] अस्ताभिमुखे

अस्तोन्मुख, अस्ताचल की ओर उन्मुख western mountain behind which the sun sets, etc. {मा.} (क्षपणक-) *अस्ताहिमुहे* शूले उदिदे शंपुण्णमण्डले चंदे। (अस्ताभिमुखे शूर उदिते सपूर्णमण्डले चन्द्रे) मुद्रा., श्लोक-18, पृष्ठ-60/4

अस्स assa अश्व< संज्ञा (पुं.) [Noun] अश्व, घोड़ा, अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव, वृक्षों का दूधिया रस horse, etc. {मा.} (शक्र-) *अस्स* त्ति। मुहुत्तअ आळुहामि। णेच्छामि कण्ण! णेच्छामि। (अश्व इति। मुहूर्तकमारोहामि। नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि) कर्णभार., भासनाटक.,श्लोक-20/1,पृष्ठ 484

अस्सत्थदा a-ssatthadā अस्वस्थता< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] अस्वस्थता, तबियत ठीक नहीं होना, बीमारी Illness indisposition, unhealthiness, etc. {शौ.} (सहजन्या-) सहि चित्तलेहे! मिलाअमाण-सदवत्तस्स विअ दे मुहस्स छाआ हिअअस्स *अस्सत्थदं* सूएदि। (सखि चित्रलेखे! म्लायमान-शतपत्रस्येव ते मुखस्य छाया हृदयस्यास्वस्थतां सूचयति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2/3, पृष्ठ 193

अस्सम assama आश्रम< संज्ञा (पुं.) [Noun] आश्रम, आश्रय, घर, हिन्दुजीवन के विभाजन की अवस्था, ऋषियों का निवास स्थान, तपोभूमि hermitage, shelter, home, stage of classified life of Hindus, etc. {शौ.} (सीता-) अय्ये उवहार-सुमणाइण्णो समज्जिदो *अस्समो*। (आर्ये! उपहारसुमनआकीर्णः संमार्जित आश्रमः) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-5, पृष्ठ 293

अस्सास assāsa आ √श्वासय्< क्रिया [सक.] [Verb] धीरज बंधाना, आश्वासन देना, दिलासा देना to solace, to console, to soothe, to encourage {शौ.} (कैकेयी-) एहि जाद! अय्यं *अस्सासइस्सामो*। (एहि! जात आर्यामासश्वासयिष्यावः) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-16/6, पृष्ठ 310

अस्सिद (अस्सिय) assida (assiya) आश्रित< विशेषण [Adjective] आश्रित, आश्रय प्राप्त sheltered, clause, dependent, supported, etc. {शौ.} (विदूषक-) इमं दाव फलिहक्खंभं *अस्सिदो* होमि। (इमं तावत्स्फटिकस्तम्भमाश्रितो भवामि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 302/4

अस्सु assu अश्रु< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] आँसू, अश्रु tear {शौ.} (विदूषक-) एसा वाआए दुक्खं रक्खिअ *अस्सूहि* सूइअ गआ। (एषा वाचा दुःखं रक्षित्वाश्रुभिः सूचयित्वा गता) चारु., भासनाटक., गाथा-16/3, पृष्ठ 235

अस्सुमुही assu-muhī अश्रुमुखी< विशेषण [Adjective] आँसू भरे मुख वाली, रुआँसी चेहरे वाली, अश्रुमुखी tearful face, with weeping face, etc. {शौ.} (विदूषक-) भो! किं णु क्खु सम्पदं अत्तहोदी एक्कवदे *अस्सुमुही* संवुत्ता। (भो! किं नु खलु साम्प्रतमत्रभवती एकपदे अश्रुमुखी संवृत्ता) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-14, पृष्ठ 229/5

अह aha अथ< अव्यय [Indeclinable] इन अर्थों का सूचक अव्यय- या, अथवा, अब, बाद, और, मंगल, प्रश्न, समुच्चय, प्रतिवचन, उत्तर विशेष, यथार्थता, वास्तविकता, पूर्वपक्ष, वाक्य की शोभा बढ़ाने के लिए और पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है or, and, now, welfare, question, a particle used at the beginning (of words) mostly as a sign of auspiciousness, etc. {म.}*अह* नरकरंकंकालसंकुले भीसण-मसाणे। (अथ नरकरङ्कङ्कालसंकुले भीषणश्मशाने) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 34/98

अहं (अहअं / अहयं / हं / हगे) ahaṁ (ahaaṁ / ahayaṁ / haṁ / hage) अहम्/ अहकम्< सर्वनाम [Pronoun] मैं I, myself {शौ.} (सूत्रधार-)आदु *अहं* ज्जेव बुभुक्खादो ओदणमअं जीअलोअं पेक्खामि। (अथवा अहम् एव बुभुक्षातः ओदनमयं जीवलोकम् प्रेक्षे) मृच्छ.,पृष्ठ 11/1

अहम ahama अधम< विशेषण [Adjective] अधम, नीच meanest person, ignoble {म.} तं जहा-*अहमा,* मज्झिमा, उत्तम त्ति। (तद्यथा-अधमाः, मध्यमाः, उत्तमा इति) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 4

अहम्म (अधम्म) ahamma (adhamma) अधर्म< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] अधर्म, पाप कार्य, निषिद्ध कर्म, एक स्वतंत्र और लोक-व्यापी अजीव वस्तु, जीव वगैरह को स्थित करने में सहायता पहुँचाती है (जैन परम्परानुसार), धर्म रहित, पापी irreligion, unrighteousness, full of wickedness or sin, injustice, undutiful conduct, etc. {म.} कुकलत्तेण य जम्मो

नासइ धम्मो *अहम्मेण*। (कुकलत्रेण च जन्म नश्यति धर्मोऽधर्मेण) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 30/89

अहवा ahavā अथवा< अव्यय [Indeclinable] वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय या, अथवा or, either-or, or rather, or why, or perhaps, is it not so,etc.{शौ.} (चन्दनक-) *अहवा* ण भणामि। (अथवा न भणामि) मृच्छ., पृष्ठ 350/6

अहि ahi अहि< संज्ञा (पुं.) [Noun] अहि, साँप, शेषनाग snake, serpent, etc. {शौ.} अहं वि *अहिणा* खेलिदुं इच्छामि त्ति। (अहमप्यहिना खेलितुमिच्छामीति) मुद्रा., श्लोक-1, पृष्ठ 20/1

अहिंसा ahiṁsā अहिंसा< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] किसी प्राणी को न मारना, अनिष्टकारिता का अभाव, मन-वचन-काय से जीवों का घात न स्वयं करना, न दूसरों से कराना और न दूसरा करता हो उसे अच्छा मानना non-violence, a basic Jaina vow, etc. {अर्ध मा.} *अहिंसा* निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो। (अहिंसा निपुणा दृष्टा, सर्वभूतेषु संयमः) दसवेया.,6/271, पृष्ठ 236 {शौ.} अह मोहं सारंभं परिहर धम्मे *अहिंसाए*। (अथ मोहं सारम्भं परिहर धर्म्मे अहिंसायाम्) अट्ठपाहुड चारित्तपाहुड पृष्ठ 87/15

अहिआर (अहिकार / अहिगार) ahiāra (ahikāra / ahigāra अधिकार< संज्ञा (पुं.) [Noun] अधिकार, वैभव, हक, प्रस्ताव, योग्यता, ग्रंथविभाग right, possession, authority, command, mastery, claim, power, etc. {शौ.} (समाहितिका-) जुज्जइ। *अहिआरो* क्खु तुइ। (युज्यते। अधिकारः खलु तव) मालविका., कालिदास, ग्रन्था., अंक-3, पृष्ठ 268

अहिजण ahi-jaṇa अभिजन< संज्ञा (पुं.) [Noun] ऊँचा घराना, कुलीन, उत्तम कुल में जन्मा, श्रेष्ठ वंश, उत्तम कुटुम्ब में उत्पत्ति noble man, aristocrat, etc. {शौ.} (धारिणी-) एदाए राअदारिआए *अहिजणेण* एव्व दिण्णो देवीसद्दो किं पुणरुत्तेण। (एतस्या राजदारिकाया अभिजनेनैव दत्तो देवीशब्दः किं पुनरुक्तेन) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17/5, पृष्ठ 327

अहिणव ahiṇava अभिनव< विशेषण [Adjective] अभिनव, नवीन, नूतन quite

new, novel, recent {शौ.} (कुरङ्गी-) अहं इच्छामि *अहिणवेण* आआसतोएण ण्हादुं। (अहमिच्छाम्यभिनवेनाकाशतोयेन स्नातुम्) अविमार., भास., गाथा-2/5, पृष्ठ 165

अहिणिवेस ahi-ṇivesa अभिनिवेश< संज्ञा (पुं.) [Noun] आग्रह, हठ, लगन, आसक्ति, एकनिष्ठता intentness, close application, etc. {शौ.} (अनसूया-) बलवं खु मे *अहिणिवेसो*। (बलवान्खलु मेऽभिनिवेश:) अभि. शाकु., पृष्ठ 221/3

अहिण्णाण (अहिणाण) ahiṇṇāṇa (ahiṇāṇa) अभिज्ञान< संज्ञा (नपुं.) [Noun] अभिज्ञान, चिह्न, निशानी a sign or token of recognition (person or thing), remembrance {शौ.} (चन्दनक-) इमं च *अहिण्णाणं* दे देमि। (इदञ्च अभिज्ञानं तव ददामि) मृच्छ., पृष्ठ 354/6

अहिमद (अहिमय) ahi-mada (ahi-maya) अभिमत< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] अभिमत, इष्ट, स्वीकृत opinion, view, accepted, etc. {शौ.} (विदूषक-) कहं ण एसा उव्वसी। ताए तत्तहोदीए *अहिमदा* सहअरी। (कथं नैषोर्वशी। तस्यास्तत्रभवत्या अभिमता सहचरी) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-11/2,पृष्ठ 165

अहिमाण ahimāṇa अभिमान< संज्ञा (पुं.) [Noun] अभिमान, अहंकार, ममकार pride, egotism, soft-consciousness, vanity {म.} ताव च्चिय *अहिमाणो* देहि त्ति न भण्णए जाव। (तावदेवाभिमानो देहीति न भण्यते यावत्) वज्जालग्गं, दीणवज्जा, पृष्ठ 46/134

अहिराम ahirāma अभिराम< विशेषण [Adjective] मनोहर, अभिराम pretty, handsome, charming, lovely, fascinating {म.} दीसन्तं *अहिरामं* सुव्वन्तं पि अविइण्हसोअव्वगुणं। (दृश्यमानमभिरामं श्रूयमाणमप्यवितृष्णश्रोतव्यगुणम्) सेतुबन्धं, गाथा-10/2, पृष्ठ 46

अहिलास ahilāsa अभिलाष< संज्ञा (पुं.) [Noun] इच्छा, अभिलाषा a desire, wish {शौ.} (शकुन्तला-) तदो आरहिअ तग्गदेण *अहिलासेण* एतदवत्थम्हि संवुत्ता। (तत आरभ्य तद्गतेनाभिलाषेणैतदवस्थास्मि संवृत्ता) अभि. शाकु., पृष्ठ 224/3

अहिसारिअ (अहिसारिय) ahisāria (ahisāriya) अभिसारित< विशेषण

[Adjective] अभिसारित, पहुँचना, आनीत arrive, reach, etc. {म.} विद्धाइ वालिहिअए राअसिरीअ *अहिसारिए* सुग्गीवे। (विद्धया वालिहृदये राजश्रियाभिसारिते सुग्रीवे) सेतुबन्धं, गाथा-13/1, पृष्ठ 12

अहिसेअ (अभिसेअ / अभिसेग) ahisea (abhisea / abhisega) अभिषेक< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] अभिषेक, राज्यारोहण, राज तलिक, स्नान, राजा, आचार्य आदि पद पर आरूढ़ करना consecration (sprinkling of water), enthronement, coronation, etc. {शौ.} (चेटि-) भट्टिणी! एवं मए सुदं। अय्यबाळाई कञ्चुई भणादि-*अहिसेओ, अहिसेओ* त्ति। (भट्टिनि! एवं मया श्रुतम्। आर्यबालाकिः कञ्चुकी भणति-अभिषेकोऽभिषेक इति) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-1, पृ. 253

अहिसेअवेला ahisea-velā अभिषेकवेला< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] स्नान की वेला, स्नान का समय time of bathing, bathing period, etc. {शौ.} (पेलव-) कधापसंगेण अम्हेहिं अवरुद्धा *अहिसेअवेला* क्खु उवज्झाअस्स। (कथाप्रसंगेनास्माभिरपराद्धाभिषेकवेला खलु उपाध्यायस्य) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-3, पृष्ठ 175

अहोमुह aho-muha अधोमुख< विशेषण [Adjective] अधोमुख, अवनत मुख, लज्जित with face hung downwards, downcast, sad, etc. {म.} जइ सो न एइ गेहं ता दूइ *अहोमुही* तुमं कीस। (यसि स नैति गेहं तद् दूति अधोमुखी त्वं कस्मात्) वज्जालग्गं, दूईवज्जा, पृष्ठ 140/416

अहोरत्त aho-ratta अहोरात्र< संज्ञा (पुं.) [Noun] दिन और रात्रि, परिमित काल, आठ प्रहर, चार पहर का समय day-night, always, etc. {शौ.} (विदूषक-) तुमं दावअमन्तणविप्पळलद्धो विअ बम्हणो *अहोरत्तं* चिन्तेसि। (त्वं तावदामन्त्रण-विप्रलब्ध इव ब्राह्मणोऽहोरात्रं चिन्तयसि) अविमार., भास., गाथा-7/2, पृष्ठ 129

आ

आ ā आ< संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत वर्णमाला का द्वितीय स्वर वर्ण या ह्रस्व का दीर्घ रूप है the second alphabet of the Prakrit vowel, It is long form of short vowel, a prefix to verbs and nouns adding to them the following meanings,

from all sides, all around. आ अरा मातु:।। हेम., 3/46, पृष्ठ 512

आ ā आ< अव्यय [Indeclinable] मर्यादा, सीमा, अभिनिधि, व्याप्ति, थोड़ापन, अल्पता, समन्तात्, चारो ओर, अधिकता, विशेषता, स्मरण, याद, आश्चर्य, नीचे, अधः आदि के अर्थ में इसका प्रयोग होता है, वाक्य की शोभा के लिऐ प्रयोग, पाद पूर्ति के लिये प्रयोग decorum, limit, method, pervaded, mildness, Insufficient, concurrent, excess, specialty, remembrance, memory, surprise, , downwards, under {म.} आ-संसार कइ पुंगवेहिं तद्दियह-गहिय-सारोवि। (आ- संसारं कविपुंगवैः प्रतिदिवसगृहीतसारोऽपि) गउड., गाथा-87, पृष्ठ-33

आअ āa आगत< विशेषण [Adjective] आया हुआ arrived, reached, come {म.} तह वि न *आओ* सुक्को सच्चं चिय सुन्नहियओ सि। (तथापि नागत: शुक्र: सत्यमेव शून्यहृदयोऽसि) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 170/502

आअक्ख āakkha आ √चक्ष्< क्रिया [सक.] [Verb] कहना, बोलना, उपदेश करना to speak, announce, declare, teach, tell, relate, etc. {शौ.} (कैकेयी-) सुमन्त! *आअक्ख* वित्थरेण। (सुमन्त्र! आचक्ष्व विस्तारेण) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-14/6, पृष्ठ 308

आअच्छ (आगच्छ) āaccha (āgaccha) आगच्छ [आ √गम्]< क्रिया [सक.] [Verb] आना, आगमन करना to come, to arrive {मा.} (शकार-) *आअच्छ* ले चालुदत्त! आअच्छ। (आगच्छ रे चारुदत्त! आगच्छ) मृच्छ., पृष्ठ 523/10

आअद (आअअ / आगद / आगय) āada (āaa / āgada / āgaya) आगत [आ √गम्+क्त]< विशेषण /क्रिया [Adjective/ Verb] आया, पहुंचा, सम्पन्न हुआ, घटित हुआ, प्राप्त किया arrived, come, etc. {शौ.} (दौवारिक-) एस उण णअरादो देवीणं आणत्तिहरओ करभओ *आअदो*। (एष पुनर्नगराद्देवीनामाज्ञप्तिहरः करभक आगतः) अभि.शाकु., पृष्ठ 203/2 {शौ.} (मदनिका-) अज्जए! एसो क्खु चारुदत्तस्स सआसादो बम्हणो *आअदो*। (आर्ये! एष खलु चारुदत्तस्य सकाशात् ब्राह्मण: आगत:) मृच्छ., पृष्ठ 219/4

आअर (आयर) āara (āyara) आदर< संज्ञा (पुं.) [Noun] आदर, ध्यान देना, सम्मान, प्रतिष्ठा respect, esteem, honour, regard, etc. {शौ.} (कुमुदिनी-) आकिदिविसेसेसु *आअरो* पदं करेति। तदो तदो। (आकृतिविशेषेष्वादरः पदं करोति। ततस्ततः) मालविका.,कालिदास ग्रन्था., श्लोक-3/1, पृष्ठ 242

आअरिद (आचरिय) āarida (ācariya) आचरित< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] आचरण, आचरित, अनुष्ठित, विहित done, acted, performed, observed, determined, settled, prescribed, pointed out, etc. {शौ.} (तापसी-) अज्ज पुप्फसमिधकुसणिमित्तं इसिकुमारएहिँ सह गदेण इमिणा अस्समविरुद्धं *आअरिदं।* (अद्य पुष्पसमित्कुशनिमित्तं ऋषिकुमारकैः सह गतेनानेनाश्रम-विरुद्धमाचरितम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10/5, पृष्ठ 225

आआस (आयास) āāsa (āyāsa) आयास< संज्ञा (पुं.) [Noun] खेद, असन्तोष, क्रोध, तकलीफ, परिश्रम, परिग्रह effort, regret, endeavour, exertion, toil, etc. {शौ.} (सीता-) अय्यउत्त! रोदिदव्वे काळे सोमित्तिणा धणू गहीदं। अपुव्वो खु से *आआसो*। (आर्यपुत्र! रोदितव्ये काले सौमित्रिणा धनुर्गृहीतम्। अपूर्वः खल्वस्यायासः) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-18/1, पृष्ठ 260

आआसचारि āāsa-cāri आकाशचारिन्< विशेषण [Adjective] आकाश में विचरण करने वाला, आकाशचारी, खेचर moving through the air, flyer, etc{शौ.} (विदूषक-) भो, अत्थि मे तक्को केण वि तत्तहोदी *आआसचारिणा* णीद त्ति। (भो अस्ति मे तर्कः केनापि तत्रभवती आकाशचारिणा नीतेति) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/6, पृष्ठ 100

आइच्च āicca आदित्य< संज्ञा/ विशेषण [Noun/Adjective] सूर्य, सूरज, रवि, आद्य, प्रथम, सूर्य सम्बन्धी Sun, first, etc. {म.} चंदेहि णिम्मलयरा, *आइच्चेहिं* अहियं पयासंता। (चन्द्रात् निर्मलतरा, आदित्यैः अधिकं प्रकाशमानाः) समणसुत्तं, पृष्ठ 6/16

आइदि āidi आकृति< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] आकृति, आकार appearance, shape, body, figure {शौ.} (तापसी-)

अरिहा खु इअं *आइदी* इमस्स बहु माणस्सा (अर्हा खल्वियमाकृतिरस्य बहु मानस्य) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-7/1, पृष्ठ 5

आइरिय (आयरिअ) āiriya (āyaria) आचार्य< संज्ञा (पुं.) [Noun] आचार्य, गण का नायक, मुखिया, प्रधान आचार्य, उपदेशक, गुरु, शिक्षक, अर्थ पढ़ानेवाला, 36 गुण सहित दिगम्बर जैन मुनि जो साधुओं को दीक्षा-शिक्षा देकर चारित्र आचरण बताते हैं एवं 5 प्रकार का आचार स्वयं पालते हैं (जैन परम्परानुसार) preceptor, head of the hermitage, principal, head of Jain saints, the chief In Digambar Jain saints, minister, etc. {शौ.} णाणागुणगणभरिया, *आइरिया* मम पसीदंतु। (नानागुण-गणभृता:, आचार्या: मयि प्रसीदन्तु) समणसुत्तं, पृष्ठ 4/9

आउल āula आकुल< विशेषण [Adjective] आकुल, व्याकुल, दु:खित eager, restless, uneasy, worried {म.} छुहइ दढं कुद्दालं अइगमणे *आउलं* व पेल्लेइ। (क्षिपति दृढं कुद्दालमतिगमने आकुलमिव प्रेरयति) वज्जालग्गं, किविणवज्जा, पृष्ठ 200/586

आउलप्पदेस (आउलपदेस) āula-ppdesa (āula-pdesa) आकुलप्रदेश< संज्ञा (पुं.) [Noun] बीहड़ प्रदेश dense area rough and rugged place, etc. {शौ.} (विदूषक-) एव्वं राअकज्जाणि उज्झिअ तारिसे *आउलप्पदेसे* वणचरवुत्तिणा तुए होदव्वं। (एवं राजकार्याण्युज्झित्वा तादृशे आकुल-प्रदेशे वनचरवृत्तिना त्वया भवितव्यम्) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., पृष्ठ 26/2

आऊ (आउ / आउस / आउक्क / आउग) aaū (āu / āusa / āukka / āuga) आयुष्< संज्ञा (नपुं.) [Noun] उम्र, आयु, वय, जीवन काल, आयु के कारणभूत कर्मपुद्गल life, age, duration of life, vital power, preservative of life, etc. {शौ.} (उर्वशी-) अम्मो! सच्चवदी सूइदो अअं मे पुत्तओ *आऊ*। (अहो! सत्यवतीसूचितोऽयं मे पुत्रक आयु:) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-11/5, पृष्ठ 227

आकंपिद ākampida आकंपित< विशेषण [Adjective] कंपित, काँपा हुआ shivering, trembling, etc. {शौ.} (उर्वशी-) अणिब्भिण्णत्थेण इमिणा वअणेण *आकंपिदं* मे हिअअं। (अनिर्भिन्नार्थेनानेन

वचनेनाकम्पितं मे हृदयम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/3, पृष्ठ 181

आकिदि (आकिइ) ākidi (ākii) आकृति, संज्ञा (स्त्री.) [Noun] आकृति, स्वरूप, आकार appearance, form, shape, body, figure, pattern, etc. {शौ.} (तापसी-) इमस्स बालअस्स दे वि संवादिणी *आकिदी* त्ति विम्हाविदम्हि। (अस्य बालकस्य तेऽपि संवादिन्याकृतिरिति विस्मापिताऽस्मि) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19/7, पृष्ठ 125

आकिदिविसेस ākidi-visesa आकृतिविशेष< संज्ञा (पुं.) [Noun] विशिष्ट आकृति special figure {शौ.} (प्रियंवदा-) ण तादिसा आकिदिविसेसा गुणविरोहिणो होंति। (न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति) अभि.शाकु., पृष्ठ 258/4

आगमण āgamaṇa आगमन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] आना, पहुंचना coming, approaching, arrival, etc. {शौ.} (मदनिका-) जाव अज्जआए तुह *आगमणं* णिवेदेमि। (यावदार्यायै तव आगमनं निवेदयामि) मृच्छ., पृष्ठ 218

आढत्त āḍhatta आरब्ध< विशेषण [Adjective] शुरु किया हुआ, प्रारब्ध begun, commenced {म.} *आढत्ता* सप्पुरिसेहि तुंगववसायदिन्नहियएहिं। (आरब्धः सत्पुरुषैस्तुङ्गव्यवसायदत्तहृदयैः) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 40/117

आणंद āṇanda आनन्द< संज्ञा (पुं.) [Noun] आनंद, हर्ष, उल्लास, अहोरात्र का सोलहवाँ मुहूर्त joy, delight, happiness, ecstasy (spiritual) bliss, merriment, etc. {शौ.} (उर्वशी-) सुणादु महाराओ पढमं उणपुत्तदंसणसमुत्थेण *आणंदेण* विसुमरिद म्हि। (श्रृणोतु महाराजः प्रथमं पुनः पुत्रदर्शनसमुत्थेनानन्देन विस्मृतास्मि) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-14/5, पृष्ठ 229

आणंदिय āṇandiya आनन्दित< विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] आनंदित, हर्ष प्राप्त pleased, delighted, joyful, cheerful {म.} अमरतरुमंजरिरसेण जस्स आणंदियं हिययं। (अमरतरु-मञ्जरीरसेन यस्यानन्दितं हृदयम्) वज्जालग्गं, सुरतरुविसेसवज्जा, पृष्ठ 86/254

आणत्त āṇatta आज्ञप्त< विशेषण [Adjective] आज्ञप्त, जिसको हुकुम किया गया हो वह, आज्ञित ordered, commanded, permitted, allowed, etc {शौ.} (पुरुष-) एवं भणिअ वज्झद्वाणं *आणत्तो* चन्दणदासो। (एव भणित्वा वध्यस्थानमाज्ञप्त-श्चन्दनदासः) मुद्रा., श्लोक 17, पृष्ठ 90/6

आणीद (आणीय) āṇīda (āṇīya) आनीत< विशेषण [Adjective] लाया हुआ brought, fetche {शौ.} (धात्री-) अह अ दाणि कासिराअउत्तो जअवम्मा णाम भट्टिणीए सुदस्सणाए सह अमच्चेण भूदिएण *आणीदो* सम्पदि राअउळं पविट्ठो। (अथ चेदानीं काशिराजपुत्रो जयवर्मा नाम भट्टिन्या सुदर्शनया सहामात्येन भूतिकेनानीतः संप्रति राजकुलं प्रविष्टः) भासनाटक., अविमार., अंक-6

आतंक ātaṅka आतङ्क< संज्ञा (पुं.) [Noun] रोग, बीमारी, भय a fatal disease, fear, etc. {शौ.} (प्रियंवदा) किं णु क्खु से तण्णिमित्तो अअं *आतंको* भवे। (किं नु खलु तस्यास्तन्निमितोऽयमातङ्को भवेत्) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 7, पृष्ठ 40/3

आदंस (आयंस) ādaṁsa (āyaṁsa) आदर्श< संज्ञा (पुं.) [Noun] दर्पण, मर्यादायुक्त, प्रतिमानयुक्त, बैल आदि के गले का आभूषण विशेष a mirror, looking glass, the original manuscript from which a copy is taken a pattern, model etc. {शौ.} (सीता-) हञ्जे! *आदंसअ* दाव आणेहि। (हञ्जे! आदर्श तावदानय) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-4/1, पृष्ठ 253

आदल (आयर / आअर) ādala (āyara / āara) आदर< संज्ञा (पुं.) [Noun] सत्कार, सम्मान, आदर respect, reverence, honour {मा.} (संवाहक-) कधं अज्ज चालुदत्तश्श णामशंकित्तणेण ईदिशे मे *आदले*। (कथम् आर्यचारुदत्तस्य नाम-सङ्कीर्त्तनेन ईदृशो मे आदरः) मृच्छ., पृष्ठ 130/2

आदा ādā आत्मन् (आत्मा)< संज्ञा (पुं.) [Noun] आत्मा, जीव, चेतन soul, etc. {शौ.} *आदा* खु मज्झ णाणे आदो मे दंसणे चरित्ते य। (आत्मा खलु मम ज्ञाने आत्मा मे दर्शने चरित्रे च) अट्ठपाहुड़ भावपाहुड़ पृष्ठ 198/58

आदिट्ठ (आइट्ठ) ādiṭṭha (āiṭṭha) आदिष्ट< विशेषण [Adjective] आदिष्ट, उक्त, उपदिष्ट,

विवक्षित ordered, advised, directed, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) कुमार *आदिट्ठो* म्हि अमच्चेण जहा एदे मह पिअवअस्सा पञ्च राआणो तुए सह पढमसमुप्पण्णसंधाणा। (कुमार आदिष्टो ऽस्म्यमात्येन यथैते मय प्रियवयस्याः पञ्च राजानस्त्वया सह प्रथमसमुत्पन्नसंधानाः) मुद्रा., श्लोक 9, पृष्ठ 72/5

आदेस (आएस) ādesa (āesa) आदेश [आ √दिश्]< क्रिया/ संज्ञा [Verb/ Noun] आज्ञा देना, हुकुम करना, निर्देश देना, विवक्षा करना, उपदेश देना, आज्ञा to order, to give permission, to commend, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) ता *आदेसेहि* पक्खदुआरअं। (तदादेशय पक्षद्वारकम्) मृच्छ.,पृष्ठ 325/6

आमंतण āmantaṇa आमन्त्रण< संज्ञा (नपुं.) [Noun] आमन्त्रण, आह्वान, सम्बोधन invitation, calling, sending for {शौ.} (सूत्रधार-) *आमंतणस्स* मा दरिद्द त्ति मं अवमण्णेहि। (आमन्त्रणस्य मा दरिद्र इति मामवमन्यस्व) चारु., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 193

आमिस āmisa आमिष< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] मांस, मत्स्यादि, मनोहर, सुन्दर, आसक्ति का कारण, आहार, फलादि योग्य वस्तु flesh, meat, prey, etc. {शौ.} (कुटुम्बिनी-) मोत्तूण *आमिसाइं* मरणभएणं तिणेहिं जीअन्तं। (मुक्त्वामिषाणि मरणभयेन तृणैर्जीवन्तम्) मुद्रा., श्लोक-4, पृष्ठ 93/7

आमिसलोलुअ āmisa-lolua आमिषलोलुप< विशेषण [Adjective] मांस का लालची, मांस बेचने वाला meat greedy, flesh seller, etc. {शौ.} (विदूषक-) भवं वि सूणापरिसर-चरो विअ गिद्धो *आमिसलोलुओ* भीरुओ अ। (भवानपि सूनापरिसरचर इव गृद्ध आमिषलोलुपो भीरुकश्च) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13/2, पृष्ठ 265

आमोअ (आमोद / आमोय) āmoa (āmoda/ āmoya) आमोद< संज्ञा (पुं.) [Noun] खुशी, आमोद pleasure, joy, fun {म.} आमोए महु यर मालईइ जाणिहिसि माहप्पं। (आमोदे मधुकर मालत्या ज्ञास्यसि माहात्म्यम्) वज्जालग्गं, मालईवज्जा, पृष्ठ 78/231

आयस āyasa आयस< विशेषण [Adjective] लौह, लौह निर्मित made of iron, metallic {म.} आयस-रस-विसरेहिं व छाया-मग्गेहिं महि-वेढं। (*आयस*-रस-विसरैरिव छायामार्गै-र्महीपृष्ठम्) गउडवहो, गाथा-1077, पृष्ठ 159

आयाण āyāṇa आयान< संज्ञा (नपुं.) [Noun] अश्व का एक आभरण-विशेष, घोड़े का साज, अश्वाभरणाविशेष ornament of the horse, etc. {म.} आयाण-मरगअ-च्छवि-विच्छड्डाडंबरेण मुंचंति। (आयानमरकतच्छविसमूहाडम्बरेण मुञ्चन्ति) गउडवहो, गाथा-258, पृष्ठ 11

आयास (आगास) āyāsa (āgāsa) आकाश< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] आकाश, आसमान, अन्तराल sky, space, etc. {म.} आयासं व भमंतो मुह व्व केणावि खज्जिहिसि। (आकाशमिव भ्रमन्मुधैव केनापि खादिष्यसे) वज्जालग्गं, हिययसंवरणवज्जा, पृष्ठ 152/453

आरद्ध āraddha आरब्ध< विशेषण [Adjective] शुरु किया हुआ, प्रारंभ किया हुआ started, commenced, begun {शौ.} सुअसारिआ वि वक्खाणं एव कहेदुं *आरद्धा*। (शुकसारिकापि व्याख्यानमेव कथयितु-मारब्धा) भासनाटक., अविमार., गाथा-1/5, पृष्ठ 162

आराहअ (आराहग) ārāhaa (ārāhaga) आराधक< विशेषण [Adjective] भक्त, आराधक, आराधन करने वाला, मोक्ष का साधक worshipper, adoring, etc. {शौ.} (उर्वशी-) पिदुणो आराहओ होहि। (पितुराधको भव) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/5, पृष्ठ 234

आरूढ (आरूहिय) ārūḍha (ārūhiya) आरूढ< विशेषण [Adjective] चढ़ा हुआ, गाढ़ा होना, कृत, विहित mounted, ascended, etc. {शौ.} (विदूषक-) आरूढो पओसो। (आरूढः प्रदोषः) अविमार., भास., गाथा-12/2, पृष्ठ 132

आलत्त ālatta आलपित/ आलस< विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] सम्भाषित, आभाषित, कहा हुआ talked, dialogue, indicated {म.} सहस त्ति जं न दिट्ठो सरलसहावेण जं न *आलत्तो*। (सहसेति

यन्न दृष्टः सरलस्वभावेन यन्नालपितः) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 96/284

आलाव ālāva आलाप< संज्ञा (पुं.) [Noun] सम्भाषण, बातचीत, अल्प भाषण, प्रथम भाषण, उक्ति, संगीत के सात स्वर, राग अलापना talk, speaking (as in conversation) seven tunes of music, modulation of the voice preparatory to singing, etc. {म.} आलावणेण उल्लावणेण संगेण कोउहल्लेण। (आलापनेनोल्लापनेन सङ्गेन कौतूहलेन) वज्जालग्गं, पेम्मवज्जा, पृष्ठ 112/330

आलिंग āliṅga आलिङ्ग् [आ √लिङ्ग्], क्रिया [सक.] [Verb] आलिङ्गन करना to embrace, to clasp, to encircle {शौ.} (वसन्तसेना-) एहि मे पुत्तअ! *आलिंग*। (एहि मे पुत्रक! आलिङ्ग) मृच्छ.,पृष्ठ 319/6

आलिंगण āliṅgaṇa आलिङ्गन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] आलिंगन, भेंट embracing, hugging {म.} आलिंगणे वि पत्ते दूरे वि पियं निवारेंति। (आलिङ्गनेऽपि प्राप्ते दूरेऽपि प्रियं निवारयतः) वज्जालग्गं, थणवज्जा, पृष्ठ 106/310

आलेक्खवाणर ālekkha-vāṇara आलेख्यवानर< संज्ञा (पुं.) [Noun] चित्र में बना बन्दर, चित्रित वानर painted Monkey {शौ.} (चेटी-) अम्भो *आलेक्खवाणरो* विअ किंपि मन्तअन्तो णिहदो अज्जमाणवओ चिट्ठदि। (अहो आलेख्यवानर इव किमपि मन्त्रयन्निभृत आर्यमाणवकस्तिष्ठति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 152

आलोअ āloa आ √लोक्< क्रिया (सक.) [verb] देखना, अवलोकन करना, आलोचना करना, विचार करना to see, to consider, to criticize, to think, perceive {म.} *आलोएइ* अ विञ्झं धणुसंठाणस्स साअरस्स भरसहं। (आलोकते च विन्ध्यं धनुः संस्थानस्य सागरस्स भरसहम्) सेतुबन्धं, गाथा-54/1, पृष्ठ 35

आवण āvaṇa आपण< संज्ञा (पुं.) [Noun] बाजार, हाट, दुकान, मंडी market, shop, etc.{शौ.} (नटी-) अत्थि *आवणे*। (आर्य! अस्ति आपणे) मृच्छ., पृष्ठ 14/1

आवण्ण āvaṇṇa आपन्न< विशेषण [Adjective] आश्रित, आधारित लोग

dependent, reliant, ward, etc. {शौ.} (प्रियवंदा-) *आवण्णस्स* विसअणिवासिणो जणस्स अत्तिहरेण रण्णा होदव्वं त्ति एसो वो धम्मो। (आपन्नस्य विषयनिवासिनो जनस्यार्तिहरेण राज्ञा भवितव्यमित्येष युष्माकं धर्मः) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 16, पृष्ठ 47/3

आवण्णाणुकंपि āvaṇṇāṇukampi आपन्नानुकम्पिन्< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दुखियों पर दया करने वाले grieved person, one who show mercy on, etc. {शौ.} (उर्वशी-) णं वत्तव्वं ठाणंतरगदे सग्गो त्ति। सहि! कहिं णु क्खु सो *आवण्णाणुकंपी* भवे। (ननु वक्तव्यं स्थानान्तरगतः स्वर्ग इति। सखि! क्व नु खलु स आपन्नानुकम्पी भवेत्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., पृष्ठ 160/2

आवाअ (आवाय) āvāa (āvāya) आपात< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] आपात, अभ्यागम, आगमन casualty, contingency, emergency, serious happening, etc. {म.} *आवाए* च्चिअ जाआ पहअमहावहणिहा महाणइसोत्ता। (आपात एव जातानि प्रहतमहापथनिभानि महानदीस्रोतांसि) सेतुबन्धं, गाथा-58/1, पृष्ठ 37

आवाणअ (आवाणय) āvāṇaa (āvāṇaya) आपानक< संज्ञा (नपुं.) [Noun] मदिरालय, मद्यशाला, मद्यपों की मंडली, पानगोष्ठी wine shop, bar, etc. {मा.} (शकार-) चिट्ठ, ले दुट्ठशमणका! चिट्ठ। *आवाणअ*-मज्झ-पविट्ठश्श विअ लत्तमूलअश्श शीशं दे मोडइश्शं। (तिष्ठ, रे दुष्ट श्रमणक! तिष्ठ। आपानक-मध्य-प्रविष्टस्येव रक्तमूलस्य शीर्षं ते भङ्क्ष्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 376/8

आवास āvāsa आवास< संज्ञा (पुं.) [Noun] वास-स्थान, निवास, अवस्थान, रहना, पक्षि-गृह, नीड़, पड़ाव, डेरा a house, habitation, abode, apartment, room, pleace of refuge {शौ.} (विदूषक-) अहं पि दाव बम्हणपरिवादं परिहरन्तो बम्हणकुळेसु परिब्भमिअ पच्छण्णो तत्तहोदो *आवासं* एव्व गच्छामि। (अहमपि तावद् ब्राह्मणपरिवादं परिहरन् ब्राह्मणकुलेषु परिभ्रम्य प्रच्छन्नस्तत्रभवत आवासमेव गच्छामि) अविमार., भास., गाथा-5/2, पृष्ठ 118

आविद्ध āviddha आविद्ध< विशेषण [Adjective] क्षिप्त, प्रेरित, बंधा हुआ coated, thrown out, tossed, tied, etc. {म.} दिट्ठे पहु म्मि अबलाण ताण *आविद्ध*-चंदण-कसाओ। (दृष्टे प्रभौ अबलानां तासामाविद्धचन्दनकषायः) गउडवहो, गाथा-210, पृष्ठ 34

आवुत्त (आवुद) āvutta (āvuda) आवृत< विशेषण [Adjective] ढका हुआ, प्रस्तुत हुआ covered, veiled, concealed, surrounded, encircled {शौ.} (चेटी) *आवुत्तं* ण्हाणोदअं। (आवृत्तं स्नानोदरम्) अविमार., भास., गाथा-11/2, पृष्ठ 131

आवेअ (आवेय) ā-vea (ā-veya) आवेग< संज्ञा (पुं.) [Noun] तीव्रता, कष्ट, दुःख, सुख आदिजन्य impulse, emotion, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) अहो! से अत्थाणे *आवेओ*! (अहो! अस्य अस्थाने आवेगः) मृच्छ., पृष्ठ 208/4

आसंका āsaṅkā आशंका (आशङ्का)< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] संशय, भय, शंका doubt, uncertainty, fear, apprehension, expectancy {शौ.} (अनसूया-) ममवि ईदिसी *आसंका* हियअस्स। (ममापीदृश्या-शङ्का हृदयस्य) अभि.शाकु., पृष्ठ 219/3

आसंघ [देशज] **āsaṅgha** विश्वास< संज्ञा (पु.) [Noun] विश्वास, श्रद्धा, अध्यवसाय, परिणाम, आशंसा, इच्छा faith, belief, etc. {म.} एएसुं चिअ जंघा-वलाण भीरूण *आसंघो*। (एतेष्वेव जङ्घाबलानां भीरूणां विश्वासः) गउडवहो, गाथा-489, पृष्ठ 75

आसंघिअ [देशज] **āsaṅghia** संभावित< विशेषण [Adjective] संभावित, मानित, अध्यवसित, अवधारित considered, thought, etc. {म.} *आसंघिअ*-णिअ-आणण सोहग्ग-गुणाएँ व सिरीए। (संभावित-निजाननसौभाग्यगुणाया इव श्रियाः) गउडवहो, गाथा-56, पृष्ठ 9

आसण āsaṇa आसन संज्ञा (नपुं.) [Noun] जिस पर बैठा जाता है वह चौकी आदि स्थान, जगह, बैठना, उपवेशन sitting down, a seat, a particular posture or place of sitting, place, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) देहि अस्स *आसणं*। (देहि अस्य आसनम्) मृच्छ., पृष्ठ 130/2

आसण्ण āsaṇṇa आसन्न< संज्ञा/ विशेषण [Noun/Adjective] समीप,समीपस्थ near to, proximate, contiguous, close by, at hand, beside, etc. {शौ.} (वकुलावलिका-) अपुव्वा इअं दारिआ देवीए *आसण्णा* आलिहिदा किं णामहेए त्ति। (अपूर्वेयं दारिका देव्या आसन्ना अलिखिता किं नामधेयेति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-3/1, पृष्ठ 242

आसा āsā आशा< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] आशा, उम्मीद, दिशा hope, expectation {शौ.} (सूत्रधार-) आ अणय्ये! एवं दे *आसा* छिन्दीअदु। (आ अनार्ये! एवं ते आशा छिद्यताम्) चारु., भासनाटक.,अंक-1,पृष्ठ 192

आसागअ āsā-gaa आशागज< संज्ञा (पुं.) [Noun] आशा गज, दिग्गज, रक्षक्षेत्र के गज an elephant that stands in any direction to take care of earth. They are supposedly eight in number for eight directions. {म.} *आसा-गएहिं* सरहस-चावग्ग-पणोल्लणा-पअत्तंता। (आशागजैः सरभसचापाग्रप्रणोदनाप्रवर्तमानाः)गउडवहो, गाथा-446, पृष्ठ 68

आसाबंध āsā-badnha आशाबन्ध< संज्ञा (पुं.) [Noun] आशाबंध, भरोसा, विश्वास hope, faith, trust, confidence, etc. {शौ.} (विदूषक-) किंदु तादिसं अणुराअं पेक्खिअ सक्कं क्खु *आसाबंधेण* अत्ताणं धारेदुं। (किन्तु तादृशमनुरागं प्रेक्ष्य शक्यं खल्वाशाबन्धेनात्मानं धारयितुम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-7/3, पृष्ठ 179

आसास āsāsa आश्वास [आ√ श्वासय्], क्रिया [अक.] [Verb] आश्वस्त करना, सान्त्वना करना to assure, etc. {म.} गयणट्ठिओ वि चंदो आसासइ कुमुयसंडाइं। (गगनस्थितोऽपि चन्द्र आश्वासयति कुमुदषण्डानि) वज्जालग्गं, नेहवज्जा,पृष्ठ 26/77

आसिसा (आसी) āsisā (āsī) आशीष्< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] आशीष, आशीर्वाद a blessing, prayer, wish, desire, etc. {शौ.} (गौतमी-) भअवं वरो क्खु एदो, ण *आसिसा*। (भगवन् वरः खल्वेषः, नाशिषः) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-7,पृष्ठ 62/4

आसीण āsīṇa आसीन< विशेषण [Adjective] बैठा हुआ seated {शौ.} (निपुणिका-) भट्टिणि! एसो दुआरुद्देसे

समुद्दघरअस्स विपणिगदो विअ बलीवद्दो अज्जगोदमो *आसीणो* एव्व णिद्दाअदि। (भट्टिनि! एष द्वारोद्देशे समुद्रगृहस्य विपणिगत इव बलीवर्द आर्यगौतम आसीन एव निद्रायते) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15, पृष्ठ 305/4

आहरण āharaṇa आभरण< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] अलंकार, आभूषण an ornament {प्राच्या} (विदूषक-) इमस्स *आहरणं* दादव्वं। (अस्य आभरणं दातव्यम्) मृच्छ., पृष्ठ 500/9

आहरणपेडिआ āharaṇa-peḍiā आभरणपेटिका< संज्ञा (नपुं.) [Noun] आभूषण पेटिका, आभूषण का संदूक packet of jewellery, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) ता गहीदो मए अज्जचाणक्केण पढमलेहिदो अमच्चरक्खसस्स मुद्दालञ्छिदो अअं लेहो तस्स य्येव मुद्दालञ्छिदा इअं अ *आहरणपेडिआ*।(तद् गृहीतो मयार्यचाणक्येन प्रथमलेखितो-ऽमात्यराक्षसस्य मुद्रा-लाञ्छितोऽयं लेखस्तस्यैव मुद्रा-लाञ्छितेयं चाभरणपेटिका) मुद्रा., श्लोक 1, पृष्ठ 63/5

आहार āhāra आहार< संज्ञा (पुं.) [Noun] आहार, भोजन, ख़ुराक, भक्षण food, meal, diet, eating, etc. {शौ.} (विदूषक-) ऐक्को खु महन्तो दोसो, मम *आहारो* सुद्ध ण परिणमदि। (एक: खलु महान् दोष:, ममाहार: सुष्ठु न परिणमति) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/4, पृष्ठ 20

आहितुंडिअ (आहितुण्डिअ) āhituṇḍiya आहितुण्डिक< संज्ञा (पुं.) [Noun] संपेरा snake, charmer,person who neutralises the effect of poision, etc. {शौ.} अज्ज! अहं क्खु *आहितुण्डिओ* जिण्णविसो णाम। (आर्य! अहं खल्वाहितुण्डिको जीर्णविषो नाम) मुद्रा., श्लोक-1, पृष्ठ 14/2

आहुदि āhudi आहुत्ति< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] आहुति, किसी देवता को आहुति देना, पुण्यकृत्यों के उपलक्ष्य में किये जाने वाले यज्ञों में हवनसामग्री हवन कुंड में डालना, किसी देवता को उद्दिष्ट करके दी गई आहुति (हवन सामग्री), चुनौती, ललकार, आह्वान an oblation or offering, a critics, calling, invoking, challenging, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) तदो जाव एणं

लज्जावणदमुहिं परिस्सजिअतादकण्णेण एव्वं अहिणन्दिदं दिट्ठिअ-धूमाउलिददिट्ठिणो वि जअमाणस्स पाअए एव्व *आहुदी*पडिदा। (ततो यावदेनां लज्जावनतमुखीं परिष्वज्य तातकण्वेनैव-भिवन्दितम् दिष्टया धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एवाहुतिः पतिता) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-1, पृष्ठ 57/4

इ

इ i इ, संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत वर्णमाला का तृतीय स्वर वर्ण। इसका उच्चारण स्थान तालु है third letter of the Prakrit vowels alphabet. It is produced by tapping tongue at the palate *इ* : स्वाप्नादौ।। हेम. 1/46 पृष्ठ 436

इइ ii इति< अव्यय [Indeclinable] हेतु, कारण a cause {म.} मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इइ वुत्तं महेसिणा। (मूर्च्छा परिग्रह उक्त, इति उक्त महर्षिणा) समण., गाथा- 379/25, पृ. 120

इंदिंदिर indindira इन्दिन्दिर < संज्ञा (पुं.) [Noun] बडी मधुमक्खी, भ्रमर, भौंरा a large black bee {म.} *इंदिंदिरस्स* रणरणयकारणं मालइ च्चेव। (इन्दिन्दिरस्य रणरणककारणं मालत्येव) वज्जालग्गं, मालईवज्जा, पृष्ठ 78/229

इअर iara इतर< सर्वनाम [Pronoun] अन्य, दूसरा, दो में से अवशिष्ट, भिन्न, विरोधी (या तो अकेला स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होता है अथवा विशेषण के साथ, या समास के अन्त में), नीच, अधम, गंवार another, the other, the remaining one of the two, the restor others, other different form, etc. {शौ.} (सूत्रधार-) *इअरा* कुसुमावलीओ गुंफेदि। (इतरा कुसुमावलीर्गुम्फति) कर्पूर., पृष्ठ 6/1

इक्खु ikkhu इक्षु< संज्ञा (पुं.) [Noun] इक्षु, ईख sugarcane, etc. {शौ.} (नेपथ्ये-) कहं ण भाइस्सं। एस मं को वि पच्चवणदसिरोहरं *इक्खुं* विअ तिण्णभंगं करेदि। (कथं न भेष्यामि। एष मां कोऽपि प्रत्यवनत-शिरोधरमिक्षुमिव त्रिभङ्गं करोति) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था.,श्लोक-25/6, पृष्ठ 113

इच्छ iccha √ इष्< क्रिया [सक.] [Verb] इच्छा करना to wish, to desire {शौ.} (वसन्तसेना-) जइ मं जीअन्तीं

इच्छसि ता एव्वं ण पुणो अहं अत्ताए अण्णाविदव्वा। (यदि मां जीवन्तीमिच्छसि तदा एवं न पुनरहं आर्यायैआज्ञापयितव्या) मृच्छ., पृष्ठ 194/4

इट्ठफलसिद्धि itṭha-phala-siddhi इष्टफलसिद्धि< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] इष्टफल की प्राप्ति achivement, of intended goal, etc. {अर्धमा.} भवणिव्वेओ मग्गाणुसारिया *इट्ठफलसिद्धी*। (भवनिर्वेद मार्गानुसारिता इष्टफलसिद्धिः) समणसुत्तं, पृष्ठ 8/22

इट्ठि iṭṭhi इष्टि< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] यज्ञ, याग-विशेष, इच्छा Yagya or yajna, sacrifice with a philanthropic motive, wish, request, desire, etc. {शौ.} (अनुसूया-) अज्ज सो राएसी *इट्ठिं* परिसमाविअ इसीहिं विसज्जिओ अत्तणो णअरं पविसिअ अन्तेउरसमागदो इदोगदं वुत्तन्तं सुमरदि वा ण वेत्ति। (अद्य स राजर्षिरिष्टिं परिसमाप्य ऋषिभिर्विसर्जित आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तः पुरसमागत इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति) अभि.शाकु.कालिदास ग्रन्था., पृष्ठ 53/4

इत्थी itthī स्त्री < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] नारी, महिला, औरत woman, etc. {मा.} (शकार-) *इत्थिअं* अण्णेशदि। (स्त्रियमन्विष्यति) मृच्छ.,पृष्ठ 45/1

इसि isi ऋषि< संज्ञा (पुं.) [Noun] ऋषि, मुनि, साधु, ज्ञानी, महात्मा, ऋषिवादिनिकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र saint, hermit, saintly person, noble, etc. {शौ.} (प्रियवंदा-) अणसूए! तुवर तुवर! एदे क्खु हत्थिणाउरगामिणो *इसीओ* सद्दावीअन्ति। (अनसूये! त्वरस्वत्वरस्व, एते खलु हस्तिनापुरगामिन ऋषयः शब्दापयन्ते) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-4, पृष्ठ 51/4

इसिवअण (इसिवयण) isi-vaaṇa (isi-vayaṇa) ऋषिवचन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] ऋषिवचन words of the sage, advice or instruction of the sage {शौ.} (सुदर्शना-) पडिग्गहिदं *इसिवअणं*। (प्रतिगृहीत-मृषिवचनम्) अविमार., भास., गाथा-14/6, पृष्ठ 184

इसिसाव isi-sāva ऋषिशाप < संज्ञा (पुं.) [Noun] ऋषि द्वारा दिया गया शाप curse by the saint {शौ.} (विदूषक-) अदो तत्तभवं अविमारओ *इसिसावेण* कुळपरिब्भंसं

अन्तअकुळप्पवासं अत्तणो विण्णाणं गुरुजणं च अचिन्तअन्तो जदा हत्थिसम्भमदिअसे कुन्तिभोअदुहिआ कुरङ्की दिट्ठा, तदप्पहु दि अण्णादिसो विअ संवुत्तो। (अतस्तत्रभवान् अविमारकः ऋषिशापेन कुलपरिभ्रंशमन्त्यज कुलप्रवाससमात्मनो विज्ञानं गुरुजनं चाचिन्तयन् यदा हस्तिसम्भ्रमदिवसे कुन्तिभोजदुहिता कुरङ्की दृष्टा, तदाप्रभृत्यन्याद्दश इव संवृतः) अविमार., भास., गाथा-5/2, पृष्ठ 118

इस्सर (ईसर) issara (īsara) ईश्वर< संज्ञा (पुं.) [Noun] ईश्वर, प्रभु, देवता, परमेश्वर, शक्तिसम्पन्न, मालिक, स्वामी, शासक, मुखिया, शिव, कामदेव, पति, ऐश्वर्यशाली lord, master, God, supreme being, Shiva, Kāmdeva , husband, etc. {शौ.} (वासवदत्ता-) अहो अकरुणा खु *इस्सरा*। (अहो अकरुणाः खल्वीश्वराः) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/3, पृष्ठ 18

ई

ई ī ईइ < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत वर्णमाला का चतुर्थ वर्ण है। ये इ का दीर्घ स्वर है fourth letter of Prakrit vowel alphabet, the long vowel corresponding to short ईहरे वा।। 1/51 हेम., पृष्ठ 436

ईरिस (ईइस) īrisa (īisa) ईदृश < विशेषण [Adjective] ऐसा, इसके समान such, of this kind, of this aspect, endowed with such qualities {शौ.} (चेटी-) अय्ये! भणामि दाव, ण *ईरिसो* दिट्ठपुरुवो। (आर्ये! भणामि तावद्, ण ईरिसो दिट्ठपूर्वः) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/3, पृष्ठ 18

ईसा īsā ईर्ष्या < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] ईर्ष्या, द्वेष, जलन jealousy, envy, etc. {म.} जत्थ न उज्जग्गरओ जत्थ न *ईसा* विसूरणं माणं। (यत्र नोज्जागरको यत्र नेर्ष्या खेदो मानः) वज्जालग्गं, पेम्मवज्जा, पृष्ठ 112/333

ईसाण īsāṇa ईसान < संज्ञा (पुं.) [Noun] ईसान दिशा, पूर्व- उत्तर का कोने वाली दिशा north-east {शौ.} (अप्सरा-) *ईसाणीए* दिसाए। (ऐशान्या दिशा) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-4/1, पृष्ठ 141

उ

उ u उ< संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत वर्णमाला का पञ्चम वर्ण। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है the fifth letter of prakrit vowel alphabets. . It is produced by tapping both the lips. *उः सास्ना- स्तावके।* हेम.1/75 पृष्ठ 439

उ u तु < अव्यय [Indeclinable] निश्चय, निस्संदेह, वितर्क determination, Undoubtedly, An indeclinable argument showing doubt or uncertainty {म.} कम्मं चिणंति सवसा, तस्सुदयम्मि उ परव्वसा होंति। (कर्म चिन्वन्ति स्ववशाः, तस्योदये तु परवशा भवन्ति) समण, गाथा 60/6, पृष्ठ 20

उअआरि uaāri उपकारिन् < विशेषण [Adjective] उपकार करने वाला beneficent, benevolent, beneficial, useful {शौ.} (उर्वशी-) अविणाम पुणो वि *उअआरिणं* एदं पेक्खिस्सं। (अपि नाम पुनरप्युपकारिणमेनं प्रेक्षिष्ये) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19/1, पृष्ठ 150

उइय (उचित / उचिअ / उचिय / उचिद) uiya (ucita / ucia / uciya / ucida) उचित < विशेषण [Adjective] ठीक, योग्य, सही, उपयुक्त fit, proper, right, suitable {शौ.} (अनसूया-) *उइयं* णो पज्जुवासणं अदिहीणं। (उचितम् नः पर्युपासनमतिथीनाम्) अभि. शाकु., पृष्ठ 145/1

उक्कंठा ukkaṇṭhā उत्कण्ठा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] उत्कण्ठा, उत्सुकता wistfulness, curiosity, yearing {शौ.} (विदूषक-) तधा तक्केमि मए विणिवारिअन्तस्स अधिअदरं बड्ढिदा से *उक्कंठा*। (तथा तर्कयामि मया निवार्यमाणस्य अधिकतरं वर्धिता अस्य उत्कण्ठा) मृच्छ., पृष्ठ 265/5

उक्कण्ठकालण ukkaṇṭha-kālaṇa उत्कण्ठाकारण< संज्ञा (नपुं.) [Noun] उदासी का कारण reason of dejection, unconcern, to become dull or sad, etc. {मा.} (चेटी-) ता तुमं वि दाव अज्जमाणवआदो जाणाहि से *उक्कण्ठकालणं* त्ति। (तत्त्वमपि तावदार्यमाणवकाज्जानीह्यस्योत्कण्ठाकारण मिति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 151

उग्गम (उग्गच्छ) uggama (uggaccha) उद् √गम् < क्रिया [अक.] [Verb] उदय

होना to rise, to originate, to begin {म.} कत्तो *उग्गमइ* रई कत्तो वियसंति पंकयवणाइं। (कुत उद्गच्छति रवि: कुतो विकसन्ति पङ्कजवनानि) वज्जालग्गं, नेहवज्जा,पृष्ठ-28/80

उग्गषेण (उग्गसेण) uggaṣeṇa (uggaseṇa) उग्रसेन < संज्ञा (पुं.) [Noun] उग्रसेन, मथुरा नगरी का एक यदुवंशी राजा Ugrasena, the king of Yadu clan of Mathurā, etc. {मा.} (नन्दगोप-) जदो कंषो वा होदु, कंषष्ष पिदा *उग्गषेणो* वा होदु। (यदि कंसो वा भवतु, कंसस्य पितोग्रसेनो वा भवतु) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 521

उग्घाड ugghāḍa उद् √घाटय् < क्रिया [सक.] [Verb] प्रकट करना, खोलना, बाहर करना to open, to unlock, etc. {मा.} (चेट-) ता जाव दुआलअं शे *उग्घाडेमि*। (तद्यावद् द्वारकं तस्य उद्घाटयामि) मृच्छ., पृष्ठ-152/3

उच्चारिय uccāriya उच्चारित < विशेषण [Adjective] उच्चारित, बोला गया pronounced, articulated, spoken {म.} धवलो धुरम्मि जुत्तो न सहइ *उच्चारियं* हक्कं। (धवलो धुरि युक्तो न सहत उच्चारितं प्रेरणम्) वज्जालग्गं, धवलवज्जा, पृष्ठ 62/181

उच्छंग ucchaṅga उत्संग< संज्ञा (पुं.) [Noun] आंचल, गोद, मध्य भाग lap, wharf, middle part, etc. {शौ.} (सीता-) विसाळदरं *उच्छङ्गं* करेहि। (विशालतरमुत्संङ्गं कुरु) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-1, पृ. 254

उच्छिट्ठ ucchiṭṭha उच्छिष्ट< विशेषण [Adjective] जूठा, अवशिष्ट defiled by eating or drinking out of, rejected, remain {मा.} (शकार-) शव्वं दे *उच्छिट्ठं* दइश्शं। (सर्वं ते उच्छिष्टं दास्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 413/8

उच्छु (इक्खु) ucchu (ikkhu) इक्षु < संज्ञा (पुं.) [Noun] ईख, गन्ना, धान्य विशेष (बरट्टिका नाम का धान्य) sugar cane, another tree, etc. {म.} वियडा वि जंतवाया मउओ नालो रसाउलो *उच्छू*। (विकटा अपि यन्त्रपादा मृदुको नालो रसाकुलः इक्षुः) वज्जालग्गं, जंतियवज्जा, पृष्ठ 182/534

उज्जइणी (उज्जअणी / उज्जयिणी) ujjaiṇī (ujjaaṇī / ujjayaṇī) उज्जयिनी< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] नगरी विशेष, उज्जयिनी,

हिन्दुओं की सात पुण्य नगरियों में से एक, वर्तमान उज्जैन नगर मध्यप्रदेश में a city, the modern Ujjain in Mālavā at M. P., etc. {शौ.} (विदूषक-) किं एत्थ *उज्जइणीए* चोरो वि णत्थि। (किमत्र उज्जयिन्यां चौरोऽपि नास्ति) मृच्छ., पृष्ठ 154/3 {शौ.} (कर्णपूरक-) विसम-भरक्कंता विअ णावा एक्कदो पल्हत्था सअला *उज्जइणी* आसि। (विषमभाराक्रान्ता इव नौः एकतः पर्यस्ता सकला उज्जयिनी आसीत्) मृच्छ., पृष्ठ 142/2

उज्जड ujjaḍa निर्जन< विशेषण [Adjective] निर्जन, खाली स्थान, उजाड़ bleak house, secluded, desolate {म.} जत्थ न खुज्जयविडवो न नई न वणं न उज्जडो गेहो। (यत्र न कुब्जकविटपो न नदी न वनं न निर्जनं गेहं) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 162/482

उज्जल ujjala उज्ज्वल< विशेषण [Adjective] निर्मल, चमकीला bright, shining, laminated {प्राच्या} (विदूषक-) जइ वि एसो *उज्जलो* सिणिद्धो अ सुअन्धो अ, तह वि मसाणवीधीए जादो विअ चम्पअरुक्खो अणहिगमणीओ लोअस्स। (यद्यपि एष उज्ज्वलः स्निग्धश्च सुगन्धश्च तथापि श्मशानवीथ्यां जात इव चम्पक-वृक्षानभिगमनीयो लोकस्य) मृच्छ., पृष्ठ 243/4

उज्जागर (उज्जाअर) ujjāgara (ujjāara) उज्जागर संज्ञा (पुं.) [Noun] जागरण, निद्रा का अभाव awakening, wakefulness, vigil {म.} अज्जं चेय पउत्थो *उज्जागरओ* जणस्स अज्जेय। (अद्यैव प्रोषित उज्जागरो जनस्याद्यैव) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 126/374

उज्जाण ujjāṇa उद्यान संज्ञा (नपुं.) [Noun] उपवन, बगीचा a garden, park {मा.} (चेट-) इमं तं *उज्जाणं*, ता जाव उवशप्पामि। (इदं तदुद्यानम्, तद् यावदुपसर्पामि) मृच्छ., पृष्ठ 363/7

उज्जुअ (उजु / उज्जु) ujjua (uju / ujju) ऋजु/ ऋजुक< विशेषण [Adjective] निष्कपट, सीधा, सर straight, simple, etc. {शौ.} (चेटी-) अज्जए! *उज्जुओ* वम्हणो! (आर्ये! ऋजुको ब्राह्मणः!) मृच्छ., पृष्ठ 299/5

उज्झ ujjha √ उज्झ्< क्रिया [सक.] [Verb] छोड़ देना, त्याग करना to let go, to give up, to let off, to lag aside, etc.

{मा.} (मुष्टिक-) ए ए ळाम! अज्ज मे मुट्ठिपिट्ठगत्तगळिअळुहिळपडळमज्जो जीविअं *उज्झसि*। (ए ए राम! अद्य मे मुष्टिपिष्टगात्रगलितरुधिरपटलमज्जो जीवितमुज्झसि) बाल., भासनाटक., अंक-5, पृष्ठ 553

उज्झाय (उवज्झाअ) ujjhāya (uvajjhāa) उपाध्याय< संज्ञा (पुं.) [Noun] उपाध्याय, पास बैठा कर शिक्षा देने वाला, अध्यापक, गुरु, विशेषकर धर्मगुरु, आचार्य से छोटी पदवी वाला, रत्नत्रय से संयुक्त जिनकथित पदार्थों के शूरवीर उपदेशक और निःकांक्ष भाव सहित मुनिराज (जैन परम्परानुसार) preceptor, scriptual teacher, etc. {शौ.} अरुहा सिद्धायरिया *उज्झाया* साहु पंच परमेट्ठी। (अर्हन्तः सिद्धा आचार्या उपाध्यायाः साधवः पंच परमेष्ठिनः) अट्ठपाहुड मोक्ख पाहुड पृष्ठ 346/104

उज्झिअ (उज्झिय) ujjhia (ujjhiya) उज्झित्वा< पूर्वकालिक कृदन्त [Conjunctive Participle] छोड़कर, त्यागकर abandoned, given up, etc. {शौ.} (विदूषक-) कहं मं *उज्झिअ* गच्छसि। (कथं मामुज्झित्वा गच्छसि) अविमार., भास., गाथा-9/2, पृष्ठ 130 {शौ.} (नलिनिका-) एआइणिं भट्टिदारिअं *उज्झिअ* कहं गमिस्सं। (एकाकिनीं भर्तुदारिकामुज्झित्वा कथं गमिष्यामि) अविमार., भास., अंक-5, पृष्ठ 165

उट्ठिद (उट्ठिय) uṭṭhida (uṭṭhiya) उत्थित< विशेषण [Adjective] खड़ा हुआ, उत्पन्न, उद्भूत, उदित, उद्यत, उद्वसित, बाहर निकला हुआ erected, emerged, appeared, stood, etc. {शौ.} (कुरङ्गी-) हळा! तत्थ वि महन्तो अणत्थो उट्ठिदो विज्जुपदीवं धारिअ कालमेहो। (हला! अत्रापि महाननर्थ उत्थितः विद्युत्प्रदीपं धृत्वा कालमेघः) अविमार., भास., गाथा-1/5, पृष्ठ 163

उडअ (उडज / उडय / उडव) uḍaa (uḍaja / uḍaya / uḍava) उटज < संज्ञा (पुं.) [Noun] कुटी, ऋषि आश्रम, पर्णशाला cottage, hermitage, arboured, etc. {शौ.} (द्वितीया-) ममकेरए *उडए* मक्कण्डेअस्स इसिकुमारअस्स वण्णिचित्तियो मित्तिआ-मोरओ चिट्ठदि। (मदीये उटजे मार्कण्डेयस्यर्षिकुमारस्य वर्णीचित्रितो मृत्तिकामयूरस्तिष्ठति) अभि.शाकु.,कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17/7, पृष्ठ 123 {शौ.} (सीता-)

जाव *उडजं* पविसामि। (यावदुटजं प्रविशामि) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-15/5, पृष्ठ 299

उड्ड [देशज] **uḍḍa** खनक< विशेषण [Adjective] खनक, कुँआ आदि को खोदेन वाला a man who digs a well, pump hole etc. {म.} विलिहइ दो वि तडीओ आणइ हियपाणियं *उड्डो*। (विलिखति द्वे अपि तट्यावानयति हृदयेप्सितपानीयं खनक:) वज्जालग्गं, किविणवज्जा, पृष्ठ 200/586; 587

उण (पुण / पुणु / पुणो / पुणा / पुणाइ / पुण्णाइं) uṇa (puṇa / puṇu / puṇo/ puṇā / puṇāi / puṇṇāiṇ) पुनर्< अव्यय [Indeclinable] इन अर्थों का सूचक अव्यय- पुन:, अवधारण, निश्चय, अधिकार, प्रस्ताव, द्वितीय बार, पक्षान्तर, समुच्चय, पाद पूर्ति में प्रयोग again, once more, etc.
{शौ.} (विदूषक-) मं *उण* बम्हणं पादाइं धोवावेदि। (मां पुनर्ब्राह्मणं पादौ धावयति) मृच्छ., पृष्ठ 153/3

उण्णाम uṇṇāma उन्नमय् [उत् √नम्+णि] < क्रिया [सक.] [Verb] ऊँचा करना to raise, to high, to uplift {शौ.} (चन्दनक-) अरे! *उण्णामेहि* धुरं। (अरे उन्नमय धुरम्) मृच्छ., पृष्ठ 343/6

उण्ह uṇha उष्ण < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] उष्ण, तप्त, गरमी hot, heat, etc. {म.} मा *उण्हं* पियसु जलं विरहिणिविरहाणलेण संतत्तं। (मोष्णं पिब जलं विरहिणीविरहानलेन संतप्तम्) वज्जालग्गं, पंथियवज्जा, पृष्ठ 148/441

उण्होदअ uṇhodaa उष्णोदक संज्ञा (नपुं.) [Noun] उष्णोदक, खौलता हुआ पानी, गरम जल warm or hot water, very hot water, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) को णाम *उण्होदएण* णोमालिअं सिञ्चेदि। (को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-1, पृष्ठ 55/4

उत्त utta उक्त< विशेषण [Adjective] उक्त, कथित, बताया हुआ uttered, said, spoken, mentioned {शौ.} (चेटी-) सज्जळअ! ममप्पदाणं पढुमं एव अज्जुआए *उत्तं*। (सज्जलक! मम प्रदानं प्रथममेवाज्जुकयोक्तम्) चारु.,भासनाटक., अंक-4,पृष्ठ 239

उत्तर uttara उत्तर < विशेषण [Adjective] उत्तर, जवाब, श्रेष्ठ, प्रशस्त, प्रधान उत्तर दिशा में पैदा होने वाला, उत्तरीय, उच्चतर, अपेक्षाकृत ऊँचा, बाद का, दूसरा, आगामी समय, प्रत्युक्ति reply, answer, perfect, main, north, covening veil, etc. {शौ.} (वकुलावलिका-) भट्टा! कहेदु से *उत्तरं*। (भर्ता! कथयत्वस्या उत्तरम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12,पृष्ठ 302/4

उत्तरीअ (उत्तरीय / उत्तरिय / उत्तरिज्ज) uttarīa (uttarīya / uttariya / uttarijja) उत्तरीय< संज्ञा (नपुं.) [Noun] उत्तरीय, दुपट्टा, चादर covering veil, upper garment, etc. {शौ.} (चतुरिका-) जाव देवीए विडवलग्गं *उत्तरीअं* तरलिआ मोचेदि ताव मए णिव्वाहिदो अत्ता। (यावद्देव्या विटपलग्नमुत्तरीयं तरलिका मोचयति तावन्मया निर्वाहित आत्मा) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-22/6, पृष्ठ 108

उत्तुण [देशज] **uttuṇa** गर्विन् < विशेषण [Adjective] गर्वित, अभिमानी, दृस vain, arrogant, proud, etc. {म.} ते अणरह व्व गव्वस्स *उत्तुणा* कह ण लज्जंति। (तेऽनर्हा इव गर्वस्य गर्विणः कथं न लज्जन्ते) गउडवहो,गाथा-83,पृष्ठ 15

उत्थ uttha उत्तिष्ठ [उद् √तिष्ठ] < क्रिया [अक.] [Verb] उठना, खड़े होना to begin, to raise {शौ.} (चेटी-) *उत्थेदु उत्थेदु* अज्जआ। (उत्तिष्ठतु उत्तिष्ठतु आर्या) मृच्छ., पृष्ठ 314/6

उदअ (उदग / उदय / उअअ) udaa (udaga / udaya / uaaa) उदक< संज्ञा (नपुं.) [Noun] पानी, जलाशय, वनस्पति विशेष water, containing water, etc. {मा.} (चेट-) देहि *उदअं*। (देहि उदकम्) मृच्छ., पृष्ठ 153/3

उदु udu ऋतु < संज्ञा (त्रिलिंगी) [Noun] ऋतु, दो मास का काल विशेष, बसंत आदि छः प्रकार का काल, स्त्री धर्म, महिला ऋतु धर्म season, weather, the six season smonthly course (of a woman) menses, etc. {शौ.} (नटी-) अध कदमं उण *उदुं* अधिकरिअगाइस्सं। (अथ कतमं पुनर्ऋतुं अधिकृत्यं गास्यामि) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था.,श्लोक-2,पृष्ठ 4/1

उद्ध uddha ऊर्ध्व< विशेषण [Adjective] ऊँचा, सीधा, खड़ा, ऊपर का, ऊर्ध्व, उन्नत high, superior, upper, etc.

{शौ.} (चेटी-) जधा एदे *उद्धं* पेक्खन्ति। (यथा एतौ ऊर्द्ध्वं प्रेक्षेते) मृच्छ., पृष्ठ 133/2

उद्धुर uddhura उद्धुर < संज्ञा(नपुं.) [Noun] ऊँचा, उद्धुर, लम्बा high, lofty, lifted up {म.} *उद्धुर*-चित्ता कह णाम होंतु ते सुण्ण-ववसाया। (उद्धुरचित्ताः कथं नाम भवन्तु शून्य व्यवसायाः) गउडवहो, गाथा-872, पृष्ठ 144

उदासीण udāsīṇa उदासीन < विशेषण [Adjective] उदासीन, मध्यस्थ, निःस्पृह, तटस्थ, समभाव indifferent, unconcerned, apathetic, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) तहवि मं *उदासीणं* विअ पुच्छसि ? (तथापि मामुदासीनामिव पृच्छसि ?) मृच्छ., पृष्ठ 98/2

उदिद udida उदित< विशेषण [Adjective] उदित, उद्गत risen, ascended, grown, produced, etc. {शौ.} (विदूषक -) ही ही भो! एसो क्खु खंडमोदअसस्सिरीओ उदिदो राआ दुआदीणं। (ही ही भोः! एस खलु खण्डमोदकसश्रीक उदितो राजा द्विजातीनाम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-6/3, पृष्ठ 178

उदु udu ऋतु < संज्ञा (त्रिलिंगी) [Noun] ऋतु, दो मास का काल विशेष, बसंत आदि छः प्रकार का काल, स्त्री धर्म, महिला ऋतु धर्म season, weather, the six season smonthly course (of a woman) menses, etc. {शौ.} (नटी-) अध कदमं उण *उदुं* अधिकरिअगाइस्सं। (अथ कतमं पुनर्ऋतुं अधिकृत्यं गास्यामि) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था.,श्लोक-2,पृष्ठ 4/1

उद्ध uddha ऊर्ध्व < विशेषण [Adjective] ऊँचा, सीधा, खड़ा, ऊपर का, ऊर्ध्व, उन्नत high, superior, upper, etc. {शौ.} (चेटी-) जधा एदे *उद्धं* पेक्खन्ति। (यथा एतौ ऊर्द्ध्वं प्रेक्षेते) मृच्छ., पृष्ठ 133/2

उद्धुर uddhura उद्धुर < संज्ञा (नपुं.) [Noun] ऊँचा, उद्धुर, लम्बा high, lofty, lifted up {म.} *उद्धुर*-चित्ता कह णाम होंतु ते सुण्ण-ववसाया। (उद्धुरचित्ताः कथं नाम भवन्तु शून्य व्यवसायाः) गउडवहो, गाथा-872, पृष्ठ 144

उद्धूदपुप्फ uddhūda-puppha उद्धूतपुष्प< संज्ञा (नपुं.) [Noun] मंजरीवाला पेड़, बौर a tree with blossoms, a cluster of blossoms, of certain trees including

Mango and Neem {शौ.} (चेटी-) अज्जुए! *उद्धूदपुप्फं* सहआरं महु अराओ उवासन्ति। (अज्जुके! उद्धूतपुष्पं सहकारं मधुकरा उपासते) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 215

उप्पज्ज uppajja उत्पद्य [उत् √पद्]< क्रिया [अक.] [Verb] उत्पन्न होना to create, to be produced {म.} *उप्पज्जंति* कईहिययसायरे कव्वरयणाइं। (उत्पद्यन्ते कविहृदयसागरे काव्यरत्नानि) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा,पृष्ठ 8/19

उब्बंध ubbandha उद् √बन्ध< क्रिया (सक.) [Verb] आत्महत्या करना, फांसी लगाना, वेष्टन करना hanging, suicide, etc. {शौ.} (पुरुष-) अहं वि जाव पिअवअस्सस्स जिह्वु दासस्स असुणिदव्वं ण सुणामि ताव *उब्बन्धिअ* अत्ताण वावादेमि त्ति इदं जिण्णुजाणं आअदो। (अहमपि यावत् प्रियवयस्यस्य जिष्णुदासस्याश्रोतध्यं न शृणोमि तावदुद्बध्यात्मानं व्यापादयामीतीद जीर्णोद्यानमागतः) मुद्रा., श्लोक 17

उभअ ubhaa उभय < विशेषण [Adjective] उभय, दोनों both, the two {शौ.} (चेटी-) हद्धि मम किदे *उभअं* संसइदं संवुत्तं-तव सरीरं चारित्तं अ। (हा धिग् मम कृते उभयं संशयितं संवृत्तं- तव शरीरं चारित्रं च) चारु., भासनाटक., गाथा-2/4,पृष्ठ 240

उभअपक्ख ubhaa-pakkha उभयपक्ष< संज्ञा (पुं.) [Noun] उभयपक्ष, दोनों पक्ष both side {शौ.} (नलिनिका-) ऐसे खु भअवं कामदेवो ओघो विअ *उभअपक्खं* पीडेइ। (एष खलु भगवान् कामदेव ओघ इवोभयपक्षं पीडयति) अविमार., भास., गाथा-17/3, पृष्ठ 143

उम्मत्त ummatta उन्मत्त< विशेषण [Adjective] उन्मत्त, उद्धत, उन्माद युक्त, पागल भूताविष्ट mad, amuck, insane, intoxicated drunk (गणिका-) *उम्मत्तिए*! आसाच्छेदं उक्कठन्ता का सहेदि। (उन्मत्तिके! आशाच्छेदमुत्कण्ठमाना का सहते) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 214

उम्मादिद (उम्माइय) ummādida (ummāiya) उन्मादित< विशेषण [Adjective] उन्मत्त किया हु आ maddened {शौ.} (वासवदत्ता-) अअं वि जण एव्वं *उम्मादिदो*। (अयमपि जन एवमुन्मादितः) स्वप्न., भासनाटक.,श्लोक-16/2,पृष्ठ 14"

उयर uyara उदर< संज्ञा (नपुं.) [Noun] उदर, पेट, गह्वर, किसी वस्तु का भीतरी भाग stomach, the belly, the interior or inside of anything {म.} *उयरे* वि मा धरिज्जसु पत्थणभंगो कओ जेण। (उदरेऽपि मा धारय प्रार्थनाभङ्ग: कृतो येन) वज्जालग्गं, विहिवज्जा,पृष्ठ 46/133

उल्लाव ullāva उल्लाप< संज्ञा (पुं.) [Noun] बात, शब्द, आवाज़, उत्तर, विकृत-वचन, बकवाद, उक्ति, कथन, सम्भाषण calling out in a lord, voice, shout, etc. {म.} दोहिं पि तेहि सरिससरिस च्चिय हुंति *उल्लावा*। (द्वाभ्यामपि ताभ्यां सदृशसदृशा एव भवन्त्युल्लापाः) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 94/275

उवऊढ uva-ūḍha उपगूढ< विशेषण [Adjective] आलिंगित, आलिंगन करना embraced, hugged, clasped in arms {म.} सोअइ तुमं ति रुण्णं पहु णा जिअइ त्ति मारुई *उवऊढो*। (शोचति त्वामिति रुदितं प्रभु णा जीवतीति मारुतिरुपगूढः) सेतुबन्धं, गाथा-38/1, पृष्ठ 26

उवक्खित्त uva-kkhitta उपक्षिप्त< विशेषण [Adjective] सौंपा हु आ, प्रारब्ध, शुरु किया हु आ to throw down, to commence, introduce, set on foot, begin to start, etc. {मा.} (विदूषक-) चलणाणुरूवो तत्तहोदीए अहिआरो *उवक्खित्तो*। (चरणानुरूपस्तत्र-भवत्या अधिकार उपक्षिप्तः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-11, पृष्ठ 276/3

उवगअ (उवगय) uva-gaa (uva-gaya) उपगत< विशेषण [Adjective] समीप आया हु आ, पास आया हु आ, ज्ञात, युक्त, प्राप्त, प्रकर्ष प्राप्त, स्वीकृत, अन्तर्भूत drawn near, approached, known,b understood, obtained, gained, dead, etc. {म.} सीआबाहविहाओ दहमुहवज्झदिअहो *उवगओ* सरओ। (सीताबाष्पविघातो दशमुखवध्यदिवस उपगता शरत्) सेतुबन्धं, गाथा-16/1, पृष्ठ 13

उवचिद (उवचिय / उवचिणिअ) uvacida (uvaciya/uvaciṇia) उपचित< विशेषण [Adjective] इकट्ठा किया हु आ, व्याप्त, बढ़ा हु आ, स्थापित, निवेशित, पुष्ट, पीन collected, increased, accumulated, settled, invested, growth, etc. {शौ.} (विदूषक-) हीही भो! इधो वि पंचमे पओट्ठे अअं दलिद्द-जण लोहु प्पादणअरो आहरइ

उवचिदो हिंगु तेल्लगंधो। (हीही भो! इतोऽपि पञ्चमे प्रकोष्ठे अयं दरिद्रजनलोभोत्पादनकर आहरति उपचितो हिङ्गुतैलगन्धः) मृच्छ., पृष्ठ 236/4

उवजीवि uva-jīvi उपजीविन्< विशेषण [Adjective] आश्रय लेने वाला, उपकारक, सेवक, भृत्य, उपकारक living upon, subsisting by, livingunder, servent, subject to, a dependant, parasite {मा.} (संवाहक-) तदो तस्स गुणविक्किणिदसरीरो विस्सरिदकळत्तो *उवजीविओ* संवुत्तो। (ततस्तस्य गुणविक्रीतशरीरः विस्मृतकलत्रः उपजीविकः संवृतः) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 218

उवज्झाय (उवज्झय) uvajjhāya (uvajjhaya) उपाध्याय< संज्ञा (पुं.) [Noun] उपाध्याय, अध्यापक, पढ़ाने वाला, सूत्राध्यापक, जैन मुनि को दी जाती एक पदवी preceptor, scriptual teacher, etc. {अर्धमा.} भवियाणुज्जोययरा, *उवज्झाया* वरमदि देंतु। (भव्यानाम् उद्योतकरा, उपाध्याया वरमति ददतु) समणसुत्तं,पृष्ठ 4/10

उवट्ठाण uva-ṭṭhāṇa उपस्थान < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पूजा होना, बैठना, व्रत स्थापन, एक ही स्थान में विशेष काल तक रहना, अनुष्ठान, आचार going or coming near to, proximity, place of worship, etc. {शौ.} (सहजन्या-) उदअं मुहस्स भअवदो सुज्जस्स *उवट्ठाणं* करेम्ह। (उदयोन्मुखस्य भगवतः सूर्यस्योपस्थानं कुर्वः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-3/3, पृष्ठ 196

उवणिमंत uva-ṇi-manta उपनि √मन्त्रय् < क्रिया [सक.] [Verb] निमंत्रण देना, आमंत्रित करना invite, to give invitation, etc. {शौ.} (नटी-) अज्ज *उवणिमन्तिदा* मए भअवन्तो बह्मणा। (आर्य उपनिमन्त्रिता मया भगवन्तो ब्राह्मणाः) मुद्रा., श्लोक-5/1, पृष्ठ 2

उवत्थिद (उवट्ठिय / उवट्ठिअ) uvatthida (uvaṭṭhiya / uvaṭṭhia) उपस्थित [उप √स्था+क्त] < विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] समीप स्थित, तैयार, प्राप्त, आश्रित, मुमुक्षु approached, arrived, present, close or near, etc {मा.} (चेट-) एशे *उवत्थिदे* पवहणे। (एतदुपस्थितं प्रवहणम्) मृच्छ., पृष्ठ 394/8

उवदेस uva-desa उपदेश < संज्ञा (पुं.) [Noun] उपदेश, सिखावन, शिक्षा, गुप्त बात का कहना, मंत्र आदि देना sermon, preaching, advice, precept, counsel, etc. {शौ.} (देवी-) तेण हि दुवेवि भअवदीए *उवदेसं* दंसेध। (तेन हि द्वावपि भगवत्यायुपदेशं दर्शयतम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था.,श्लोक-17/1,पृष्ठ 253

उवयार uvayāra उपचार < संज्ञा (पुं.) [Noun] उपचार, चिकित्सा, पूजा, आदर, व्यवहार, अध्यारोप medical treatment, worship, respect, behavior, etc. {म.} *उवयारो* जं न कओ तं चिय कलियं छइल्लेहिं। (उपचारो यन्न कृतस्तदेव कलितं विदग्धै:) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 96/284

उवरज्ज uva-rajja उप √रज्ज्< क्रिया [सक.] [Verb] ग्रस्त होना/ करना, प्रभावित होना to get affected, to lead, etc. {शौ.} (नटी-) उवरज्जदि किल भअवं चन्द्रो त्ति। (उपरज्यते किल भगवान् चन्द्र इति) मुद्रा., श्लोक-5/1, पृष्ठ 2

उवरोध uvarodha उपरोध< संज्ञा (पुं.) [Noun] कष्ट, बाधा, प्रतिबन्ध, नगर आदि का सैन्य द्वारा वेष्टन, निर्बन्ध, आग्रह trouble, disturbance, molestation, obstruction, impediment, obstacles, etc. {शौ.} (देवी-) अज्जउत्तं पुरोकरिअ को वि वदविसेसो मए संपादणीओ ता मुहु त्तं*उवरोधो* सहीअदु। (आर्यपुत्रं पुरस्कृत्य कोऽपिव्रतविशेषो मया संपादनीय:। तन्मुहू र्तमुपरोध सह्यताम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था.,श्लोक-12/3,पृष्ठ 184

उवरोह uva-roha उपरोध< संज्ञा (पुं.) [Noun] बाधा, प्रतिबन्ध, निर्बन्ध, आग्रह hindrance, restriction, unfettered insistence, etc. {शौ.} (विदूषक-) मा दाव अत्तभोदो दक्खिण्णस्स *उवरोहं* करेहि। (मा तावदत्र भवतो दाक्षिण्यस्योपरोधं कुरु) मालविका.,कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19, पृष्ठ 286/3

उवलक्खिद uva-lakkhida उपलक्षित [उप √लक्ष्+क्त]< विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] अनुमान किया हुआ, जाना हुआ observed, marked, understood, comprehended {शौ.} (विदूषक-) सुट्ठु *उवलक्खिदं* दुट्ठविलासिणीए। (सुष्ठु उपलक्षितं दुष्टविलासिन्या) मृच्छ., पृष्ठ 250/4

उवलद्ध uva-laddha उपलब्ध< विशेषण [Adjective] प्राप्त, उपलब्ध, विज्ञात, उपालब्ध obtained, got, attained, available, etc {शौ.} (उर्वशी-) हिअअ! मं उज्झिअ इदो संकंतेण तुए दाणिं फलं *उवलद्धं।* (हृदय! मामुज्झित्वा इतः संक्रान्तेन त्वयेदानीं फलमुपलब्धम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10/3, पृष्ठ 182

उववण uvavaṇa उपवन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] बाग, बगीचा, उपवन, वाटिका a garden, etc. {शौ.} (विदूषक-) किदं तुए *उववणं* तपोवणं ति पेक्खामि। (कृतं त्वयोपवनं तपोवनमिति पश्यामि) अभि.शाकु., पृष्ठ 195/2

उववास uva-vāsa उपवास संज्ञा (पुं.) [Noun] उपवास, व्रत, लंघन a fast, religous fast, etc. {शौ.} (नटी-) अज्ज! *उववासो* गहिदो। (आर्य! उपवासो गृहीतः) मृच्छ., पृष्ठ 15/1

उवविट्ठ uva-viṭṭha उपविष्ट [उप √विश्]< विशेषण/ क्रिया [Adjective\ Verb] बैठा हुआ seated {शौ.} (विदूषक-) तुमं *उवविट्ठो*। (त्वम् उपविष्टः) मृच्छ., पृष्ठ 34/1

उवविस uvavisa उप √विश् क्रिया [सक.] [Verb] निकट बैठना to sit near {शौ.} (वासवदत्ता-) जाव *उवविसामि*। (यावदुपविशामि) स्वप्न.,भासनाटक., श्लोक-16/3,पृष्ठ 16

उवसप्प uva-sappa उप √सृप् < क्रिया [सक.] [Verb] समीप जाना to sit, to go close, to go near {शौ.} (चेटी-) ता जाव *उवसप्पामि*। (तद्यावदुपसर्पामि) मृच्छ., पृष्ठ 190/4

उवसम uva-sama उपशम< संज्ञा (पुं.) [Noun] ठंडा होना, शान्त होना, नष्ट होना, क्रोध रहित होना relaxation, cessation, suppression of desires, rest, remedy, etc. {शौ.} (विदूषक-) मा एव्वं। चण्डि! अण्णोण्णकलहप्पिआणं मत्तहत्थीणं एक्कदरस्सिं अणिज्जिदे कुदो *उवसमो*। (मैवम्। चण्डि! अन्योन्यकलहप्रिययोर्मत्त-हस्तिनोरेकतरस्मिन्ननिर्जिते कुतः उपशमः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15/1, पृष्ठ 252

उवहस uva-hasa उपहस् [उप √हस्] < क्रिया [सक.] [Verb] हँसना, उपहास करना to ridicule, satirical laughter {शौ.}(चेटी-)

हदास! मा एव्वं *उवहस* अम्हाणं अत्तिअं। (हताश! मैवमुपहस अस्माकं मातरम्) मृच्छ., पृष्ठ 244/4

उवहसणीअदा uva-hasaṇīadā उपहसनीयता संज्ञा (स्त्री.) [Noun] हास्यास्पद ridiculous{शौ.} (वसन्तसेना-) हञ्जे! सहीजणादो *उवहसणीअदं* रक्खामि। (हञ्जे! सखीजनादुपहसनीयतां रक्षामि) मृच्छ., पृष्ठ 192/4

उवहार uvahāra उपहार< संज्ञा (पुं.) [Noun] उपहार, भेंट, सम्मान gift, etc. {शौ.}

(विदूषक-) अहं उण बम्हणो जहिं तहिं जणेहिं चउप्पहोवणीदो *उवहारो* कुक्कुरेहिं विअ खज्जमाणो विवज्जिस्सं। (अहं पुनर्ब्राह्मण: यस्मिन् तस्मिन् जनै: चतुष्पथोपनीत: उपहार: कुक्कुरैरिव खाद्यमानो विपत्स्ये) मृच्छ., पृष्ठ 90/1

उवाअ (उवाय) uvāa (uvāya) उपाय< संज्ञा (पुं.) [Noun] हेतु, साधन, दृष्टान्त, प्रतिकार a mode, a plan, means, effort, initiation, etc. {शौ.} (चन्दनक-) ता को एत्थ *उवाओ*? (तत् कोऽत्र उपाय: ?) मृच्छ., पृष्ठ 349/8

उवाअण (उवायण) uvāaṇa (uvāyaṇa) उपायन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] भेंट, उपहार present, meeting, gift, etc.{शौ.} (विदूषक-) अज्ज एव्व पढमावदारसुहआणि रत्तकुरवआणि *उवाअणं* पेसिअ णववसन्तावदारव्ववदेसेण इरावदीए णिउणिआमुहेण पत्थिदो भवं- इच्छामि अज्जत्तेण सह दोलाहिरोहणं अणुहविदुं त्ति। (अद्यैन प्रथमावतार सुभगानि रक्त कुरवकाण्युपायनं प्रेष्य नववसन्तावतारव्यपदेशेनरावत्या निपुणिकामुखेन प्रार्थितो भवान्- इच्छाम्यार्यपुत्रेण सह दोलाधिरोहणमनुभवितुमिति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2, पृष्ठ 270/3

उवाशक (उवासग / उवासअ / उवासय) uvāśaka (uvāsaga / uvāsaa / uvāsaya) उपासक< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] उपासना करने वाला, बौद्ध श्रावक, सेवक, [सं] श्रावक, जैन या बौद्ध गृहस्थ worshipper, follower, etc. {मा.} (शकार-)

पशीददु *उवाशके*। (प्रसीदतु उपासकः) मृच्छ., पृष्ठ 376/8

उवास uvāsa उप √आस्< क्रिया [सक.] [Verb] उपासना करना to worship, to adore {शौ.} (गणिका-) हञ्जे! एवं *उवासन्ति।* (हञ्जे! एवम् उपासन्ते) चारु.,भासनाटक., अंक-2,पृष्ठ 215

उव्वसी uvvasī उर्वशी संज्ञा (स्त्री.) [Noun] उर्वशी, एक अप्सरा इन्द्रलोक की जो पुरुरवा की पत्नी बनी शाप की समाप्ति पर पुनः इन्द्रलोक वापस चली गई Urvashi, a famous Apsaras or nymph of Indra's court who became the wife of Pururavas and went back at the end of the curse, etc. (चित्रलेखा-) हला *उव्वसि*! पज्जवत्थावेहि अत्ताणं। (सखि उर्वशी! पर्यवस्थापयात्मानम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था.,श्लोक-7/1,पृष्ठ 144

उव्वाअ uvvāa उद्वात< विशेषण [Adjective] शुष्क, उद्वात parched, dried up, etc. {म.} *उव्वाअ-* पल्ललुप्पण्ण-पंडु-भावाइं रण्णाइं। (उद्वातपल्वलोत्पन्न-पाण्डुभावानि अरण्यानि) गउडवहो, गाथा-553, पृष्ठ 44

उव्विग्ग uvvigga उद्विग्न विशेषण [Adjective] खिन्न, उद्विग्न, भीत perturbed, agitated, worried, grieved, distressed {म.} *उव्विग्गो* भमइ अली हिंडंतो सयलवणराई। (उद्विग्नो भ्रमत्यलिर्हिण्डमानः सकलवनराजीः) वज्जालग्गं, इंदिंदिरवज्जा,पृष्ठ 82/239

उसुअवअण usua-vaaṇa उत्सुकवदन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] उदास, उत्कण्ठित sad, depressed, curious, etc. {शौ.} (विदूषक-) एसा णादिपरिक्खिदवेसा *ऊसुअवअणा* एआइणी मालविआ अदूरे वट्टदि। (एषा नातिपरिष्कृतवेषोत्सुकवदनैकाकिनी मालविकाऽदूरे वर्तते) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-5, पृष्ठ 272/3

उस्सर ussara उत्सर (उत् √सृ) < क्रिया [अक.] [Verb] हटना, दूर जाना to move away, to move aside {शौ.} [नेपथ्ये] *उस्सरह उस्सरह* अय्या! *उस्सरह*! (उत्सरतोत्सरतार्याः! उत्सरह) स्वप्न., भासनाटक., गाथा 1, पृष्ठ 1/1

उस्साह (उच्छाह) ussāha (ucchāha) उत्साह< संज्ञा (पुं.) [Noun] उत्साह, उत्कण्ठा, उत्सुकता, पराक्रम, शक्ति, दृढ

उद्यम, स्थिर प्रयत्न enthusiasm, zeal, encouragement, fortitude, perseverance, etc. {शौ.} (बकुलावलिका-) तेण हि पुणो अणुजाणादु मं अज्जो। जाव से अज्जस्स परितोसणिवेदणेण *उस्साहं* वड्ढेमि। (तेन हि पुनरनुजानातु मामार्यः। यावदस्या आर्यस्य परितोषनिवेदनेनोत्साहं वर्धयामि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-5/1, पृष्ठ 244

उस्सूण ussūṇa उच्छून< विशेषण [Adjective] फूला हुआ, सूजा हुआ swollen etc. {म.} *उस्सूण*-भाव-संसत्त-तुरअ-णर-रुंड-कअ-डिंबो। (उच्छून भावसंसत्त तुरगनररुण्डकृतडिम्बः) गउडवहो, गाथा-436, पृष्ठ 67

उस्सेअ ussea उत्सेक< संज्ञा (पुं.) [Noun] गर्व, उन्नति, सिंचन proud, spouting out /over, foaming upward, increase {शौ.} (गणिका-) किं दे *उस्सेअस्स* कारणं। (किं ते उत्सेकस्य कारणम्) चारु., भासनाटक., अंक-2,पृष्ठ 221

ऊ

ऊ ū ऊ < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत वर्णमाला का छठा वर्ण। इस स्वर का उच्चारण स्थान ओष्ठ है the sixth letter of Prakrit vowel alphabets. It is produced by tapping both the lips *ऊः स्तेने वा।।* हेम., 1/147 पृष्ठ 449

ऊ ū तु < अव्यय [Indeclinable] इन अर्थों का सूचक- निश्चय, भेद, विशेषण, समुच्चय, कारण, पादपूरण अव्यय define these meaning- determination, difference, adjectives, set of, reason, etc {म.} जहन्नेणेगसित्थाई, एवं दव्वेण *ऊ* भवे। (धन्येनैकसिक्थादि एवं द्रव्येण तु भवेत्) समण., गाथा 448/28, पृष्ठ 142

ऊससिअ ūsasia उच्छवसित< संज्ञा (नपुं.) [Noun] उच्छवसित, उसास, उल्लसित, पुलकित breathing out, exhalation, respiration, leaved up, sprouted, etc. {म.} *ऊससिअ*-सामलारुण-तम-वेल्ली-मूल-लक्खिअं कोवि। (उच्छवसितश्यामलारुणत-मोवल्लीमूल-लक्षितं कोऽपि) गउडवहो, गाथा-1105,पृष्ठ 163

ऊसुअ ūsua उत्सुक < विशेषण [Adjective] उत्सुक, चिन्ता, उत्कण्ठित

keen, keenly desirous, eager, anxious, zealous, curious, etc. {शौ.} (बकुलावलिका-) किं विआरेसि। *ऊसुआ* क्खु इमस्स तवणीआसोअस्स कुसुमोग्गमे देवी। (किं विचारयसि। उत्सुका खल्वस्य तपनीयाशोकस्य कुसुमोदुगमे देवी) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10, पृष्ठ 275/3

ऊसुव (उस्सव / ऊसव) ūsuva (ussava / ūsava) उत्सव< संज्ञा (पुं.) [Noun] उत्सव, समारोह, पर्व, महोत्सव festival, joyous or festive occasion, jubilee {शौ.} (चेटी-) कामो हि भअवं अणवगीदो *ऊसुवो* तरुणजणस्स। (कामो हि भगवाननवगीत उत्सवस्तरुणजनस्य) चारु., भासनाटक., अंक- 2, पृष्ठ 213/2

ए

ए e ए < संज्ञा (पुं.) [Noun] स्वर वर्ण विशेष a particular vowel {म.} एओआरपराणिअ अंआरपारं अ पाअए णत्थि। (एओकार-पराणि च अकारपरं च प्राकृते नास्ति) नाट्य., श्लोक-7/17 पृष्ठ 541

एक्क (एक / एग) ekka (eka / ega) एक< सर्वनाम [Pronoun] एक, प्रथम संख्या, एकाकी, अद्वितीय one, first, single, unique, etc. {म.} *एक्को* वि को वि नियगोत्तभूसणो धरउ जणणिउयरम्मि। (एकोऽपि कोऽपि निजगोत्रभूषणो धृयितां जनन्युदरे) वज्जालग्गं, सुहइवज्जा, पृष्ठ 58/170

एक्कच्छत्तप्पुहुवीपदि ekkacchatta-ppuhuvī-padi एकच्छत्रपृथ्वीपति< संज्ञा (पुं.) [Noun] पृथ्वी का एक छत्र राजा, विशाल साम्राज्य वाला राजा supreme king of earth, king of large empire, etc. {मा.} (वृद्धगोपालक-) णो ळाआ विळाडो *एक्कच्छत्तप्पुहुवीपदी* होदु। (अस्माकं राजा विराट एकच्छत्रपृथिवीपतिर्भवतु) पञ्चरात्रम्., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 389

एक्काइ ekkāi एकाकिन्< विशेषण [Adjective] एकाकी, अकेला lonely, single, sole, etc {मा.} (नन्दगोप-) ता मा खु एदं दुक्खं गोवजणेहि अणुहूअमाणं त्ति मए *एक्काइणा* णिगळगुळुचळणेण इम राळिअं गह्मिअ णिग्गदो म्हि। (तद् मा खल्वेतद् दुःखं गोपजनैरनुभयमानमिति

मयैकाकिना निगलगुरुचरणेनेमां दारिकां गृहित्वा निर्गतोऽस्मि) बाल.,भासनाटक., श्लोक-19/1,पृष्ठ 519

एगावलि egāvali एकावलि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] एकावली, इकहरी, विविध प्रकार की मणियों से गुथित हार single row, single string of pearls or beads, etc. {शौ.} (उर्वशी-) अम्भो! लदाविउवे एसा *एआवली* वैआअन्तिअ से लग्गा। (अहो! लताविटप एषैकावली वैजयन्तिका मे लग्ना) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17/1, पृष्ठ 149

एत्तअ ettaa एतावत्/ इयत् < विशेषण [Adjective] इतना as much, so much {शौ.} (वासवदत्ता-) होदु *एत्तअं* (भवत्वेतावत्) स्वप्न., भासनाटक., गाथा-16/3, पृष्ठ 18

एत्थ ettha अत्र < अव्यय [Indeclinable] यहाँ, यहाँ पर in this place, here, in this respect, matter or case {शौ.} (विदूषक-) किं दाणिं *एत्थ* कहिस्सं ? (किमिदानीमत्र कथयिष्यामि?) मृच्छ., पृष्ठ 270/5

एव्वं (एवं) evvam (evam) एवम्< अव्यय [Indeclinable] इस तरह, और thus, so, in this manner or way, and {शौ.} (चेटी-) मा पुणो *एव्वं* भणिस्ससि। (मा पुनरेवं भणिष्यसि) मृच्छ., पृष्ठ 193/4

ऐ

ऐ ai ऐ संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत में इसका का प्रयोग नहीं होता है it not used in Prakrit अयौ वैत्।।1/169 हेम., पृष्ठ 453 अयिशब्दे आदेः स्वस्य परेण सस्वरव्यञ्जनेन सह ऐद् वा भवति। ऐ बीहेमि।

ओ

ओ o ओ < संज्ञा (पुं) [Noun] स्वर वर्ण विशेष, संबोधन आमंत्रण वितर्क, विस्मय, आरम्भ a particular special vowel, addressing, Invitation, Astonishment, Initiate. {म.} ओ हिअअ मडहसरिआजलरअहीरन्तदीहदारु व्व। (हे हृदय स्वल्पसरिजलस्य-हियमाणदीर्घ-दारुवत्) गाहा., गाथा-5/2, पृष्ठ 52

ओंकार oṁ-kāra ओङ्कार < संज्ञा (पुं.) [Noun] ओं अक्षर, पवित्र ध्वनि ओम्, पवित्र उद्गार 'ओम्' the symbol om,

beginning,initial letter of hymn, commencement (fig), etc. {शौ.} पंचक्खरनिप्पण्णो, *ओंकारो* पंच परमिट्ठी। (पञ्चाक्षरनिष्पन्न, ओङ्कार पञ्च परमेष्ठिनः) समणसुत्तं, पृष्ठ 4/12

ओअक्ख oakkha √ दृश् < क्रिया [सक.] [Verb] देखना to see, etc. {शौ.}
(नेपथ्ये-) बहिण पइं इअ अब्भत्थिअम्मि *ओअक्खहि* मं ता।(भगिनि त्वामित्यभ्यर्थये आचक्षस्व मे तत्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/4,पृष्ठ 201

ओअक्ख oakkha √ दृश् < क्रिया [सक.] [Verb] देखना to see, etc. {शौ.} (नेपथ्ये-) बहिण पइं इअ अब्भत्थिअम्मि ओअक्खहि मं ता। (भगिनि त्वामित्यभ्यर्थये आचक्षस्व मे तत्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/4, पृष्ठ 201

ओआस (अवगास) oāsa (avagāsa) अवकाश < संज्ञा (पुं.) [Noun] अवकाश, स्थान, फुरसत, अवस्थान leave, vacation, place, recess, leisure {म.} जणसंकुलं न सुन्नं रुसइ अत्ता न देइ *ओआसं।* (जनसंकुलं न शून्यं रुष्यति श्वश्रूर्न ददात्यवकाशम्) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 166/493

ओगाह (ओगाढ) ogāha / ogāḍha अवगाढ< संज्ञा (पुं.) [Noun] गहरा, गहन, गाढ़ा, निमग्न, व्याप्त, आश्रित deep, entered into, plunged into, immersed, etc. {शौ.} (मागधिका-) ओगाहो पओसो। (अवगाढः प्रदोषः) अविमार., भास., गाथा-13/3, पृष्ठ 133

ओप्पुसिअ (ओप्पुंसिअ / उप्पुसिअ) oppusia (oppuṁsia / uppusia) उत्प्रोञ्छित < विशेषण [Adjective] पोछा गया, लुप्त, प्रोञ्छित wiped out, etc. {म.} तरलत्तण वअणिज्जं लच्छीएँ तुमाएँ णवर *ओप्पुसिअं* (तरलत्ववचनीयं लक्ष्म्यास्त्वया केवलं उत्प्रोञ्छितम्) गउडवहो, गाथा-723, पृष्ठ 108

ओसर osara अवसर < संज्ञा (पुं.) [Noun] अवसर, समय, अन्तर opportunity, occasion, time, difference {शौ.} (चेटी-) अहं *ओसरं* जाणिअ अज्जुआए णिवेदेमि। (अहमवसरं ज्ञात्वाज्जुकायै निवेदयामि) चारु., भासनाटक., गाथा-5/4,पृष्ठ 243

ओसह osaha औषध < संज्ञा (नपुं.) [Noun] औषधि, दवाई, भैषज medicine, drug {शौ.} (वासवदत्ता-) इमं दाव *ओसहं* किं णाम। (इदं तावदौषधं किं नाम) स्वप्न.,भासनाटक.,गाथा-16/3,पृष्ठ 19

ओहस ohasa उप √हस् < क्रिया [सक.] [Verb] ठिठोली, हंसी उड़ाना, धूर्त, कम्पित to ridicule, to deride, to make fun, etc. {शौ.} (उर्वशी-) सहि! तदा हेमऊडसिहरे लदाविडवेण खणविग्घिदआआसगमणं मं *ओहसिअ* किं दाणिं पुच्छसि कहिं गच्छीअदि त्ति। (सखि! तदा हेमकूटशिखरे लताविटपेन क्षणविघ्नतिाकाशगमनं मामुपहस्य किमिदानीं पृच्छसि क्व गम्यते इति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/2, पृष्ठ 159

ओहालिअ ohālia अपवारित < विशेषण [Adjective] ढका हुआ, छिपा हुआ covered, concealed, etc. {मा.} (वसन्तसेना-) *ओहालिअं* पक्खदुआलाए शज्जं पवहणं चिट्ठति। (अपवारितं पक्षवारके सज्जं प्रवहणं तिष्ठति) मृच्छ., पृष्ठ 322/6

औ

औ ō औ संज्ञा (पुं) [Noun] प्राकृत में इस स्वर का प्रयोग नहीं होता है it is not used in Prakrit alphabet औत ओत्।। हेम. 1/159 पृष्ठ 451

क

क ka क< संज्ञा (पुं.) प्राकृत वर्णमाला का प्रथम व्यंजन वर्ण, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है the first consonant letter of the Prakrit alphabets. Which is spoken from throat {म.} वच्चंति कगतदयवा लोपं अत्थं च से वहंति सरा। (प्राप्नुवन्ति कगतदयवा लोपं अर्धं च तेषां वहन्ति स्वराः) नाट्य., श्लोक 8/17, पृष्ठ 542

कंकाल kaṅkāla कङ्काल< संज्ञा (नपुं.) [Noun] कंकाल, चमड़ी और मांस रहित अस्थि पंजर skeleton, etc. {म.} भय-चलिअण्ण-दिसा-घडिअ-वायसं महिस-*कंकालं*। (भयचलितान्यदिग्घटितवायसं महिषकङ्कालम्) गउडवहो, गाथा-541, पृष्ठ 82

कंचणार kañcaṇāra काञ्चनार< संज्ञा (पुं.) [Noun] कचनार, वृक्ष विशेष the kovidara tree {म.} इह तं संचारिअ-*कंचणार*-केसर-कसाय-गंधाण। (इह तत्

संचारित-काञ्चनारकेसरकषायगन्धानाम्) गउडवहो, गाथा-593, पृष्ठ 90

कंचुय (कंचु / कंचुअ / कंचुग) kañcuya (kañcu / kañcua / kañcuga) कञ्चुक< संज्ञा (पुं.) [Noun] वस्त्र, स्त्रियों का पुराने समय का वस्त्र, साँप की केंचुली, कवच, वृक्ष विशेष cloth, an armour, the skin of a snake, kind of tree, etc. {म.} न मुएइ कण्ह जुण्णं पि *कंचुयं*अज्ज वि विसाहा। (न मुञ्चति कृष्ण जीर्णमपि कञ्चुकमद्यापि विशाखा) वज्जालग्गं, कण्हवज्जा, पृष्ठ 204

कंठाहरण kaṇṭhāharaṇa कण्ठाभरण< संज्ञा (नपुं.) [Noun] गले का आभूषण a neck-ornament, necklace {शौ.} (वसन्तसेना-) ता एसो तुह ज्जेव *कंठाहरणं* होदु रअणावली। (तदेषः तवैव कण्ठाभरणं भवतु रत्नावली) मृच्छ., पृष्ठ 316/6

कंडुयण kaṇḍuyaṇa कण्डूयन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] खुजली, खुजलवाना scratching, rubbing {म.} चिता-णह-कंडू-संभवम्मि विहिणो ण *कंडुयणे*। (चिन्तानखकण्डूसंभवे विधेर्न कण्डूयने) गउडवहो, गाथा-986, पृष्ठ 146

कंता kantā कान्ता< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कान्ता, स्त्री, पत्नी, रावण की एक पत्नी का नाम, एक योग दृष्टि, प्यारी beloved, sweetheart, wife, etc. {अपभ्रंश} (नेपथ्ये-) एत्थ वणे भम्मंतें जइ पइँ दिट्ठी सा महु *कंता*। (अत्र वने भ्रमता यदि त्वया दृष्टा सा मम कान्ता) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/4,पृष्ठ 201

कंद kanda कन्द< संज्ञा (नपुं.) [Noun] दृढ़, मत्त, आच्छादन strong, etc. {म.} मांसलिअ-सवण-भुअइंद-रअण-*कंद*-प्पहा-दिट्ठी। (मांसलित श्रवणभुजगेन्द्ररत्नकन्द-प्रभा दृष्टिः) गउडवहो, गाथा-739,पृष्ठ 110

कंदप्पबाण kandappa-bāṇa कंदर्पबाण< संज्ञा (पुं., स्त्री.) [Noun] कामदेव का बाण cupid arrow, etc. {शौ.} (विदूषक-) चिट्ठ दाव। इमिणा दण्डकट्ठेण *कन्दप्पबाणं* णासइस्सं। (तिष्ठ तावत्। अनने दण्डकाष्ठेन कन्दर्पबाणं नाशयिष्यामि) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-7/6, पृष्ठ 98

कंदुअ (कंदुग / कंदुक) kandua (kanduga / kanduka) कन्दुक< संज्ञा (पुं.) [Noun] गेंद, कन्दुक, वनस्पति विशेष ball, special

plant, etc. {शौ.} (वासवदत्ता-) हला! एसो दे *कन्दुओ*। (हला! एष ते कन्दुकः) स्वप्न.,भासनाटक.,श्लोक-16/2,पृष्ठ 13

कंध (खंध) kandha (khandha) स्कन्ध < संज्ञा (पुं.) [Noun] स्कन्ध, कंधा, शाखा या बड़ी डाली, परिच्छेद, अध्याय, खण्ड (किसी पुस्तक का), दीवाल, पुद्गलों का पिण्ड, समूह the shoulder, a branch or large bough, a chapter, section, division (of a book), a troop, group ,etc. {म.} सरसल्लिएण भणियं *कंधं* धुणिऊण जुण्णहरिणेण। (शरशल्यितेन भणितं स्कन्धं धूत्वा जीर्णहरिणेन) वज्जालग्गं, हरिणवज्जा, पृष्ठ 74/218

कंष (कंस) kaṁṣa (kaṁsa) कंस < संज्ञा (पुं.) [Noun] श्रीकृष्ण जी का मातुल, मथुरा का एक राजा, राजा उग्रसेन का एक पुत्र, काँसा maternal uncle of Lord Kṛiṣṇa, the king of Mathurā, the son of king Ugrasena, bronze, bell metal, etc. {मा.} (वसुदेव-) एदिणा *कंषष्ष* ळञ्ञो वअणं षुणिअ अवलद्धो कषाहि ताळिअ णिअळेहि बद्धो म्हि। (एतेन कंसस्य राज्ञो वचनं श्रुत्वापराद्धः कशाभिस्ताडयित्वा निगलैर्बद्धो ऽस्मि) बाल.,भासनाटक.,श्लोक-19/1,पृष्ठ 518

कंसताल kaṁsa-tāla कांस्यताल < संज्ञा (पुं.) [Noun] करताल, एक प्रकार का वाद्य a kind of musical instrument, etc. {शौ.} (सूत्रधार-) एस *कंसतालाणं* पक्खालणुज्जलाणं हल्लबोलो। (एष कांस्यतालानां प्रक्षालनोज्ज्वलानां हलहलः) कर्पूर., पृष्ठ 7/1

कइ (कवि) kai (kavi) कवि < संज्ञा (पुं.) [Noun] कवि, काव्य रचना करने वाला a poet, etc. {म.} (सूत्रधार-) को उण तस्स *कई* ? (कः पुनस्तस्य कविः ?) कर्पूर., पृष्ठ 8/1

कइत्थ kaittha कपित्थ < संज्ञा (पुं.) [Noun] कैथ का पेड़, फल विशेष the wood-apple tree {शौ.} (विदूषक-) अए! को दाणिं एसो पाआरवेट्ठिदं विअ *कइत्थं* मं लोट्ठकेहिं ताडेदि? (अये! क इदानीमेष प्राकार-वेष्टितमिव कपित्थं मां लोष्टकैः ताडयति ?) मृच्छ., पृष्ठ 268/5

कउलणारी kaula-ṇārī कौलनारी< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कुलीन स्त्री, कौलनारी, कौल सम्प्रदाय की स्त्री a woman belonging to the śākta (Kaula) {म.} गअणे च्चिअ गंध-उडिं कुणंति तुह *कउल-*

णारीओ। (गगन एव गन्धकुटीं कुर्वन्ति तव कौलनार्यः) गउडवहो, गाथा-319, पृष्ठ 50

कक्केअण (कक्केरअ) kakkeaṇa (kakkeraa) कर्केतन/ कर्केरक< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] रत्नविशेष, मणि विशेष की एक जाति, एक प्रकार का फल a kind of gem, a Bimba fruit {म.} परिवाअइ *कक्केअण*-पराअ-कणउज्जलो अहरो। (परिवायति कर्केतनपरागकणोज्ज्वलोऽधरः) गउडवहो, गाथा-794, पृष्ठ 118

कक्कोल (कंकोल) kakkola (kaṅkola) कड्कोल< संज्ञा (पुं.) [Noun] अशोक, शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद, उस वृक्ष का फल Ashoka tree, a kind of a tree and its fruit {म.} *कक्कोल*-दालि-कवि-सत्थ-संकुला रण्ण-भूमीओ। (कड्कोलदालि-कपिसार्थसंकुला अरण्यभूमयः) गउडवहो, गाथा-582, पृष्ठ 88

कक्खड [देशज] **kakkhaḍa** पीन< विशेषण [Adjective] पीन, पुष्ट, मोटा strong, fatty {म.} पेढाल-थणहराअड्ढि-*कक्खडे* वीडअ-द्वाणे। (विपुलस्तनभराकृष्टिपीने वीटिका स्थाने) गउडवहो, गाथा-731, पृष्ठ 109

कक्खा (कच्छा) kakkhā (kacchā) कक्षा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कक्षा, विभाग, अंश, उरो बन्धन, हाथी के पेट पर बाँधने की रज्जू, काँख, बगल, श्रेणी, पंक्ति, कमर पर बाँधने का वस्त्र, जनानख़ाना, अन्तःपुर, घर की भीत, प्रकोष्ठ class, classroom, orbit, an elephant's rope, also his girth, a girdle, waist-band, a surrounding wall, a courtyard, an inner apartment, an private room, etc. {शौ.} (पुरुष-) अज्ज इअं मुद्दालञ्छिदा पेडिआ तस्स ताडीअमाणस्स *कक्खादो* णिवडिदा। (आर्य इय मुद्रालाञ्छिता पेटिका तस्य ताडयमानस्य कक्षाया निपतिता) मुद्रा., श्लोक 9,पृष्ठ 71/5

कड्केल्ली kaṅkellī कड्कोली < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कालीमिर्च, फलदार वृक्ष black pepper {म.}(देवी-) *कड्केल्ली* कुलकंपिणो फणिलआणिप्पट्टणट्ठावआ। (कड्कोली-कुलकम्पिनः फणिलतानिष्पाष्ट-नर्तकाः) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 25/17

कच्चूर kaccūra कर्चूर < संज्ञा (पुं.) [Noun] सुगन्धित वृक्ष विशेष, कचूर, काली हल्दी a kind of a fragrant tree, black turmeric {म.} हा किं णु अणव-कच्चूर-भंग-विच्छाअ-पाडले तरुणि। (हा किं नु अनवकर्चूरभंग-विच्छायपाटलौ तरुणि) गउडवहो, गाथा-189, पृष्ठ 31

कज्ज kajja कार्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] जो किया जाय वह, करने योग्य, प्रयोजन, काम workable, task, assignment, etc. {म.} (सूत्रधार-) कधेहि एत्थ उववासे केण *कज्जं* ? (कथय अत्र उपवासे केन कार्यम् ?) मृच्छ., पृष्ठ 18/1

कज्जफल kajja-phala कार्यफल < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] कार्यफल, कार्य का पूर्ण होना, कार्य रूप फल result of work, fruit of undertaking, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) दंसइस्सदि *कज्जफलं* गरुअं चाणक्कणीदि लदा। (दर्शयिष्यति कार्यफलं गणक चाणक्यनीतिलता) मुद्रा., श्लोक-1, पृष्ठ 63/5

कज्जल kajjala कज्जल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] काजल, कज्जल, सुरमा collyrium, kohl, soot {म.} एमइ मारंति जणं अलज्जि किं *कज्जलं* देसि। (एवमेव मारयतो जनमलज्जे किं कज्जलं ददासि) वज्जालग्गं, नयणवज्जा,पृष्ठ 100/296

कज्जारंभ kajjārambha कार्यारंभ< संज्ञा (नपुं.) [Noun] कार्य का आरंभ starting of work {म.} अमअरससारगरुअं *कज्जारम्भस्स* जोव्वणं व समुद्दं। (अमृतरससारगुरुकं कार्यारम्भस्य यौवनमिव समुद्रम्) सेतुबन्धं, गाथा-2/1, पृष्ठ 42

कडअ (कडय / कडग) kaḍaa (kaḍaya / kaḍaga) कटग < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] शिविर, सेना रहने का स्थान, देश विशेष, कड़ा, वलय, यवनिका, परदा, पर्वत का एक भाग army, legion, troop of soldiers, ridge, etc. {शौ.} (प्रतिहारी-) कुमार एसो खलु *कडआदो* णिक्कमिदुकामाणं मुद्दासंपदाणं अणुचिट्ठदि। (कुमार एष खलु कटकान्निष्क्रामितुकामानां मुद्रा-संप्रदानमनुतिष्ठति) मुद्रा., श्लोक 5, पृष्ठ 66/5

कडप्प [देशज] kaḍappa कलाप< (समूह) संज्ञा (पुं.) [Noun] ढेर, समूह, कलाप, वस्त्र का एक भाग, निकर mass,

heap, bundle, etc. {म.} रवरोस-दलिअ-घण-णिरवलंब-संघडिअ-तडि-*कडप्पो* व्व। (रवरोषदलित-घननिरवलम्बसंघटिततडित्समूह इव) गउडवहो, गाथा-12, पृष्ठ 1

कडार kaḍāra कडार< विशेषण [Adjective] भूरे रंग का brown, mahogany {म.} णर-हरिणो जअइ *कडार*-केसरो कंधरा-बंधो। (नरहरेर्जयति कडारकेसरः कंधराबन्धः) गउडवहो, गाथा-12, पृष्ठ 2

कड्ढ kaḍḍha √ कृष् < क्रिया (सक.) [Verb] निकाल लेना, खींचना, रेखा करना, पढ़ना, उच्चारण करना to plough, to draw, to pull, to draw towards oneself, to read, to utter, etc. {म.} अइणिउणो जोइसिओ *कड्ढइ* नाडीगयं सुक्कं। (अतिनिपुणो ज्यौतिषिक: कर्षति नाडीगतं शुक्रम्) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 172/505

कणीअस (कणीअ) kaṇīasa (kaṇīa) कनीयस्< विशेषण [Adjective] छोटी/छोटा, लघु, कनिष्ट little, small, tiny, short, younger, pretty, junior, etc. {शौ.} (उभे-) जो सो भट्टिणा विजअदंडेहिँ विदब्भणाहं वसीकरिअ बंधणादो मोइओ कुमारो माहवसेणो णाम तस्स इमं *कणीअसी* भइणी मालविआ णाम। (यः स भर्त्रा विजयदण्डैर्विदर्भनाथं वशीकृत्य बन्धनान्मोचितः कुमारो माघवसेनो नाम तस्येयं कनीयसी भगिनी मालविका नाम) मालविका.,कालिदास ग्रन्था., श्लोक-7/5, पृष्ठ 319

कण्ण kaṇṇa कण्व< संज्ञा (पुं.) [Noun] कण्व, एक ऋषि का नाम, शकुन्तला का धर्मपिता, काण्व ब्राह्मण वंश का प्रवर्तक Kaṇva name of senior sage, foster father of Śhakuntalā and pyrometer of the line, etc. {शौ.} (अदिति-) भअवं! इमाए दुहिदुमणोरहसंपत्तीए *कण्णो* वि दाव सुदवित्थारो करीअदु। (भगवन्! अनया दुहितृमनोरथसंपत्त्या कण्वोऽपि तावच्छ्रुत-विस्तारः क्रियताम्) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-33/7, पृष्ठ 135

कण्ण kaṇṇa कर्ण < संज्ञा (पुं., नपुं.) कान, कोटि भाग, अग्रांश, अंगदेश का राजा, युधिष्ठिर का बड़ा भाई, काना ear, the organ (of hearing of scale or balance) counterbalance (o a cot) curce, eroobed,

helm, sudder, etc. {शौ.} (विदूषक-) को वि अदिट्ठो सुणिस्सदि। *कण्णे* दे कहेमि। एव्वं विअ। (कोप्यदृष्टः श्रोष्यति। कर्णे ते कथयामि। एवमिव) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2, पृष्ठ 291/4

कण्णा kaṇṇā कन्या संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कन्या, लड़की, कुमारी, ज्योतिष शास्त्र प्रसिद्ध एक राशि unmarried girl, daughter, sixth zodic sign, virgo {शौ.} (सर्वा-) आअच्छ भट्टा! आअच्छ। अम्हाणं *कण्णाणं* तुए सह विवाहो होदु। (आगच्छ भर्तः! आगच्छ। अस्माकं कन्यानां त्वया सह विवाहो भवतु) बाल., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 525

कण्णाड kaṇṇāḍa कर्णाट संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] कर्णाटक राज्य, उस देश में उत्पन्न, वहाँ का निवासी Karnataka state, etc. {म.} *कण्णाडीणं* कुणंता कुरलतरलणं कुंतलीणं पिएसुं। (कर्णाटीनां कुर्वन्तो कुन्तलतरलनं कुन्तलीनां प्रियेषु) कर्पूर.,प्रथम जवनिका, पृष्ठ 20/15

कण्ह kaṇha कृष्ण < संज्ञा / विशेषण [Noun/ Adjective] श्रीकृष्ण, काला वर्ण, पाँचवाँ वासुदेव और बलदेव के पूर्वजन्म के गुरु का नाम, विक्रम की तृतीय शताब्दी का एक प्रसिद्ध जैनाचार्य, दिगम्बर संप्रदाय के प्रमुख शिवभूति मुनि के गुरु (जैन परम्परानुसार), श्यामवर्ण Shri Krishna, the black colour, etc. {म.} *कण्हो कण्हो* निसि चंदवज्जिया निबिडवेडिसा जउणा। (कृष्णः कृष्णो निशा चन्द्रवर्जिता निबिडवेतसा यमुना) वज्जालग्गं, कण्हवज्जा, पृष्ठ 202/594

कत्तव्व kattavva कर्त्तव्य संभाव्य कृदन्त/ विशेषण/संज्ञा [Potential Participle/ Adjective/Noun] कर्तव्य, करने योग्य काम, जो उचित हो या होना चाहिए, नष्ट करने योग्य, धर्म duty, what is fit or right to be done, obligation {शौ.} एदं पि मए *कत्तव्वं* आसी। (एतदपि मया कर्तव्यमासीत्) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/3, पृष्ठ 18

कत्थूरिआ (कत्थूरिया / कत्थूरी) kattha̱ūriā (kattha̱ūriyā / kattha̱ūrī) कस्तूरिका/ कस्तूरी< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] हरिण की नाभि में होने वाली सुगन्धित वस्तु musk {प्राच्या} (विदूषक-) सालीअदि *कत्थूरिआ*। (सार्य्यते कस्तूरिका) मृच्छ., पृष्ठ 239/4

कथं (कहं / कधं) kathaṁ (kahaṁ / kadhaṁ) कथम्< अव्यय [Indeclinable] किस प्रकार, कैसे, किस रीति से, क्यों how, in what way, why, in what manner, etc. {शौ.} (मदनिका-) अम्मो! *कथं* सव्विलओ! (अहो कथं! शर्वलिकः!) मृच्छ., पृष्ठ 198/4

कदुअ kadua कृत्वा [कृ √क्त्वा] < पूर्वकालिक कृदन्त/ क्रिया [सक.] [Conjunctive Participle/ Verb] करके after doing, having done, etc. {शौ.} (विदूषक-) तत्तभवं चारुदत्तो सीसे अञ्जलिं *कदुअ* भोदिं विण्णवेदि। (तत्रभवान् चारुदत्तः शीर्षे अञ्जलिं कृत्वा भवतीं विज्ञापयति) मृच्छ., पृष्ठ 251/4

कद्दम kaddama कर्दम< संज्ञा(पुं.) [Noun] कीच, कीचड़ mud {मा.} (शकार-) अधवा पाणिअं पुंजीकदुअ *कद्दमे* फेलदु। (अथवा पानीयं पुञ्जीकृत्य कर्द्दमे क्षिपतु) मृच्छ., पृष्ठ 382/8

कप्पअरु kappa-aru कल्पतरु < संज्ञा (पुं.) [Noun] कल्पवृक्ष, स्वर्गीय वृक्षों में से एक, इच्छानुरूप फल देने वाला काल्पनिक वृक्ष, कामना पूरी करने वाला वृक्ष the imaginary tree of Indra's paradise which grants all desires or wishes, etc. {म.}

पसरिअपवणुव्वेलिअपल्लवणिअरुसुललिअ विविहपआरेहिं णच्चइ *कप्पअरु।* (प्रसूतपवनोद्वेल्लितपल्लवनिकरः सुललित-विविधप्रकारैः नृत्यति कल्पतरुः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 11/4, पृष्ठ 198

कप्पसद kappa-sada कल्पशत< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] समय, सौ कल्प, 1000 युग *100, 1,00,000 अर्थात् एक लाख युग Indian measurement of time in which one kalpa consists of 100 yugas, etc. {शौ.} (मेनका-) सव्वहा *कप्पसदं* महाराओ पुहविं पालअन्तो होदु। (सर्वथा कल्पशतं महाराजः पृथ्वीं पालयन्भवतु) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-14/1, पृष्ठ 147

कप्पिद (कप्पिय) kappida (kappiya) कल्पित< विशेषण [Adjective] कल्पित, रचित, निर्मित, स्थापित, समीप में रखा हुआ, कल्पना निर्मित, विकल्पित, व्यवस्थित, छिन्न, कटा हुआ imagined, fancied, supposed, inferred, assumed, devised, factitious planned, etc. {शौ.} (धारिणी-) अज्जउत्त! एस ते अम्हेहिँ तरुणीजणसहाअस्स असोओ संकेदघरो

कप्पिदो। (आर्यपुत्र! एष तेऽस्माभिस्तरुणी-जनसहायस्याशोकः संकेतगृहं कल्पितः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-7/5, पृष्ठ 316

कप्फाड [देशज] **kapphāda** गुहा< संज्ञा (पुं.) [Noun] गुहा, गुफा a cave {म.} इह सुइरेण पसम्मइ *कप्फाड*-परंपरा पडिक्खलिओ। (इह सुचिरेण प्रशाम्यति गुहापरम्पराप्रतिस्खलितः) गउडवहो, गाथा-623, पृष्ठ 94

कम kama क्रम< संज्ञा (नपुं.) [Noun] कार्य, काम, क्रम, अनुक्रम, तारतम्य, चरण work, order, method, serial, foot, etc. {शौ.} होदु, अविआरिअ *कमं* ण करिस्सदि। (भवतु, अविचार्य क्रमं न करिष्यति) स्वप्न., भासनाटक.,श्लोक-9/1,पृष्ठ 6

कमल kamala कमल < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] कमल, पद्म, जिसका बल जल है वह, पुष्प विशेष, पिंगल प्रसिद्ध एक गण, अन्त्य अक्षर जिसमें गुरु हो वह गण (व्याकरण शास्त्रानुसार) lotus, etc. {म.} उप्फुल्लदलं *कमलं* करेण मउलाइयं कीस। (उत्फुल्लदलं कमलं करेण मुकुलीकृतं कस्मात्) वज्जालग्गं, हियालीवज्जा, पृष्ठ 210/617

कम्मरयण kamma-rayaṇa कर्मरत्न < संज्ञा (नपुं.) [Noun] कर्मरत्न, कर्म रूपी रत्न, भाग्य fortune, etc. {म.} तं किं वि *कम्मरयणं* धीरा ववसंति साहसवसेण। (तत्किमपि कर्मरत्नं धीरा व्यवस्यन्ति साहसवशेन) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 38/111

कय्यसिद्धि kayya-siddhi कार्यसिद्धि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कार्य की सिद्धि, कार्य का होना accomplishment of object, etc. {शौ.} (सीता-) गच्छ *कय्यसिद्धी* होदु। (गच्छ कार्यसिद्धिर्भवतु) अभिषेक., भासनाटक., श्लोक-24/2, पृष्ठ 337

करंक [देशज] **karaṅka** करङ्क < संज्ञा (पुं.) [Noun] भिक्षा पात्र, अशोक वृक्ष a small pot (of cocoanut), alms-boul, Ashoka tree {म.} आसण्णमिमम्मि जरा-*करंक*-भावं सरीरम्मि। (आसन्नमस्मिन् जराकरङ्कभावं शरीरे) गउडवहो, गाथा-1000, पृष्ठ 148

करंबिय karambiya करम्बित< विशेषण [Adjective] मिलाया हुआ, व्याप्त,

खचित mixed, intermingled, prevalent,rife, etc. {म.} अयसेण रिऊण *करंबिआओ* कित्तीओ तुह धरिज्जंति। (अयशसा रिपोः करम्बिताः कीर्तयस्तव धार्यन्ते) गउडवहो, गाथा-237, पृष्ठ 38

करणि [देशज] *karaṇi* रूप संज्ञा (स्त्री.) [Noun] रूप, आकार, सादृश्य, अनुकरण, स्वीकार form, resemblance, similarity, imitation, etc. {म.} *केसर*-कलाव-करणिं सो च्चिअ सिढिलो जडा-णिवहो। (केसरकलापरूपं स एव शिथिलो जटानिवहः) गउडवहो, गाथा-1007, पृष्ठ 149

करयल karayala करतल संज्ञा (पुं.) [Noun] करतल, हथेली, हस्तभाग, करपुट palm, etc. {म.} परिमुसइ *करयलेण* वि पेच्छइ अच्छीहि तं सया किविणो। (परिमृशति करतलेनापि पश्यत्यक्षिभ्यां तत्सदा कृपणः) वज्जालग्गं, किविणवज्जा, पृष्ठ 198/582

करह karaha करभ< संज्ञा (पुं.) [Noun] उष्ट्र, ऊँट camel {म.} *करहस्स* तह वि मरुविलसियाइ हियए खुडुक्कंति। (करभस्य तथापि मरुविलसितानि हृदय आविर्भवन्ति) वज्जालग्गं, करहवज्जा,पृष्ठ 76/220

करिल्ल [देशज] karilla वंशाङ्कुर< संज्ञा (नपुं.) [Noun] बाँस की कोपल, वंशाकुर, रेतीली भूमि में उत्पन्न होने वाला वृक्ष विशेष जिसे ऊँट खाते हैं, करेला तरकारी विशेष, अंकुर, कन्दल, करील वृक्ष, करील a bamboo sprout, a tree grown in desert, bitter guard, sprout, etc. {म.}हा हा तं चेअ *करिल्ल*-पिअअमा-बाहु-सयण-दुल्ललिअं। (हा हा तदेव वंशाङ्कुर-प्रियतमाबाहु शयनदुर्ललितम्) गउडवहो, गाथा-342, पृष्ठ 53

करीर karīra करीर < संज्ञा (पुं.) [Noun] वृक्ष विशेष a kind of tree {म.} इह सा स-केसरोव्वत्त-कुसुम-कविला-*करीर* वणराई। (इह सा सकेसरोवृत्तकुसुमकपिला-करीरवनराजिः) गउडवहो, गाथा-534,पृष्ठ 81

कलंक kalaṅka कलंक< संज्ञा (पुं.) [Noun] दोष, कलंक, लाञ्छन, चिन्ह defect, a dark spot, spot, etc. {म.} होहिइ किं पि कलंकं धुव्वंतं जं न फिट्टिहिइ। (भविष्यति कोऽपि कलङ्को धाव्यमानो यो न यास्यति) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 38/112

कलअंठी kala-aṇṭhī कलकण्ठी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कोयल, कलकण्ठी cuckoo {म.} साहु महु-वासराणं अंकुठ-*कलअंठि*-कंठाण। (साधु मधुवासराणामकुण्ठ-कलकण्ठीकण्ठानाम्) गउड़वहो, गाथा-596, पृष्ठ 90

कलअल kala-ala कलकल< संज्ञा (पुं.) [Noun] कोलाहल, कल-कल रव, आवाज़, चूना आदि से मिश्रित जल sweet and soft sound (of a flowing stream or spring), etc. {मा.} (भिक्षु-) इमं लाअमग्गं किं णु हु एशे लाअमग्गे महंते *कलअले* शुणीअदि ? (अयं राजमार्ग: किं नु खल्वेष राजमार्गे महान् कलकल: श्रूयते?) मृच्छ., पृष्ठ 568/10

कलत्त kalatta कलत्र < संज्ञा (नपुं.) [Noun] स्त्री, भार्या, पत्नी woman, wife, etc. {म.} पुण्णेहि कह वि पावइ छंदे कव्व-*कलत्तं* अ। (पुण्यै: कथमपि प्राप्नोति छन्दसि काव्यं कलत्रं च) वज्जालग्गं,कव्ववज्जा, पृष्ठ 8/24

कलल kalala कलल संज्ञा (नपुं.) [Noun] अण्डे के भीतर का तरल पदार्थ, वीर्य और शोणित का समुदाय, गर्भवेष्टन चर्म yolk of an egg, foetal fluid, etc. {म.} इह वेल्लंत-दुमुज्झिअ-भिण्ण-वओ-अंड-*कलल* सीअरिणो। (इह वेल्लद्द्रुमोज्झित-भिन्नवयोऽण्डकल्ल शीकरिणः) गउड़वहो, गाथा-650, पृष्ठ 98

कललिय kalaliya कलिल< विशेषण [Adjective] कीचड़वाला किया हुआ, कर्दमित muddy {म.} अण्णोण्ण-कलह-विअलिअ-केसर-कीलाल-*कललिअ*-द्दारा। (अन्योन्यकलह-विगलितकेसर-कीलाल-कललितद्वाराः) गउड़वहो, गाथा-331, पृष्ठ 52

कलविंक kalaviṅka कलविंक < संज्ञा (पुं.) [Noun] चटक, गौरैया पक्षी a sparrow {म.} जरढ-*कलविंक*-गल-मंडलाहिलीणा जलहराण। (जरठ कलविङ्कगल-मण्डलाभिलीना जलधराणाम्) गउडवहो, गाथा-647, पृष्ठ 97

कलह kalaha कलह < संज्ञा (पुं.) [Noun] कलह, झगड़ा quarrel, strife, wrangle, etc. {शौ.} (देवी-) णं *कलह*प्पिओ सि। (ननु कलहप्रियोऽसि) मालविका.,कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15/1, पृष्ठ 251

कला (कळा) kalā (kaḷā) कला< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कला, विद्या, विज्ञान, अंश,

भाग, मात्रा, समय का सूक्ष्म भाग, चन्द्रमा का सोलहवां हिस्सा, पुरुष योग्य कला के मुख्य बहत्तर और स्त्रीयोग कला के मुख्य चौंसठ भेद हैं art, science, phase of the moon, degree, minute a small part of anything {शौ.} (गणिका-) सुउमारा *कला* सिक्खिदा अय्येण। (सुकुमारा कला शिक्षितार्येण) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 217

कलिआ kaliā कलिका संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कली, कलिका bud {म.} निबिडिदलसंठियं पि हु *कलियं* वियसाविऊण सविसेसं। (निबिडदलसंस्थितामपि खलु कलिकां विकास्य सविशेषम्) वज्जालग्गं, इंदिंदिरवज्जा, पृष्ठ 86/252

कल्ल kalla कल्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] कल गया हुआ या आगामी दिन, शब्द, आवाज, संख्या, गिनती, आरोग्य, सुबह yesterday, tomorrow, sound, number, dawn, etc. {म.} *कल्लं* किर खरहियओ पवसिहिइ पिओ त्ति सुव्वइ जणम्मि। (कल्यं किल खरहृदय: प्रवत्स्यति प्रिय इति श्रूयते जने) वज्जालग्गं, पवसियवज्जा, पृष्ठ 124/365

कवअहर kavaa-hara कवचधर< विशेषण [Adjective] कवच धारण करने वाला armored person, etc. {शौ.} (तापसी-) वच्छे! एसो गहीदविज्जो आऊ संपदं *कवअहरो* संवुत्तो। (वत्से! एष गृहीतविद्य आयु : साम्प्रतं कवचधरः संवृत्तः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12/5, पृष्ठ 228

कवड kavaḍa कपट< संज्ञा (नपुं.) [Noun] कपट, माया, छद्म, शाठ्य deception, fraud, hypocrisy, etc. {मा.} (शकार-) *कवड*-कावेडिआए शम्पदं णिगूहेशि। (कपट-कापटिकया साम्प्रतं निगूहसि) मृच्छ., पृष्ठ 511/9

कवल kavala कवल < संज्ञा (पुं.) [Noun] ग्रास, कौर, कवल a mouthful, morsel {म.} *कवलं* पि न गेण्हसि करह मुद्ध किं चक्खियमपुव्वं। (कवलमपि न गृह्णासि करभ मुग्ध किमास्वादितमपूर्वम्) वज्जालग्गं, करहवज्जा,पृष्ठ 76/223

कवाडसद्द kavāḍa-sadda कपाटशब्द< संज्ञा (नपुं.) [Noun] दरवाजा खटखटाना door knocking {शौ.} (चेटी-) हं *कवाडसद्दो* विअ। भट्टिदारिआ मं सद्दावेदि। भट्टिडारिए।

इअम्हि। (हं कपाटशब्द इव। भर्तृदारिका मां शब्दायते। भर्तृदारिके। इयमस्मि) चारु., भासनाटक., गाथा-15, अंक-3, पृष्ठ 232

कवाल kavāla कपाल< संज्ञा (नपुं.) [Noun] कपाल, मस्तक, खोपडी skull, skull bone, cranium {म.} हत्थट्ठयिं *कवालं* न मुयइ नूणं खणं पि खट्टंगं। (हस्तस्थतिं कपालं न मुञ्चति नूनं क्षणमपि खट्वाङ्गम्) वज्जालग्गं, ओलुग्गाविया-वज्जा, पृष्ठ 148/436

कव्व kava काव्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] काव्य, कविता, कवितामयी रचना (काव्य शास्त्र के रचयिताओं ने काव्यशास्त्र की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ दी हैं) poetry, etc. {म.} (राजा-) उत्तिविसेसो *कव्वं* भासा जा होइ सा होउ। (उक्तिविशेष: काव्यं भाषा या भवति सा भवतु) कर्पूर., प्रथम जवनिका,पृष्ठ 10/7

कव्वबंध kavva-bandha काव्यबंध < संज्ञा (नपुं.) [Noun] काव्यबंध, काव्यरचना poetry, creation, etc. {शौ.} (निपुणिका-) भट्टारअं उद्दिसिअ उव्वसीए *कव्वबंधो* त्ति तक्केमि।(भट्टारकमुद्दिश्योर्वश्याः काव्यबन्ध इति तर्कयामि) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-18/2, पृष्ठ 170

कसव्व [देशज] kasavva व्याप्त< विशेषण [Adjective] प्रचुर, अल्प, व्याप्त, आर्द्र, कर्कश full, coverd, etc.{म.} वूढोअअ-कअ-रव-चुण्ण-कलुस-पालास-फल-*कसव्वाओ।* (व्यूढोदक-कृत-रव-चूर्ण-कलुष-पालाश-फल-व्याप्ताः) गउडवहो, गाथा-375, पृष्ठ 58

कसेरु kaseru कशेरु < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] जलीय कन्द-विशेष, जल में होने वाला तृणविशेष a kind of grass grown in water, etc. {म.} अहिराअंति धुआरुण-*कसेरु*-मूलाओ सरसीओ। (अभिराजन्ते धुतारुणकसेरुमूलाः सरस्यः) गउडवहो, गाथा-393,पृष्ठ 61

कह kaha √ कथय् < क्रिया [सक.] [Verb] कहना, बोलना to say, to speak {शौ.} (कैकयी-) भोदु, दाणि काळो *कहेउं*। (भवतु इदानीं कालः कथयितुम्) प्रतिमा., श्लोक-14, पृष्ठ 308/4 {शौ.} (विलासिनी-) सुहं सइदु भट्टिदारिया। मे *कहेहि*। (सुखं शेतां

भर्तुदारिका। मम कथय) अविमा., भासनाटक., पृष्ठ 134/3

कहा kahā कथा< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कथा, किस्सा, वार्त्ता, कहानी story, tale, narrative (mythological) fable, etc. {म.} एयाणं च *कहाणं* तिविहा सोयारो हवंति। (एतासां च कथानां त्रिविधा: श्रोतारो भवन्ति) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 4

कहिं (कहि) kahiṁ (kahi) कुत्र, क्व < अव्यय [Indeclinable] कहाँ, किस स्थान में where, in which place, anywhere, etc. {शौ.} (कुमुदिनी-) हला! *कहिं* पत्थिदासि। (सखि! कुत्र प्रस्थितासि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-3/1, पृष्ठ 242

कहिद kahida कथित < विशेषण [Adjective] कहा गया, कहा हुआ said, told {शौ.} (कैकयी-) भोदु, दाणि काळो *कहेउं।* (भवतु इदानीं काल: कथयितुम्) प्रतिमा.श्लोक-14,पृष्ठ 308/4

कहुल्लोल kahullola कथोल्लोल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] कथा, प्रवचन continuous narration of stories {म.} उद्देसे आसि णराहिवाण विअडा *कहुल्लोला* (उद्देशे आसन्नराधिपानां विकटाः कथोल्लोलाः) गउडवहो, गाथा-494, पृष्ठ 74

काअ (काक / काय) kāa (kāka / kāya) काक < संज्ञा (पुं.) [Noun] कौआ, कौवा, पक्षी विशेष, घृणित व्यक्ति, नीच और ढीठ पुरुष crow, raven, cunning or wicked fellow, larynx, uvula, etc. {म.} हंसो मसाणमज्झे *काओ* जइ वसइ पंकयवणम्मि। (हंस: श्मशानमध्ये काको यदि वसति पङ्कजवने) वज्जालग्गं, हंसवज्जा, पृष्ठ 88/258

काअत्थ (कायत्थ) kāattha (kāyattha) कायस्थ< संज्ञा (पुं.) [Noun] कायस्थ जाति a caste {शौ.} (विदूषक-) अवि अ भो वअस्स! गणिआ, हत्थी, *काअत्थओ,* भिक्खू, चाडो, रासहो अ, जहिं एदे णिवसन्ति। (अपि च भो वयस्य! गणिका, हस्ती, कायस्थः, भिक्षुः, चाटः, रासभश्च यत्र एते निवसन्ति) मृच्छ., पृष्ठ 263/5

काणण kāṇaṇa कानन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] वन, बगीचा garden, forest, etc.{म.} (नेपथ्ये-) अहिअ दुम्मिअ–माणसओ *काणणे* भमइ गइंदओ। (अधिकं

दूनमानस: काननेे भ्रमति गजेन्द्र:) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/4, पृष्ठ 203

कादर kādara कातर संज्ञा (त्रिलिंगी) [Noun] कातर, अधीर, भीरु, डरपोक, दु:खी, शोकान्वित, डरा हुआ, आन्दोलित, घबड़ाया हुआ, बेबस, पानी पर बहुत तैरने वाला और न डूबने वाला, एक प्रकार की बड़ी मछली, नाव skittish, afraid, hesitant, pigeon hearted, apprehensive, fearul, cowardly, caitiff, aghast, daunted, timid, fainthearted, timorous, meek, skittsh, etc. {शौ.} (इरावती-) ठाणे क्खु *कादरं* मे हिअअं। (स्थाने खलु कातरं मे हृदयम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 278/3

कादरीभूद kādarī-bhūda कातरीभूत < विशेषण [Adjective] भयभीत, दु:खी, हतोत्साह, भय के कारण कांपने वाला afraid, with fear, discouraged, etc. {शौ.} (अनसूया-) इअं णो पिअसही महु अरेण अहिहु अमाणा *कादरीभूदा*। (इयं नो प्रियसखी मधुकरेणाभिभूयमाना कातरीभूता) अभि.शाकु., पृष्ठ 144/1

काम kāma काम < संज्ञा (पुं.) [Noun] विषयप्राप्ति की इच्छा, कामना, अनुराग, प्रेम या विषय भोग की इच्छा जो जीवन के चार पुरुषार्थों में से एक है, कामदेव, स्त्री-पुरुष के परस्पर संयोग की अभिलाषा काम है, कार्य desire, lust, wish, sex, work, etc. {म.} *कामस्स* तत्तवत्तिं कुणंति ते कहं न लज्जंति। (कामस्य तत्त्ववार्तां कुर्वन्ति ते कथं न लज्जन्ते) वज्जालग्गं, पृष्ठ 2/2

कामदेव kāmadeva कामदेव संज्ञा (पुं.) [Noun] कामदेव, अनंग, प्रेम के देवता god of love, cupid, etc. {म.} जिणिऊण *कामदेवं* समुब्भिया धयवडाय व्व। (जित्वा कामदेवं समूर्ध्वीकृता ध्वजपताकेव) वज्जालग्गं, सुरयवज्जा,पृष्ठ 112/328

कामुअ (कामुग) kāmua (kāmuga) कामुक< विशेषण [Adjective] कामुक, कामी, प्रेमी, कामना करता हुआ, इच्छुक, कामासक्त, कामातुर full of sexual desire, sexy, lustful, voluptuous, passionate, etc. {शौ.} (विदूषक-) अहो! कुम्भीलएहिं *कामुएहिं* च परिहरणीआ क्खु चन्दिआ। (अहो! कुम्भीरकैः कामुकैश्च परिहरणीया खलु चन्द्रिका) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-6, पृष्ठ 298/4

कायव्व kāyavva कर्तव्य < संज्ञा/ संभाव्य कृदन्त [Noun/ Potential Participle] कर्तव्य, जो कुछ उचित हो या होना चाहिए, धर्म duty, what is fit or ought to be done, etc. {म.} अप्पहियपरहियाणं अप्पहियं चेव *कायव्वं*। (आत्महित-परहितयोरात्महितं चैव कर्तव्यम्) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 28/83

कारण kāraṇa कारण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] कारण, हेतु, प्रयोजन, अपवाद cause, reason, exception (to the rule), etc. {म.} (राजा-) तुज्झह *कारण* रण्णे भमन्ते को ण हु पुच्छिअ मइँ रोअंते। (तव कारणेनारण्ये भ्रमता को न खलु पृष्टो मया रुदता) विक्रमो.,कालिदास ग्रन्था.,श्लोक-72/4,पृष्ठ 216

कारही kārahī कारभी < विशेषण [Adjective] करभ नामक सुगन्धित द्रव्य विशेष related to the karabha plant {म.} इह *कारहीसु* कल्लं उण्णंति व भूसु सावसाआसु। (इह कारभीषु कल्यमुन्नयन्तीव भूषु सावसादासु) गउडवहो, गाथा-668,पृष्ठ 100

कारे kāre कारय् (कृ √णि) < क्रिया [सक.] प्रे. [Verb] करवाना, बनवाना caused to be done or effected {शौ.} (वसन्तसेना-) जाद! *कारेहि* सोवण्णसअडिअं। (जात! कारय सौवर्णशकटिकाम्) मृच्छ., पृष्ठ 321/8

काल kāla काल < संज्ञा (पुं.) [Noun] मृत्यु, काल का अंश या अवधि (दिन के घन्टे या पहर), समय, भाग्य, नियति, प्रस्ताव, प्रसंग, विलम्ब, ज्योतिष शास्त्र, प्रसिद्ध एक कुयोग, सातवीं नरकपृथ्वी का एक नरकावास, (जैन परम्परानुसार) जैनों के छः द्रव्यों में एक द्रव्य वैशेषिकों के द्वारा नौ द्रव्यों में से death, a period or portion of time (as the hours or watches of a day) time, fortune, the time considered as one of the nine dravyas by the vaiśeṣikas, etc. {म.} हा दिव्वपरिणईए कवलिज्जइ को न *कालेणं*। (हा दैवपरिणत्या कवलीक्रियते को न कालेन) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 44/126

कालहरण kāla-haraṇa कालहरण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] कालहरण, समय को छीनने वाला, समयहरण, विलम्ब loss of time, delay, etc. {शौ.} (पुरुष-) ता एदिणा

कारणेण होदि से मरणस्स *कालहरणं*। (तदेत्तेन कारणेन भवत्यस्य मरण भवत्यस्य कालहरणम्) मुद्रा., श्लोक 17,पृष्ठ 90/6

काळिअ (कालिय / कालिअ) kāḷia (kāliya / kalia) कालिय< संज्ञा (पुं.) [Noun] अत्यन्त विशालकाय सर्प जो यमुना नदी की तली में रहता था यह स्थान सौमरि ऋषि के शाप के कारण साँपों के शत्रु गरुड़ के लिए निषिद्ध था, कृष्ण ने जब कि अभी वह बालक ही था उस साँप को कुचल दिया a tremendously large serpent who stays at the bottom of the Yamunā (which was a ground forbidden to Garuḍa the enemy of the sage saubhari) he was crushed to death by Kṛiṣna when he was but a boy, etc. {पैशाची} (दामक-) जेषु भट्टा। एषो भट्टा षड्कळिषणो पव्वदादो जमुणाहळे *काळिओ* णाम महाणाओ उट्ठिदो त्ति षुणिअ तं पडिगओ। (जयतु भर्ता। एष भर्ता संकर्षण: पवर्ताद् यमुनाहदे कालियो नाम महानाग उत्थित इति श्रुत्वा तं प्रतिगत:) बाल., भासनाटक.,श्लोक-15/3,पृष्ठ 543

कावुरिस (काउरिस / कापुरिस) kāvurisa (kāurisa / kāpurisa) कापुरुष < संज्ञा (पुं.) [Noun] खराब आदमी, नीच पुरुष, कातर, डरपोक पुरुष a bad or wicked man, coward, etc. {म.} विवरीअं उप्पत्तिं गुणाण इच्छंति *कावुरिसा।* (विवरीतामुत्पत्तिं गुणानामिच्छन्ति कापुरुषाः) गउडवहो, गाथा-894, पृष्ठ 133

कास kāsa काश < संज्ञा (पुं.) [Noun] काँस, फूल विशेष जो सफेद शोभायमान होता है, तृण विशेष, रोग विशेष, खाँसी a flower of the kasa, variety of grass used for mats, roofs, etc. {म.} एए ते पविरल-*कास*-पल्लवा पुलिण वित्थारा। (एते प्रविरलकाशपल्लवाः पुलिन-विस्ताराः) गउडवहो, गाथा-525, पृष्ठ 80

कासिराजदुहिदा kāsirāja-duhidā काशिराजदुहिता < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] काशी नरेश की कन्या daughter of Kāshīrāja {शौ.}(चेटी-) आणत्तम्हि देवीए *कासिराअदुहिदाए* जधा-हंजे णिउणिए! जदो पहु दि भअअदो सुज्जस्स उअत्थाणं कदुअ पडिणिउत्तो महाराओ तदो पहु दि सुण्णहिअओ विअ लक्खीअदि। (आज्ञाप्तास्मि देव्या काशिराजदुहितया यथा-हञ्जे निपुणिके! यतः प्रभृति भगवतः सूर्यस्योपस्थानं कृत्वा प्रतिनिवृत्तो

महाराजस्ततः प्रभृति शून्यहृदय इव लक्ष्यते) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 151

किं kim किम् अव्यय/ सर्वनाम [Indeclinable/ Pronoun] क्या, कौन, क्यों, निंदा, प्रश्न, अतिशय, अल्पता और सादृश्य को बतलाने वाला शब्द who, what, which, etc. {शौ.} (प्रथमाचेटी-) *किं* अज्जचारुदत्तो मं णइस्सदि ? (किम् आर्यचारुदत्तो मां नेष्यति) मृच्छ., पृष्ठ 192/4

किंसुअ kiṁsua किंशुक संज्ञा (पुं.,नपुं.) [Noun] पलाश का पेड़, टेसू, पलाश का पुष्प the palasa tree and its blossom {म.} असलिल-मज्झागअ-विरल-*किंसुआ* पल्ललुच्छंगा। (असलिलमध्यागतविरल-किंशुकाः पल्वलोत्सङ्गाः) गउडवहो,गाथा-554, पृष्ठ 84

किण्ण kiṇṇa किण्व < संज्ञा (नपुं.) [Noun] फलवाला वृक्ष-विशेष जिससे दारू बनती है, सुरा बीज, किण्व वृक्ष के बीज, फल वृक्ष विशेष a kind of a tree the fruit of which is utilised for distilling wine {म.} परिणअ-*किण्ण*-सुरा-अंध-गाढ-महु रो विणिम्महइ। (परिणत-किण्व-सुरा-गंध-गाढ-मधुरो विनिर्गच्छति) गउडवहो, गाथा-648, पृष्ठ 97

कित्ति kitti कीर्ति< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] यश, कीर्ति fame, renown, reputation, prestige, honor, glory {म.} *कित्ति* व्व पवणतणअं आण व्व बलाइँ से विलग्गइ दिट्ठी। (कीर्तिरिव पवनतनयमाज्ञेव बलान्यस्य विलगति दृष्टिः) सेतुबन्धं, गाथा-48/1, पृष्ठ 32

किद kida कृत [कृ √क्त] विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] कर लिया, पर्याप्त और अधिक नहीं done, accomplished, etc. {शौ.} (विदूषक-) *किदं* भवदा णिम्मच्छिअं। (कृतं भवता निर्मक्षिकम्) अभि.शाकु., पृष्ठ 185/2

किदग्घ kidaggha कृतघ्न < विशेषण [Adjective] कृतघ्न, अकृतज्ञ, जो पहले किये हुए उपकारों को नहीं जानता ungrateful, etc. {शौ.} (इरावती-) अरिहदि एव्व *किदग्घो* उवद्दवस्स। (अर्हत्येव कृतघ्न उपद्रवस्य) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15, पृष्ठ 306/4

किदत्थ kidattha कृतार्थ < विशेषण [Adjective] कृतार्थ, जिसने अपना उद्देश्य सिद्ध कर लिया है, सफल, सन्तुष्टि, प्रसन्न, परितृप्त, चतुर accomplished, obliged, beholden, satisfied, gratified, successful, etc. {शौ.} (प्रतिहारी-) अय्य! अवि *किदत्थो* तादसुमन्तो आअदो। (आर्य! अपि कृतार्थस्तातसुमन्त्र आगतः) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-4/6, पृष्ठ 303

किदन्त kidanta कृतान्त < संज्ञा (पुं.) [Noun] मृत्यु का देवता God of death {शौ.} (धात्री-) अहो अणवत्था किदन्तस्स। (अहो अनवस्था कृतान्तस्य) भासनाटक., अविमार., अंक-6, पृष्ठ 173

किरण kiraṇa किरण < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] किरण, रश्मि, प्रभा beam (of light), ray, sunbeam, moonbeam {म.} अत्थंतस्स वि रइणो *किरणा* उद्धं चिय फुरंति। (अस्तमयमानस्यापि रवेः किरणा ऊर्ध्वमेव स्फुरन्ति) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 36/102

किरि kiri किरि < संज्ञा (पुं.) [Noun] सूकर/ सूअर a pig, a boar, hog {म.} कारण *किरि*-खंधुक्खेव-लग्ग-परिकविल-केसर-च्छायं। (कारणकिरिस्कन्धोत्क्षेप-लग्नपरिकपिलकेसरच्छायम्) गउडवहो, गाथा-1049, पृष्ठ 155

किलिस (किळिस / किलेस) kilisa (kiḷisa / kilesa) √ क्लिश् < क्रिया (अक.) [Verb] क्लेशपाना, खेद पाना, थक जाना, दुःखी होना to get fatigue, to be painful, to distress, etc. {शौ.} (नलिनिका-) सुट्ठु भणिदं ऐसो वि *किलिस्सदि* त्ति। (सुष्ठु भाणितम् एषोऽपि क्लिश्यत इति) अवि., भासनाटक., गाथा-6/2, पृष्ठ 125

किविण (किवण) kiviṇa (kivaṇa) कृपण < विशेषण [Adjective] कृपण, गरीब, निर्धन, कंजूस, कायर miser, stingy, contemptible, etc. {म.} *किविणाण* नवरि मरणे पयड च्चिय हुंति भंडारा। (कृपणानां केवलं मरणे प्रकटान्येव भवन्ति भाण्डागाराणि) वज्जालग्गं, किविणवज्जा, पृष्ठ 198/581

किस kisa कृश विशेषण [Adjective] कृश, निर्बल, पतला lean, thin, feeble, etc. {शौ.} (वकुलावलिका-) सच्चं तुइ णत्थि।

भत्तुणो किसेसु सुंदरपांडुरेसु दीसइ अंगेसु। (सत्यं त्वपि नास्ति। भर्तः कृशेषु सुन्दरपाण्डुरेषु दृश्यतेऽङ्गेषु) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13,पृष्ठ 280/3

किसळअ kisaḷa किसलय < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] किसलय, नूतन अंकुर, कोमल पत्ता sprout, young leaf, etc. किसळअं अम्हेहि जाइदा आसि। (शृणोतु भट्टिनी। नेपथ्यपालिन्यार्यरेवा निवृत्तरङ्ग-प्रयोजनमशोक-वृक्षस्यैकं किसलय-मस्माभिर्याचितासीत्) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-1,पृ. 252

कीडइल्ल kīḍailla कीटवत् < विशेषण [Adjective कीड़ावाला, कीटयुक्त full of insects or worms {म.} इह वायस-सेविअ-कीडइल्ल-वसुआअ-चिविड-सालूरा। (इह वायससेवितकीटयुक्तशुष्कचिपिटसालूराः) गउडवहो, गाथा-521, पृष्ठ 79

कील (किड्ड) kīla (kiḍḍa) √ क्रीड् < क्रिया [अक.] [Verb] खेलना, विनोद करना to play, to pleasure {शौ.} (वसन्तसेना-) जाद! ण रोदिस्सं, गच्छ, *कील*। (जात! न रोदिष्यामि, गच्छ, क्रीड) मृच्छ., पृष्ठ 321/6

कीलणअ kīlaṇaa क्रीडनक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] खिलौना toy, a play thing, etc. {शौ.} (प्रथमा-) वच्छ। एदं वालमिइन्दअं मुंच। अवरं दे *कीलणअं* दाइस्सं। (वत्स! एनं बालमृगेन्द्रं मुञ्च। अपरं ते क्रीडनकं दास्यामि) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15/7, पृष्ठ 123

कीलाल kīlāla कीलाल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] खून, रक्त, रुधिर blood {म.} अण्णोण-कलह-विअलिअ-केसर-*कीलाल*-कललिअ-द्वारा। (अन्योन्यकलहविगलित-केसरकीलालकललितद्वाराः) गउडवहो, गाथा-331, पृष्ठ 52/331

कीलिअ kīlia कीलित < विशेषण [Adjective] कील के द्वारा जकड़ा हुआ, खूंटा ठोका हुआ nailed, screwed tight {म.} अणोण्णं *कीलिअ*-णिच्चलो व्व णह-महि-अलुच्छंगो। (अन्योन्यं कीलितनिश्चल इव नभोमहीतलोत्सङ्गः) गउडवहो, गाथा-283,पृष्ठ 45

कीलिश (कीदिश / केरिस / कीदिस / कीरिस) kīliśa (kīdiśa / kerisa / kīdisa / kīrisa) कीदृश < विशेषण/ सर्वनाम [Adjective/ Pronoun] कैसा, किस तरह का of what

kind, of what shape {मा.} (शकार-) पुत्तक! कीलिश मए किदे ? (पुत्रक! कीदृशं मया कृतम् ?) मृच्छ., पृष्ठ 441/8

कुंडल kuṇḍala कुण्डल < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] कुंडल, कान का आभूषण coil, ear ornament, etc. {म.} आरसणा-गुण-पडिबद्ध-*कुंडलो* कुसुम-पालंबो। (आरशनागुण -प्रतिबद्धकुण्डलः कुसुमप्रालम्बः) गउडवहो, गाथा-833, पृष्ठ 124

कुंडि (कुंडी) kuṇḍi (kuṇḍī) कुण्डी संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कुण्डा, बर्तन, पात्र-विशेष a bowl shaped vessel, a basin, boil, etc. {म.} तं जंतं सा *कुण्डी* सो उच्छू, वहलपत्तलच्छाओ। (तद्यन्त्रं सा कुण्डी स इक्षुर्बहलपत्रलच्छायः) वज्जालग्गं, जंतिय-वज्जा, पृष्ठ 184/537

कुंतलाहिवसुआ kuntalāhiva-suā कुन्तलाधिपसुता < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कुन्तल देश के राजा की पुत्री daughter of Kuntal state's king {म.} (पारिपार्श्विक-) एत्थ सद्दअवरे रससोत्ते *कुंतलाहिवसुअं* परिणेइ। (अत्र सद्दकवरे रसस्रोतसि कुन्तलाधिपसुतां परिणयति) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 15/12

कुंभीलअ kumbhīlaa कुंभीरक < संज्ञा (पुं.) [Noun] चोर, दुर्जन thief, ignoble man, etc. {शौ.} (विदूषक-) लोत्थेण गहीदस्स *कुंभीलअस्स* अत्थि वा पडिवअणं। (लोत्रेण गृहीतस्य कुंभीरकस्यास्ति वा प्रतिवचनम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19/2, पृष्ठ 171

कुक्कुळ (कुक्कुल / कुक्कुर) kukkuḷa (kukkula / kukkura) कुक्कुर < संज्ञा (पुं.) [Noun] श्वान, कुत्ता dog, wild cock {मा.} (शकार-) दुवेहि अम्हेहि अणुबन्धअन्ती जहा शिगाळी विअ *कुक्कुळेहि*। (द्वाभ्यामावाम्यामनुबध्यमाना यथा शृगालीव कुक्कुराभ्याम्) चारु., भासनाटक., गाथा-9/1, पृष्ठ 191

कुक्कुह kukkuha कुक्कुह < संज्ञा (पु.) [Noun] जंगली मुर्गा wild cock {म.} इह ता संचार-क्खलिअ-*कुक्कुहा* रण्ण-णलिणीओ। (इह ताः संचारस्खलितकुक्कुहा अरण्यनलिन्यः) गउडवहो, गाथा-519, पृष्ठ 79

कुक्खि (कुच्छि) kukkhi (kucchi) कुक्षि < संज्ञा (पुं., स्त्री.) [Noun] कुक्षि, पेट, अड़तालीस अंगुल का मान belly, abdomen, etc. {शौ.} (निपुणिका-) सव्वकालं इदो एव्व सोत्थिवाअणमोदएहिं *कुक्खिं* पूरिअ संपदं मालविअं सिविणावेदि। (सर्वकालमित एव स्वस्तिवाचनमोदकैः कुक्षिं पूरयित्वा साम्प्रतं मालविकां स्वप्नायते) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15, पृष्ठ 306/4

कुटी kuṭī कुटी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कुटी, कुटिया hut, cottage {म.} लक्खिज्जइ मयणणराहिवस्स संचारिणि *कुडिव्व*। (लक्ष्यते मदननराधिपस्य संचारिणी कुटीव) वज्जालग्गं, लावण्णवज्जा, पृष्ठ 108/317

कुडिल kuḍila कुटिल < विशेषण [Adjective] कुटिल, टेढ़ा crooked, bent, curved, tortuous, fraudulent {म.} अमुहा खलो व्व *कुडिला* मज्झं से किविणदाणसारिच्छा। (अमुखौ खल इव कुटिलौ मध्येऽस्याः कृपणदानसदृक्षौ) वज्जालग्गं, थणवज्जा, पृष्ठ 102/302

कुडुंब kuḍumba कुटुम्ब < संज्ञा (नपुं.) [Noun] वंश, बंधु, गृहस्थी, परिवार, सहचर, संतान a house hold, a family, kinsfolk, etc. {म.} (सूत्रधार-) ता किं ति *कुडुंबं* आकारिअ पुच्छिस्सं। (तत् किमिति कुटुम्बमाकार्य प्रक्ष्यामि) कर्पूर., पृष्ठ 7/1

कुडुम्बिअ kuḍumbia कुटुम्बिक विशेषण [Adjective] कुटुम्बी, गृहस्थ, सम्बन्धी, कर्षक relative, kinsman, householder, familyman, farmer, etc. {शौ.} (तापसी-) हळा! एसो दे *कुडुम्बिओ*। उवसप्प णं। (हला! एष ते कुटुम्बिकः। उपसर्पैनम्) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-3/7, पृष्ठ 312

कुण kuṇa √कृ क्रिया [सक.] [Noun] करना, बनाना to do, to make {म.} माणेण जं विढप्पइ तणं पि तं निव्वुइं *कुणइ*। (मानेन यदर्ज्यते तृणमपि तन्निर्वृतिं करोति) वज्जालग्गं,धीरवज्जा, पृष्ठ 34/100

कुप्प kuppa √ कुप् < क्रिया [अक.] [Verb] गुस्सा करना, क्रोध करना to be angry, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) अहं संदेसस्स ज्जेव *कुप्पामि*। (अहं सन्देशाय एव कुप्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 193/4

कुप्पर (कप्पर) kuppara (kappara) कर्पर संज्ञा (पुं.) [Noun] झड़ता हुआ लेप (दीवाल का) भीतर का जीण-शीर्ण घर decaying wall-plaster {म.} एआओ पाडलावंडु-*कुप्परा* जुण्ण-भित्तीओ। (एताः पाटलापाण्डुकर्परा जीर्णभित्तयः) गउडवहो, गाथा-682, पृष्ठ 109

कुमार kumāra कुमार< संज्ञा (पुं.) [Noun] कुमार, युवराज, पुत्र, बालक, प्रथम वय का बालक, पाँच / आठ वर्ष तक का लड़का, राज्यार्ह पुरुष, युद्ध के देवता कार्तिकेय, अग्नि, तोता, सिन्धु नदी bachelor, prince, boy, lad, son, etc. {शौ.} (विजया-) भट्टिणी *कुमारेण* किं भणिदा। (भट्टिनी कुमारेण किं भणिता) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-4, पृष्ठ 283

कुमुय (कुमुअ / कुमुद) kumuya (kumua / kumuda) कुमुद < संज्ञा (पुं.) [Noun] सफेद कमल जो चन्द्रोदय होने पर खिलता है, लाल कमल, कपूर, विष्णु का विशेषण, कुमुदाङ्ग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, देव विशेष (जैन परम्परानुसार) white water lily, lotus, etc. {म.} दूरट्ठिओ वि चंदो सुणिव्वुइं कुणइ *कुमुयाणं*। (दूरस्थितोऽपि चन्द्रः सुनिर्वृतिं करोति कुमुदानाम्) वज्जालग्गं, नेहवज्जा, पृष्ठ 28/78

कुम्मुहुत्त kummuhutta कुमुहूर्त < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] कुमुहूर्त गलत मुहूर्तbad omen, etc. {म.} तह कह वि *कुम्मुहुत्ते* नियट्टई वल्लहो जियंताणं। (तथा कथमपि कुमुहूर्ते निवर्तते वल्लभो जीवताम्) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 128/380

कुरंगी kuraṅgī कुरङ्गी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मृगी, हिरणी female deer {म.} किं करइ *कुरंगी* बहुसुएहि ववसायमाणरहिएहिं। (किं करोति कुरङ्गी बहुसुतैर्व्यवसायमानरहितै) वज्जालग्गं, सीहवज्जा, पृष्ठ 68/200

कुरर kurara कुरर < संज्ञा (पुं.) [Noun] कुरर पक्षी, उत्क्रोश an osprey {म.} मोह रसिआइं इह णिव्वडंति णह-घोलिराण *कुररा*णं। (मोघरसितानीह निर्वर्तन्ते नभोघूर्णितानां कुरराणाम्) गउडवहो, गाथा-520, पृष्ठ 79

कुल kula कुल < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] वंश, कुल, जाति, पैतृक, वंश,

कुटुम्ब, सजातीय समूह, घर, ज्योतिष शास्त्र प्रसिद्ध नक्षत्र संज्ञा family, a line of a pedigree of genealogy, a high or noble family, noble descent, home, etc. {म.} तं तस्स कण्णकडुयं *कुलेसु* जाया न जंपंति। (तत्तस्य कर्णकटुकं कुलेषु जाता न जल्पन्ति) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 28/81

कुलदेवदा kula-devadā कुलदेवता < संज्ञा (पुं.नपुं.) [Noun] कुलदेवता, घर के देवता family God or Goddess {शौ.} (कुटुम्बिनी-) अपुगिह्लन्दु णं पसण्णाओ *कुलदेवदाओ*। (अनुगृह्णन्त्वेन प्रसन्नाः कुलदेवताः) मुद्रा., श्लोक 3, पृष्ठ 94/7

कुलधम्म kula-dhamma कुलधर्म< संज्ञा (पुं.) [Noun] कुलधर्म, कुलाचार family practices, family traditions, etc.{म.} (पुत्र-) *कुलधम्मो* खु एसो अह्माणं। (कुलधर्मः खल्वेषोऽस्माकम्) मुद्रा., श्लोक 4, पृष्ठ 96/7

कुलवदी (कुलवई) kulavadī (kulavaī) कुलपति < संज्ञा (पुं.) [Noun] कुलपति, कुटुंब का मुखिया, वह ऋषि जो दससहस्र विद्यार्थियों का पालन-पोषण करता है तथा उन्हें शिक्षित करता है the head or chief of a family, a sage who feeds and teaches 10,000 pupils, etc. {शौ.} (नन्दिलक-) तेसं भक्खणणिमित्तं *कुलवदी* पमाणं। (तेषां भक्षणनिमित्तं कुलपतिः प्रमाणम्) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-7, पृष्ठ 311

कुलवहु kula-vahu कुलवधू < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कुलीन स्त्री, अच्छे कुल की बहू a bride, the virtuous lady of the family {म.} हसिअं अदिट्ठदन्तं भमिअमणिक्कन्त-देहलीदेसं दिट्ठमणुक्खित्तमुहं एसो भग्गो *कुलवहूणं* (हसितमदृष्टदन्तं भ्रमितमनिष्क्रान्त-देहलीदेशं दृष्टमनुत्क्षिप्तमुखमेषः भाग्यः कुलवधूनाम्) गाथा. 6/25

कुलवुत्त (कुलपुत्त) kulavutta (kulaputta) कुलपुत्र < संज्ञा (पुं.) [Noun] कुलीन महानुभाव, कुलपुत्र, वंश रक्षक पुत्र of high or noble family, rank liberal minded, sir {मा.} (चेट-) तदो अज्जुए! केण वि *कुळवुत्तेण* उइदाणि आभरणट्ठेणाणिअ विलोइअ अङ्कुट्ठेणाणिअ वि उण अळद्धं पेक्खिअ दव्वं उवाळभिअ दिग्घं णिस्ससिअ

एत्तओ मे विभवो त्ति करिअ परिजणहत्थे अअं पावरओ पेसिदो। (ततोऽज्जुके! केनापि कुलपुत्रेणोचितान्याभरणस्थानानि विलोक्याङ्गुष्टेनानीयानि पुनरलब्धं प्रेक्ष्य दैवमुपालभ्य दीर्घं निःश्वस्यैं तावान् मे विभव इति कृत्वा परिजनहस्तेऽयं प्रावारकः प्रेषितः) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 222

कुलीण kulīṇa कुलीन < विशेषण [Adjective] कुलीन, उत्तम कुल में उत्पन्न a person of good family, etc. {म.} ताणं चिय अहिययरं वायाबंधं *कुलीणस्स*। (तेभ्य एवाधिकतर वाग्बन्धं कुलीनस्य) वज्जालग्गं, मित्तवज्जा, पृष्ठ 26/72

कुलीर kulīra कुलीर < संज्ञा (पुं.) [Noun] केकड़ा, जन्तु विशेष, कुरर, पक्षी विशेष crab, special kind of bird, etc. {म.} घोलई मिलंत-*तिमिरा* कुलीर-कविला दिण-च्छाया। (घूर्णते मिलत्तिमिरा कुलीरकपिला दिनच्छाया) गउडवहो,गाथा-1093,पृष्ठ 161

कुविय (कुविद) kuviya (kuvida) कुपित < विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] गुस्सा हुआ, क्रुद्ध, क्रोधित angry, etc.{मा.} (चेट-) मा दाणिं *कुविदे* लाअशाल-शंठाणे हु विश्शदि।(मा इदानीं कुपितो राजश्यालसंस्थानो भविष्यति) मृच्छ., पृष्ठ 391/8

कुसल kusala कुशल< विशेषण [Adjective] कुशल, निपुण, चतुर, अभिज्ञ expert, skillful, proficient, well-being, welfare {म.} निवसंति जत्थ छेया ललियक्खरकव्वबंधणे *कुसला*। (निवसन्ति यत्र च्छेका ललिताक्षरकाव्यबन्धने कुशलाः) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 92/271

कुसुम kusuma कुसुम < संज्ञा (नपुं.) [Noun] कुसुम, कली, पुष्प flower, flower-bud, etc. {शौ.} (विदूषक-) किं दाणि तत्तभोदी उव्वसी भवदो मणोरहाणं *कुसुमं* दंसिअ फले विसंवददि। (किमिदानीं तत्रभवत्युर्वशी भवतो मनोरथानां कुसुमं दर्शयित्वा फले विसंवदति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था.,श्लोक-13/2,पृष्ठ 165

कुसुमसोहा kusuma-sohā कुसुमशोभा< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कुसुमशोभा, फूलों की शोभा flower beauty, etc. {शौ.} (विदूषक-) भोदि तवणीअसोअस्स *कुसुमसोहं*। (भवति! तपनीयाशोकस्य

कुसुमशोभाम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-8/5, पृष्ठ 317

कुसुमावलि kusumāvali कुसुमावलि< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पुष्पमाला, कुसुमावली rows or lines of flowers, bunch of flowers {शौ.} (स्थापक-) इदरा *कुसुमावलीओ* गुंफेदि। (इतरा कुसुमावली गुम्फति) कर्पूर.,प्रथम जवनिका,पृष्ठ 6/4

कुसुमिद kusumida कुसुमित< विशेषण [Adjective] कुसुमित, फूलों से युक्त, पुष्पों से सुसज्जित flowered, bloomed, blossomed, in bloom, etc. {शौ.} (वकुलावलिका-) ठाणे सज्जदि दिट्ठी। इमिणा अंगुलीअएण उब्भिण्णकिरणकेसरेण *कुसुमिदो* विअ दे अग्गहत्थो पडिभादि। (स्थाने सज्जति दृष्टिः। अनेनाङ्गुलीय-केनोद्भिन्नकिरणकेसरेण कुसुमित इव तेऽग्रहस्तः प्रतिभाति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-3/1, पृष्ठ 241

कूज kūja कूज्< क्रिया [अक.] [Verb] विलाप करना, पक्षी का अव्यक्त शब्द करना to make any inarticulate sound, fill with sounds, to make an indistinct noice, hum, coo, warble {मा.} (शकार-) *कूजाहि* कन्दाहि ळवाहि वात्तं [वत्तं ?] महेश्शळं शड्कळमिश्शळं वा। (कूज क्रन्द लप वार्तं महेश्वरं शङ्करमीश्वरं वा) चारु. भासनाटक., गाथा-23/1, पृष्ठ 206

कूडकोडि kūḍa-koḍi कूटकोटि < संज्ञा (नपुं.) [Noun] ढेर का शिखर या प्रान्त top of heap, etc. {म.} तडिभावम्मि फुरंती सवारि-वारिहर-*कूडकोडीए*। (तडिद्भावे स्फुरन्ती सवारिवारिधरकूटकोटौ) गउडवहो, गाथा-316, पृष्ठ 50

केअलं (णअरि) kealam (ṇaari) केवलम् अव्यय/ विशेषण [Indeclinable/ Adjective] केवल, सिर्फ, एकमात्र, पूर्णरूप से, नितान्त, विशिष्ट, अकेला, मात्र, एकल, एकमात्र only, only one, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) ण *केअलं* तादणिओओ एव्व; अत्थि मे सोदरसिणेहो एदेसु। (न केवलं तातनियोग एव; अस्ति मे सोदरस्नेह एतेषु) अभि.शाकु., पृष्ठ 133/1

केउ keu केतु < संज्ञा (पुं.) [Noun] तुलासूत्र, तुला का मूठ स्थान, केतु, रुई का सूता, पताका, निशान cotton thread or string attached to a weighing balance, flay, mark, etc. {म.} उक्खिप्पइ गअण-तुला-दंडेन समूससंत-कर-*केऊ*। (उत्क्षिप्यते

गगनतुलादण्डेन समुच्छ्वसत् करकेतुः) गउड़वहो,गाथा-1115,पृष्ठ 165

केत्तिअं (केत्तिल / केत्तुल) kettiam (kettila / kettula) कियत् < अव्यय [Adverb] कितना how great, how far, how much, how many {शौ.} (विदूषक-) *केत्तिअं* तवच्चरणं कदुअ वसन्तसेणाए भादा भोदि। (कियत् तपश्चरणं कृत्वा वसन्तसेनाया भ्राता भवति) मृच्छ., पृष्ठ 243/4

केरअ [देशज] **keraa** सेवक संज्ञा (पुं.) [Noun] सेवक, भृत्य servant, worker, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) अज्ज अहं खु अमच्चरक्खस्स *केरओ*। (आर्य अहं खल्वमात्यराक्षस्य सेवकः) मुद्रा., श्लोक 9, पृष्ठ 69/5

केरअ keraa आत्मीय विशेषण [Adjective] सम्बन्धी, सम्बद्ध, सम्बन्ध वाला (प्राकृत में इस अर्थ का प्रत्यय) related, etc. {शौ.} (मदनिका-) तस्स ज्जेव अज्जस्स *केरओ* भविअ, एदं अलङ्कारअं अज्जआए उवणेहि। (तस्यैव आर्य्यस्य सम्बन्धी भूत्वा, एतदलङ्कार-कमार्य्यायै उपनय) मृच्छ.,पृष्ठ 217/4

केलाससिहर kelāsa-sihara कैलासशिखर < संज्ञा (नपुं.) [Noun] कैलास पर्वत का शिखर, कैलास की चोटी top of Kailāsa, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) णं एदं परिवत्तिदं विअ *केलाससिहरं* पिअदमस्स दे भवणं उवगदा म्ह। (नन्वेतत्परिवर्तितमिव कैलासशिखरं प्रियतमस्य ते भवनमुपगते स्वः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/3, पृष्ठ 180

केसकप्पणा kesa-kappaṇā केशकल्पना < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] केश रचना dressing or arranging the hair {शौ.} (विदूषक-) इदो इदो अवराणं अस्साणं *केसकप्पणा* करीअदि। (इत इत अपरेषामश्वानां केशकल्पना क्रियते) मृच्छ., पृष्ठ 232/4

केसर kesara केसर/ केशर < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] केसर, पुष्प रेणु, पराग, किंजल्क, सिंह वगैरह के कंधा का बाल filament of flower, saffron, mane of a lion, etc. {म.} रेहइ णिहस-ट्ठिअ-करभ-*केसर*-च्छेअ-जडिलव्व। (शोभते निघर्ष-स्थितकरभकेसरच्छेदजटिलेव) गउडवहो, गाथा-532, पृष्ठ 82

केसररुक्ख kesara-rukkha केसरवृक्ष < संज्ञा (पुं.) [Noun] केसर का वृक्ष saffron

tree {शौ.} (शकुन्तला-) एसो वादेरिद-पल्लवांगुलीहिं तुवरेदि विअ मं *केसररुक्खओ*। (एष वातेरितपल्ल-वांगुलीभिस्त्वरयतीव मां केसरवृक्षकः) अभि. शाकु., कालिदासग्रन्था., श्लोक-19, पृष्ठ 12/1

केसरि kesari केसरिन्/ केशरिन् < संज्ञा (पुं.) [Noun] सिंह, शेर, कण्ठीरव a lion, one having manes, etc. {म.} बेण्णि वि रण्णुप्पन्ना बज्झंति गया न चेव *केसरिणो*। (द्वावप्यरण्योत्पन्नौ वध्यन्ते गजा न चैव केसरिणः) वज्जालग्गं, सीहवज्जा, पृष्ठ 68/203

केसव kesava केशव < संज्ञा (पुं.) [Noun] केशव, श्रीकृष्ण, वासुदेव, नारायण an epithet of Vishnu or Lord Krishna, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) जअदि जलदणीलो *केसवो* केसिघादी। जअदि अ जणदिट्ठी चन्दमा चन्दउत्तो। (जयति जलदनीलः केशवः केशिघाती। जयति च जनदृष्टिचन्द्रमाश्चन्द्रगुप्तः) मुद्रा., श्लोक 1, पृष्ठ 80/6

कोउहल्ल (कुऊहल) kouhalla (kuūhala) कुतूहल/ कौतूहल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] अपूर्व वस्तु देखने की लालसा, उत्कण्ठा, इच्छा, जिज्ञासा, उत्सुकता, आश्चर्यजनक curiosity, inquisitiveness, eagerness {म.} तं च *कोउहल्लेण* कुमारगुणसेणो पहयपडुपडहमुइंगवंसकंसालयप्पहाणेण महया तूरेण नयरजणमज्झे सहत्थतालं हसंतो नच्चावेइ। (तं च कुतूहलेन कुमारगुणसेनः प्रहतपटुपटहमृदङ्गवंश-कांस्यलयप्रधानेन महता तूर्येण नगरजनमध्ये सहस्ततालं हसन् नर्तयति) समराइ., पृष्ठ 11-12/1

कोच्चि kocci कश्चित् < अव्यय [Indeclinable] किसी any one, some one, etc. {मा.} (चेट-) ण उण *कोच्चि* किं पि इच्छइ दाउं। (न पुनः कश्चित् किमपीच्छति दातुम्) चारु., भासनाटक., अंक-2,पृष्ठ 221

कोदुअमाळिआ (कोदुअमालिआ) kodua-māḷiā (kodua-māliā) कौतुकमालिका < संज्ञा (नपुं.) [Noun] विवाह की माला wedding garland {शौ.} (चेटी-) इमं दाव *कोदुअमाळिअं* गुम्फदु अय्या। (इमां तावत् कौतुकमालिकां गुम्फत्वार्या) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/3, पृष्ठ 17

कोदूहल kodūhala कुतूहल/ कौतूहल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] अपूर्व वस्तु देखने की लालसा, उत्कण्ठा, इच्छा, जिज्ञासा, उत्सुकता, आश्चर्यजनक curiosity, inquisitiveness, eagerness {शौ.} (अनसूया-) मम वि अत्थि *कोदूहलं*। (ममाप्यस्ति कौतूहलम्) अभि.शाकु., पृष्ठ 146/1

कोप्पर koppara कूर्पर < संज्ञा (पुं.) [Noun] हाथ का मध्य भाग, नदी का तट middle part of hand i.e., elbow, bank of river {मा.} (वृद्धगोपालक-) तदो तं पि जाणिअ भट्टिदामोदळेण तष्ष मुहे *कोप्परो* दिण्णो। (ततस्तमपि ज्ञात्वा भर्तृदामोदरेण तस्य मुखे कूर्परो दत्तः) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 536

कोमल komala कोमल < विशेषण [Adjective] कोमल, मृदु soft, delicate {म.} सुपमाणा य सुसुत्ता बहु रूवा तह य *कोमला* सिसिरे। (सुप्रमाणा च सुसुक्ता (सुसूत्रा) बहू रूपा तथा च कोमला शिशिरे) वज्जालग्गं, वेसावज्जा, पृष्ठ 196/573

कोमुदी (कोमुई) komudī (komuī) कौमुदी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] चाँदनी, शरद् ऋतु की पूर्णिमा, कार्तिक की पूर्णिमा, इस नाम की एक नगरी moonlight, the full moon (especially in the month of Aśvina or Kārtika), etc. {शौ.}(चित्रलेखा-) सहि! एसो क्खु पढमोदिदो विअ चंदो *कोमुदिं* विअ तुमं पडिच्छदि। (सखि! एष खलु प्रथमोदित इव चन्द्रः कौमुदीमिव त्वां प्रतीच्छति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 160

कोमुदीमहोस्सव kmoudī-mahossava कौमुदीमहोत्सव < संज्ञा (पुं.) [Noun] कौमुदी महोत्सव, उत्सव विशेष moonlight big celebration {शौ.} (कडरभक-) एत्थंतरे णंदकुलविणासदुंमणस्स पोरजणस्स परिओसं सम्मुप्पाअंतेण चन्दउत्तेण आघोसिदो कुसुमउरे *कोमुदीमहोस्सवो*। (अत्रान्तरे नन्दकुलविनाश-दुर्मनसः पौरजनस्य परितोषं समुत्पादयता चन्द्रगुप्तेनाघोषितः कसुमपुरे कौमुदी-महोत्सवः) मुद्रा.,श्लोक-8,पृष्ठ-54/4

कोल kola कोल < संज्ञा (पुं.) [Noun] सूअर/ सूकर कोल, मनुष्य की एक जाति, बाराह Hog, boar, etc.{म.}उत्तुंड-तण्णअत्तणमइरा वेउण्ठ-*कोलेण*। (उत्तुण्ड-

तर्णकत्वमचिराद् वैकुण्ठकोलेन) गउडवहो, गाथा-850, पृष्ठ 126

कोलीण kolīṇa कौलीन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] प्रेम वाली बात love talking, etc. {शौ.} (निपुणिका-) भट्टिणी! तं एव्व *कोलीणं* विअ पडिहादि। (भट्टिनि! तदेव कौलीनमिव प्रतिभाति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-18/2, पृष्ठ 170

कोव kova कोप < संज्ञा (पुं.) [Noun] कोप, गुस्सा, क्रोध anger, rage, etc. (मालविका-) जइ चिरं कुविदं, एव्व मं मण्णेसिं एसो पच्चाणीअदि *कोवो।* (यदि चिरं कुपितामेव मां मन्यसे एव प्रत्यानीयते कोपः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9, पृष्ठ 301/4

कोववस kova-vasa कोपवश < विशेषण [Adjective] क्रोध के वशीभूत, क्रोध full of anger, angry, etc {शौ.} (उर्वशी-) कहइस्सं इदं दाव पसीददु महाराओ जं मए *कोववसं* गदाए एदं अवत्थन्तरं पाविदो महाराओ। (कथयिष्यामि। एतत्तावत्प्रसीदतु महाराओ यन्मया कोपवशं गतया एतदवस्थान्तरं प्रापितो महाराजः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-71/4, पृष्ठ 216

कोवव्वाज (कोववाय) kova-vvāja (kova-vāya) कोपव्याज < संज्ञा (पुं.) [Noun] रुठने के बहाने, क्रोध की वजह से subjection to anger, to be offended or displeased, pretext, etc. {शौ.} (विदूषक-) दिट्ठिआ *कोवव्वाजेण* देवीए परित्तादो भवं। (दिष्टया कोपव्याजेन देव्या परित्रातो भवान्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-18/1, पृष्ठ 254

कोस kosa कोश/ कोष< संज्ञा (पुं.) [Noun] खजाना, कोश, शब्दकोश, तलवार की म्यान, अभिधान शास्त्र treasury, dictionary, lexicon, repository store, shell, etc. {म.} खग्गलइय व्व वेसा *कोसेण* विणा न संवहइ। (खड्गलतिकेव वेश्या कोशेन विना न संवहति) वज्जालग्गं, वेसावज्जा, पृष्ठ 192/564

कोसळ्ळा kosaḷḷā कौसल्या < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कौशल्या, दशरथ की ज्येष्ठ पत्नी तथा राम की माता the eldest wife of Daśaratha and mother of Rama {शौ.} (कैकयी-) जाद! अवि *कोसळ्ळा* सुमित्ता अ

सद्दावइदव्वा। (जात! अपि कौसल्या सुमित्रा च शब्दापयितव्ये) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-12/6, पृष्ठ 308

कोह koha क्रोध < संज्ञा (पुं.) [Noun] गुस्सा, क्रोध anger, etc. {म.} तत्थ जे *कोह*-माण-माया-लोह-समच्छाइयमई। (तत्र ये क्रोध-मान-माया-लोभ-समाच्छादितमतयः) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 4

क्खु kkhu खलु < अव्यय [Indeclinable] इन अर्थों का सूचक अव्यय-निश्चय, वितर्क, विचार, सन्देह, सम्भावना, विस्मय, निस्संदेह, अवश्य, सचमुच, अनुरोध, अनुनय-विनय, प्रार्थना, पूछताछ, प्रतिषेध, क्रियात्मक संज्ञाओं के साथ, कभी-कभी 'खलु' पूरक की भांति प्रयोग किया जाता है, कभी-कभी वाक्यालंकार की तरह प्रयोग certain, sure, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) एसो *क्खु* अज्जचारुदत्तस्स पुत्तो रोहसेणो णाम। (एष खलु आर्यचारुदत्तस्य पुत्रो रोहसेनो नाम) मृच्छ., पृष्ठ 318/8

क्खेम (खेम) kkhema (khema) क्षेम < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] प्रसन्नता सुख और आराम देने वाला शुभ, राजीखुशी, समृद्ध conferring happiness, good, beneficial, etc. {शौ.} (विदूषक-) अवि क्खेमं दे। (अपि क्षेमं ते?) मृच्छ., पृष्ठ 501/9

ख

ख kha ख < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत वर्णमाला का दूसरा व्यंजन। इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है। प्राकृत में प्रायः लोप होता है। the second consonant of the Prakrit language, that is produced in throat, etc. ख घ थ ध भाम्।। हेम., 1/187 , पृष्ठ 456

खंडण khaṇḍaṇa खण्डन < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] खण्डन, नाश, भञ्जन, विच्छेद, धान्य वगैरह का छिलका अलग करना, नाशक breaking, cutting, dividing, destroying, annihilating, etc. {म.} को ताण छेयवाणिज्जयाण भण *खंडणं* कुणइ। (कस्तेषां छेकवणिजां भण खण्डनं करोति) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 94/277

खंडमोदअसस्सिरीअ khaṇḍa-modaa-sassirīa खण्डमोदकसश्रीक < विशेषण [Adjective] खाँड के लड्डू के समान शोभायुक्त just like ball-like Indian sweet, etc. {शौ.} (विदूषक-) ही हो भो एसो क्खु *खंडमोदअसस्सिरीओ* उदिदो राआ दुआदीणं।

(ही ही भो: एष खलु खण्डमोदक-सश्रीक उदितो राजा द्विजातीनाम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-6/3, पृष्ठ 178

खंडिय khaṇḍiya खण्डित < विशेषण/ भूतकालिक कृदन्त [Adjective/ Past Participle] खण्डित (शील), नष्ट किया हुआ, ध्वंस किया हुआ, काटा हुआ, तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, विद्रोह किया हुआ, निराश किया हुआ, धोखा दिया हुआ, परित्यक्त, तर्क का निराकरण किया हुआ outraged modesty, cut, broken in pieces, destroyed, annihilated, lost, disappointed, refuted, etc. {म.} असई सइज्झिया दुग्गया वि न हु *खंडियं* सीलं। (असती प्रातिवेश्मिका दुर्गतापि न खलु खण्डितं शीलम्) वज्जालग्गं, सईवज्जा, पृष्ठ 156/464

खअ (खय) khaa (khaya) क्षय < संज्ञा (पुं.) [Noun] क्षय, प्रलय, विनाश loss, decay, decadence, fall, dissipation {म.} चंदस्स *खओ* न हु तारयाण रिद्धी वि तस्स न हु ताणं। (चन्द्रस्य क्षयो न खलु तारकाणामृद्धिरपि तस्य न खलु तासाम्) वज्जालग्गं, चंदवज्जा, पृष्ठ 90/267

खज्ज khajja √ खाद् < क्रिया [सक.] [Verb] खाना, खाना निगल लेना, खिलाना, शिकार करना, काट लेना to eat, devour feed, to prey upon, bite, to hurt, etc. {म.} (नन्दिलक-) ते खु *खज्जन्ति*। (ते खलु खादन्ति) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-7, पृष्ठ 311

खज्जूर khaajjūra खर्जूर < संज्ञा (पुं.) [Noun] खजूर, खजूर का फल Date-tree and fruit {म.} एआओ परूढारुण-फल-भर-बंधुरिअ-भूमि-*खज्जूरा*। (एताः प्ररूढारुण-फलभरबन्धुरितभूमिखर्जूराः) गउडवहो, गाथा- 533, पृष्ठ 81

खडिया (खडिआ) khaḍiyā (khaḍiā) खटिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] लिखने की खड़ी या खड़िया chalk {म.} जोइसिय मा विलंबसु *खडियं* घेत्तूण गणसु मह तुरियं। (ज्यौतिषिक मा विलम्बस्व खटिकां गृहीत्वा गणय मम त्वरितम्) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 168/498

खण khaṇa क्षण < संज्ञा (पुं.) [Noun] लम्हा, निमेष, एक सेकंड से 4/5 भाग के बराबर समय की माप, अवकाश moment, measare of time equal to 4\5 of a second,

etc. {शौ.} (विदूषक-) तेण हि अअं सुगहीदो *खणो* । (तेन ह्ययं सुगृहीत: क्षण:) अभि. शाकु., पृष्ठ 178/2

खत्तियकुमार khattiya-kumāra क्षत्रिय-कुमार < संज्ञा (पुं.) [Noun] क्षत्रिय कुमार, क्षत्रिय जाति का लड़का/ युवराज prince, son of warrior, etc. {शौ.} (तापसी-) जं *खत्तिअकुमारअस्स* जादकम्मादिविहाणं तं से भअवदा चवणेण असेसं अणुचिट्ठिदं। (यत्क्षत्रियकुमारस्य जातकर्मादिविधानं तदस्य भगवता च्यवनेनाशेषमनुष्ठितम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10/5, पृष्ठ 225

खम khama √ क्षम् < क्रिया [सक.] क्षमा करना, प्रतिरोध/ प्रतिहिंसा की भावना का त्याग करना, क्रोध का त्याग करना forgiveness, excuse, apology, etc. {शौ.} खमामि सव्वजीवाणं सव्वे जीवा *खमंतु* मे। (क्षमामि सर्वजीवान् सर्वे जीवा: क्षमन्तु मे) मूलाचार 1/43

खमा khamā क्षमा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] क्षमा, क्रोध का अभाव, पृथिवी, धैर्य, सहिष्णुता, माफ़ी patience, forbearance, forgiveness, the earth, etc. {म.} विज्जा रज्जाउ वरं *खमा* वरं सुट्ठु वि तवाओ। (विद्या राज्याद्वरं क्षमा वरं सुष्ठ्वपि तपस:) वज्जालग्गं, नीइवज्जा,पृष्ठ 30/85

खम्भन्तरिद khambhantarida स्तम्भान्तरित < विशेषण [Adjective] खंभे में अन्तर्हित, खंभे के पीछे छिपा हुआ pillar hiding, etc. {शौ.} (प्रतीहारी-) अहं वि दाव इमस्स पमुहादो लोआदो ओसरिअ खम्भन्तरिदा होमि। (अहमपि तावदस्य प्रमुखाल्लोकादपसृत्य स्तम्भान्तरिता भवामि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2/5, पृष्ठ 312

खल khala खल < विशेषण [Adjective] दुर्जन, खल, धान साफ करने का स्थान a wicked or mischievous person, a villain, etc.{म.}अहिणवरिद्धि व्व *खलो* सूलादिन्नु व्व पडिहाइ। (अभिनवर्द्धिरिव खल: शूलादत्त इव प्रतिभाति) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 18/50

खलण khalaṇa स्खलन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] स्खलन, नीचे गिर पड़ना, लड़खड़ाना, फिसलना, डगमगाना, डगमगाते हुए चलना, सन्मार्ग से विचलन, भारी भूल, त्रुटि, गलती, विफलता, निराशा, असफलता,

हकलाना, बोलने में भूल या उच्चारण में अशुद्धि stumbling, slipping, tripping, falling down, deviating from the right course, error mistake, failure, unsuccessfulness, blundering in speech or pronunciation, etc. {म.} कस्स व होइ *खलणं* भण को हु न खंडिओ विहिणा। (कस्य वा न भवति स्खलनं भण क: खलु न खण्डितो विधिना) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 44/127

खवणअ (खवणय) khavaṇaa (khavaṇaya) क्षपणक < संज्ञा (पुं.) [Noun] क्षपणक, जैन या बौद्ध साधु Jaina mendicant, Jain or Buddha saint, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) कहं *खवणओ* आअच्छदि। (कथं क्षपणक आगच्छति) मुद्रा., श्लोक 1,पृष्ठ 63/5

खिव khiva √ क्षिप् < क्रिया [सक.] [Verb] डालना, फेंकना, इधर-उधर चलाना to throw out, to send, misplace, etc. {म.} भूसणपसाहणाडंबरेहि मा *खिवसु* पुत्ति अप्पाणं। (भूषणप्रसाधनाडम्बरैर्मा क्षिप पुत्र्यात्मानम्) वज्जालग्गं, कुट्टि-सिक्खावज्जा, पृष्ठ 196/554

खीर khīra क्षीर < संज्ञा (नपुं.) [Noun] दूध, क्षीर, पानी, क्षीर समुद्र milk, milky juice or sap, water, etc.{मा.} (शक्र-) गोसहस्सं त्ति। मुहुत्तअं *खीरं* पिबामि। णेच्छामि कण्ण! णेच्छामि। (गोसहस्रमिति। मुहूर्तकं क्षीरं पिबामि। नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि) कर्णभार., भासनाटक., श्लोक-18/1, पृष्ठ 463

खीरोअ khīroa क्षीरोद < संज्ञा (पुं.) [Noun] क्षीरसागर the milky ocean {म.} इअ कम-णिम्महिआमुक्क-विहु र-*खीरोअ*-सरह-सुव्वूढा। (इति क्रम-निर्मथिता- मुक्त-विधुर-क्षीरोद-सरभसोद्वूढा) गउडवहो, गाथा-1039,पृष्ठ 152

खु khu खलु < अव्यय [Indeclinable] इन अर्थों का सूचक अव्यय-निश्चय, वितर्क, विचार, सन्देह, सम्भावना, विस्मय, निस्संदेह, अवश्य, सचमुच, अनुरोध, अनुनय- विनय, प्रार्थना, पूछताछ, प्रतिषेध, क्रियात्मक संज्ञाओं के साथ, कभी-कभी 'खलु' पूरक की भांति प्रयोग किया जाता है, कभी-कभी वाक्यालंकार की तरह प्रय certain, sure, etc. {शौ.} (अनसूया-) ण *खु*

विभावेमि कहेहि। (न खलु विभावयामि कथय) अभि.शाकु., पृष्ठ 138/1

खुडिअ (खुलिअ) khuḍia (khulia) खण्डित < विशेषण [Adjective] खण्डित, विच्छिन्न, त्रुटित cut, broken in pieces, destroyed, lost, etc. {म.} उम्मूलन्तेण दुमं पारोहो व्व *खुडिओ* महेन्दस्स जसो। (उन्मूलयता द्रुमं प्ररोह इव खण्डितं महेन्द्रस्य यशः) सेतुबन्धं, गाथा-4/1, पृष्ठ 8

खुत्त [देशज] khutta निमग्न <विशेषण [Adjective] निमग्न, डूबा हुआ sunken, submerged {म.} महि-वेढं बल-भर-*खुत्त*-रअण-संदाणिअं सेसो। (महीपीठं बलभर-निमग्न-संदानितं शेषः) गउडवहो, गाथा-101, पृष्ठ 18

खुब्भ khubbha √ क्षुभ् < क्रिया [अक.] [Verb] क्षोभ करना, घबड़ाना, नीचे डूबना to irritate, to shake, tremble, to be agitated or disturbed {म.} रायंगणं व *खुब्भइ* जस्स घरं दूइसंघेहिं। (राजाङ्गणमिव क्षुभ्यति यस्य गृहं दूतिसंघैः) वज्जालग्गं, पियाणुरायवज्जा, पृष्ठ 138/411

खेयर (खयर / खेअर) kheyara (khayara / kheara) खेयर < संज्ञा (पुं., स्त्री.) [Noun] आकाश में चलने वाला सूर्य एवं नक्षत्र, पक्षी, विद्याधर, विद्या बल से आकाश में चलने वाला मनुष्य the sun and planets (moving in the sky) clouds, birds, etc. {म.} णर-सुर-*खेयर*-महिए, आराहणणायगे वीरे। (नर-सुर-खेचर-महितान्, आराधननायकान् वीरान्) समणसुत्तं, पृष्ठ 4/6

ग

ग ga ग< संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत वर्णमाला का तृतीय व्यंजन है। इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है the third consonant of the Prakrit language, that is produced from throat {म.} वच्चंति कगतदयवा लोपं अत्थं च से वहंति सरा। (प्राप्नुवन्ति कगतदयवा लोपं अर्थं च तेषां वहन्ति स्वराः), नाट्य., श्लोक 8/17, पृष्ठ 542

गंग (गंगा) gaṅga (gaṅgā) गङ्गा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] स्वनाम प्रसिद्ध नदी, स्त्री विशेष, गोशालक के मत से काल परिमाण विशेष, गंगा नदी की अधिष्ठायिका देवी, भीष्मपितामह की माता का नाम the most sacred river in India, women special, the

Gangas personified as a goddess, etc. {म.} सहवासहरविडंबण *गंगम्मि* गओ न सुज्झिहिसि।(सहवास-गृहविडम्बन गङ्गायां गतो न शोत्स्यसि) वज्जालग्गं, पवसियवज्जा, पृष्ठ 124/368

गंजण gañjaṇa गञ्जन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] अपमान, कलंक insult, spot, stain {म.} संभाविज्जइ मरणं न *गंजणं* धीरपुरिसाणं। (संभाव्यते मरणं न गञ्जनो (कलङ्को) धीरपुरुषाणाम्) वज्जालग्गं, सीहवज्जा, पृष्ठ 68/203

गंध gandha गन्ध < संज्ञा (पुं.) [Noun] महक, गन्ध युक्त पदार्थ smell, fragrance {मा.} (कर्णपूरक-) मदगन्धेण सुट्ठु तं *गंधं* ण जाणामि। (मदगन्धेन सुष्ठु तं गन्धं न जानामि) मृच्छ., पृष्ठ 142/2

गंधव्व gandhavva गन्धर्व < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] गन्धर्व, गायक, स्वर्ग गायक, गान, व्यंतर देवों की एक जाति (जैन परम्परानुसार) singer, a celestial being, etc. {मा.} (शकार-) कधं *गन्धव्वे* ण भविश्शं ? (कथं गन्धर्वो न भविष्यामि ?) मृच्छ., पृष्ठ 389/8

गअ (गय) gaa (gaya) गत < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] गया हुआ, प्रवृत्त, अतिक्रान्त, विज्ञात, नष्ट, प्राप्त, व्यवस्थित, गमन gone, past, last, destroyed, etc. {म.} अज्जं *गओ* त्ति अज्जं गओ त्ति अज्जं गओ त्ति लिहिरीए। (अद्य गत इत्यद्य गत इत्यद्य गत इति लिखनशीलया) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 128/377

गअ (गय) gaa (gaya) गज < संज्ञा (पुं.) [Noun] गज, हाथी, आठ की संख्या, लम्बाई का माप, एक राक्षस जिसे शिवजी ने मारा था, गज सुकुमाल मुनि (जैनपरम्परानुसार) elephant, yard, yard as a measure, name of a Jain ascetic, etc. {मा.} (शक्र-) *गअ* त्ति। मुहुत्तअं आळुहामि। णेच्छामि कण्ण! नेच्छामि। (गज इति। मुहूर्तकमारोहामि। नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि) कर्णभार., भासनाटक.,श्लोक-20/1,पृष्ठ 484

गअण (गयण) gaaṇa (gayaṇa) गगन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] आकाश the sky {शौ.} (चन्दनक-) जइ अज्जचारुदत्तं वसन्तसेणिअं वा ण जाणासि, ता *गअणे* जोण्हासहिदं चन्दं पि तुं ण जाणासि। (यदि आर्यचारुदत्तं वसन्तसेनिकां वा न जानासि, तद् गगने

ज्योत्सनासहितं चन्द्रमपि त्वं न जानासि) मृच्छ., पृष्ठ 340/6

गइ gai गति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गति, जन्मान्तर प्राप्ति, देव-मनुष्य-तिर्यञ्च-नरक और मुक्त जीवन की अवस्था, देवादि योनि, ज्ञान, भेद, चलन, देशान्तर प्राप्ति rebirth, knowledge, secret movement, etc. {म.} बेण्णि वि हुंति *गईओ* साहसवंताण धीरपुरिसाणं। (द्वे अपि भवतो गती साहसवतां धीरपुरुषाणाम्) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 34/96

गइंद gainda गजेन्द्र < संज्ञा (पुं.) [Noun] गजेन्द्र, श्रेष्ठ हाथी, ऐरावत हाथी the leader of a herd of elephants, special elephants, etc. {म.}भुंजंति कसणडसणा अब्भंतर-संठिया *गइंदस्स*। (भुञ्जते कृष्णदशना अभ्यन्तरसंस्थिता गजेन्द्रस्य) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 54/159

गच्छ (गच्छ) gaccha (gaśca) √गम् (गच्छ्) < क्रिया [सक.] [Verb] जाना, गमन करना to go, to reach {मा.} (प्रथमाचेटी-) ता *गच्छ* त्ति। (तद् गच्छ इति) मृच्छ., पृष्ठ 192/4

गण gaṇa √ गणय् < क्रिया [सक.] [Verb] गिनती करना, गणना करना, संख्या करना, आदर करना to count, to enumerate, to score, to calculate, etc. {म.} जइ ताइ *गणेइ* विही *गणेउ* न हु एरिसं जुत्तं। (यदि तान् गणयति विधिर्गणयतु न खल्वीदृशं युक्तम्) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा, पृष्ठ 50/145

गणिआ (गणिया) gaṇiā (gaṇiyā) गणिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गणिका, नगरवधू, वेश्या a harlot, prostitute {शौ.} (विदूषक-) इमे अ अवरे मअणसन्धि-विग्गह-चदुरा-विविह-वण्णिआ-विलित्तचित्त-फलअग्गहत्था इदो तदो परिभमन्ति *गणिआ* वुड्ढविडा अ। (इमे च अपरे मदन-सन्धि-विग्रह-चतुरा-विविध-वर्णिका-विलिप्त-चित्रफलकाग्रहस्ता इतस्तत: परिभ्रमन्ति गणिका वृद्धविटाश्च) मृच्छ., पृष्ठ 234/4

गत्तसंसग्ग gatta-saṁsagga गात्रसंसर्ग < संज्ञा (पुं.) [Noun] शरीर से लगाना, शरीर के संबंध में आना, आलिंगन करना body contact, body intercourse, to hug, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) ण क्खु अज्जउत्तो विअ। तदो को एसो दाणिं किदरक्खामंगलं दारअं मे

गत्तसंसग्गेण दूसेदि। (न खल्वार्यपुत्रा इव। ततः क एष इदानीं कृतरक्षामंगलं दारकं मे गात्रसंसर्गेण दूषयति) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/7, पृष्ठ 128

गदुअ gadua √गत्वा < पूर्वकालिक कृदन्त/ क्रिया [सक.] [Conjunctive Participle/ Verb] जाकर having gone {मा.} (चेट-) ता जाव वाहिल-दुआलशालाए *गदुअ* शुविश्शं। (तद्यावत् बहिर्द्वारशालायां गत्वा स्वप्स्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 147/3

गद्दभवेस gaddabha-vesa गर्दभवेष < संज्ञा (पुं.) [Noun] गर्दभ का वेश बनाना, घोडे के वेश में donkey, custume, ass dress, etc. {शौ.} (वृद्धगोपालक-) तहिं ताळवणे धेणुओ णाम दाणवो *गद्दभवेसं* गेण्हअि आअदो। (तत्र तालवने धेनुको नाम दानवो गर्दभवेषं गृहीत्वागत:) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 536

गन्धउडी gandha-uḍī गन्धकुटी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गन्ध-द्रव्य का घर (जैन परम्परा के अनुसार) a house of perfumes {म.} गअणे च्चिअ *गंधउडिं* कुणंति तुह कउल-णारीओ। (गगन एव गन्धकुटीं कुर्वन्ति तव कौल नार्यः) गउडवहो, गाथा-319, पृष्ठ 50

गब्भगिह gabbha-giha गर्भगृह < संज्ञा (नपुं.) [Noun] गर्भ गृह, भीतर का घर, घर का भीतरी भाग private apartment, bedroom, sanctum, sanctorum (in a temple) {शौ.} (सुधाकर-) पेक्खदु भट्टा। अवणीदकवोदसन्दाणअं दाव *गब्भगिहं*। (पश्यतु भर्ता। अपनीतकपोतसन्दानकं तावद् गर्भगृहम्) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 273

गब्भमंथर gabbha-manthara गर्भमन्थर < विशेषण [Adjective] गर्भ से अलसाती, गर्भभार से मंद slow motion of pregnant woman, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) ताद! एसा उडजपज्जन्तचारिणी *गब्भमंथरा* महवहू जदा अणघप्पसवा होइ तदा मे कंपि पिअणिवेदइत्तअं विसज्जइस्सह। (तात! एषोटजपर्यन्तचारिणी गर्भमन्थरा मृग-वधूर्यदाऽनघप्रसवा भवति तदा महयं कमपि प्रियानिवेदयितृकं विसर्जयिष्यथ) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13, पृष्ठ 65/4

गमण gamaṇa गमन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] गमन, गति, जाना, गति (वैशेषिक

इसे पॉच कर्मों में से एक कर्म समझते हैं), सहवास going, motion, approaching, coition, considered as one of the five karmans by the Vaiśeṣikas, sexual connection, etc. {म.} गमणं राहवहिअए रक्खसजीविअहरं विसं व णिहित्तं। (गमनं राघवहृदये राक्षसजीवितहरं विषमिव निहितम्) सेतुबन्धं, गाथा-47/1, पृष्ठ 31

गम्भील gambhīla गम्भीर < विशेषण [Adjective] गम्भीर, दुर्दान्त, कमल, जंबीर, नींबू deep, profound, serious, solemn, sober, considerate, sagacious, impervious, etc. {मा.} (क्षपणक-) अलिहन्ताणं पणमामो ये *गम्भीलदाइ* बुद्धीए। (अर्हत: प्रणमामो ये गम्भीरतया बुद्धेः) मुद्रा., श्लोक 2, पृष्ठ 63/5

गय gaya गज < संज्ञा (पुं.) [Noun] गज, हाथी elephant {म.} विंझेण विणा वि गया नरवइभवणेसु गोरविज्जंति। (विन्ध्येन विनापि नरपतिभवनेषु गौरविता भवन्ति) वज्जालग्गं, विंझवज्जा, पृष्ठ 64/188

गरुय (गरुअ) garuya (garua) गुरुक < विशेषण [Adjective] गुरु, बड़ा, महान preceptor, heavy, great, big {म.} ता *गरुया* कुलसेला जाव न धीरेहि तुल्लंति। (तावद् गुरुका: कुलशैला यावन्नक धीरैस्तुल्यन्ते) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 36/104

गलिअ galia गलित < विशेषण [Adjective] तिरोहित हुआ, गला हुआ, प्रक्षालित, स्खलित, नष्ट melted, dissolved, decayed, wasted away, decomposed, rotte {म.} दिणमणि-मोहप्फुरिअं *गलिअं* घणलच्छिर-अणरसणादामं। (दिनमणि-मयूखस्फुरितं गलितं घनलक्ष्मी-रत्नरशनादामम्) सेतुबन्धं, गाथा-18/1, पृष्ठ 15

गवक्ख gavakkha गवाक्ष < संज्ञा (पुं.) [Noun] झरोखा, खिडकी, गवाक्ष की आकृति का रत्न-विशेष an air hole, a round window, etc. {शौ.} (विदूषक-) ओवग्गिदा *गवक्खेसु* वादं गेण्हन्ति-सलिल-गग्गरीओ। (अपवल्गिता गवाक्षेषु वातं गृह्णन्ति सलिलगर्गर्य्य:) मृच्छ., पृष्ठ 234/4

गव्व gavva गर्व < संज्ञा (पुं.) [Noun] अभिमान, गर्व pride, arrogance, vanity, etc. {म.} दोसेहि नवरि *गव्वो* खलाण मग्गो च्चिय अउव्वो। (दोषै: केवलं गर्व: खलानां

मार्ग एवापूर्वः) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 20/55

गव्विय gavviya गर्वित विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] गर्वित, गर्वयुक्त proud, vain, vainglorious, etc. {म.} गुणिणो गुणेहि विहवेहि विहविणो होंतु *गव्विया* नाम। (गुणिनो गुणैर्विभवै-र्विभविनो भवन्तु गर्विता नाम) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 20/55

गव्विरी gavvirī गर्ववती < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गर्वयुक्त स्त्री, गर्ववती, अभिमानी स्त्री proud heroine, proudly lady, etc. {म.} सिहिपेहुणावयंसा वहुया वाहस्स *गव्विरी* भमइ। (शिखिपिच्छावतंसा वधू-र्व्याधस्य गर्ववती भ्राम्यति) वज्जालग्गं, वाहवज्जा, पृष्ठ 72/212

गहवइ gaha-vai गृहपति < संज्ञा (पुं.) [Noun] गृहपति, गृहस्थ, संसारी head of the family, house-holder, mundane {म.} अविसेसन्नय *गहवइ* परंमुहो जं सि धवलाणं। (अविशेषज्ञ गृहपति पराङ्मुखो यदसि धवलेभ्यः) वज्जालग्गं, धवलवज्जा, पृष्ठ 62/182

गहिद (गहिअ / गहिय) gahida (gahia / gahiya) गृहीत < विशेषण [Verb] गृहीत, पकड़ा हुआ, ज्ञात accepted, taken, understood, etc. {शौ.} (विदूषक-) मए वि मिप्पिण्डबुद्धिणा तह एव्व *गहीदं* । (मयापि मृत्पिण्डबुद्धिना तथैव गृहीतम्) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-8, पृष्ठ 100/6

गहिर gahira गभीर< विशेषण [Adjective] गम्भीर, गहरा, अस्ताघ deep, profound, grave, considerate {म.} धुत्तीरयस्स कज्जे *गहिराणि* परोहडाइ वच्चंतो। (धत्तूरकस्य (धूर्तारतस्य) कार्ये गभीरान् गृह-पश्चाद्भागान् व्रजन्) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 178/524

गहीदावउण्ठण gahīdāvauṇṭhaṇa गृहीतावगुण्ठन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] घूंघट लिए हुऐ मुँह ढके हुई to keep oneself in viel, to draw the viel {शौ.} (चेटी-) ता तुवरमाणमण्डणा *गहीदावउण्ठणा* आअच्छदु त्ति। (तत् त्वरमाणमण्डना गृहीतावगुण्ठना-गच्छत्वति) चारु., भास नाटक., अंक-4, पृष्ठ 237

गाढासण gāḍhāsaṇa गाढासन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मजबूत आसन, दृढ़ता से बैठना strong posture, take up a posture, yogic exercise, etc. {म.} *गाढासणस्स* कस्स वि उयरे निहयस्स मंडलग्गेण। (गाढासनस्य कस्याप्युदरे निहतस्य मंडलाग्रेण) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 58/174

गाम gāma ग्राम < संज्ञा (पुं.) [Noun] गाँव, समूह, प्राणि समूह, वसति a village, community, etc.{मा.} (चेट-) शुशमिद्धाणं *गामाणं* का लक्खअं कलेदि ? (सुसमृद्धानां ग्रामाणां का रक्षणं करोति ?) मृच्छ., पृष्ठ 271/5

गामेइआ gāmeiā ग्रामेयिका < विशेषण [Adjective] गाँव में उत्पन्न महिला, ग्राम्य स्त्री village women, a rustic woman {म.} बाढं लीढूस-घणत्तणेण *गामेइआओ* णोच्चेंति। (बाढं लीढोषघनत्वेन ग्रामेयिका नोच्चिन्वन्ति) गउडवहो, गाथा-536, पृष्ठ 81

गालि gāli गालि < संज्ञा (नपुं.) [Noun] अपशब्द, असभ्य वचन abuse, etc. {मा.} (शकार-) एव्वं तुमं मे *गालिं* देन्ती अज्ज वि तं ज्जेव चालुदत्तकं शुमलेशि ? (एवं त्वं मे गालिं ददती अद्यापि तमेव चारुदत्तकं स्मरसि?) मृच्छ., पृष्ठ 426/8

गाहा gāhā गाथा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गाथा, आर्या गीतिछन्द, निश्चय, सूत्रकृतांग सूत्र का सोलहवाँ अध्ययन, ग्रन्थ प्रकरण verse (to be chanted) type of Prakrit poetry, name of metre, etc. {म.} विविहकइविरइयाणं *गाहाणं* वरकुलाणि घेत्तूण । (विविधकविविरचितानां गाथानां वरकुलानि गृहीत्वा) वज्जालग्गं, पृष्ठ 2/3

गिद्ध giddha गृध्र/ गृद्ध < संज्ञा (पु.) [Noun] गिद्ध, गीध vulture, etc. {शौ.} (तापसी-) गहीदामिसो किल *गिद्धो* पादवसिहरे णिलीअमाणो अणेण लक्खीकिदो बाणस्स। (गृहीतामिषः किल गृध्रः (गृद्ध) पादपशिखरे निलीयमानोऽनेन लक्ष्यीकृतो बाणस्य) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10/5, पृष्ठ 225

गिम्ह gimha ग्रीष्म < संज्ञा (पुं.) [Noun] गर्मी, ऋतु विशेष the summer, etc. {शौ.} (विदूषक-) अरे दासीए पुत्ता! गिम्हे। (अरे! दास्याः पुत्र! ग्रीष्मे) मृच्छ., पृष्ठ 270/5

गिरिसिहर gira-sihara गिरिशिखर < संज्ञा (पुं.) [Noun] गिरिशिखर, पर्वत का शिखर summit, peak of a mountain {म.} जूहाओ वणगहणं गहणाउ सर सराउ *गिरिसिहरं* । (यूथाद्वनगहनं गहनात्सरः सरसो गिरिशिखरम्) वज्जालग्गं, गयवज्जा, पृष्ठ 68/198

गीय gīya गीत < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] गीत, पद्यमय रचना, गेय, जो गाया जाय वह, संगीत कला, गान कला song, etc. {म.} गाहाणं *गीयाणं* तंतीसद्दाण पोढमहिलाणं। (गाथानां गीतानां तन्त्री-शब्दानां प्रौढमहिलानाम्) वज्जालग्गं, गाहावज्जा, पृष्ठ 6/17

गीवा gīvā ग्रीवा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गर्दन the neck {शौ.} (विदूषक-) इदो अ अवणीदजुज्झस्स मल्लस्स विअ मद्दीअदि *गीवा* मेसस्स। (इतश्च अपनीतयुद्धस्य मल्लस्येव मर्द्यते ग्रीवा मेषस्य) मृच्छ., पृष्ठ 232/4

गुणणिज्जिद guṇa-ṇijjida गुणनिर्जित < विशेषण [Adjective] गुणों से निर्जित, गुणों से पराभूत (नष्ट) virtueless, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) पिदुणो दे *गुणणिज्जिदा* दासी। (पितुस्ते गुणनिर्जिता दासी) मृच्छ., पृष्ठ 320/6

गुणवन्त guṇavanta गुणवत् < विशेषण [Adjective] गुणवंत, गुणवान्, गुणयुक्त endowed with good qualities or merits, virtuous {शौ.} (गणिका-) उम्मत्तिए! *गुणवन्तो* रक्खिदव्वो होदि। (उन्मत्तिके! गुणवान् रक्षितव्यो भवति) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 215

गुत्तिआ guttiā गुप्तिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गोपन, रक्षण, जेल, कठघरा concealing, etc {शौ.} (नेपथ्ये-) एसो अज्ज गोवालदारओ *गुत्तिअं* भंजिअ। (एषोऽद्य गोपालदारको गुप्तिकं भङ्क्त्वा) मृच्छ., पृष्ठ 326/6

गुप्प guppa √ गुप् < क्रिया [अक.] [Verb] छिपना, रक्षा करना to hide, to protect {म.} *गुप्पन्ती* विवलाआ गलिअ व्व थणंसुए महासुरलच्छी। (व्याकुला विपलायिता गलित इव स्तनांशुके महासुरलक्ष्मीः) सेतुबन्धं, गाथा-2/1, पृष्ठ 6

गुम्म gumma गुल्म < संज्ञा (पु., नपुं.) [Noun] गुल्म, समूह, झाडी, वल्ली,

वनस्पति विशेष, जिसमें 27 हाथी, 27 रथ, 81 घोड़ा और 135 प्यादा हों ऐसी सेना, गच्छ का एक हिस्सा cluster or clump of plants, thicket, bush, military, division, she-demon, ogress, monstrous, etc. {शौ.} (दामक-) अण्णं च, खादे खादे मूळाणि, फळाणि *गुम्मे गुम्मे* । मधु केत्तिअं दुग्घदि क्खीरं तेत्तअि एव्वं घिदं। (अन्यच्च, खाते खाते मूलानि, फलानि गुल्मे गुल्मे। मधु कियद् दुह्यते क्षीरं तावद् एव घृतम्) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 535

गुम्ह gumha √गुम्फ् < क्रिया [सक.] [Verb] गूँथना, गठना to put string or weave to gether, to tie {शौ.} (चेटी-) सिग्घं दाव *गुम्हदु* अय्या। (शीघ्रं तावद गुम्फत्वार्या) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/3, पृष्ठ 18

गुरु (गुरुअ) guru (gurua) गुरु < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] गुरु, शिक्षक, अध्यापक, विशेषतया धार्मिक गुरु, आध्यात्मिक गुरु, स्वामी, माता, पिता वगैरह पूज्य लोग, श्रद्धेय, आदरणीय, वृहस्पति, स्वर-विशेष, बड़ा, महान, भारी, उत्कृष्ट, उत्तम guru, preceptor, teacher, master, heavy, long syllable, etc. {म.} रहु उलचूडामणिणोमहिंदवालस्स को अ *गुरू* ? (रघुकुलचूडामणेर्महेन्द्रपालस्य कश्च गुरुः?) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 8/5

गुरुगुलवास guru-gula-vās गुरुकुलवास < संज्ञा (पुं.) [Noun] गुरुकुल में निवास करना/ रहना living in a seminary, living in a school {अर्धमा.} न वि लज्जा न वि नेहो, *गुरुगुलवासेण* किं तस्स ? (नापि लज्जा नापि स्नेहः गुरुकुलवासेन किं तस्य) समणसुत्तं, पृष्ठ 10/28

गुरुदक्खिणा guru-dakhiṇā गुरुदक्षिणा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गुरुदक्षिणा, आध्यात्मिक गुरु को दी जाने वाली दक्षिणा offerings made to the teacher, precepator on receiving the teacher's guidance, etc. {शौ.} (मालविका-) तुवरहि दाव णं *गुरुदक्खिणाए।* (त्वरय तावदेनां गुरुदक्षिणायै) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 279/3

गुरुभार guru-bhāra गुरुभार < विशेषण [Adjective] भारी बोझ, गुरुभार heavy load, heavy weight, heavy burden {म.} अइविहु रे *गुरुभारं* कड्ढंति य लीलमत्ताए।

(अतिविधुरे गुरुभारं कर्षन्ति च लीलामात्रेण) वज्जालग्गं, धवलवज्जा,पृष्ठ 62/185

गुहा guhā गुहा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गुहा, काल कोठरी, कन्दरा, कोठरी cave, cavern, carity, hiding place, the heart, etc. {म.} (विदूषक-) सा क्खु तवस्सिणी तए ण पिंगलच्छीए सारभंडभूघरए *गुहाए* विअ णिक्खित्ता। (सा खलु तपस्विनी तया पिङ्गलाक्ष्या सारभाण्डभूगृहे गुहायामिव निक्षिप्ता) मालविका., कालिदास ग्रन्था., पृष्ठ 290/4

गूढ gūḍha गूढ < विशेषण [Adjective] गूढ, गुप्त, छिपा हुआ, ढका हुआ, गहन, एकान्त, प्रच्छन्नsophisticated, mystery, enigmatical, abstruse, fiendish, enigmatic, ulterior, etc. {शौ.} (द्वितीया-) दाआदवसंगदे भट्टदारए माहवसेणे तस्स अमच्चेण अम्हारिसं परिअणं उज्झिअ *गूढं* आणीदा एसा। (दायादवशंगते भर्तृदारके माधवसेने तस्यामात्येनार्य-सुमति-नास्मादृशं परिजनमुज्झित्वा गूढमानीतैषा) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-7/5,पृष्ठ 319

गेह (घर / घल) geha (ghara / ghala) गेह/ गृह संज्ञा (नपुं.) [Noun] घर home, house {शौ.} (सूत्रधार-) ता जाव *गेहं* गदुअ जाणामि, एदं तं अम्हाणं गेहं। (तत् यावत् गृहं गत्वा जानामि, इदं तदस्माकं गृहम्) मृच्छ., पृष्ठ 11/1

गेहदुआर geha-duāra गृहद्वार < संज्ञा (नपुं.) [Noun] घर का द्वार entrance of a home {शौ.} (चेटी-) पेक्खदु अज्जो अम्हकेरकं *गेहदुआरं*। (प्रेक्षतामार्य: अस्मदीयं गृहद्वारम्) मृच्छ., पृष्ठ 229/4

गेहळष्षि (गेहलच्छी) geha-ḷaṣṣi (geha-lacchī) गृहलक्ष्मी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] घर की लक्ष्मी, घर की मालकिन, घर की स्त्री house wife, etc.{पैशाची} (नन्दगोप-) दाळिए! दाळिए! किं दाणि णो गेहळष्षिं ण ळमिअ तदो णो उज्झिअ णं गच्छषि। (दारिके! दारिके! किमिदानीं नो गेहलक्ष्म्यां न रन्त्वा ततो न उज्झित्वा ननु गच्छसि) बाल., भासनाटक.,श्लोक-18/1,पृष्ठ 516

गेहुस्सव gehussava गेहोत्सव < संज्ञा (पुं.) [Noun] गृहोत्सव, गृह में उत्सव festival at the house, etc. {म.} (समृद्धार्थक-) सन्तावेन्ता आवाणएसु *गेहुस्सवेसु* तहणिच्चं। (संतापयन्त

आपानकेषु गेहोत्सवेषु तथा नित्यम्) मुद्रा., श्लोक-1, पृष्ठ 80/6

गोट्ठी goṭṭhī गोष्ठी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] साथ बैठना, मण्डली, समान वय वालों की सभा, वार्तालाप, परामर्श meeting, assembly, symposium, group discussion, group deliberetaion {शौ.} ही ही किं बहु णा, मए वि सह *गोट्ठिं* णेच्छदि, सव्वआळं चिन्तअन्तो अहिरमदि। (ही ही किं बहु ना, मयापि सह गोष्ठीं नेच्छति, सर्वकालं चिन्तयन्नभिरमते) अविमार., भास., गाथा-5/2, पृष्ठ 118

गोड (आदेश) [देशज] **goḍa** पाद < संज्ञा (पुं.) [Noun] पैर, चरण, चतुर्थांश the foot, a quarter, fourth part {शौ.} (विदूषक-) अहं दे मुण्डे *गोडं* दइस्सं। (अहं ते मुण्डे पादं दास्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 270/5

गोणस goṇasa गोनस< संज्ञा (पुं.) [Noun] सर्प की एक जाति, फण रहित साँप की एक जाति a type of snake {म.} वंकपरिसक्किरे *गोणसे* व्व पिसुणे सुहं कत्तो। (वक्रगमनशीले गोनस इव पिशुने सुखं कुतः) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 20/57

गोधण godhaṇa गोधन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] गोधन, गाय रूपी धन herd of cows, property in the form of cattle, etc. {पैशाची} (वृद्धगोपालक-) महाळाअष्ष विळाडश्श वष्षवड्ढणगोप्पदाणनिमित्तं इमष्षिं णअळोववण वीहीए आअन्तु गोधणं षव्वे किदमङ्गळमोदआ गोवदाळआ दाळिआ अ दाव। (महाराजस्य विराटस्य वर्षवर्धनगोप्रदान-निमित्तमस्यां नगरोपवन-वीथ्यामायान्तु गोधनं सर्वे कृतमङ्गल-मोदका गोपदारका दारिकाञ्च तावत्) पञ्चरात्रम्., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 389

गोमाउ gomāu गोमायु < संज्ञा (पुं.) [Noun] शृगाल, सियार, गीदड़ Jackal {म.} संतत्थ-विरल-कंकंतरेसु *गोमाउणो* इह उवेंति। (संत्रस्तविरलकङ्कान्तरेषु गोमायव इहोपेन्ति) गउडवहो, गाथा-541, पृष्ठ 82

गोयर goyara गोचर < संज्ञा/विशेषण [Noun] प्रत्यक्ष, इंद्रिय का विषय, भिक्षाटन, माधुकरी, गौओं के चरने की जगह, भूमि में विचरने वाला perceptible, within the reach of sense, range, etc. {म.} जह कह वि ताण छप्पन्नयाण तणुयंगि *गोयरे* पडसि।(यदि कथमपि तेषां

षट्प्रज्ञानां तन्वङ्गि गोचरे पतसि) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 96/281

गोरी gorī गौरी < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] पार्वती, शिव की पत्नी, इस नाम की एक विद्यादेवी, आठ वर्ष की आयु की कन्या Pārvati, the wife of Shiva, a girl of eight years age, etc. {म.} *गोरीइ* माणविहडणघडंतदेहं हरं नमह। (गौर्या मानविघटनघटमानदेहं हरं नमत) वज्जालग्गं , रुद्दवज्जा, पृष्ठ 208/609

गोरोअण (गोरोयण) goroaṇa (goroyaṇa) गोरोचन < संज्ञा (स्त्री., नपुं.) [Noun] गोरोचन एक सुगन्धित पदार्थ जिसकी उत्पत्ति गोमूत्र, गोपित्त से मानी जाती है अथवा जो गाय के सिर से उपलब्ध होती है a bright yellow pigment prepared from the urine of a cow, or found in the head of a cow, etc. {म.} (नेपथ्ये-) *गोरोअणा*-कुंकुमवण्णा चक्का भणइ मइं। (गोरोचना-कुङकुमवर्ण चक्र भण माम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-36/4,पृष्ठ 205

गोलअ (गोलग / गोलय) golaa (golaga / golaya) गोलक < संज्ञा (पुं.) [Noun] गोलक round-shaped {म.}घर-*गोलअ*-पारोसरिअ-मूल-पडिबद्ध-चुण्ण-रेहाओ। (गृहगोलक-द्वारापसृतमूलप्रतिबद्ध-चूर्णरेखाः) गउडवहो,गाथा-682,पृष्ठ 102

गोला golā गोदा [गोदावरी] संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गोदावरी नदी Godāvarī river {म.} अज्जेय हलद्दीपिंजराइ *गोलाइ* तूहाइं। (अद्यैव हरिद्रापिञ्जराणि गोदावर्यास्तटानि) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 126/374

गोवजण gova-jaṇa गोपजन < संज्ञा (पुं.) [Noun] गोपजन, गोप समुदाय, अहीर milkman community, cowherd group, etc. {मा.} (नन्दगोप-) ता मा खु एदं दुक्खं *गोवजणेहि* अणुहू अमाणं ति मए एक्काइणा णिगळगुळुचळणेण इमं दाळिअं गण्हिअ णिग्गदो म्हि। (तद् मां खल्वेतद् दुःखं गोपजनैरनुभूयमानमिति मयैकाकिना निगलगुरूचरणेनेमां दारिकां गृहित्वा निर्गतो ऽस्मि) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 517

गोवी govī गोपी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गोपी, अहीरिन milkwoman, wife of a milkman, etc. {मा.} षम्पाउदप्पषुत्ता णीळणिवषणा जहा *गोवी* । (संप्रावृतप्रसुप्ता

नीलनिवसना यथा गोपी) बाल., भासनाटक., श्लोक-19, पृष्ठ 517/1

गोस gosa गोस < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] प्रातःकाल morning, dawn {म.} कयसेहराण सुम्मइ आलावो झत्ति *गोसम्मि*। (कुक्कुटानां श्रूयते आलापो झटिति गोसे (प्रभाते)) वज्जालग्गं, माणवज्जा, पृष्ठ 120/352

गोह (आदेश) [देशज] **goha** पुरुष < संज्ञा (पुं.) [Noun] पुरुष, गाँव का मुखिया, सिपाही, मनुष्य, देहाती, योद्धा a male, male being, man, etc. {ढक्की(ठक्की)} (द्यूतकार-) तावदेव सो *गोहो* अवक्कन्तो। (तावदेव स पुरुषोऽपक्रान्तः) मृच्छ., पृष्ठ 125/2

घ

घ gha घ < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत वर्णमाला का चतुर्थ व्यंजन है। ये कण्ठ स्थानीय है the fourth consonant of the Prakrit, a Gargling sound {म.} खघथधभा उण हत्तं उवेति अत्थं अ मुंचतां। (खघथधभाः पुनः हत्थमुपेयन्ति अर्थञ्चा-मुञ्चमानाः) नाट्य., श्लोक 8/17, पृष्ठ 542

घग्घर ghagghara घर्घर < संज्ञा (नपुं., पुं.) [Noun] शैवाल या सेवार वगैरह का समूह, श्याद्वल, खोखली आवाज, शब्द विशेष pile of moss, etc.{म.} अहि-गंध-कमलमाबद्ध-*घग्घरा* वारि लेहाओ। (अधिगन्धकमल-माबद्धघर्घरा वारिलेखाः) गउडवहो, गाथा-531, पृष्ठ 81

घरअण ghara-aṇa गृहजन < संज्ञा (पुं.) [Noun] गृहजन, परिवार, घर के लोग members of a family, etc. {म.} (चन्दनदास-) ता अववाहेह भट्टिणो अमच्चरक्खसस्स *घरअणं*। (तस्माद-पवाह्यत भर्तुमात्यराक्षसस्य गृहजनम्) मुद्रा.,श्लोक-21,पृष्ठ 14/1

घरिणी (घरणी) ghariṇī (gharaṇī) गृहिणी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गृहिणी, गृहस्वामिनी, भार्या house-wife, mistress of the house, etc. {म.} पढमं चेय विबुज्झइ घरस्स लच्छी न सा *घरिणी*। (प्रथममेव विबुध्यते गृहस्य लक्ष्मीर्न सा गृहिणी) वज्जालग्गं, सुघरिणीवज्जा, पृष्ठ 154/455

घादअ (घायग) ghādaa (ghāyaga) घातक < विशेषण [Adjective] घातक, मार

डालने वाला, विनाशक fatal, deadly, lethal, pernicious, harmful, murderer , assassin, killer, etc. {शौ.} (पुरुष-) तदो पहु दि *घादआ* जं कं पि गहीदसत्थं अपुव्वं पुरिसं अग्गी पच्चादो वा पेक्खंति, तदो अद्धपधे ज्जेव अत्तणो जीवदिं परिरक्खन्तो अप्पमत्ता पदे अप्पाप्तवज्झट्ठाणं वज्झं वावादेंति। (ततः प्रभृति घातका यं कमपि गृहीतशस्त्रम् अपूर्वं पुरुषमग्रतः पश्चाद्वा प्रेक्षन्ते, तदा अर्द्धपथसि एवात्मनो जीवितं परिरक्षन्तो अप्रमत्ता एते अप्राप्तवध्यस्थानं वध्यं व्यापादन्ति) मुद्रा., श्लोक 19, पृष्ठ 91/6

घादअजण (घायगजण) ghādaa-jaṇa (ghāyaga-jaṇa) घातकजन < विशेषण [Adjective] घातकजन, मार डालने वाला व्यक्ति, विनाशक hangmen, killer, murderer, destructive, etc. {शौ.} (समृद्धार्थक-) किं अज्जचाणक्कस्स *घादअजणो* णत्थि जेण अहम इदिसे णिससे कम्मे णिओएदि। (किमार्यचाणक्यस्य घातकजनो नास्ति येनावामीदृशे नृशसे कर्मणि नियोजयति) मुद्रा.,श्लोक 3,पृष्ठ 83/6

घादिद (घाइअ) ghādida (ghāia) घातित < विशेषण [Noun] मार डालना, मारित, विनाशित, जो शक्ति शून्य हुआ हो, सामर्थ्यरहित striking, killing, catching or killing birds, destroyed, etc. {मा.} (क्षपणक-) तहि अन्तले लक्खशेण गूढं विशकञ्ञआपयोअ उप्पदिअ *घादिदे* देवे पव्वदीशले। (तत्रान्तरे राक्षसेन गूढं विष-कन्यकाप्रयोगमुत्पाद्य घातितो देवः पर्वतेश्वरः) मुद्रा., श्लोक 5, पृष्ठ 67/5

घिणा ghiṇā घृणा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] जुगुप्सा, घृणा hatred, aversion, abhorrence, repugnance, scorn revulsion, etc. {म.} (विदूषकः-) भो! अलं एत्थ *घिणाए।* (भोः! अलमत्र घृणया) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-1/5, पृष्ठ 220

घिद (घिअ) ghida (ghia) घृत < संज्ञा (नपुं.) [Noun] घी ghee, clarified butter {शौ.} (नटी-) *घिदं* गुळं दहिं तण्डुळा अ अत्थि। (घृतं गुडो दधि तण्डुलाश्च अस्ति) चारु., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 4

घोल (घुम्म) ghola (ghumma) √ घूर्ण् क्रिया [अक.] [Verb] घूमना, चक्राकार फिरना, भटकना to stroll, to wheel, to rotate, to spin {म.} थरथरथरेइ हिययं

जीहा *घोलेइ* कंठमज्झम्मि। (कम्पते हृदयं जिह्वा घूर्णते कण्ठमध्ये) वज्जालग्गं, दीणवज्जा,पृष्ठ 46/136

घोशणा ghośaṇā < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] उच्च स्वर से बोलना, सार्वजनिक ऐलान, प्रख्यापन, प्रकथन declaration, announcement, etc.{चाण्डाली} (चाण्डाल-) ता तालेध डिंडिमं उग्घोशेध *घोशणं*। (तत्ताडयत डिण्डिमम् उद्घोषयत घोषणाम्) मृच्छ., पृष्ठ 564/10

घोष (घोस) ghoṣa (ghosa) घोष < संज्ञा (नपुं.) [Noun] घोष, ऊँची आवाज, नाद, अहीरों का मुहल्ला, अहीर टोली, गोष्ठी, गायों का बाड़ा, उदात्त आदि स्वर विशेष, अनुनाद high sound, indistinet noise, slogan, thundering of clouds, etc. {पैशाची} (गोमित्रक-) हा हा मादुळ! एदे के वि मणुष्षा दहिपिण्डपण्डरेहि छत्तेहि घोडअषअडिअं आळुहिअ षव्वं *घोषं* विद्दवन्ति चोळा। (हा हा मातुल! एते केऽपि मनुष्या दधिपिण्ड-पाण्डरैश्छत्रैर्घोटकशकहिकामारुह्य सर्वं घोषं विद्रवन्ति चौराः) पञ्चरात्रम्., भासनाटक. , अंक-2, पृष्ठ 391

च

च ca च < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत वर्णमाला का पंचम व्यंजन है। इसका उच्चारण स्थान तालु है the fifth consonant of the Prakrit. It is produced at palate रुधो-ध-म्भौ च। हेम. 4/218, पृष्ठ 568

च ca च < अव्यय [Indeclinable] और, फिर, पादपूर्ति में प्रयोग and, moreover, used in completion {म.} नामकम्मं च गीयं च अंतरायं तहेव य। (नामकर्मं च गोत्रं च अन्तरायं तथैव च) समण., गाथा-65/6, पृष्ठ 22

चंचु cañcu चञ्चु < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] चोंच, पक्षी की चोंच/ ठोर beak, bill (of a bird) etc. {म.} होइ न उज्जु व वंकं पेम्मं जह *चंचु* कीरस्स। (भवति न ऋज्विव वक्रं प्रेम यथा चञ्चूः कीरस्य) वज्जालग्गं, पेम्मवज्जा, पृष्ठ 114/337

चंद canda चन्द्र < संज्ञा (पुं.) [Noun] चंद्रमा, ग्रह विशेष the moon. the moon as a planet, etc. {शौ.} (चन्दनक-) ता गअणे जोण्हासहिदं *चन्दं* पि तुमं ण

जाणासि। (तद् गगने ज्योत्स्नासहितं चन्द्रमपि त्वं न जानासि) मृच्छ., पृष्ठ 340/6

चंदउत्त (चंदगुत्त) candautta (candagutta) चन्द्रगुप्त < संज्ञा (पुं.) [Noun] चन्द्रगुप्त, मौर्यवंश का एक स्वनाम विख्यात राजा Chandra Gupta, a famous king of Maurya dynasty {शौ.} (चर-) अह इं। अज्जेण खु तेसु तेसु विराअकारणेसु परिहरिदेसु सुगहीदणामहेए देवे *चन्दउत्ते* दिढं अणुरत्ताओ पकिदिओ। (अथ किम्। आर्येण खलु तेषु-तेषु विरागकारणेसु परिहृतेषु सुगृहीतनामधेये देवे चन्द्रगुप्ते दृढमनुरक्ताः प्रकृतयः) मुद्रा., श्लोक-19/1, पृष्ठ 8

चंदण candaṇa चन्दन < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] चन्दन, घिसा चन्दन, चन्दन की लकड़ी, चन्दन का पेड़ sandal, sandal wood, sandal tree, etc. {म.} अग्घाहि महुं दे गेण्ह *चंदणं* असुणि सुणसु मह वयणं। (आजिघ्र मधु हे गृहाण चन्दनमनाश्रवे शृणु मम वचनम्) वज्जालग्गं, माणवज्जा, पृष्ठ 118/351

चंदणलदा candaṇa-ladā चन्दनलता< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] चन्दन की लता, चन्दन की वेल a creeper of sandal, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) कहं दाणिं तादस्स अंकादो परिब्भट्ठा मलअतरुन्मूलिआ *चंदणलदा* विअ देसंतरे जीविअं धारइस्सं। (कथमिदानीं तातस्याङ्कात्परिभ्रष्टा मलयतरून्मूलिता चन्दनलतेव देशान्तरे जीवितं धारयिष्यामि) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-18, पृष्ठ 68/4

चंदसिरी candasirī चन्द्रश्री < संज्ञा (पुं.) [Noun] सम्राट चन्द्रगुप्त esteemed Chandragupta {शौ.} (प्रतिहारी-) अज्ज देवो *चंदसिरी* सीसे कमलमुउलाआरमञ्जलिं णिवेसिअ अज्जं विण्णवेद। (आर्य देवचन्द्रश्रीः शीर्षे कमलमुकुलाकारमञ्जलिं निवेश्य आर्यं विज्ञापयति) मुद्रा., श्लोक-19/1, पृष्ठ 11

चंदिमा candimā चन्द्रिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] चन्द्रिका, ज्योत्स्ना moon light, moon beam {म.} पसरइ जेण तमोहो फिट्टइ चंदस्स *चंदिमा* जेण। (प्रसरति येन तमोघो भ्रश्यति चन्द्रस्य चन्द्रिका येन) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 164/486

चंदोदअ candodaa चन्द्रोदय< संज्ञा (नपुं.) [Noun] चन्द्रोदय, चन्द्रमा का

निकलना, चन्द्रमा का उदय होना moon rise, moon appearance, etc. {शौ.} (विदूषक-) भो! पच्चासण्णेण *चंदोदएण* होदव्वं जइ तिमिररेईमाणं पुव्वदिसामुहं आलोअसुहअं दीसदि। (भो:! प्रत्यासन्नेन चन्द्रोदयेन भवितव्यम् यथा तिमिररिच्यमानं पूर्वदिशामुखमालोकसुभगं दृश्यते) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-5/3, पृष्ठ 178

चउट्ठ (चउत्थ) cauṭṭha (cauttha) चतुर्थ< विशेषण [Adjective] चतुर्थ, चौथा fourth {शौ.} (चेटी-) इमं *चउट्ठं* पओट्ठं पविसदु अज्जो। (इमं चतुर्थं प्रकोष्ठं प्रविशतु आर्य्य:) मृच्छ., पृष्ठ 234/4

चउद्दस cauddasa चर्तुदश < विशेषण [Adjective] चौदह, चर्तुदश fourteen, 14th {शौ.} (कैकेयी-) जाद! चउद्दस दिअस त्ति वत्तुकामाए पय्याउळहिअआए *चउद्दस* वरिसाणि त्ति उत्तं। (जात! चतुर्दश दिवसा इति वक्तुकामया पर्याकुलहृदयया चतुर्दश वर्षाणीत्युक्तम्) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-15/6, पृष्ठ 309

चउरंग cauraṅga चतुरङ्ग < विशेषण चार अंगवाला, चार विभाग वाला (सैन्य वगैरह) [सं.] चार अंग, चार प्रकार consisting four links, etc. {शौ.} (वीरक-) ता सुणु रे! अहिअरणमज्झे जइ दे *चउरंगं* ण कप्पावेमि, तदा ण होमि वीरओ। (तत् श्रुणु रे! अधिकरणमध्ये यदि ते चतुरङ्गं न कल्पयामि, तदा न भवामि वीरक:) मृच्छ., पृष्ठ 353/6

चओर caora चकोर < संज्ञा (पुं.) [Noun] चकोर, पक्षी विशेष, तीतर की जाति का पक्षी (कहते हैं कि चन्द्रमा की किरणें ही इसका आहार हैं) red legged partridge (fabled to subrest upon moon beams), etc. {म.} रीईओ विलिहंतु कव्वकुसला जोण्हं *चओरा* विअ। (रीतिका विलिहन्तु काव्यकुशला ज्योत्स्नां चकोरा इव) कर्पूर., प्रथम जवनिका,पृष्ठ 1/1

चक्कवाअवहू cakkavāa-vahū चक्रवाकवधू < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] चकवी the ruddy goose bride {शौ.} (वासवदत्ता-) धन्ञा खु *चक्कवाअवहू* जा अण्णोण्णा-विरहिदा ण जीवइ । (धन्या खलु

चक्रवाकवधूः यान्योन्यविरहिता न जीवति) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/1, पृष्ठ 16

चक्काअ (चक्कवाय / चक्कवाग) cakkāa (cakkavāya / cakkavāga) चक्रवाक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] चकवा a kind of a bird {म.} सोहंति जलोल्ल-द्विअ-*चक्काअ*-जुआओ वावीओ। (शोभन्ते जलार्द्रस्थितचक्रवाकयुगा वाप्यः) गउडवहो, गाथा-1177, पृष्ठ 173

चक्खु cakkhu चक्षुष्< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] आँख, नेत्र, चक्षु, नयन the eye, sight, look, vision, light, clearness, etc. {शौ.} (गौतमी-) जादे! एसो दे आणन्दपरिवाहिणा *चक्खुणा* परिस्सजन्तो विअ गुरू उवट्ठिदो। आआरं दाव पडिवज्जस्स। (जाते एष ते आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा परिष्वजनाय इव गुरूपस्थितः। आचारं तावत्प्रतिपद्यस्व) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-6, पृष्ठ 62/4

चडुल caḍula चटुल < विशेषण [Adjective] चंचल, चपल, कंपवाला, हिलता हुआ trembling, shaking, fickle, moving about, shaking about {म.} अह पेच्छइ रहुतणओ *चडुलं* दोससअदुक्ख बोलेअव्वं। (अथ पश्यति रघुतनयश्चटुलं दोषशतदुःख-व्यतिक्रमणीयम्) सेतुबन्धं, गाथा-2/1, पृष्ठ 42

चन्दमुह candamuha चन्द्रमुख < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] चन्द्रमा के समान मुख a moon-faced {शौ.} (वसन्तसेना-) अणलंकिद-सरीरो वि *चन्दमुहो* आणंदेदि मम हिअअं। (अनलङ्कृतशरीरोऽपि चन्द्रमुख आनन्दयति मम हृदयम्) मृच्छ., पृष्ठ-318/6

चमक्कार camakkāra चमत्कार < संज्ञा (पुं.) [Noun] चमत्कार, आश्चर्य, विस्मय, बिजली का प्रकाश wonder, miracle, marvel, amazement, etc. {म.} एयस्स पुणो हयपंचमस्स अन्नो *चमक्कारो*। (एतस्य पुनर्हत-पञ्चमस्यान्यश्चमत्कारः) वज्जालग्गं, पंचमवज्जा, पृष्ठ 98/286

चम्मारअ (चम्मार / चम्मआर) cammāraa (cammāra / cammaāra) चर्मकार < संज्ञा (पुं.) [Noun] चमार, मोची a shoe-maker, cobbler {शौ.} (चन्दनक-) अहं चन्दणओ *चम्मारओ*! ता पलोएहि

पवहणं। (अहं चन्दनकश्चर्मकारः। तत् प्रलोकय प्रवहणम्) मृच्छ., पृष्ठ 352/6

चरित्त caritta चरित्र < संज्ञा (नपुं.) [Noun] चारित्र, संयम, विरति, व्रत, नियम subsidential, conduct, character, virtue, faste, rule {अर्धमा.} नाणस्स होइ भागी, थिरयरओ दंसणे *चरिते* य। (ज्ञानस्य भवति भागी स्थिरतरको दर्शने चरित्रे च) समणसुत्तं, पृष्ठ 10/28

चरिया cariyā चर्या < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] व्यवहार, आचरण, संयम, विरति, व्रत, नियम, शील, अच्छा चालचलन conduct, behaviour, practice, personal, routine, etc. {शौ.} चेट्ठा तवम्हि *चरिया*। (चेष्टा तपसि चर्या) पंचा., प्राभृत-160

चलण calaṇa चरण < संज्ञा (पुं.) [Noun] पैर, पाँव, पाद, कविता की पंक्ति foot, feet (in poetry) metric foot, quarter of a stanza, etc. {म.} लाहो जं न डसिज्जइ भुयंगपरिवेढिए *चलणे*। (लाभो यन्न दश्यते भुजङ्गपरिवेष्टिते चरणे) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 20/59

चलणसक्कार calaṇa-sakkāra चरणसत्कार < संज्ञा (पुं.) [Noun] चरणों की पूजा, चरणों का आदर, चरण द्वारा सम्मानित हो obeisance at on elder's feet, adoration, etc. {मा.}(बकुलावलिका-) हला! णत्थि दे देसो णिग्गुणो अअं असोओ जइ कुसुमोब्भेदमंथरो भवे जो दे *चलणसक्कारं* लम्भिअ। (सखि नास्ति ते दोषः निर्गुणोऽयमशोको यदि कुसुमोद्भेद-मन्थरो भवेत् यस्ते चरणसत्कारं लब्ध्वा) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-16, पृष्ठ 282/3

चलणालंकार calaṇālaṇkāra चरणालङ्कार < संज्ञा (पुं.) [Noun] पैरों का अलंकरण, पैर रंगना, महावर लगाना ornament of the foot, coloring of the foot, etc. {मा.} (निपुणिका-) एसा असोअपादवच्छाआए मालविआए बउलावलिआ *चलणालंकारं* णिव्वट्टेदि। (एषाशोकपादपच्छायायां मालविकाया बकुलावलिका चरणालङ्कारं विवर्तयति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 278/3

चसअ (चसग / चसय) casaa (casaga / casaya) चषक < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्याला, दारू पीने का प्याला cup, goblet, wineglass {म.} पीअमइरं व *चसअं*

बहुलपओसं व मुद्धचन्दविरहिअं। (पीतमदिरमिव चषकं बहुलप्रदोषमिव मुग्धचन्द्रविरहितम्) सेतुबन्धं, गाथा-11/2, पृष्ठ 47

चाउत्थिअ (चाउत्थिय / चाउत्थिग) cāutthia (cāutthiya / cāutthiga) चातुर्थिक < विशेषण [Adjective] चार-चार दिन पर होने वाला (ज्वर) a fever that returns or is repeated every four days {शौ.} (चेटी-) एसा क्खु *चाउत्थिएण* पीडीअदि। (एषा खलु चातुर्थिकेन पीड्यते) मृच्छ., पृष्ठ 244-45/4

चाउहाण cāuhāṇa चाहुवान< संज्ञा (नपुं.) [Noun] चौहान, क्षत्रिय, जाति विशेष a caste, Cauhan {म.} (पारिपार्श्विक-) *चाहुआण*कुल-मोलि-मालिआ राअसेहर-कइंदगेहिणी। (चाहुवान-कुल-मौलि-मालिका राजशेखरकवीन्द्रगेहिनी) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 14/11

चाडुय cāḍuya चाटुक < संज्ञा (पुं. नपुं.) [Noun] चापलूसी, ख़ुशामद, प्रियवाक्य, मीठी वाणी pleasing words or discourse, very palatable talk, flattery, false praise, etc. {म.} दाणं न देइ न करेइ चाडुयं कहइ नेय सब्भावं। (दानं न ददाति न करोति चाटुकं कथयति नैव सद्भावम्) वज्जालग्गं, पेम्मवज्जा, पृष्ठ 112/332

चाणक्क cāṇakka चाणक्य < संज्ञा (पुं.) [Noun] चाणक्य, राजा चन्द्रगुप्त का स्वनाम प्रसिद्ध मंत्री, कौटिल्य Chānakya, a minister of king Candragupta, etc. {शौ.} *चाणक्कम्मि* अकरुणे सहसा सद्दाविदस्स वट्टेदि। (चाणक्येनाकरुणेन सहसा शब्दायितस्य वर्तते) मुद्रा., श्लोक-20/1, पृष्ठ 13

चादअव्वद cādaa-vvada चातकव्रत < संज्ञा (पु., नपुं.) [Noun] चातक का व्रत, प्यासे रहना cuckoo's fast, living according to legend, only on rain drops, to be extremely thirsty, etc. {शौ.} (विदूषक-) अदो दाव तुए दिव्वरसाहिलासिणा *चादअव्वदं* गहीदं। ता दाव तुमं पत्थिदो। (अतस्तावत्त्वया दिव्यरसाभिलाषिणा चातकव्रतं गृहीतम्। तत्तावत् त्वं कुत्र प्रस्थितः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2/2, पृष्ठ 155

चाय (चाअ) cāya (cāa) त्याग संज्ञा (पुं.) [Noun] त्याग, परित्याग, छोड़ना

abandonment, forsaking, renunciation, sacrifice, self-denial, dedication {म.} *चाएण* विणा वि नरो पुणो वि लच्छीइ पम्मुक्को। (त्यागेन विनापि नरः पुनरपि लक्ष्म्या प्रमुक्तः) वज्जालग्गं, किविणवज्जा, पृष्ठ 200/585

चाव cāva चाप < संज्ञा (पुं.) [Noun] चाप, धनुष arc of a circle, bow {म.} जह जह न चडइ *चावो* उम्मिल्लइ करह पल्लिणाहस्स। (यथा यथा नारोहति चापो भ्रश्यते (स्रंसते) करात् पल्लिनाथस्य) वज्जालग्गं, वाहवज्जा, पृष्ठ 72/210

चावल cāvala चापल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] चंचलता, चपलता fickleness, unsteadiness, restless, flippancy, etc. {शौ.} (नेपत्थे-) मा क्खु *चावलं* करेहि। कहं गदो जेव अत्तणो पकिदिं। (मा खलु चापलं कुरु। कथं गत एवात्मनः प्रकृतिम्) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13/6, पृष्ठ 122

चिंचिणी (चिंचिणिआ / चिंचिणिगा / चिंचिणिचिंचा) [देशज] **ciñciṇī (ciñciṇiā / cñiciṇigā / cñiciṇiciñcā)** चिञ्चिनी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] इमली, इमली का पेड़ the tamarind tree or its fruit {म.} इह *चिंचिणीण* घेत्तूण करअलोलुंप-पिंडिअं पहिओ। (इह चिञ्चिनीनां गृहीत्वा करतलावलुम्पपिण्डितं पथिकः) गउडवहो, गाथा-677, पृष्ठ 102

चिंता cinta चिंता < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] चिंता, विचार, पर्यालोचन, अफसोस, शोक, ध्यान, इष्ट-प्राप्ति का सन्देह thought, worry, concern, care, anxiety, etc. {म.} (चित्रलेखा-) मुद्धे! का उण *चिंता* तुए विणा अण्णासमाअमस्स। (मुग्धे! का पुनश्चिन्ता त्वया विनान्यप्रियासमागमस्य) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/3, पृष्ठ 181

चिंतिद (चिंतिअ) cintida (cintia) चिन्तित < विशेषण [Adjective] चिंतित, विचार किया हुआ thought, considered, reflected {शौ.} (शकुन्तला-) *चिंतिदं* मए गीदवत्थुं। (चिंतितं मया गीतवस्तुं) अभि.शाकु., पृष्ठ 232/3 {शौ.} (विदूषक-) तेण *चिन्तिदं* महन्तं एदं गेहं। (तेन चिन्तितं महदेतद् गेहम्) मृच्छ., पृष्ठ 177/3

चिइच्छ ciiccha √ चिकित्स्< क्रिया [सक.] [Verb] दवा करना, इलाज करना,

संशय करना to cure, to treat medically, etc. {शौ.} (निपुणिका-) पसण्णमुहवण्णो दीसइ। अवि अ धुवसिद्धिणा *चिइच्छदो* । (प्रसन्नमुखवर्णो दृश्यते। अपि च ध्रुवसिद्धिना चिकित्सितः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15/4, पृष्ठ 305

चिट्ठ (चेट्ठ) ciṭṭha (ceṭṭha) तिष्ठ [√स्था] < क्रिया [अक.] [Verb] बैठना, रहना to stay, to stop, to stand {मा.} (शकार-) ता दलिद्द-शत्थवाहअ-मणुश्श-कामुकिणि! *चिट्ठ चिट्ठ*। (तत् दरिद्र-सार्थवाहक-मनुष्य-कामुकिनि! तिष्ठ तिष्ठ) मृच्छ., पृष्ठ 427/8

चित्त citta चित्र < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] चित्र, आलेख्य, तस्वीर, आश्चर्य, काष्ठ विशेष, विलक्षण, विचित्र, अद्भुत, चितकबरा, चित्रक, चीता, श्वापद विशेष, चित्रा नक्षत्र a picture, painting, an extraordinary appearance, Leopard, wild animal, wonder, etc.{शौ.}(बकुलावलिका-) आम सो जणो देवीए पासगदो *चित्ते* दिट्ठो। (आम् स जनो देव्याः पार्श्वगतश्चित्रे दृष्टः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-3/1, पृष्ठ 242

चित्त citta चित्त < संज्ञा (नपुं.) [Noun] चित्त, मन, हृदय, तर्क, बुद्धि, देशना, विचार, ध्यान देना, चिन्तन, अवधान, इच्छा, अभिप्राय, उद्देश्य, प्रत्यक्ष ज्ञात, सोचा हुआ, विचार विमर्श किया हुआ, अभिप्रेत, अभिलषित, इच्छित mind, heart, soul, see, attention, desire, aim, etc. {शौ.} (समाहितिका-) बाढं किल तस्सिं साहिलासो भट्टा। किंतु केवलं देवीए धारिणीए *चित्तं* रक्खन्तो ण अत्तणो पहुत्तणं दंसेदि। (बाढं किल तस्यां साभिलाषो भर्ता। किन्तु केवलं देव्या धारिण्याश्चित्तं रक्षन्नात्मनः प्रभुत्वं दर्शयति) मालविका.,कालिदास, ग्रन्था., अंक-3, पृष्ठ 268

चित्तफलअ citta-phalaa चित्रफलक< संज्ञा (नपुं.) [Verb] चित्र पटल, चित्र रखने का तख्ता, तस्वीर a table for painting, a picture board, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) इमं दाव *चित्तफलअं* मम सअणीए ठाविअ तालवेण्टअं गेण्हिअ लहु आअच्छ। (इदं तावत् चित्रफलकं मम शयनीये स्थापयित्वा तालवृन्तकं गृहीत्वा लघु आगच्छ) मृच्छ., पृष्ठ 196/4

चित्तल cittala चित्रल < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] चित्तियाँ, चितकबरा जंगली पशु विशेष spotted, speckled, etc. {म.} परविवर लद्धलक्खे *चित्तलए* भीसणे जमलजीहे। (परविवरलब्धलक्ष्ये चित्रले भीषणे यमलजिह्वे) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 20/57

चित्तलिहिद citta-lihida चित्रलिखित < विशेषण/ भू.कृ [Adjective/ Past Participle] चित्रित painted {शौ.} (विदूषक-) विविह-सुअन्धिकुसुमोवहास-*चित्तलिहिद*-भूमिभाअस्स।(विविध सुगन्धि-कुसुमोपहार-चित्रलिखित-भूमिभागस्य) मृच्छ., पृष्ठ 229/4

चित्ताकिदि cittākidi चित्राकृति < संज्ञा (स्त्री.) [Verb] चित्राकृति, चित्रित प्रतिकृति, आलोक चित्र a painted resemblance, portrait {शौ.} (वसन्तसेना-) अवि सुसदिसी इअं *चित्ताकिदी* अज्जचारुदत्तस्स ? (अपि सुसदृशी इयं चित्राकृति आर्यचारुदत्तस्य) मृच्छ., पृष्ठ 190/4

चिर (चिरअ) cira (ciraa) √चिरय् नामधातु/ क्रिया [अक.] [Verbal root derived from a noun/ Verb] विलम्ब करना, आलस करना to delay, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) *चिरअदि* मदणिआ। (चिरयति मदनिका) मृच्छ., पृष्ठ 198/4

चिरं ciram चिरम् < अव्यय [Indeclinable] दीर्घ काल for a long time, after a long time, long since, at last, finally, etc. {शौ.} (तापसी-) *चिरं* जीवदु भद्दे। (चिरं जीवतु भद्रे) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-10/1, पृष्ठ 6

चिराय (चिराअ / चिर) cirāya (cirāa / cira) √चिरय् क्रिया [अक.] [Verb] विलम्ब करना, आलस करना to delay, to lazy, to sloth, etc. {म.} (दुर्जय-) तुवं *चिरायसि* त्ति। (त्वं चिरायसीति) ऊरुभङ्गम्., भासनाटक., श्लोक-42/1, पृष्ठ 500

चिराहिळसिद cirāhiḷasida चिराभिलषित < विशेषण [Adjective] चिरकाल से इच्छित, बहुत दिनों से इच्छा long time wished, etc. {शौ.} (कैकेयी-) जाद! *चिराहिळसिदो* खु एसो मणोरहो। (जात! चिराभिलषितः खल्वेष मनोरथः) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-7/7,पृष्ठ 315

चिहुर cihura चिकुर < संज्ञा (पुं.) [Noun] केश, बाल hair of the head {म.} अग्घइ विसंठुलुव्वेल्ल-वल्लरी-*चिहुर*-पब्भारो। (राजते विसंष्ठुलोद्वेल्लवल्लरी-चिकुरभारः) गउडवहो, गाथा-734, पृष्ठ 110

चीवल (चीवर) cīvala (cīvara) चीवर संज्ञा (नपुं.) [Noun] सन्यासियों या भिक्षुओं के पहनने का कपड़ा the dress of any mendicant, particularly of a Buddhist mendicant {मा.} (भिक्षु-) इदं *चीवलं* पक्खालिदुं। (इदं चीवरं प्रक्षालयितुम्) मृच्छ., पृष्ठ 378/8

चूअ cūa चूत संज्ञा (नपुं.) [Noun] आम, आम्र, आम का पेड़ mango tree {शौ.} (विदूषक-) कस्सिं काले *चूआ* मोलेन्ति ? (कस्मिन् काले चूताः मुकुलयन्ति?) मृच्छ., पृष्ठ 270/5

चूअफल cūa-phala चूतफल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] आम, आम्र, आम का पेड़ mango fruit {शौ.} (विदूषक-) पारावअ! चिट्ठ चिट्ठ, जाव एदिणा दण्डकट्ठेण सुपक्कं विअ *चूअफलं* इमादो पासादादो भूमीए पाडइस्सं। (पारावत! तिष्ठ तिष्ठ यावदेतेन दण्डकाष्ठेन सुपक्वमिव चूतफलम् अस्मात् प्रासादात् भूमौ पातयिष्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 268/5

चूअमंजरी cūa-mañjarī चूतमञ्जरी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] चूतमंजरी, आम का बौर, आम की मंजरी a cluster of blossoms tree, etc. {म.} (राजा-) अहिणव महु लोलुवो भवं तह परिचुम्बिअ *चूअमञ्जरिं*। (अभिनवमधुलोलुपो भवांस्तथा परिचुम्ब्य चूदमञ्जरीम्) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., पृष्ठ 72/6

चूडामणि (चूलामणि) cūḍāmaṇi (cūlāmaṇi) चूडामणि < संज्ञा (पुं., स्त्री.) [Noun] मणि, सिर का सर्वोत्तम आभूषण-विशेष, मुकुट रत्न, शिरोमणि, सर्वोत्तम jewel worn in a diadem or crest, head dress, chief, best, etc. {शौ.} (विदूषक-) अच्चाहिदं अच्चाहिदं। परमबहु मदो क्खु सो वअस्सस्स संगमणीओ णाम *चूडामणी*। (अत्याहितमत्याहितम्। परमबहु मतः खलु स वयस्यस्य सङ्गमनीयो नाम चूडामणिः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-5, पृष्ठ 220

चूदंकुर cūdaṅkura चूताङ्कुर < संज्ञा (नपुं) [Noun] चूताङ्कुर, आम की कोपलें, बौर blossom of mango tree,

cluster of blossom of mango tree, etc. {शौ.} (निपुणिका-) आलोअदु भट्टिणी *चूदंकुरं* विचिण्णन्तीणं पिपीलिआहिं देसिदं। (अवलोकयतु भट्टिनी चूताङ्कुरं विचिन्वत्यो पिपीलिकाभिर्दिष्टम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 278/3

चेड (चेट / चेडग / चेडय) ceḍa (ceta / ceḍaga / ceḍaya) चेट/ चेटक < संज्ञा (पुं.) [Noun] चेट, नौकर, भृत्य, सेवक, नृप विशेष, विट, उपपति/ सहपति servant, attendant, king spical, co-husband {मा.} (चेट-) तदो सव्वो जणो भणदि- अहो *चेडस्स* कम्मं ति। (ततः सर्वे जनो भणति- अहो चेटस्य कर्मेति) चारु., भासनाटक., अंक-2,पृष्ठ 221

चोक्ख [देशज] **cokkha** शौच < विशेषण [Adjective] शौच, शुचिता, स्वच्छता, पवित्र, शुद्ध, चोखा purification, defecation, evacuation of excrement, ablution, cleanliness (after a relative's death) {मा.} (नन्दगोप-) तेण हि अम्हाणं घोषष्ष उइदं पड्खुणा *चोक्खं* कलेमि। (तेन ह्यस्माकं घोषस्योचितं पांसुना शौचं करोमि) बाल., भासनाटक., श्लोक-20/1,पृष्ठ 521 {मा.} (नंदगोप-) जाव जमुणाहळं गच्छिअ *चोक्खं* कळेमि। (यावद् यमुनाजलं गत्वा शौचं करोमि) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 521

चोज्ज [देशज] cojja आश्चर्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] आश्चर्य wonder, surprise {म.} कुद्दालघायघणताडणेण पज्झरइ वसुहं न हु *चोज्जं*। (कुद्दालघातघनताडनेन प्रक्षरति वसुधा न खल्वाश्चर्यम्) वज्जालग्गं, उड्डवज्जा, पृष्ठ 202/589

चोर cora चोर < संज्ञा (पुं.) [Noun] चोर, तस्कर a thief, robber {शौ.} (विदूषक-) *चोरं* विअ पेक्खामि। (चौरमिव पश्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 167/3

छ

छ cha छ < संज्ञा (पुं.) [Noun] ये तालु स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष है a particular palatal consonant गमिष्यमासां *छः*। 4/215 हेम.,पृष्ठ 568

छ cha षट् < संज्ञा (त्रिलिंगी) [Noun] छह, 6 की संख्या six {म.} पहिया जे छ प्पुरिसा, परिभट्ठारण्णाम ज्झदेसम्हि। (पथिका ये षट् पुरुषा, परिभ्रष्टा

अरण्यमध्यदेशे) समण., गाथा 537/31, पृष्ठ 168

छंद chanda छन्दस् < संज्ञा (नपुं.) [Noun] छन्दशास्त्र, वृत्त, इच्छा, अभिलाषा, स्वच्छन्दता, अभिप्राय prosody, metrics, stanza, metre (in poetry), chanting, wish, desire, control, etc. {म.} *छंदं* अयाणमाणेहि जा किया सा न होइ रमणिज्जा। (छन्दो अजानद्भिर्या कृता सा न भवति रमणीया) वज्जालग्गं, पृष्ठ 6/18

छइल (छइल्ल) [देशज] **chaila (chailla)** छेक/ विदग्ध < विशेषण विदग्ध, चतुर, सहृदय विद्वान clever, shrewd, a wise or learned man, scholar {शौ.} (पारिपार्श्विक-) कधिदं च्चेव्व *छइल्लेहि*। (कथितमेव विदग्धैः) कर्पूर., पृष्ठ 9/1

छज्ज (आदेश) **chajja** √राज् < क्रिया [अक.] [Verb] शोभना, चमकना to grace, to shine, etc. {म.} सायरससीण *छज्जइ* जयम्मि पडिवन्ननिव्वहणं। (सागरशशिनो राजते जगति प्रतिपन्ननिर्वहणम्) वज्जालग्गं, नेहवज्जा, पृष्ठ 26/75

छण chaṇa क्षण < संज्ञा (पुं.) [Noun] उत्सव, त्यौहार, हिंसा festival, violence, etc. {म.} पाहुण एसु *छणेसु* य वसणेसु य पायडा हुंति। (प्राघूर्णकेषु क्षणेषु च व्यसनेषु च प्रकटा भवन्ति) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा,पृष्ठ 48/138 {म.} पढमं *छण*-मग्गअि-वइअरेसु संचरइ मंडणुच्छाहो। (प्रथमं क्षणमार्गितव्यतिकरेषु संचरति मण्डनोत्साहः)गउडवहो,गाथा-784,पृष्ठ 117

छत्तधारिआ chatta-dhāriā छत्रधारिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] छाता धारण करने वाली सेविका escort {शौ.} (वसन्तसेना-) एसा *छत्तधारिआ* भावस्स ज्जेव भोदु। (एषा छत्रधारिका भावस्यैव भवतु) मृच्छ., पृष्ठ 294/5

छप्पय chappaya षट्पद < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] भौंरा, भ्रमर, छः स्थान वाला, छः प्रकार का, छः पैर वाला a large black bee (enamoured of flowers), etc. {म.} मुंचंतु *छप्पया* सेसकुसुमसेवा-किलेसस्स। (मुञ्चन्तु षट्पदाः शेषकुसुम-सेवाक्लेशम्) वज्जालग्गं, मालईवज्जा, पृष्ठ 78/228

छव्विअ [देशज] **chavviya** पिहित < विशेषण [Adjective] पिहित, आच्छादित covered, etc. {म.} णिवडंत-सिला-*छव्विअ*-परितलिणाअंत-मूल-वित्थारो। (निपतच्छिला-पिहित-परितलिनायमान-मूलविस्तारः) गउडवहो, गाथा-150, पृष्ठ 25

छाआ (छाया) chāā (chāyā) छाया< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] छाया, छाँह, परछाई, प्रतिबिम्ब, कान्ति, दीप्ति, शोभा, धूप रहित स्थान shadow, reflection, shelter, safety, shade, silhouette {शौ.} (विदूषक-) मम बुद्धी आदंसमण्डलगआ विअ *छाआ* वामेसु दक्खिणा दक्खिणेसु वामा होइ। (मम बुद्धिरादर्शमण्डलगतेव च्छाया वामेषु दक्षिणा दक्षिणेषु वामा भवति) चारु. भासनाटक., गाथा-21/1,पृष्ठ 204

छेय cheya छेक < विशेषण [Adjective] निपुण, चतुर shrewd, cunning, clever {म.} *छेयाण* जेहि कज्जं न हु होसइ जेहि जम्मलक्खे वि। (छेकानां यैः कार्यं न खलु भविष्यति यैर्जन्मलक्षेऽपि) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 94/275

ज

ज ja ज < संज्ञा (पुं.) [Noun] तालु स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular palatal consonant. य-य्य-र्या जः।। 2/24 हेम., पृष्ठ 472

ज ja यद् < संज्ञा (त्रिलिंगी) [Noun] जो a relative pronoun meaning who, which {म.} *ज* अन्नाणी कम्मं खवेइ बहु आहिं वासकोडीहिं। (यद् अज्ञानी कर्म, क्षपयति बहु काभिर्वर्षकोटीभिः)समण., गाथा-612/34, पृष्ठ 194

जं jaṁ यत् अव्यय [Indeclinable] जिस कारण से, जिस वास्ते so that, reason for which, that for which. चक्किकुरुफणिसुरेदेसु, अहमिंदे जं सुहं तिकाल भवं। {म.} (चक्रिकुरुफणिसुरेन्द्रेषु, अहमिन्द्रे यत् सुख त्रिकाल भवम्) समण., गाथा-615/34, पृष्ठ 196

जंघाबल jaṅghā-bala जङ्घाबल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] जङ्घाबल, पैरों का बल, पैरों की सामर्थ्य thigh power,capcity of foot, etc. {शौ.} (विदूषक-) किं अण्णं। *जंघाबलं* एव्व। (किमन्यत्। जङ्घाबलमेव)

मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19, पृष्ठ 285/3

जंत (जंतिय) janta (jantiya) यन्त्र/ यान्त्रिक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] यन्त्र, कोई भी उपकरण या मशीन, साधन, सामान्य उपकरण, बल, जो नियन्त्रण करता है या कसता है- थूणी; खंभा आदि, बेड़ी, पट्टी, शल्योपयोगी उपकरण विशेष, ताबीज, एक रहस्यमय ज्योतिष का रेखाचित्र जो ताबीज की भाँति प्रयुक्त किया जाय any instrument or machine, that which restrains or fastens, a fetter, a bolt, lock, an amulet, a mystical or astronomical diagram used as an amulet, etc. {म.} *जंतिय* गुलं विमग्गसि न य मे इच्छाइ वाहसे जंतं। (यान्त्रिक गुडं विमार्गयसे न च ममेच्छया वहसि यन्त्रम्) वज्जालग्गं, जंतियवज्जा, पृष्ठ 182/533

जंप jampa √ जल्प् < क्रिया [सक.] [Verb] बोलना, कहना to speak, to talk, to murmur, to chat, etc. {म.} दिट्ठा हरंति दुक्खं *जंपंता* दैंति सयलसोक्खाइं। (दृष्टा हरन्ति दुःखं जल्पन्तो ददति सकल-सौख्यानि) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 12/36

जंबाल [देशज] **jambāla** जम्बाल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] कीचड़, शैवाल, जलमल mud, moss, etc. {म.} रवि-बिंबं दीसइ किरण-मुक्क-कीलाल-*जंबालं*। (रविबिम्बं दृश्यते किरणमुक्तकीलालजम्बालम्) गउडवहो, गाथा-47, पृष्ठ 29

जंबू jambū जंबू < संज्ञा (पुं.) [Noun] जामुन, जम्बुफल, जामुन का पेड़, जंबू वृक्ष के आकार का एक रत्नमय शाश्वत पदार्थ the rose apple tree and fruit, Jambu tree and fruit, etc. {म.} सुरहिमिह गंधमासिसिर-मउलुग्गमाण *जंबूण*। (सुरभिमिह गन्धमाशिशिर-बाल मुकुलगतानां जम्बूनाम्) गउडवहो, गाथा-516, पृष्ठ 114

जअ (जय) jaa (jaya) √ जि < क्रिया [सक.] [Verb] जीतना, उत्कृष्टपन से बरतना to conquer, to trample, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) *जअदि* अ जअकज्जं जाव काऊण सव्वं। पडिहदपरपक्खा अज्जचाणक्कणीदी। (जयति च जयकार्ये यावत् कृत्वा सर्वे प्रतिहतपरपक्षार्य-चाणक्यनीतिः) मुद्रा., श्लोक 1, पृष्ठ 80/6

जइ jai यदि < अव्यय [Indeclinable] यदि if, but, etc. {शौ.} (विदूषक-) *जइ* मए गंतव्वं। (यदि मया गन्तव्यम्) मृच्छ., पृष्ठ 61 {शौ.} (विदूषक-) *जइ* णासो चोरेण अवहिदो। (यदि न्यासश्चौरेणापहृतः) मृच्छ., पृष्ठ 179

जइ jai जयिन् < विशेषण [Adjective] विजयी, जयिन् victory, conquered, etc. {शौ.} (विदूषक-) ता वाआमत्तएण *जइ* करीयसि। जेदु जेदु भवं। (तद् वाचा मात्रेण जयीक्रियते। जयतु-जयतु भवान्) अभि.शाकु., कालिदासग्रन्था., पृष्ठ 25/2

जउणा (जँउणा / जँउण) jauṇā (jaũṇā / jaũṇa) यमुना < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] यमुना नदी Yamuna, the sacred river {म.} *जउणा* बहु लतरंगा ते दियहा तेत्तिय च्चेव।(यमुना बहु लतरङ्गा ते दिवसस्तावन्त एव) वज्जालग्गं, कण्हवज्जा,पृष्ठ 202/592

जच्च jacca जात्य < विशेषण [Adjective] असली, शुद्ध, सजातीय, कुलीन, श्रेष्ठ, सुन्दर, स्वाभाविक of fine quality {म.} एण-खुर-खंडिआपंडु-*जच्च*-कच्चूर-चुण्णमुण्णइ। (एणखुरखण्डितापाण्डुजात्य-कर्पूरचूर्णमुन्नमति) गउडवहो, गाथा-602, पृष्ठ 91

जज्जर (जज्जल) jajjara (jajjala) जर्जर < विशेषण [Adjective] जीर्ण, सच्छिद्र, खोखला, जर्जर broken, crushed, ruined, destroyed, etc. {मा.} (शकार-) ता भणावेध इमिणा *जज्जल*-वंशखण्डेण शंखलेण तालिअ तालिअ। (तद्भणयत अनेन जर्ज्जरवंशखण्डेन शृङ्खलेन ताडयित्वा ताडयित्वा) मृच्छ., पृष्ठ 556/10

जडा jaḍā जटा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] जटा, सटे हुए बाल, मिले हुए बाल matted hair (as of some sādhū), tangled hair, fibrous roots of a tree {म.} हरसिरसरणम्मि गओ लुक्कंतो तह *जडाण* मज्झम्मि। (हरशिरःशरणे गतो निलयंस्तथा जटानां मध्ये) वज्जालग्गं, चंदवज्जा, पृष्ठ 92/269

जण jaṇa जन < संज्ञा (पुं.) [Noun] मनुष्य, लोग, व्यक्ति, समुदाय, वर्ग man, people, public, masses, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) पूअणीओ मे बम्हण*जणो* । (पूजनीयो मे ब्राह्मणजनः) मृच्छ., पृष्ठ 97/1 {म.} सव्वो गाहाउ *जणो* वीसत्थो भणइ

सव्वगोट्ठीसु। (सर्वो गाथा: जनो विश्वस्तो भणति सर्वगोष्ठीषु) वज्जालग्गं, गाहावज्जा, पृष्ठ 6/14

जणणी jaṇaṇī जननी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] जननी, माता, पूजनीया, उत्पादिका mother, progenitor, originator, etc. {शौ.} (कौसल्या-) णहि णहि! इअं दे *जणणी*। (नहि नहि! इयं ते जननी) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-17/3, पृष्ठ 281

जणमेजअ (जणमेअअ / जणमेजय) jaṇmejaya (jaṇmeaa / jaṇamejaya) जनमेजय < संज्ञा (पुं.) [Noun] जनमेजय, स्वनाम प्रसिद्ध नृप-विशेष Janmejaya, a celebrated king of Hastināpura son of Parīkṣita, the grandson of Arjuna {मा.} (शकार-) किं वाशुदेवे शवपट्टणेशे कुन्तीशुदे वा *जणमेजए* वा। (किं वासुदेवः शवपत्तनेशः कुन्तीसुतो वा जनमेजयो वा) चारु. भासनाटक., गाथा-12/1, पृष्ठ 200

जणवद (जणवय) jaṇavada (jaṇavaya) जनपद < संज्ञा (नपुं.) [Noun] जनपद, राज्य, देश, राष्ट्र, लोकालय, देश निवासी, प्रजा, नगर populated region, district, city, etc. {शौ.} (पुरुष-) एदं वि णत्थि। चन्दउत्तस्स *जणवदे* ण णिसंसा पडिवत्ती। (एतदपि नास्ति। चन्द्रगुप्तस्य जनपदे न नृशंसा प्रतिपत्तिः) मुद्रा.,श्लोक 15,पृष्ठ 88/6

जणवाय jaṇavāya जनवाद < संज्ञा (पुं.) [Noun] जनवाद, लोकापवाद जन-श्रुति, उड़ती ख़बर, मनुष्यों की आपस में चर्चा people's voice, rumour, hearsay {शौ.} (गणिका-) तुमं दाव दक्खो वेसवासजणो त्ति *जणवादं* पूरअन्ती अळिअं भणसि। (त्वं तावद् दक्षो वेशवासजन इति जनवादं पूरयन्त्यलीकं भणसि) चारु., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 237

जण्णोपवीद (जण्णोवईय / जण्णोववीय) jaṇṇopavīda (jaṇṇovaīya/ jaṇṇovavīya) यज्ञोपवीत < संज्ञा (नपुं.) [Noun] यज्ञोपवीत, जनेऊ the sacred thread (a symbol) indicating one's upper caste, a ceremony in which a boy is invested with the sacred thread {शौ.} (विदूषक-) आम भोदि। *जण्णोपवीदेण* बम्हणो, चीवरेण रत्तपडो। (आम भवति। यज्ञोपवीतेन ब्राह्मणः, चीवरेण रक्तपटो) भासनाटक.,अविमार.,गाथा-5/5,पृष्ठ 169

जत्थ jattha यत्र < अव्यय [Indeclinable] जहाँ, जिसमें where, when, as in, whereas {म.} माणुसं तु *जत्थ* केवलं माणुसचरियं ति। (मानुषं तु यत्र केवलं मानुषचरितमिति) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 3

जदा jadā यदा < अव्यय [Indeclinable] जिस समय when, at the time when, whenever, as soon as {शौ.} (विदूषक-) भो! *जदा* तुमं मए भणिदोसि। (भो! यदा त्वं मया भणितोऽसि) मृच्छ., पृष्ठ 179/3

जम jama यम < संज्ञा (पुं.) [Noun] यमराज, मृत्यु, संयमन, नियंत्रित करना, आत्मनिमंत्रण, कोई महान नैतिक कर्तव्य या धर्माराधना, अहिंसादि पाँच व्रत, साधु का व्रत (जैन परम्परानुसार) योग प्राप्ति के आठ अंगों या साधनों में पहला साधन, मृत्यु का देवता, मृत्यु का मूर्त रूप yama, the god of death, restraining controlling, curbing, the angel of death, the regent of the words flow, etc. {मा.} पणमह *जमस्स* चलणे किं कज्जं देवएहिं अण्णेहिं। (प्रणमत यमस्य चरणौ किं कार्यं देवकैरन्यैः) मुद्रा., श्लोक-16/1, पृष्ठ 6

जमपड jama-paḍa यमपट < संज्ञा (नपुं.) [Noun] यमचित्र, यमराज का फोटो pictures of yama, portrait of Yama {शौ.} जाव एवं गेहं पविसिअ *जमपडं* दंसअन्तो गीआइं गाआमि। (यावदेतद् गेहं प्रविश्य यमपटं दर्शयन् गीतानि गायामि) मुद्रा., श्लोक-17/1,पृष्ठ 6

जमुणाहळ (जमुणाजल) jamuṇā-haḷa (jamuṇā-jala) यमुनाजल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] जमुनाजल, यमुना नदी का पानी Yamuna water, water of Yamuna river {मा.} (नंदगोप-) जाव *जमुणाहळं* गच्छिअ चोक्खं कळेमि। (यावद् यमुनाजलं गत्वा शौचं करोमि) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 521

जम्बुद्दीव jambuddīva जम्बूद्वीप < संज्ञा (पुं.) [Noun] भूखण्ड विशेष, सब द्वीप और समुद्रों के बीच का द्वीप, मध्यलोक का प्रथमद्वीप (Mythologicaly) first island of the middle universe, one of the seven continents surrounding the mountain Meru, etc. {म.} अत्थि इहेव *जम्बुद्दीवे* दीवे। (अस्ति इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 10

जम्म (जम्मण) jamma (jammaṇa) जन्मन् < संज्ञा (नपुं.) [Noun] जन्म, उत्पत्ति, उत्पाद birth, nativity, origin {म.} *जम्मे* वि जं न हूयं न हु होसइ जं च *जम्म*लक्खे वि। (जन्मन्यपि यन्नभूतं न खलु भविष्यति यच्च जन्मलक्षेऽपि) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 20/54

जम्मदिण jamma-diṇa जन्मदिन < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] जन्म का दिन birth day{म.}जम्मदिणे थणणिवडणभएण दिज्जंति धाइउच्छंगे। (जन्मदिने स्तन-निपतनभयेन दीयन्ते धात्र्युत्सङ्गे) वज्जालग्गं, पहु वज्जा, पृष्ठ 50/149

जय jaya जगत् < संज्ञा (नपुं.) [Noun] जगत, संसार universe, world, earth, mankind, etc. {म.} अकए वि कए वि पिए पियं कुणंता *जयम्मि* दीसंति। (अकृतेऽपि कृतेऽपि प्रिये प्रियं कुर्वन्तो जगति दृश्यते) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 14/38

जयलच्छी jaya-lacchī जयलक्ष्मी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] जयलक्ष्मी, विजयश्री the goddess of victory {म.} परमुहपलोइयाणं ताणं कह होइ *जयलच्छी*। (परमुखावलोकिनां तेषां कथं भवति जयलक्ष्मी:) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 32/91

जयवल्लह jayavallaha जयवल्लभ< संज्ञा (पुं.) [Noun] जयवल्लभ (जगत-वल्लभ), एक कवि, वज्जालग्गं ग्रंथ के प्रणेता (गाथाओं के संकलनकर्ता) a poet (author of Vajjālagga) {म.} रइयं वज्जालग्गं विहिणा *जयवल्लहं* नाम। (रचितं व्रज्यालग्नं विधिना जयवल्लभं नाम) वज्जालग्गं, पृष्ठ 2/3

जयसिरी jaya-sirī जयश्री < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] जयश्री, जयलक्ष्मी victory, triumph, the goddess of victory {म.} अज्ज वि मज्झत्था *जयसिरी* वि ता जीव मा वच्च। (अद्यापि मध्यस्था जयश्रीरपि तस्माज्जीव मा व्रज) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 58/168

जर jara ज्वर < संज्ञा (पुं.) [Noun] ज्वर, बुखार fever {म.} विज्ज न एसो *जरओ* न य वाही एस को वि संभूओ। (वैद्य नैष ज्वरो न च व्याधिरेष कोऽपि संभूतः) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 174/511

जरि jari जरिन् < विशेषण [Adjective] वृद्ध, जरा युक्त a man of old age {म.} धरणि अलाहिमुहं पिव सरीरमिणमो *जरी* वहइ। (धरणितलाभिमुखमिव शरीरमिदं जरी वहति) गउडवहो, गाथा-1001, पृष्ठ 148

जल jala जल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] जल, पानी water, aqua {म.} धुवइ सरं पियइ *जलं* तं जाणह केण कज्जेण। (धावति शरं पिबति जलं तज्जानीत केन कार्येण) वज्जालग्गं, रुद्दवज्जा, पृष्ठ 212/618

जलण jalaṇa < ज्वलन संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] ज्वलन, जलन, अग्नि, वह्नि burning, ignition, glittering, burning sensation, flame, fire {म.} डहई सहि पियविरहो *जलणो जलणो* च्चिय वराओ। (दहति सखि प्रियविरहो ज्वलनो ज्वलन एव वराक:) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 130/ 385

जलरंकु jalaraṅku जलरङ्कु < संज्ञा (पुं.) [Noun]जलमुर्गी, ढेंक पक्षी a kind of a bird, water hen {म.} *जलरंकु*-दुक्ख-लक्खिअ-सहरा घोलंति सरिआओ। (जलरङ्कुदुःखलक्षितशफरा घूर्णन्ते सरितः) गउडवहो, गाथा-385, पृष्ठ 60

जलहर jala-hara जलधर < संज्ञा (पुं.) [Noun] मेघ, बादल, अभ्र cloud, etc. {म.} किसिणिज्जंति लयंता उयहिजलं *जलहरा* पयत्तेण। (कृष्णीभवन्ति गृह्णन्त उदधिजलं जलधरा: प्रयत्नेन) वज्जालग्गं, दीणवज्जा, पृष्ठ 46/137

जळासय (जलासय) jaḷāsaya (jalāsaya) जलाशय < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] जलाशय, सरोवर, तालाब a body of water, tank, pool, pond, etc. {मा.} (सर्वा-) मा खु मा खु भट्टा। एदं *जळासअं* पविसिदुं। (मा खलु मा खलु भर्तः। एतं जलाशयं प्रवेष्टुम्) बाल., भासनाटक., श्लोक-1/3, पृष्ठ 544

जव java यव < संज्ञा (पुं.) [Noun] अन्न विशेष, जव या जौ barley, corn {म.} इह अग्घंति *जवाणं* अग्ग-भवंतीतो सीमाओ। (इह राजन्ते यवानामग्रभवन्त्यः सीमानः) गउडवहो, गाथा-588, पृष्ठ 89

जस jasa यशस् < संज्ञा (पुं.) [Noun] कीर्ति, यश, इज़्ज़त, ख्याति fame, glory, honour, reputation, etc. {म.} अत्थो *जसो* न लब्भइ सो वि अमित्तो कओ होइ। (अर्थो

यशो न लभ्यते स चामित्र: कृतो भवति) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 28/82

जसोदा (जषोदा / जसोआ) jasodā (jaṣodā / jasoā) यशोदा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] नन्द नामक गोप की पत्नी, कृष्ण की पालक माता wife of nanda Gopa, mother of Lord Krishna {मा.} (नन्दगोप-) अज्ज हि अड्ढळत्ते अम्हाणं कुडुम्बिणीए *जसोदाए* पषूदा इअं च दाळी तवष्षिणी जादमत्ता एव्व ओग्गदप्पाणा षंवुत्ता। (अद्य हि अर्धरात्रेऽस्माकं कुटुम्बिन्या यशोदया प्रसूतेयं च दारी तपस्विनी जातमात्रैवापगतप्राणा संवृता) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 517

जह (जहा) jaha (jahā) यथा < अव्यय [Indeclinable] यथा, जिस तरह से, जैसे, जिस प्रकार से as, like, in the manner which, just as, according to {शौ.} (अनुसूया-) तह *जह* भणासि। (तथा यथा भणसि) अभि.शाकु., पृष्ठ 226/3

जहिच्छ jahiccha यथेच्छ < विशेषण/ क्रियाविशेषण [Adjective/ Adverb] इच्छा के अनुसार, यथेच्छ self willed, etc. {म.} मा वारिज्जउ बाला भुंजउ अन्नं *जहिच्छाए।* (मा वार्यतां बाला भुङ्क्तामन्नं (अन्यं) यथेच्छम्) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 176/515

जा jā √ या < क्रिया [अक.] [Verb] जाना, गमन करना to go, to proceed {शौ.} (स्थावरकश्चेट-) *जाध* गोणा! *जाध।* (यातं गावौ! यातम्) मृच्छ., पृष्ठ 326/6

जाअर (जायर / जागर) jāara (jāyara / jāgara) जागर < विशेषण/ संज्ञा- [Adjective/ Noun] जागना, जागने वाला, जागरण, निद्रा का न होना to be awake, to rise or get up from sleep, etc. {शौ.} (दौवारिक-) एसो अमच्चो भट्टा कज्जचिंताजणिदेण *जाअरेण* समुप्पण-सीसवेअणो अज्ज वि दाव ण सअणदलं मुच्चदि। (एष खलु अमात्यराक्षस: कार्यचिन्ताजनितेन जागरणेन समुत्पन्न-शीर्षवेदनोऽद्यापि तावन्न शयनतलं मुञ्चति) मुद्रा., श्लोक-1, पृष्ठ 51/4

जाचिद (जाइअ) jācida (jāia) याचित< विशेषण [Adjective] याचित, प्रार्थित, माँगा हुआ solicited, asked for, begged,

though repeatedly ask, etc. {शौ.} (पुरुष-) ण मए अत्थस्स कारणेण चन्दणदासो संजमिदो वि किंदु पच्छादिदो णेण अमच्चरक्खसस्स घरअणो बहुसो वि *जाचिदेण* वि ण समप्पिदो त्ति। (न मयार्थस्य कारणेन चन्दनदासः संयमितोऽपि किंतु प्रच्छादितोऽ नेनामात्यराक्षस्य गृहजनो बहुशोऽपि याचितेनापि न समर्पित इति) मुद्रा., श्लोक 17, पृष्ठ 90/6

जाण jāṇa √ ज्ञा < क्रिया [सक.] [Verb] जानना, ज्ञान प्राप्त करना, समझना to know, to learn {शौ.} (वसन्तसेना-) कधं तुमं *जाणासि*? (कथं त्वं जानासि ?) मृच्छ., पृष्ठ 191/3

जाणग jāṇaga ज्ञायक < विशेषण [Adjective] जानकार, ज्ञानी, ज्ञाता, जानने वाला, प्रतिभाशाली, बुद्धिमान् a learned person, knower, etc. {शौ.} रायादि विप्पमुक्को *जाणगो*। (रागादि विप्रमुक्तः ज्ञायकः) समयसार 137

जाद (जाय / जाअ) jāda (jāya / jāa) जात < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] पुत्र, बच्चा, सन्तान, उत्पन्न a son, grown, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) *जाद*! मा रोद। (जात! मा रुदिहि) मृच्छ., पृष्ठ 320/6

जादि (जाइ) jādi (jāi) जाति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] जाति, क्षत्रिय-ब्राह्मण-वैश्य आदि जाति, कुल, गोत्र, वंश, ज्ञाति, उत्पत्ति, मालती पुष्प, सामान्य नैयायिकों के मत से एक धर्म-विशेष, जो व्यापक हो जैसे मनुष्य का मनुष्यत्व, गो का गोत्व birth, the form of existence fixed by birth, a caste tribe or class, etc.{शौ.} (वीरक-) अरे! का मह *जादी* ? (अरे! का मम जातिः ?) मृच्छ., पृष्ठ 349/6

जामादु (जामाइ, जामाउ, जामादा) jāmādu (jāmāi, jāmāu, jāmādā) जामातृक < संज्ञा (पुं.) [Noun] दामाद, जामाता son-in-law {शौ.} (चेटी-) ऐसो *जामादुओ* मणिभूमीए ण्हाअदि। (एष जामातृकः मणिभूम्यां स्नायति) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/3, पृष्ठ 18

जाया jāyā जाया < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पत्नी, औरत, स्त्री wife, woman, etc. {म.} ता कीस तुज्झ *जाया* अन्नेहि गणावए दियहं। (तत् किं तव

जायान्यैर्गणयति दिवसम्) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 172/506

जार jāra जार< संज्ञा (पुं.) [Noun] जार, प्रेमी, उपपति, मणि का लक्षण विशेष lover, paramour, gallant, etc. {म.} चुंबेवि न लहु नयणं झडति नीसारिओ *जारो*। (चुम्बित्वा न लघु नयनं झटिति निःसारितो जारः) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 160/475

जालिअ (जालिय) jāliya (jāliya) जालिक < संज्ञा (पुं.) [Noun] जाल फैंकने वाला मछुआरा, जाल-जीवि, वागुरिक, वहेलिया, चिड़ीमार a fisher man, etc. {म.} *जालिअ*-कड्ढिअ-संबूअ-सेवला तीर-पेरंता। (जालिकाकृष्टशम्बूकशैवालास्तीरपर्यन्ताः) गउडवहो, गाथा-521, पृष्ठ 79

जालिया jāliyā जालिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] सिरोवस्त्र, कञ्चुक a guaze, etc. {म.} थण-पडिमागअ-परिणील-*जालिआ*-मंडणं वरो एइ। (स्तनप्रतिमागतपरिनील-जालिका-मण्डनां वर एति) गउड़वहो, गाथा-1129, पृष्ठ 166

जावअ (जावय) jāvaa (jāvaya) यावक < संज्ञा (पुं.) [Noun] अलक्तर, महावर, लाह, आलता lac, red dye {म.} पडिबोहे जेण-स-*जावअ* व्व लक्खिज्जए दिट्ठी। (प्रतिबोधे येन सयावकेव लक्ष्यते दृष्टिः) गउडवहो, गाथा-296, पृष्ठ 47

जिअंत jianta जीवत् < विशेषण [Adjective] जीवन्त, जीवित रहते हुए जीवनकाल living, alive {म.} णज्जंति *जिअंतस्स* वि जे णवर गुणा वि ते च्चेअ। (ज्ञायते जीवतोऽपि ये केवलं गुणा अपि त एव) गउडवहो, गाथा-962, पृष्ठ 142

जिण jiṇa जिन < विशेषण/संज्ञा [Adjective/ Noun] विजयी, विजेता, राग आदि अन्तरंग शत्रुओं को जीतने वाला, अर्हन् देव, बुद्ध भगवान, केवलज्ञानी, सर्वज्ञ, चौदह पूर्वों का जानकार, जिनकल्पी मुनि, अवधिज्ञान आदि अतीन्द्रिय ज्ञानवाला, अर्हत् जिन्होंने क्रोध, मान, माया, लोभ इन कषायों को एवं राग, द्वेष, मोह को जीत लिया है conqueror, the supreme being, conqueror of all passions and senses, lord Arhat, etc. {शौ.} एगं *जिणस्स* रूवं वीयं उक्कट्ठिसावयाणं तु। (एकं जिनस्य रूपं द्वितीयं उत्कृष्टश्रावकाणां तु) अट्ठपाहुड़ दंसणपाहुड़ गाथा 18, पृष्ठ 28

जिणधम्म jiṇa-dhamma जिनधर्म < संज्ञा (पुं.) [Noun] जिनदेव उपदिष्ट धर्म (जैन धर्म) Jainism, the religion of lord Arhat {म.} ते धन्ना कयपुण्णा जे *जिणधम्मं* धरंति निअहियए, तेसिं चिअ मणुयत्तं सहलं सलहिज्जए लोए। (ते धन्या: कृतपुण्या: ये जिनधर्मं धरन्ति निजहृदये, तेषामेव मनुजत्वं सफलं प्रशसनीयं लोके) सिरिकुम्मा., 91, पृष्ठ 19

जिणसासण jiṇa-sāsaṇa जिनशासन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] जैन दर्शन, जिनेन्द्र का शासन the discipilne of Lord Jina, Jainism {म.} तं इच्छ परस्स वि य, एत्तियगं *जिणसासणं*। (तदिच्छ परस्यापि च, एतावत्कं जिनशासनम्) समणसुत्तं, पृष्ठ 8/24

जिण्णुज्जाण jiṇṇujjāṇa जीर्णोद्यान< संज्ञा (नपुं.) [Noun] पुराना उद्यान, नष्टप्राय बाग ruined or neglected garden {शौ.} (चेटी-) अज्जए! वड्ढमाणअं समादिसिअ पुप्फकरण्डअं *जिण्णुज्जाणं* गदो अज्जचारुदत्तो। (आर्ये! वर्द्धमानकं समादिश्य पुष्पकरण्डकं जीर्णोद्यानं गत आर्यचारुदत्त:) मृच्छ., पृष्ठ 315/6

जीव (जीअ) jīva (jīa) जीव < संज्ञा (पुं.) [Noun] आत्मा, चेतन, प्राणी, जीव, जीवन, सात दिन का लगातार उपवास (जैन परम्परानुसार), पराक्रम living being, etc. {शौ.} एए तण्णि वि भावा हवंति *जीवस्स* अक्खयामेया। (एते त्रयोऽपि भावा: भवन्ति जीवस्य अक्षया: अमेया:) अट्ठपाहु ड, चारित्तपाहु ड, पृष्ठ 77/4

जीवलोअ (जीवलोय / जीवलोग) jīva-loa (jīva-loya / jīva-loga) जीवलोक < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राणिलोक, संसार, जीव समूह mortal world, world, animal world {शौ.} (विदूषक-) आदु बुभुक्खाए ओदणमअं विअ *जीवलोअं* पेक्खामि। (अथवा बुभुक्षयौदनमयमिव जीवलोकं पश्यामि) चारु., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 3

जीवाविद (जीयाविय) jīyāvida (jīvāviya) जीवित < विशेषण [Adjective] जीवित, जिलाया हुआ, जो जिन्दा हो living being, alive, live, etc. {शौ.} (गान्धारी-) *जीयाविदम्हि* मन्दभाआ। (जीवितास्मि मन्दभागा) ऊरुभङ्ग., भासनाटक., श्लोक-37/1, पृष्ठ 499

जीविय (जीविअ) jīviya (jīvia) जीवित < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] जीव, जीवन, जो जिन्दा हो living, alive, live {म.} ओसरसु मयण घेत्तूण *जीवियं* हरहु यासणुच्चरियं। (अपसर मदन गृहीत्वा जीवितं हरहु ताशनोच्चरितम्) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 132/388

जीहा jīhā जिह्वा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] जिह्वा, जीभ tongue {मा.} (शकार-) ता अत्तणकेलिकाए *जीहाए* भणाहि मए वशन्तशेणाए मालिदे त्ति। (तदात्मीयया जिह्वया भण मया वसन्तसेना मारिता इति) मृच्छ., पृष्ठ 556/10 {शौ.} (विदूषक-) ही ही भो णिमन्तणिओ परमण्णेण विअ राअरहस्सेण फुट्टमाणो ण सक्कणोमि जणाइण्णे अइण्णेण अत्तणो जीहं धारिदुम्। (ही ही भो: निमन्त्रणिक: परमान्नेनेव राजरहस्येन स्फुटन्न शक्नोमि जनाकीर्णेऽकीर्तनेनात्मनो जिह्वां धारयितुम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 151

जुअ jua √ युज् < क्रिया [अक.] [Verb] जुड़ना to join, to attach {शौ.} (चेटी-) *जोएहि* रत्तीए पवहणं। (योजय रात्रौ प्रवहणम्) मृच्छ., पृष्ठ 315/6

जुज्झ jujjha युद्ध < संज्ञा (नपुं.) [Noun] युद्ध, संग्राम war, warfare, battle, struggle {म.} वणसीहाण व *जुज्झं* वुत्तं तं तारिसं सुरयं। (वनसिंहयोरिव युद्धं वृत्तं तत् तादृशं सुरतम्) वज्जालग्गं, सुरयवज्जा, पृष्ठ 110/323

जुत्त jutta युक्त < विशेषण [Adjective] सम्मिलित, जकड़ा हुआ, युक्त किया हुआ, सुव्यवस्थित, सुसज्जित, युक्त, स्थिर, कर्मपरायण, योग्य, उचित, ठीक, उपयुक्त, मौलिक, संगत, योग्य, जोड़ा हुआ, मिला हुआ, सम्बद्ध, सहित, समन्वित joined, united, arranged, fit, proper, fixed or intent on, etc. {शौ.} (माथुर-) अह ण *जुत्तं* जप्पिदुं। (अथ न युक्तं जल्पितुम्) मृच्छ., पृष्ठ 120/2

जुप्प (जुंज) juppa (juṁja) √ युज् < क्रिया [सक.] [Verb] जोड़ना, युक्त करना, किसी कार्य में लगना to join or united with, yoked, one who unites or joins {म.} अमुणियगुणो न जुप्पइ न मुणिज्जइ स य गुणो अजुत्तस्स। (अज्ञातगुणो न युज्यते न ज्ञायते स च गुणोऽयुक्तस्य) वज्जालग्गं, धवलवज्जा, पृष्ठ 62/183

जुवराअ juvarāa युवराज < संज्ञा (पुं.) [Noun] युवराज, राजकुमार, गद्दी का वारिस royal prince, eldest son of the ruling king, etc. {शौ.} (विदूषक) तेण हि *जुवराओ* म्हि दाणिं संवुत्तो। (तेन हि युवराजोऽस्मीदानीं संवृत्तः) अभि. शाकु., कालिदासग्रन्था., श्लोक 17, पृष्ठ 37/2

जूद jūda द्यूत < संज्ञा (पुं, नपुं.) [Noun] जुआ, द्यूत gambling, playing with dice, gamble {शौ.} (माथुर-) णं एव्वं ज्जेव जूदं तुए सेविदं ? (एवमेव द्यूतं त्वया सेवितम् ?) मृच्छ., पृष्ठ 121/2

जूदिअर jūdiara द्यूतकर < संज्ञा (पुं.) [Noun] जुआरी gambler {शौ.} (वसन्तसेना-) अज्जमित्तेअ! कहिं तुम्हाणं *जूदिअरो*? (आर्यमैत्रेय! कुत्र युष्माकं द्यूतकरः ?) मृच्छ., पृष्ठ 295/5

जूहभट्ठ jūha-bhaṭṭha यूथभ्रष्ट < विशेषण [Adjective] यूथ भ्रष्ट, अपने समूह से च्युत gone astray from the heard or group {म.} हरिणि व्व *जूहभट्ठा* अच्छइ मग्गं पलोयंती। (हरिणीव यूथभ्रष्टा आस्ते मार्गं प्रलोकयन्ती) वज्जालग्गं, पवसियवज्जा, पृष्ठ 136/401

जूहाहिव jūhāhiva यूथाधिप < संज्ञा (पुं.) [Noun] गजराज, यूथ का नायक leader of an elephant, a noble elephant {म.} तह नीससियं *जूहाहिवेण* चिरविलसियं भरंतेण। (तथा निःश्वसितं यूथाधिपेन चिरविलसितं स्मरता) वज्जालग्गं, गयवज्जा, पृष्ठ 66/196

जेट्ठमादर jeṭṭha-mādara ज्येष्ठमातृ < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] जेष्ठ माता, बड़ी माँ, ताई जी aunt, father's elder brother's wife, etc. {शौ.} (उर्वशी-) एहि वच्छ! *जेट्ठमादरं* अभिवंदेहि। (एहि वत्स! जेष्ठमातरम-भिवन्दस्व)विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-22/5, पृष्ठ 235

जेण jeṇa येन < सर्वनाम [Pronoun] जिससे, जिसके द्वारा, जिस लिए, जिस कारण से, यद् शब्द का करण कारक का एक वचनांत रूप जो क्रिया विशेषण की भांति प्रयुक्त होता है, लक्षण सूचक अव्यय whereby, by which, wherefore, on which account, by means of which, so that, since, because, etc. {म.} पडिवन्नं जेण समं पुव्वणिओएण होइ जीवस्स। (प्रतिपन्नं येन समं पूर्वनियोगेन भवति जीवस्य) वज्जालग्गं, नेहवज्जा, पृष्ठ 26/76

जोअ (जोग) joa (joga) योग < संज्ञा (पुं.) [Noun] योग, व्यापार, मन, वचन और शरीर की चेष्टा, चित्तनिरोध, मनः प्रणिधान, समाधि, सम्बन्ध, संयोग, ईप्सित वस्तु का लाभ, शब्द का अवयवार्थ सम्बन्ध, बल, वीर्य, पराक्रम union, junction, combination, contact, etc. {शौ.} (धात्री-) जोअं इच्छन्तीओ आअदम्ह। (योगमिच्छन्त्यावागते स्वः) अविमार., भास., गाथा-6/2, पृष्ठ 126

जोअणसद joaṇa-sada योजनशत < संज्ञा (नपुं.) [Noun] योजनशत, सौ योजन a hundred yojanas {शौ.} (करभक-) *जोअणसदं* समहिअं को णाम गदागदं इह करेदि। (योजनशतं समधिकं को नाम गतागतमिह करोति) मुद्रा., श्लोक-1, पृष्ठ 50/4

जोइ joi योगिन् < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] योगी, साधु, मुनि, मुक्त, चित्तनिरोध करने वाला an ascetic, name of a mixed community of weavers etc. {शौ.} परमप्पय झायंतो *जोई* मुच्चेइ मलदलोहेण। (परमात्मनां ध्यायन् योगी मुच्यते महद्लोभेन) अट्ठपाहु ड, मोक्खपाहु ड, पृष्ठ 309/48

जोइस joisa ज्योतिष < संज्ञा (नपुं.) [Noun] ज्योतिष शास्त्र, देवों की एक जाति, सूर्य-चन्द्र आदि ग्रह, भूत-भविष्य को जानने वाला महानिमित्त ज्ञान astrology, etc. {म.} (क्षपणक-) एक्कगुणा होइ तिही चउग्गुणे होइ णक्खत्ते। चउसत्तिगुणे लग्गे एसे *जोइसतं*तसिद्धंते। (एकगुणा भवति तिथिश्चतुर्गुणं भवति नक्षत्रम्। चतुःषष्टिगुणं लग्नमेतद् दृश्यते ज्योतिष-तन्त्रसिद्धान्ते) मुद्रा., गाथा 20, पृष्ठ 244/4

जोइसिअ joisia ज्यौतिषिक < विशेषण [Adjective] ज्योतिषी, दैवज्ञ, सूर्य, चन्द्र आदि ज्योतिष्क देव (जैन परम्परानुसार) astrologer, astronomer, fortune teller, etc.{म.} दीहरखडियाहत्थो *जोइसिओ* भमइ नयरमज्झम्मि। (दीर्घखटिकाहस्तो ज्यौतिषिको भ्राम्यति नगरमध्ये) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 164/484

जोगसत्थ joga-sattha योगशास्त्र < संज्ञा (नपुं.) [Noun] योगशास्त्र, चित्तनिरोध का प्रतिपादक शास्त्र the yoga philosophy, Patanjali's text on Yoga {शौ.} (धात्री-)

पडिग्गहिदं मङ्गलवअणं *जोअसत्थं* एव्व होदु। (प्रतिगृहीतं मङ्गलवचनं योग-शास्त्रमेव भवतु) अविमार., भास., गाथा-6/2, पृष्ठ 26

जोग्ग jogga योग्य< विशेषण [Adjective] योग्य, समर्थ able, capable, worthy, eligible, suitable, fit {म.} तुह *जोग्गा* अक्कमरुत्थलीइ तुंगा तरू कत्तो। (तव योग्या अर्कमरुस्थल्यां तुङ्गास्तरवः कुतः) वज्जालग्गं, करहवज्जा, पृष्ठ 76/224

जोण्हा (जोइसि) joṇhā (joisi) ज्योत्स्ना < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] ज्योत्स्ना, चाँदनी, चंद्रमा का प्रकाश moonlight, a moonlit night, etc. {म.} एक्काइ नवरि नेहो पयासिओ तिहु यणम्मि *जोण्हाए।* (एकया केवलं स्नेहः प्रकाशितस्त्रिभुवने ज्योत्स्नया) वज्जालग्गं, नेहवज्जा, पृष्ठ 26/74

जोव्वण jovvaṇa यौवन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] जवानी, मध्य भाग, तारुण्य, वयस्कता juvenile, youthfulness, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) अणुदासीणं से *जोव्वणं* पडिभासेदि। (अनुदासीनमस्य यौवनं प्रतिभासते) मृच्छ., पृष्ठ 82/1

ज्जेट्ठ (जिट्ठ / जेट्ठ) jjeṭṭha (jiṭṭha / jeṭṭha) जेष्ठ < संज्ञा/विशेषण [Noun/ Adjective] बड़ा भाई, ज्येष्ठ, बड़ा, श्रेष्ठ, महान, वृद्ध eldest, eldest born, main, chef, etc. {मा.} (वृद्धगोपालक-) जाव एषु *ज्जेट्ठं* गच्छिअ गोवदाळआणं दाळिआणं वाहळामि। (यावदेषु ज्येष्ठं गत्वा गोपदारकाणां दारिकाणां व्याहरामि) पञ्चरात्रम्., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 390

झ

झ jha झ< संज्ञा (पुं.) [Noun] स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular palatal consonant साध्वस-ध्य ह्यां *झः*।। हेम. 2/26, पृष्ठ 472

झत्ति jhatti झटिति < अव्यय [Indeclinable] जल्दी से, तुरन्त quickly, at once {मा.} (शकार-) इध ज्जेव *झत्ति* पडिअ मलेदु। (इहैव झटिति पतित्वा म्रियताम्) मृच्छ., पृष्ठ 382/8

झसुर [देशज] **jhasura** ताम्बूल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पान, ताम्बूल, अर्थ Betel, etc. {म.} गहिअ-विविहंगराओ अकअंजण-*झसुर*-मंजरी-रअणो। (गृहीत-

विविधाङ्ग-रागोऽकृताञ्जन-ताम्बूल-मञ्जरीरचनः) गउडवहो, गाथा-1125, पृष्ठ 166

झाण jhāṇa ध्यान < संज्ञा (नपुं.) [Noun] ध्यान, चित्त का एकतार हो जाना, एक ही वस्तु में मन की स्थिरता, लौ लगाना, मन आदि की चेष्टा का निरोध दृढ़ प्रयत्न से मन वगैरह का व्यापार, चिन्ता, विचार, उत्कण्ठा पूर्वक स्मरण, मनन, विमर्श, विचार, विशेष रूप से सूक्ष्म चिंतन, धार्मिक मनन meditation, contemplation, deep thought, consideration, etc. {शौ.} णाणं *झाणं* जोगो दंसणसुद्धी य वीरियायत्तं। (ज्ञानं ध्यानं योग: दर्शनशुद्धिश्च वीर्यायत्ता:) अट्ठपाहु ड सीलपाहु ड पृष्ठ 397/37

झादा jhādā ध्याता < संज्ञा (पुं.) [Noun] ध्यान करने वाला meditator {शौ.} णाहं होमि परेसिं ण मे पदे संति णाणमहमेक्को, इदि झायदि झाणे, सो अप्पाणं हवदि *झादो।* (नाहं अस्मि परेषां, न मे परं सन्ति, नाहं अहमेको, एवं ध्यायति ध्याने, स: आत्मन: भवति ध्याता) तिलो., भाग 3, 9/36

झिज्ज (झिज्झ) jhijja (jhijjha) √ क्षि< क्रिया [अक.] [Verb] क्षीण होना to weak, to lean and thin, etc. {म.} *झिज्जइ* झीणम्मि सया वड्ढइ वड्ढंतयम्मि सविसेसं। (क्षीयते क्षीणे सदा वर्धते वर्धमाने सविशेषम्) वज्जालग्गं, नेहवज्जा, पृष्ठ 26/75

झिल्ली [देशज] **jhillī** लहरी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] लहरी, तरंगें a ripple, a wave {म.} *झिल्ली* जल-कण-सीअल-पलास-परिवेसिणो इह हरंति। (लहरीजलकण-शीतलपलाशपरिवैशिन इह हरन्ति) गउडवहो, गाथा-554, पृष्ठ 84

झीण jhīṇa क्षीण < विशेषण [Adjective] दुर्बल, क्षीण destroyed, wasted, diminished, reduced, thin, etc. {म.} जा झिज्जइ *झीणे* ससहरम्मि वड्ढेइ वड्ढंते। (या क्षीयते क्षीणे शशधरे वर्धते वर्धमाने) वज्जालग्गं, नेहवज्जा, पृष्ठ 26/74

ट

ट ṭa ट< संज्ञा (पुं.) [Noun] मूर्धा स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular lingual consonant.वृत्त-प्रवृत्त-मृत्तिका-पत्तन-कदर्थिते टः।। हेम., 2/29,पृष्ठ 473

टंक taṅka टङ्क< संज्ञा (पुं.) [Noun] पत्थर काटने का अस्त्र, टॉकी, छेनी, सिक्का पट का चित्र, तलवार आदि का अग्र भाग, एक प्रकार का सिक्का, एक दिशा में छिन्न पर्वत a stone-cutter's chisel, etc. {म.} *टंक* मुहाहअ-कढिणट्ठि-मुक्क-धूम-च्छलेण उव्वमइ। (टङ्कमुखाहतकठिनास्थिमुक्त-धूमच्छलेन उद्वमति) गउडवहो, गाथा-700, पृष्ठ 105

टंकार taṅkāra टङ्कार < संज्ञा (पुं.) [Noun] शब्द, ओजपूर्ण शैली या तेज, ओज highflown, pompous style, ostentations display sound {म.} तह *टंकारो* महु रत्तणं अ वाअं पसाहंति। (तथा टङ्कारो मधुरत्वं च वाचं प्रसाधयतः) गउडवहो, गाथा-67, पृष्ठ 11

ठ

ठ ṭha ठ < संज्ञा (पुं.) [Noun] मूर्धा स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular lingual consonant स्तब्धे ठ-ढौ।। हेम.2/29, पृष्ठ 474

ठड्ढ ṭhaḍḍha स्तब्ध < विशेषण [Adjective] स्तब्ध, हक्काबक्का, कुण्ठित flabbergasted, stupefied, stunned {म.} *ठड्ढं* सहाववंकं वेसाहिययं सुरधणु व्व। (स्तब्धं स्वभाववक्रं वेश्याहृदयं सुरधनुरिव) वज्जालग्गं, वेसावज्जा, पृष्ठ 194/567

ठा ṭhā √ स्था < क्रिया [अक.] बैठना, स्थिर होना, रहना, गति का रुकाव करना to be motionless, to sit, to be stable, etc. {म.} *ठविए* रणम्मि सीसे कयकज्जो, नच्चिओ, सुहडो। (स्थापिते रणे शिरसि कृतकार्यो नर्तितः सुभटः) वज्जालग्गं, सुहउवज्जा, पृष्ठ 60/175

ठाण ṭhāṇa स्थान < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun]योग्य स्थान, जगह, स्थिति, अवस्थान, स्वरूप प्राप्ति, निवास, रहना, कारण, पर्यंक आदि आसन, पद, गुण, पर्याय, धर्म, आश्रय, आधार, वसति, मकान, तृतीय जैन अंग ग्रन्थ- ठाणांग सूत्र proper place, sport, site, space, room, accommodation, locality, post, position, situation, premises, residance, seat, etc. {शौ.} (सानुमती-) *ठाणे* क्खु पच्चादेसि-विभागिदा वि इमस्स किदे सउन्दला किलम्मइ त्ति। (स्थाने खलु प्रत्यादेश-विभागिताऽप्यस्य कृते शकुन्तला क्लाम्यतीति) अभिज्ञान शाकु.,कालिदास ग्रन्था., श्लोक-6/6, पृष्ठ 96

ठिअ (ठिय) ṭhia (ṭhiya) स्थित< विशेषण [Adjective] स्थित, अवस्थित, व्यवस्थित, नियमित, खड़ा, बैठा हुआsituated, located, placed, stationed {म.} अच्चा-सण्णं व *ठिअं* विमुक्कपरभाअपाअडं ससिबिम्बम्। (अत्यासन्ननिव स्थितं विमुक्तपरभाग-प्रकटं शशिबिम्बम्) सेतुबन्धं, गाथा-25/1, पृष्ठ 19

ड

ड ḍa ड < संज्ञा (पुं.) [Noun] मूर्धा स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular lingual consonant टो ङः।। हेम.1/195 पृष्ठ 457

डज्झ (डह) ḍajjha (ḍaha) √ दह् < क्रिया [सक.] [Verb] जलना, जलाना to burn, to set on fire, (of lamp) to light {म.} डज्झउ सो जोइसिओ विचित्तकरणाइ जाणमाणो वि। (दह्यतां स ज्यौतिषिको विचित्रकरणानि जाननोऽपि) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 170/503

डाल [देशज] **ḍāla** शाखा < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] शाखा, टहनी, शाखा का एक देश branch, bough, part of branch {म.} जं जं *डालं* लंबइ हत्थे गहिऊण वीसमइ जत्थ। (यां यां शाखां लम्बते हस्ते गृहीत्वा विश्राम्यति यस्याम्) वज्जालग्गं, दिव्ववज्जा, पृष्ठ 42/124

डिंब ḍimba डिम्ब < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] भय, विघ्न, विप्लव fear, fight, etc. {म.} *डिंबं* वो चामुंडाएँ पिहु-सिरो-दंड-मंडणं हरउ। (डिम्बं वश्चामुंडायाः पृथुशिरो-दण्डमण्डनं हरतु) गउडवहो,गाथा-46,पृष्ठ 8

डिंभ ḍiṁbha डिम्भ < संज्ञा (पुं. नपुं.) [Noun] बालक, छोटा बच्चा boy, child, an ignorant or immature person {म.} *डिंभाण* भुत्तसेसं छुहाकिलंता वि देइ दुहियाणं। (डिम्भानां भुक्तशेषं क्षुधा-क्लान्तापि ददाति दुःखितेभ्यः) वज्जालग्गं, सुघरिणीवज्जा, पृष्ठ 156/461

डिण्डिम / डिंडिम ḍiṇḍima / ḍiṇḍima डिण्डिम < संज्ञा (पुं.) [Noun] डुगडुगी, वाद्य विशेष, काँसे का पात्र a kind of small drum, etc. {चाण्डाली} (चाण्डाल-) इमं घोशणद्वाणं आहणेध *डिण्डिमं* घोशेध घोशणं। (इदं घोषणस्थानम् आहत डिण्डिमं घोषयत घोषणाम्) मृच्छ., पृष्ठ 527/10

डोलाअ ḍolāa √दोलाय् < क्रिया [अक.] [Verb] इधर-उधर डोलना, झूलना, इधर,

उधर हिलना, घट बढ़ होना, आगे पीछे होना, चंचल या बेचैन होना to ascillate, to swing, to waver, to flinch, etc. {शौ.} (सीता-) अय्यउत्तस्स इमस्सिं जणे अणुक्कोसं परिस्समं च सुणिअ सुहस्स दुक्खस्स अ अन्तरे *डोलाअदि* विअ मे हिअअं। (आर्यपुत्रस्यास्मिन् जनेऽनुक्रोशं परिश्रमं च श्रुत्वा सुखस्य दुःखस्य चान्तरे दोलायत इव मे हृदयम्) अभिषेकनाटक., भासनाटक., श्लोक- 21/2, पृष्ठ 336

ढ

ढ ḍh ढ < संज्ञा (पुं.) [Noun] मूर्धा स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular lingual consonant सटा-शकट-कैटभे ढः। हेम. 1/196

ढंखर[देशज] **daṅkhara** पत्रपुष्परहितशाखा < संज्ञा (पुं.) [Noun] पत्र पुष्प रहित डाली branch without leaf and flower {म.} *ढंखर*सेसो वि हु महुयरि मुक्को न मालईविडवो। (पत्रपुष्परहितशाखाशेषोऽपि खलु मधुकरैर्मुक्तो न मालतीविटपः) वज्जालग्गं, इंदिंदिरवज्जा, पृष्ठ 86/251

ढलहलय [देशज] **ḍhalahalaya** मृदुक< विशेषण [Adjective] मृदु, कोमल soft, delicate {म.} ताव च्चिय *ढलहलया* जाव च्चिय नेहपूरियसरीरा। (तावदेव मृदुका यावदेव स्नेहपूरितशरीराः) वज्जालग्गं, कुट्टिसिक्खावज्जा, पृष्ठ 192/559

ढलिय ḍhaliya स्खलित < विशेषण/ भूतकालिक कृदन्त [Adjective/ Past Participle] गिरा हुआ, टूटा, लड़खड़ाया, फिसला, डगमगाया, लहराने वाला, घट बढ़ होने वाला, अस्थिर, नशे में चूर, रुक-रुक के बोलने वाला, बाधित, त्रुटि करने वाला, हस्तक्षेप किया गया, व्याकुल slipped, fallen, dropped down, stumbled, tripped, etc. {म.} *ढलिया* य मसी भग्गा य लेहणी खरडियं च तलवट्टं। (स्खलिता च मषी भग्ना च लेखनी भग्नं च तालपत्रम् (तलपट्टम्)) वज्जालग्गं, लेहयवज्जा, पृष्ठ 174/509

ण

ण ṇa ण < संज्ञा (पुं.) [Noun] मूर्धा स्थानीय एक व्यंजन वर्ण a particular lingual consonant नो णः।। हेम.1/228, पृष्ठ 462

ण ṇa न < अव्यय [Indeclinable] नकार, ना, नहीं, निषेध a negation, no, not, prohibition {म.} जो चिंतेइ ण वंकं, ण कुणदि वंकं ण जंपदे वंकं। (य चिन्तयति न वक्र, न करोति वक्र न जल्पति वक्रम्) समण., गाथा 91/9, पृष्ठ 30

णंदणवण ṇandaṇa-vaṇa नंदनवन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] नन्दनवन, उद्यान विशेष, इन्द्र का उद्यान, एक वन जो मेरु पर्वत पर स्थित है (जैन परम्परानुसार) the divine grove (of Indra), the pleasure garden of gods, paradise, heaven Elysium, etc. {म.} परहु अ महु रपलाविणि कंते *णंदणवणे* सच्छंद भमंती। (परभृते! मधुरप्रलापिनि कान्ते नन्दनवने स्वच्छन्दं भ्रमन्ती) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-24/4, पृष्ठ 202

णअर (णयर / णगर) ṇaara (ṇayara / ṇagara) नगर < संज्ञा (नपुं.) [Noun] नगर, शहर city, place, etc. {शौ.} (विदूषक-) पविसिय णअरं दाणि ससक्कारोवआरेहिं पकिदीहिं अणुरज्जंतो रज्जं करेदि। (प्रविश्य नगरमिदानीं ससत्कारोपचारैः प्रकृतिभिरनुरज्यमानो राज्यं करोति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-4, पृष्ठ 219

णअरवासि ṇaara-vāsi नगरवासिन् < विशेषण [Adjective] नगरवासी, नगरनिवासी, शहर में रहने वाले citizen, etc. {शौ.} (नटी-) एवं खु णअरवासी जणो मन्तेदि। (एवं खलु नगरवासी जनो मन्त्रयते) मुद्रा., अंक-1, पृष्ठ 2

णइ ṇai नति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] नमन, नति, झुकाव, नम्रता stoop, bent, humility {म.} सव्वंगं विणिवेसो *णईइ* पलिएहिं णूण दावेइ। (सर्वाङ्गं विनिवेशो नत्याः पलितैर्नूनं दर्शयति) गउडवहो, गाथा-1000, पृष्ठ 148

णई (नई) ṇaī (naī) नदी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] नदी, जलप्रवाह river, brook {म.} जत्थ न खुज्जयविडवो न नई न वणं न उज्जडो गेहो। (यत्र न कुब्जकविटपो न नदी न वनं न निर्जनं गेहं) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 162/482

णक्खत्त ṇakkhatta नक्षत्र < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] नक्षत्र, कृत्तिका, अश्विनी, भरणी आदि ज्योतिष्क-विशेष तारा, तारक

पुंज, चन्द्रपथ में तारावली, तारावली star, constellation of stars (composed of 27 stars) {शौ.} (विदूषक-) दव्वचिन्तएहिं विण्णाविदो राआ-सोवसग्गं वो *णक्खत्तं।* ता अवस्सं सव्वबन्धमोक्खो करीअदु त्ति। (दैवचिन्तकैविज्ञापितो राजा- सोपसर्ग वो नक्षत्रम्, तदवश्यं सर्वबन्धमोक्षः क्रियतामिति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-5, पृष्ठ 297/4

णट्टअ (णट्ट) ṇaṭṭaa (ṇaṭṭa) नाटक/ नृत्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] नृत्य, गीत और वाद्य, नट-कर्म dancing, dramatic representation, acting, the science or art of dancing or acting {शौ.} (विदूषक-) *णट्टअं* पढीअन्ति ससिंगारओ। (नाट्यं पाठ्यन्ते सश्रृङ्गारकम्) मृच्छ., पृष्ठ 235/4

णट्टाअरिअ ṇaṭṭāaria नाट्याचार्य < संज्ञा (पुं.) [Noun] नाट्याचार्य, सूत्रधार dramatist, anchor, etc. {शौ.} (वकुलावलिका-) देवीए एव्व वअणेण *णट्टाअरिअं* अज्जगणदासं पुच्छिदुं उवदेसग्गहणे कीरिसी मालविएत्ति। (देव्या एव वचनेन नाट्याचार्यमार्यगणदासं पृष्टुमुपदेशग्रहणे कीदृशी मालविकेति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-3/1, पृष्ठ 241

णट्ठ ṇaṭṭha नष्ट < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] पलायन, नष्ट, नाश प्राप्त, अपगत, अहोरात्र का सत्रहवाँ मुहूर्त पलायन ran away, destroyed, wasted, spoiled defieled, disappeared, lost, etc. {मा.} (शकार-) भावे! *णट्ठा* णाए णट्ठा। (भाव! नष्टा ज्ञाता नष्टा) चारु., भासनाटक., गाथा-17/1, पृष्ठ 203

णड (नड) ṇaḍa (naḍa) नट < संज्ञा (पुं.) [Noun] नट, नर्त्तकों की एक जाति dancer, rope-dancer, juggler {म.} हरियाल-मंडियमुहा *नड* व्व सणवाडया जाया। (हरितालमण्डितमुखा नटा इव शणवाटका जाता:) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 160/473

णम (नम) ṇama (nama) नम्/ नमय् < क्रिया [Verb] झुकना, विनीत होना to salute, to bow, etc. {म.} तह वि हु मज्झावलिओ नमह खलो नहरणसरिच्छो। (तथापि खलु मध्यावलितो नत: (प्रणत:) खलो नखलूसदृक्ष:) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 18/51

णमो ṇamo नमस् < अव्यय [Indeclinable] नमस्कार a bow, salutation, obeisance {मा.} (भिक्षु-) *णमो* बुद्धश्श। (नमो बुद्धाय) मृच्छ., पृष्ठ 378/8

णम्मदातीर ṇammadā-tīra नर्मदातीर < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] नर्मदा तीर/ किनारा/ तट bank of Narmada, etc. {शौ.} (बकुलावलिका-) सो भट्टिणा *णम्मदातीरे* अन्तबालदुग्गे ठाविदो। (स भर्त्रा नर्मदातीरेऽन्तपालदुर्गे स्थापितः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-5/1, पृष्ठ 244

णयणमहु ṇayaṇa-mahu नयनमधु < संज्ञा (नपुं.) [Noun] आँखों का मधु, आँखों में प्रिय लगने वाला/ वाली suitable for eyes, beautiful, etc. {शौ.} (विदूषक-) उवट्ठिदं *णअणमहु* संणिहिदमक्खिअं अ। (उपस्थितं नयनमधु सन्नहितमक्षिकं च) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2/2, पृष्ठ 258

णर (नर) ṇara (nara) नर < संज्ञा (पुं.) [Noun] मनुष्य, पुरुष man, male {म.} धणरहियाणं सुंदरि *नराण* को आयरं कुणइ। (धनरहितानां सुंदरि नराणां क आदरं करोति) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा, पृष्ठ 48/143

णरअ {णरग / णरय} ṇaraa {ṇaraga / ṇaraya} नरक < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] नारकीय जीवों का स्थान, दोज़ख, जहन्नुम hell, etc. {शौ.} सव्वं पि होदि *णरए* खेत्त-सहावेण दुक्खदं असुहं। (सर्वमपि भवति नरके क्षेत्रस्वभावेन दुःखदमशुभम्) कत्ति. 38 पृष्ठ 19

णलिणि (णलिणी) ṇaliṇi (ṇaliṇī) नलिनी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] नलिनी, पद्मनी, कमलिनी lily, assemblage of lotus flowers, lotus pond {म.} खुडिउप्पइअ-मुणालं दट्ठूण पिअं व सिढिलवलअं *णलिणिं* । (खण्डितोत्पाटित-मृणालं दृष्ट्वा प्रियामिव शिथिलवलयां नलिनीम्) सेतुबन्धं, गाथा-30/1, पृष्ठ 22

णलिणीपत्त ṇaliṇī-patta नलिनीपत्र < संज्ञा (नपुं.) [Noun] कमलिनी का पत्ता a leaf of lotus {शौ.} (प्रियंवदा-) इमस्सिं सुओदरसुउमारे *णलिणीपत्ते* णहेहिं णिक्खित्त-वण्णं करेहि। (एतस्मिञ्शुकोदर-

सुकुमारे नलिनीपत्रे नखैर्निक्षिप्तवर्णं कुरु) अभि.शाकु., पृष्ठ 232/3

णवणीद (णवणीअ) ṇavaṇīda (ṇavaṇīa) नवनीत < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] नवनीत, मक्खन butter, etc. {मा.} (नन्दगोप-) अपरष्भिं गेहे गच्छिअ *णवणीदं* गिळइ। (अपरस्मिन् गेहे गत्वा नवनीतं गिलति) बाल., भासनाटक., श्लोक-29/1, पृष्ठ 524

णवदंसण ṇava-daṁsaṇa नवदर्शन < संज्ञा (पुं., नपुं.) नवीन दर्शन new vision, new view, etc. {शौ.} (गणिका-) किं दिट्ठपुरुवो *णवदंसणो* वा। (किं दृष्टपूर्वो नवदर्शनो वा) चारु., भासनाटक., गाथा-5/4, पृ. 245

णवरंगअ (नवरंग) ṇava-raṅgaya (nava-raṅga) नवरङ्गक / नवरंग< संज्ञा (पुं.) [Noun] लाल या नारंगी रंग मे रंगा हुआ वस्त्र, नूतन रंग, कौसुम्भ रंग का वस्त्र a garment dyed in red or saffron {म.} टिविडिक्किअ-डिंभाणं *णवरंगअ*-गव्व-गरुअ महिलाण। (मण्डितडिम्भानां नवरङ्गकगर्व-गुरुमहिलानाम्) गउडवहो, गाथा-598, पृष्ठ 90

णववर ṇava-vara नववर < संज्ञा (पुं.) [Noun] नवीन वर, नया दूल्हा, नया पति new groom, new husband, etc. {शौ.} (विदूषक-) सव्वो *णववरो* लज्जादुरो होदि त्ति। (सर्वो नववरो लज्जातुरो भवतीति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17/5, पृष्ठ 327

णह ṇaha नभस् < संज्ञा (नपुं.) [Noun] नभ, आकाश, आसमान sky, space {म.} जस्स विलग्गन्ति *णहं* फुडपडिसद्दा दिसाअलपडिक्खलिआ। (यस्य विलगन्ति नभः स्फुटप्रतिशब्दा दिक्तलप्रतिस्खलिताः) सेतुबन्धं, गाथा-7/1, पृष्ठ 9

णाअरिअ (णागरिअ) ṇāria (ṇāgaria) नागरिक < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] नागरिक, नगर में रहने वाला civic, urban, town breed, citizen, etc. {शौ.}(चित्रलेखा-) अइ मुद्धे! अण्णसंकंतप्पेमाणो *णाअरिआ* भारिआए अहिअं दक्खिणा होन्ति। (अयि मुग्धे! अन्य संक्रांतप्रेमाणो नागरिका भर्यायामधिकं दक्षिणा भवन्ति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13/3, पृष्ठ 185

णाडिआ ṇāḍiā नाटिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] नाटिका एक छोटा या लघु प्रहसन, एक रूपक short drama, etc. {शौ.} (पारिपार्श्विक-) सो सट्टओ त्ति भणइ दूरं जो *णाडिआइ* अणुहरइ। (तत् सट्टकमिति भण्यते दूरं यो नाटिकामनुहरति) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 9/6

णाण ṇāṇa ज्ञान < संज्ञा (नपुं.) [Noun] ज्ञान, बोध, चैतन्य, बुद्धि, जानना, समझना, परिचित होना, प्रवीणता, विद्या, शिक्षण, चेतना, संज्ञान, जानकारी, परमज्ञान, जीव का एक गुण, इससे स्व और पर का बोध होता है knowledge, comprehension, sense, learning, etc. {शौ.} जीवेण विणा *णाणं* किं केण वि दीसदे कत्थ। (जीवेन विना ज्ञानं किं केन अपि दृश्यते कुत्र) कति. 81 पृष्ठ 120 {शौ.} *णाणं* चरित्तहीणं दंसणहीणं तवेहिं संजुत्तं। (ज्ञानं चरित्रहीनं दर्शनहीनं तपोभिः संयुक्तम्) अट्ठपाहुड मोक्खपाहुड पृष्ठ 315/75

णाम ṇāma नामन् < संज्ञा (नपुं.) [Noun] नाम, आख्या, अभिधान, वैयक्तिक नाम; (अव्यय) इन अर्थों का सूचक अव्यय-सम्बोधन, आमंत्रण, सम्भावना, प्रसिद्धि, अनुज्ञा, वाक्यालंकार पाद-पूर्ति मे भी इसका प्रयोग होता है a name, appellation, personal name, a noun, substantive, sign; (part.) a particle used in the following sense-invitation, possibility, Indeed, certainly, etc. {मा.} (क्षपणक-) शन्तं पावं शन्तं पावं। शावगा, तहिं गमिश्शं जहिं लक्खशश्श *णामं* वि ण सुणीअदि। (शान्तं पापम् शान्तं पापम्। श्रावक, तत्र गमिष्यामि यत्र राक्षसस्य नामानि न श्रूयते) मुद्रा., श्लोक 5, पृष्ठ 63/5 {शौ.} (गणिका-) हञ्जे! सुणाहि दाव। अत्थि सत्थवाहपुत्तो चारुदत्तो *णाम।* (हञ्जे! शृणु तावत्। अस्ति सार्थवाहपुत्रश्चारुदत्तो नाम) चारु., भास-नाटक., अंक-2, पृष्ठ 214

णारंग ṇāraṅga नारङ्ग < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] सन्तरा, सन्तरे का वृक्ष, कमला नीबू, सन्तरा का फल, नारंगी orange tree and its fruit, etc. {म.} *णारंग*-गब्भ-सअलं पहिओ अहरं पिव पिआए। (नारङ्ग-गर्भशकलं पथिकोऽधरमिव प्रियायाः) गउडवहो, गाथा-591, पृष्ठ 89

णारद (णारय) ṇārada (ṇāraya) नारद < संज्ञा (पुं.) [Noun] नारद ऋषि, गन्धर्व सैन्य का अधिपति देव-विशेष messenger from

the gods to men and vice versa, etc. {शौ.} (उर्वशी-) अम्भो भअवं *णारदो* । (अहो भगवान् नारदः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-18/5, पृष्ठ 232

णाली ṇālī नाडी< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] रज्जु या लपेटन a strap, rope{म.} दुग्गम भाव ट्ठिअ-*णालि* घडिअ घंटेसु तोरणग्गेसु। (दुर्गमभावस्थितनाडीघटितघण्टेषु तोरणाग्रेषु) गउडवहो, गाथा-673, पृष्ठ 1001

णाविद (णाविअ / णाविय) ṇāvida (ṇāvia / ṇāviya) नापित < संज्ञा (पुं.) [Noun] हजाम, नाई a barber, shaver {मा.} (शकार-) उवाशके त्ति मं भणादि। किं हग्गे णाविदे ? (उपासक इति मां भणति। किमहं नापितः ?) मृच्छ., पृष्ठ 377/8

णास (णाश) ṇāsa (ṇāśa) न्यास < संज्ञा (पुं.) [Noun] स्थापन, धरोहर या अमानत, रखने योग्य धन आदि जमा करना placing, putting down or upon, planting, hence, depositing, a pledge, entrusting, painting, giving up, bringing forward, etc. {शौ.} (विदूषक-) *णासो* क्खु सो। (न्यासः खलु सः) मृच्छ., पृष्ठ 179/3

णासापुड ṇāsā-puḍa नासापुट < संज्ञा (पुं.) [Noun] नाक के पुट, नाक के छिद्र the nostril {मा.} (शकार-) आम भावे! शुणामि गन्धं शवणेहिं। अन्धआलपूळिदेहिं *णाशा-पुडेहिं* शुट्ठु ण पेक्खामि। (आम भाव! श्रृणोमि गन्धं श्रवणाभ्याम्। अन्धकार-पूरिताभ्यां नासापुटाभ्यां सुष्ठु न पश्यामि) चारु., भासनाटक., गाथा-21/1, पृष्ठ 205

णासिका (णासिआ) ṇāsikā (ṇāsiā) नासिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] नाक the nose {ढक्की(ठक्की)} (माथुर-) तस्स जूदकलस्स मुट्ठप्पिहालेण *णासिका* भग्गा आसि। (तस्य द्यूतकस्य मुष्टिप्रहारेण नासिका भग्ना आसीत्) मृच्छ., पृष्ठ 125/2

णासीकिद (णासीकय) ṇāsī-kida (ṇāsī-kaya) न्यासीकृत < विशेषण [Adjective] धरोहर या अमानत रूप से रखा हुआ any thing deposited with a trustee {शौ.} (वृद्धा-) जो तदाणि *णासीकिदं* सुवण्णभंडअं रत्तिं चोरेहिं अवहिदं ति। तस्स कारणादो चतुस्समुद्दसारभूदं रअणावलिं देदि। (यस्तदानीं न्यासीकृतं सुवर्णभाण्डकं रात्रौ चौरैरपहृतमिति। तस्य कारणात् चतुसमुद्र-

सारभूतां रत्नावलिं ददाति) मृच्छ., पृष्ठ 490/1

णाहि (णाभि / नाभि) ṇāhi (ṇābhi / nabhi) नाभि < संज्ञा (पुं.) [Noun] पेट का मध्य भाग, तीर्थंकर ऋषभदेव के पिता नाभिराय (जैन परम्परानुसार) navel cavity, father name of Lord Ṛiśabhadeva (according jain tradition) {म.} उब्भिज्जइ बिंबं संख-णाहि-सोणं णिसा-वइणो। (उद्भिद्यते बिम्बं शङ्खनाभिशोणं निशापतेः) गउडवहो, गाथा-1118, पृष्ठ 165

णिअच्छिअव्व (णिअच्छियव्व) ṇiacchiavva (ṇiacchiyavva) द्रष्टव्य < विशेषण/ कृदन्त [Adjective/ Participle] देखने योग्य worth observing {म.} जाआ भवणग्ग-*णिअच्छिअव्व*-सोहाओ सीमाओ। (जाता भवनाग्रद्रष्टव्यशोभाः सीमानः) गउडवहो, गाथा-396, पृष्ठ 61

णिअत्त (णिअट्ट) ṇiatta (ṇiatta) नि √वृत् < क्रिया [अक.] [verb] निवृत होना, पीछे हटना, रुकना to come back, return, to turn away from {म.} रइअरचुम्बिज्जन्तं ण *णिअत्तेइ* णलिणी मुहं विअ कमलं। (रविकरचुम्ब्यमानं न निवर्तयति नलिनी मुखमिव कमलम्) सेतुबन्धं, गाथा-32/1, पृष्ठ 23

णिअम ṇiama नियम < संज्ञा (पु.) [Noun] नियम, निश्चय, ली हुई प्रतिज्ञा, व्रत, प्रायोपवेशन, संकल्पपूर्वक अनशनमरण के लिऐ उद्यत rule, precept, law, etc. {शौ.} (देवी-) अज्जउत्त! अलंघिदपुव्वो मए *णिअमो।* (आर्यपुत्र! अलंघितपूर्वो मया नियमः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-14/3, पृष्ठ 187

णिउत्त ṇi-utta नियुक्त < विशेषण [Adjective] नियुक्त, कार्य में लगाया हुआ, निबद्ध appointed, employed, engaged, pasted, etc. {शौ.} (चर-) सुणादु अज्जो। अत्थि दाव अहं अज्जेण पउरजणचरिद-अण्णेसणे *णिउत्तो* परघरप्पवेसे परस्स असङ्कणिज्जेण इमिणा जमपडेण हिण्डन्तो मणिआरसेट्ठिणो चन्दणदासस्य गेहं पविट्ठोह्मि। (शृणोत्वार्यः। अद्य तावदहमार्येण पौरजनचरितान्वेषणे नियुक्तःपरगृहप्रवेशे परस्याशङ्कनीयेनानेन यमपटेन हिण्डमानो मणिकारश्रेष्ठि-नश्चन्दनदासस्य गेहं प्रविष्टोऽस्मि) मुद्रा., श्लोक-19/1, पृष्ठ 9

णिओअ (णिओग) ṇioa (ṇioga) नियोग< संज्ञा (पुं.) [Noun] नियोग, व्यापार, कार्य, नियम, आवश्यक कर्तव्य, सम्बन्ध, नियोजन, अनुयोग, अधिकारप्रेरण, आज्ञा, आदेश मुक्ति employment, use, order, command, direction, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) को *णिओओ* विकल्पीअदि ? (को नियोगो विकल्प्यते ?) अभि.शाकु., पृष्ठ 230/3

णिओइअ (णिओअ) ṇioia (ṇioa) नियोजित [नि √युज्+णि+क्त] < क्रिया/ भू.कृ. [Verb/ Past Participle] किसी कार्य में लगाया हुआ appointed, attached {शौ.} (शकुन्तला-) *णिओइआ* दाणिं म्हि। (नियोजितेदानीमस्मि) अभि.शाकु., पृष्ठ 230/3

णिक्कन्त ṇikkanta निष्क्रान्त [निस्+क्रान्त] <विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] बाहर निकला हुआ, जिसने दीक्षा ली हो वह going out, etc. {शौ.} (रदनिका-) अम्हाणं गेहे सधिं कप्पिअ चोरो *णिक्कन्तो* । (अस्माकं गेहे सन्धिं कल्पयित्वा चौरो निष्कान्तः) मृच्छ., पृष्ठ 174/3

णिक्कलंक ṇikkalaṅka निष्कलङ्क< विशेषण [Adjective] कलंक रहित blameless, stainless, spotless, immaculate {म.}(पारिपार्श्विक-) हरिणङ्क-पाडिसिद्धीअ *णिक्कलंका* गुणा जस्स। (हरिणाङ्कप्रति (पङ्क्ति) सिद्ध्या निष्कलङ्का गुणा यस्य) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 13/10

णिक्खित्त ṇikkhitta निक्षिप्त< विशेषण [Adjective] निक्षिप्त, फेंका हुआ, डाला हुआ, न्यस्त, रक्खा हुआ, अस्वीकृत thrown into, abandoned, etc. {मा.} (चेट-) पाशादबालग्गपदोलिकाए दण्डणिअलेण बंधिअ *णिक्खित्ते।* (प्रासादबालाग्र-प्रतोलिकायां दण्डनिगडेन बद्ध्वा निक्षिप्तः) मृच्छ., पृष्ठ 545/10

णिक्खेव (णिक्खेअ) ṇi-kkheva (ṇi-kkhea) निक्षेप < संज्ञा (पुं.) [Noun] निक्षेप, न्यास, स्थापन, परित्याग, धरोहर, धन आदि जमा रखना, व्यवस्थापन करना, नियमन करना deposit, pledge, anything pawned, bailment, throwing out, discharging, consignment, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) हला! एसा दुवेणं वो हत्थे

णिक्खेओ। (हला! एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते निक्षेपः) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13, पृष्ठ 65/4

णिगल (णिअल) ṇigala (ṇiala) निगड < संज्ञा (नपुं.) [Noun] बेड़ी, हथकड़ी fettered, chained, an iron chain for the feet of an elephant {शौ.} (चेट-) अज्ज! अवणीदाइं *णिगलाइं*। (आर्य! अपनीतानि निगडानि) मृच्छ., पृष्ठ 366/7

णिग्गय ṇiggaya निर्गत < विशेषण [Adjective] निर्गत, निःसृत, निकला हुआ gone out, issued, output, etc. {म.} जो जं करेइ पावइ सो तं सोऊण *निग्गया* असई। (यो यत्करोति प्राप्नोति स तच्छ्रुत्वा निर्गतासती) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 162/480

णिग्गुण ṇigguṇa निर्गुण < विशेषण [Adjective] निर्गुण, गुण रहित, गुण-हीन devoid of or beyond all qualities or propensities {म.} जे णिव्वडिअ गुणा वि हु सिरिं गआ ते वि *णिग्गुणा* होंति। (ये निर्वृत्तगुणा: अपि खलु श्रीं गता: तेऽपि निर्गुणा: भवन्ति) गउडवहो 865 {म.} जे णिव्वडिअ गुणा वि हु सिरिं गआ ते वि *णिग्गुणा* होंति। (ये निर्वृत्तगुणा: अपि खलु श्रयिं गता: तेऽपि निर्गुणा: भवन्ति) गउड. 865

णिग्घिण ṇigghaṇa निर्घृण < विशेषण [Adjective] निर्दय, निर्घृण pitiless, merciless, ruthless, violent, etc. {शौ.} (विजया-) *णिग्घिणा* हु भट्टिणी। (निर्घृणा खलु भट्टिणी) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-4, पृष्ठ 283

णिच्च ṇicca नित्य < विशेषण [Adjective] शाश्वत, नित्य, निरन्तर, सर्वदा eternal, constant, regular, always, ever, etc. {म.} अघडिअथणताडणाइँ *णिच्चं* णमह अणङ्गरईण मोहणाइं। (अघटितस्तन-ताडनानि नित्यं नमतानङ्गरत्यो-र्मोहनानि) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 3/2

णिच्चय (णिच्छय) ṇiccaya (nicchaya) निश्चय < संज्ञा (पुं.) [Noun] निश्चय, निर्णय, द्रव्यार्थिक नय, वास्तविक पदार्थ को ही मानने वाला मत परिणामवाद (जैन परम्परानुसार) ascertainment, a determination, certainty, etc. {मा.} (संवाहक-)

अज्जए! कले *णिच्चए।* (आर्ये! कृतो निश्चयः) मृच्छ., पृष्ठ 136/2

णिच्चल ṇiccala निश्चल < विशेषण [Adjective] निश्चल, स्थिर, दृढ़ certain, sure, determined, accurate knowledge, etc. {म.} उअ *णिच्चल*-णिप्फंदा भिसिणीपत्तम्मि रेहइ बलाआ। (पश्य निश्चलनिःस्पन्दा बिसिनीपत्रे राजते बलाका) गाथासत्तसई, प्रथम शतक, पृष्ठ 2/4

णिच्छल्लिअ ṇicchallia छिन्न< विशेषण [Adjective] छिन्न, काटा हुआ cut, broken {म.} *णिच्छल्लिअ*-परिणअ-ताल-पिंजरं पडिअ-पडिबिंबं। (छिन्नपरिणत-तालपिञ्जरं पतितप्रतिबिम्बम्) गउडवहो, गाथा 564, पृष्ठ 85/564

णिज्झर (ओज्झर) ṇijhara (ojhara) निर्झर < संज्ञा (पुं.) [Noun] झरना, पहाड़ से गिरता पानी का प्रवाह a stream, etc. {म.} दूरअरं उप्पइआ अद्ध-वहत्थमिअ-*णिज्झर*-तुसारा। (दूरतर-मुत्पतिता अर्ध-पथास्तमितनिर्झरतुषाराः) गउडवहो, गाथा-230, पृष्ठ 37

णिज्झा ṇijjhā निध्या [नि √ध्या] < क्रिया [सक.] [Verb] देखना, निरीक्षण करना to see, to investigate {शौ.} (वसन्तसेना-) जधा अदिसिणिद्धाए णिच्चलदिट्ठीए आपिबन्ती विअ एदं *णिज्झाअदि*। (यथा अतिस्निग्धया निश्चलदृष्ट्या आपिबन्तीव एवं निध्यायति) मृच्छ., पृष्ठ 198/4

णिट्ठविअ ṇiṭṭhavia निष्ठापित < विशेषण [Adjective] समाप्त किया हुआ, विनाशित, समापित killed, destroyed, finished, etc. {म.} इअ उण्णएण इमिणा जह *णिट्ठविओ* पुरा मगह-णाहो। (इत्युन्नतेनानेन यथा निष्ठापितः पुरा मगधनाथः) गउडवहो, गाथा-844, पृष्ठ 125

णिट्ठुर (णिट्ठुल) ṇiṭṭhura (ṇiṭṭhula) निष्ठुर < विशेषण [Adjective] निष्ठुर, परुष, कठिन hard-hearted, heartless, cruel, unkind, etc. {म.} अत्थि घर च्चिय गणओ विचित्तकरणेहि *निट्ठुरं* गणइ। (अस्ति गृह एव गणको विचित्रकरणैर्निष्ठुरं गणयति) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 168/499

णिण्णअ (णिण्णय) ṇīṇṇaa (ṇiṇṇaya) निर्णय < संज्ञा (पुं.) [Noun] निर्णय, निश्चय, अवधारण, फैसला decision, judgment verdict, determination, inference, deduction, etc.{शौ.} (विदूषक-) सुदं अज्जेहिं भअवदीए वअणं। एसो पिण्डितत्थो उवदेसदंसणादो *णिण्णओ* ति। (श्रुतमार्याभ्यां भगवत्या वचनम्। एष पिण्डितार्थ उपदेशदर्शनात् निर्णय इति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15/1, पृष्ठ 252

णिण्हाद ṇiṇhāda निष्णात < विशेषण [Adjective] निष्णात, निपुण, पारंगत expert, dexterous, well versed, etc. {शौ.} (विदूषक-) सुसिक्खिदो वि सव्वो उवदेसदंसणेण *णिण्हादो* होदि। (सुशिक्षितोऽपि सर्व उपदेशदर्शनेन निष्णातो भवति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-18/1, पृष्ठ 254

णित्थाम ṇitthāma निःस्थामन् < विशेषण [Adjective] दुर्बल, निर्बल, कमजोर, मन्द feeble, languid, week, etc. {म.} सोहइ मंथर-*णित्थाम*-लुलिअ-णअणुप्पलं वअणं। (शोभते मन्थरनिःस्थामलुलितनयनोत्पलं वदनम्) गउडवहो, गाथा-162, पृष्ठ 27

णिद्दा ṇiddā निद्रा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] नींद, वह निद्रा जिसमें एकाध आवाज देने पर ही आदमी जाग उठे, सुप्तावस्था, आँखें मूंदना, शिथिलता sleep, slumber, sloth, laziness, idleness, etc. {शौ.} (विदूषक-) सुप्पच्छदणाए सय्याए *णिद्दं* ण ळभामि, जह वादसोणिदं अभिदो विअ वत्तदि त्ति पेक्खामि। (सुप्रच्छदनायां शय्यायां निद्रां न लभे, यथा वातशोणितमभित इव वर्तत इति पश्यामि) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/4, पृष्ठ 21

णिद्दोस ṇiddosa निर्दोष < विशेषण [Adjective] निर्दोष, दूषण वर्जित faultless, flawless, without defect, blameless, guiltless, innocent, etc. {शौ.} (चन्दनदास-) णिद्दोसस्स वि सङ्का किं उण मे संजाददोसस्स। (निर्दोषस्यापि शङ्का किं पुनर्मम जातदोषस्य) मुद्रा., श्लोक-21/1, पृष्ठ 13

णिप्पओअण ṇi-ppaoaṇa निष्प्रयोजन < विशेषण/अव्यय [Adjective/ Indeclinable] निष्प्रयोजन, बेकार, निरुद्देश्य, जो किसी

प्रयोजन से प्रभावित न हो, निष्कारण, निराधार, व्यर्थ, अनुपयोगी, अनावश्यक, बिना कारण या हेतु के, बिना किसी मतलब के without motive, not influenced by any motive, causeless, groundless, useless, needless, unnecassary, etc. {शौ.} (चेटी-) तुवरदु तुवरदु अय्या। एसो जामादुओ अविहवाहि अब्भन्तरचउस्साळं पवेसीअदि। (त्वरतां त्वररतामार्या। एष जामाता अविधवाभिरभ्यन्तरचतुःशालं प्रवेश्यते) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक 16/3, पृष्ठ 19

णिप्फुर ṇipphura निस्फुर < संज्ञा (पुं.) [Noun] कान्ति, प्रभा, तेज, जिससे प्रकाश या चमक का स्फुरण न हो lustre-less, etc. {म.} कुविअ-गिरि-पक्ख-संपुड-संपीडिअ-*णिप्फुरो* वज्जो। (कुपितगिरिपक्ष-संपुटसंपीडितनिष्फुरो वज्रः) गउडवहो, गाथा-144, पृष्ठ 24

णिब्बंध ṇibbandha निर्बन्ध < संज्ञा (पुं.) [Noun] निर्बन्ध, आग्रह, हठ, जिद, दुराग्रह insistence, pertinacity, emphasis, stubbornness, etc. {शौ.} (उभे-) अदो एव्व खु *णिब्बंधो* । (अत एव खलु निर्बन्धः) अभि.शाकु., पृष्ठ 222/3

णिमिअ ṇimia निहित/न्यस्त< विशेषण [Adjective] निहित, स्थापित placed, deposited {शौ.} कइ-जीहा-णिवहेसु अ जा *णिमिअ* पअं परिब्भमइ। (कविजिह्वा-निवहेषु च या निहितपदं परिभ्रमति) गउडवहो, गाथा-47, पृष्ठ 8

णिमित्त ṇimitta निमित्त < संज्ञा (नपुं.) [Noun] निमित्त, हेतु, कारण, प्रयोजन, भविष्य आदि जानने का एक शास्त्र, अतीन्द्रिय ज्ञान में कारणभूत पदार्थ, जैन साधुओं की शिक्षा का एक दोष a cause, motive, ground, reason, the instrumental or efficient cause, means of knowledge, function, ceremony, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) अध किं *णिमित्तं* एसो रोअदि? (अथ किं निमित्तमेष रोदिति ?) मृच्छ., पृष्ठ-319/6

णिम्मच्छिअ ṇimmacchia निर्मक्षिक < विशेषण [Adjective] मक्खियों का अभाव, मक्षिका का अभाव, निर्जनता free from flies, undisturbed, private, long {शौ.} (विदूषक-) किदं भवदा *णिम्मच्छिअं।*

(कृतं भवता निर्मक्षिकम्) अभिज्ञान शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-7/6, पृष्ठ 98

णिम्मोअ ṇimmoa निर्मोक < संज्ञा (पुं.) [Noun] केंचुल, सर्प की त्वचा, कञ्चुक, निर्मोक slough of a snake, etc. {म.} सज्झस-संजाअ-जराउरेहिं *णिम्मोअ*-पट्ट-मालाओ। (साध्वससंजातजरातुरैर्णिर्मोक-पट्टमालाः) गउडवहो, गाथा-475, पृष्ठ 73

णियंसण (णिअंसण/णिअसण) ṇiyaṁsaṇa (ṇiaṁsaṇa / ṇiasaṇa) निवसन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] निवसन, वस्त्र, कपड़ा, वेश-भूषा a garment, apparel {म.} कविलिअ-*णियंसणो* इह जणस्स संज्झाअइ रओहो। (कपिलित निवसन इह जनस्य संध्यायते रज ओघः) गउडवहो, गाथा-632, पृष्ठ 95

णिरवसेस ṇiravasesa निरवसेस < विशेषण [Adjective] सम्पूर्ण, सकल whole, all {म.} जणअतणआपउत्ती पच्छा वाआइ *णिरवसेसं* सिट्ठा। (जनकतनया-प्रवृत्तिः पश्चाद्वाचा निरवशेषं शिष्टा) सेतुबन्धं, गाथा-37/1, पृष्ठ 26

णिरवाद ṇiravāda निरवात< भूतकालिक कृदन्त [Past Participle] गाड़ा गया, खोदकर गाड़ा गया, अन्दर गड़ाया हुआ, दफनाया हुआ buried, to be dugout, to be excavated, etc. {मा.} (विल्ववक-) अय्या चन्दणदाशा *णिरवादे* शूले। (आर्य चन्दनदास निरवातः शूलः) मुद्रा., श्लोक 4, पृष्ठ 95/7

णिराबाध (णिराबाह) ṇirābādha (ṇirābāha) णिराबाध < विशेषण [Adjective] बाधा रहित, हरक्कत-रहित undisturbed,uninterrupted, unmolested, uncommented, etc. {शौ.} (गौतमी-) इमिणा दब्भोदएण *णिराबाधं* एव्व दे शरीरं भविस्सदि। (अनेन दर्भोदकेन निराबाधमेव ते शरीरं भविष्यति) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-23, पृष्ठ 50/3

णिरास ṇirāsa निराश < विशेषण [Adjective] निराश, आशाशून्य, नाउम्मीद disappointed, despondent, dejected, dismayed, frustrated, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) किं उण तुए *णिरासाए* णिवत्तीअदि। (कि पुनस्त्वया निराशया निवर्त्यते) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-3, पृष्ठ 187

णिरुत्तर ṇiruttara निरुत्तर < विशेषण [Adjective] निरुत्तर, उत्तर रहित किया हुआ, परास्त unable to reply, without a reply, silent, mute, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) वअस्स! *णिरुत्तरा* एसा। (वयस्य! निरुत्तरा एषा) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 17/3, पृष्ठ 189

णिवसण ṇīvasaṇa निवसन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] आंचल, निवसन, वस्त्र a garment, cloth, an undergarment, habitation, house, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) को णु क्खु एसो *णिवसणे* मे सज्जइ। (को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13, पृष्ठ 66/4

णिवेद (णिवेअ) ṇiveda (ṇivea)नि√वेदय् < क्रिया [सक.] [Verb] निवेदन करना, सम्मान पूर्वक ज्ञापन करना, अर्ज करना, अर्पण करना, मालूम करना to request, to make known, delivering, to present an offering, etc. {शौ.} (सानुमती-) तदो से भत्तुणो बहु मुहं अणुराअं *णिवेदइस्सं* । (ततोऽस्या भर्तुर्बहु मुखमनुरागं निवेदयिस्यामि) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-8/6, पृष्ठ 99 {शौ.} (भट-) जइ एवं, विस्सत्थो गच्छ। जाव अहं पि सव्वं किदं त्ति अमच्चस्स *णिवेदेमि*। (यद्येवं, विश्वस्तो गच्छ। यावदहमपि सर्वं कृतमित्यमात्याय निवेदयामि) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 273

णिव्वविअ ṇivvavia निर्वापित< विशेषण [Adjective] ठंडा किया हुआ, बुझाया हुआ cooled, extinguished, etc. {म.} विरल-जल-विंदु-*णिव्वविअ*-गंड-पासो पिआ-सत्थो। (विरलजलबिन्दुनिर्वापितगण्डपार्श्वः प्रिया-सार्थः) गउडवहो, गाथा-370, पृष्ठ 57

णिव्वहण ṇivvahaṇa निर्वहण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] निर्वहण, निर्वाह, अन्त, नाटक की एक संधि enforcement, compulsion, accomplishment, performance or fulfilment {शौ.} (समृद्धार्थक-) ता किं कुकविकिदणाउस्स विअ अण्णं मुहे अण्णं *णिव्वहणे।* (तत् कि कुकविकृतनाटकस्येवान्यन्मुखेऽन्यन्निर्वणे) मुद्रा., श्लोक 1, पृष्ठ 82/6

णिव्वुद (णिव्वुअ) ṇivvuda (ṇivvua) निर्वृत्त < विशेषण [Adjective] निवृत्ति प्राप्त, निष्पन्न, संतृप्त accomplished, attained, performed, finished, etc. {शौ.}

(अनसूया-) जह वि गंधव्वेण विहिणा णिव्वत्तकल्लाणा सउन्दला अणुरूवभत्तु-गामिणी संवुत्तेति *निव्वुदं* मे हिअअं। (यद्यपि गान्धर्वेण विधिना निर्वृत्तकल्याणा शकुन्तलानुरूपभर्तृगामिनी संवृत्तेति निर्वृतं मे हृदयम्) अभि.शाकु., पृष्ठ 256/4

णिव्वेदकारण ṇivveda-kāraṇa निर्वेदकारण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] व्यथा का कारण, दुःख का कारण हेतु, समस्या reason of sorrow, distress, cause, atheist, infidel, etc. {शौ.} (सहजन्या-) ता कहेहि मे *णिव्वेदकारणं*। (तत्कथय मे निर्वेदकारणम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2/3, पृष्ठ 193

णिषंषभाव (णिसंसभाव) ṇiṣaṁṣa-bhāva (ṇisaṁsa-bhāvā) नृशंसभाव < संज्ञा (पुं.) [Noun] नृशंसभाव, क्रूर चित्तविकार, क्रूर मानस विकृति cruel, agitation of the mind, cruel mind, etc. {मा.} (नन्दगोप-) अहव धिक्खु मे *णिषंषभावं* । (अथवा धिक् खलु मे नृशंसभावम्) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 518

णिसंस ṇī-saṁsa नृशंस < विशेषण [Adjective] नृशंस, क्रूर inhuman, cruel, savage, brutal, atrocious, merciless, etc. {शौ.} (कुटुम्बिनी-) अह वा ण *णिसंसाणं* उदासीणेसु इदरेसु वा विसेसो अत्थि। (अथवा न नृशंसानामुदासीनेष्वितरेषु वा विशेषोऽस्ति) मुद्रा., श्लोक 3, पृष्ठ 93/7

णिसाअर (णिसअर) ṇīsāara (ṇisaara) निशाचर < संज्ञा (पुं.) [Noun] निशाचर, राक्षस devil, (any animal) that prowls about at night, demon, goblin, fiend, thief, etc. {अपभ्रंश} (नेपथ्य) मइँ जाणअँ मिअलोअणी *णिसअरु* कोइ हरेइ। (मया ज्ञातं मृगलोचनां निशाचरः कोऽपि हरति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-6/4, पृष्ठ 197

णिस्संसअ (णिस्संसय) ṇissaṁsaa (ṇissaṁsaya) निःसंशय < विशेषण [Adjective] निःसंशय, संशय-रहित unerring, certain, definite, sure, etc. {शौ.} (विदूषक-) संपदं भवदो णिस्संसअं भविस्सदि। (सांप्रतं भवतो निःसंशयं भविष्यति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10, पृष्ठ 275/3

णिहि ṇihi निधि < विशेषण [Adjective] निधि, भण्डार, धन आदि से भरा हुआ पात्र, चक्रवर्ती राजा की सम्पत्ति विशेष, नैसर्प

आदि नव निधि, लगातार नव दिन का उपवास fund, treasure, storehouse, base, receptacle, virtuous person hoard (for the nine treasure of kubera), etc. {शौ.} (विदूषक-) किंदु सा तवस्सिणी देवीए अहिअं रक्खन्तीए णाअररक्खिदो विअ *णिही* ण सुहं समासादइदव्वा। (किन्तु सा तपस्विनी देव्याधिकं रक्षन्त्यां नागरक्षित इन निधिर्न सुखं समासादयितव्या) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-1, पृष्ठ 269/3

णिहुअ ṇihua निभृत < विशेषण [Adjective] निभृत, प्रच्छन्न, विनीत, मन्द, निश्चल, स्थिर, संभ्रमरहित, धारण किया हुआ, निर्जन, एकान्त, अस्त होने के लिऐ उपस्थित, उपशान्त secret, solitary, lonely, palate, stable, filled up, calm, slow, colored, covered, tolerant, etc. {शौ.} (अनुसूया-) को उण उवाओ भवे जेणं अविलम्बिअं *णिहुअं* अ सहीए मनोरह संपादेम्ह।(कःपुनरुपायो भवेद्येनाविलम्बितं निभृतं च सख्या मनोरथं संपादयावः) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10, पृष्ठ 43/3

णीदि (णीइ) ṇīdi (ṇīi) नीति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] नीति, न्याय, उचित, व्यवहार, वस्तु के एक धर्म को मुख्यतया मानने वाला मत policy, morality, ethics, moral philosophy, etc. {शौ.} (इरावती-) उववण्णं सच्चं अअं एत्थ बह्मबन्धुणा किदो पओगो। इअं इमस्स कामतंतसचिवस्स *णीदी* । (उपपन्नम् सत्यमयमत्र ब्रह्मबन्धुना कृतः प्रयोगः। इयमस्य कामतन्त्रसचिवस्य नीतिः) मालविका, कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17/4, पृष्ठ 308

णीसामण्ण (णीसामन्न) ṇī-sāmaṇṇa (ṇī-sāmanna) निःसामान्य < विशेषण [Adjective] असाधारण, निःसामान्य special exceptional, extra ordinary, etc. {म.} जाअं *णीसामण्णं* परिहा-वलयं णहं चेअ। (जातं निःसामान्यं परिखावलयं नभं एव) गउडवहो, गाथा-495, पृष्ठ 76

णीहार ṇīhāra नीहार < संज्ञा (पुं.) [Noun] हिम, तुषार fog, mist {म.} इह रविणो मअ-तण्हा-णिहेण *णीहार*-पंडुरा होंति। (इह रवेर्मृगतृष्णानिभेन नीहार-पाण्डुरा भवन्ति) गउडवहो, गाथा-542, पृष्ठ 82

णुवण्ण [देशज] **ṇuvaṇṇa** सुप्त/ निमग्न < विशेषण [Adjective] सोया हुआ slept

{म.} सोहइ तंस-*णुवण्णो* वलिओरु-लओ पिआ-सत्थो। (शोभते त्र्यस्रसुस्रो वालतोरुलतः प्रियासार्थः) गउड़वहो, पृष्ठ 171/1161

णूमिअ [देशज] **ṇūmia** छादित< विशेषण [Adjective] छादित, पोला किया हुआ covered, hidden {म.} *णूमिय*-भिउडी-भंग व्व जस्स पडिवक्ख-सामंता। (छादित-भ्रूकुटीभङ्गा इव यस्य प्रतिपक्षसामन्ताः) गउडवहो, गाथा-495, पृष्ठ 18

णेउण ṇeuṇa नैपुण < विशेषण [Adjective] निपुणता, चतुराई clever, sharp, shred, skillful, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) जाणे वो *णेउणं।* (जाने का नैपुणम्) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-5, पृष्ठ 61/4

णेउरकोडी ṇeura-koḍī नूपुरकोटि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] नूपुरकोटि, पायल की नोंक anklet point or edge, etc. {शौ.} (निपुणिका-) हंत भट्टिणीए एव्व *णेउरकोडीए* लग्गं। (हन्त भट्टिन्या एव नूपुरकोट्या लग्नम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-18/2, पृष्ठ 170

णेउल (णेउर) ṇeula (ṇeura) नूपुर < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पायल, नूपुर an anklet, ornament for the feet, etc. {मा.} (चेट-) पादुप्फाल-चालिदाणं *णेउलाणं* वीशन्तो शद्दो। (पादोत्फालचालितानां नूपुराणांविश्रान्त: शब्दः) मृच्छ., पृष्ठ 333/6

णेउलशद्द (णेउलसद्द) ṇeula-śadda (ṇeula-sadda) नूपुरशब्द < संज्ञा (पुं.) [Noun] नूपुर का शब्द, घुंघरू की आवाज़ an anklet sound {मा.} (चेट-) कधं *णेउल-शद्दे* ? (कथं नूपुरशब्दः ?) मृच्छ., पृष्ठ 332/6

णोमालिया (णोमल्लिआ) ṇomāliyā (nomalliā) नवमालिका / नवमल्लिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] सुगन्धि वाला वृक्ष विशेष, नेवारी, वासन्ती फूल, चमेली का एक भेद a kind of jasmine {शौ.} (अनसूया-) इअं सअंवरवहू सहआरस्स तुए किदणामहेआ वणजोसिणित्ति *णोमालिया* । (इयं स्वयंवरवधूः सहकारस्स त्वया कृतनामधेया वनज्योत्स्नेति नवमालिका) अभि.शाकु., पृष्ठ 138/1

ण्हाण ṇhāṇa स्नान < संज्ञा (नपुं.) [Noun] स्नान, नहान, सपरना bathing, shower, etc. {शौ.} (विदूषक-) भोदि!

समप्पीअदु ममकेरिआ *ण्हाण*-साडिआ। (भवति! समर्प्यतां मदीया स्नानशाटिका) मृच्छ., पृष्ठ 306/5

त

त ta त< संज्ञा (पुं.) [Noun] दंत स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष पायल, नूपुर the a particular dental consonant, an anklet, ornament for {शौ.} (निपुणिका-) त से असंकणिज्जं पावं। (तदस्याशङ्कनीयं पापम्) मालविका., श्लोक-15/4, पृष्ठ 305 {म.} जं दव्वं अविभत्तं, त परमाणुं कहंति जिणा। (यद् द्रव्यम् अविभक्तम् त परमाणु कथयन्ति जिना) समण., गाथा- 643/35, पृष्ठ-204

त ta तत् < संज्ञा (त्रिलिंगी) [Noun] वह that one (referring to a particular person) {म.} त सव्वजीवसरणं, णंददु जिणसासणं सुइरं। (तत् सर्वजीवसरणं नन्दतु जिनशासनं सुचिरम्) समण., गाथा-17/2, पृष्ठ-6

त ta तद् < सर्वनाम [Pronoun] वह, वही he, same {म.} त मे खामेमि अहं, निस्सल्लो निक्कसाओ अ। (तद् युष्मान् क्षमयाम्यहम्, निशल्यो निष्कषायश्च) समण., गाथा-87/9, पृष्ठ 28

तंबा [देशज] **tambā** गौ/ गाय < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गाय cow {म.} *तंबाउ* तिन्नि सुपओहराउ चत्तारि पक्कलबइल्ला। (गावस्तिस्रः सुपयोधराश्चत्वारः समर्थ-वृषभाः) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 54/160

तइअ taia तृतीय < विशेषण [Adjective] तीसरा third {शौ.} (चेटी-) इमं *तइअं* पओट्टं पविसदु अज्जो। (इमं तृतीयं प्रकोष्ठं प्रविशतु आर्य्यः) मृच्छ., पृष्ठ 233/4

तक्क takka √ तर्क् < क्रिया [सक.] [Verb] अनुमान करना, तर्क करना to logic, to assume, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) तधा *तक्केमि*। (तथा तर्कयामि) मृच्छ., पृष्ठ 198/3

तक्कघट takka-ghata तक्रघट< संज्ञा (नपुं.) [Noun] मट्ठा का पात्र, छाछ का पात्र या घड़ा buttermilk pot or pitcher, etc. {मा.} (वृद्धगोपालक-) अपरिष्षिं गेहे गच्छिअ *तक्कघटं* पळोअदि। (अपरस्मिन् गहे गत्वा तक्रघटं प्रलोकते) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 535

तडफड (धडफड) [देशज] **taḍaphaḍa (dhaḍaphaḍa)** परि √स्फुर< क्रिया

[अक.] [Verb] दिखाई देना, तड़फड़ाना, छटपटाना, व्याकुल होना to throb, quiver, palpitate, etc. {शौ.} एसो खु अण्णभत्ताणं हरदि जीअं धडफडन्तं/ *तडफडन्तं।* (एष खल्वन्य-भक्तानां हरति जीवितं परिस्फुरन्तम्) मुद्रा., श्लोक-16/1, पृष्ठ 6

तणुयंगी taṇuyaṅgī तन्वङ्गी< विशेषण [Adjective] तन्वंगी, कृशांगी, छरहरी, पतली slender-bodied, slim, delicate (woman), etc. तह चंपिऊण भरिया विहिणा लावण्णएण *तणुयंगी।* (तथा निपीड्य भृता विधिना लावण्येन तन्वङ्गी) वज्जालग्गं, लावण्णवज्जा, पृष्ठ 106/314

तणू taṇū तनू < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] शरीर, कृश, दुर्बल, पतला, लघु, छोटा, अल्प body, slim, slender, lean and thin, delicate, tender, weak, feeble {म.} सेयच्छलेण पेच्छह *तणुए* अंगम्मि से अमायंतं। (स्वेदच्छलेन प्रेक्षध्वं तनुकेऽङ्गे तस्या अमात्) वज्जालग्गं, लावण्णवज्जा, पृष्ठ 108/318

तणूरुह taṇūruha तनूरुह < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] बाल, रोम hair, soft and small hair on the body {शौ.} (चेटी-) इमे पहरिसिदा *तणूरुहा* मन्तेन्ति। (इमानि प्रहृषितानि तनूरुहाणि मन्त्रयन्ते) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-1,पृ. 253

तण्णाय (तण्णअ) [देशज] **taṇṇāya (taṇṇaa)** आर्द्रकृत < विशेषण [Adjective] आर्द्र moistened {म.} घडिअं मंदर-दर-दूमिअम्मि संखुहिअ-जलहि-*तण्णाअं।* (घटितं मन्दरदरदूने संक्षुब्धजलध्यार्द्री-कृतम्) गउडवहो, गाथा-1038, पृष्ठ 153

तण्हा taṇhā तृष्णा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] तृष्णा, पिपासा, स्पृहा, वाञ्छा desire, craving, thirst, avarice, etc. {म.} धिद्धित्ति कूडलेहय अज्ज वि लेहत्तणे *तण्हा।* (धिग्धिगिति कूटलेखकाद्यापि लेखकत्वे तृष्णा) वज्जालग्गं, लेहयवज्जा, पृष्ठ 174/509

तत्थ tattha तत्र < अव्यय [Indeclinable] वहाँ, उसमें, उस जगह, उस स्थिति में आदि in that place, there, on that occasion, under those circumstances, then, in that case {म.} *तत्थ* दिव्वं नाम जत्थ केवलमेव देवचरिअं वण्णिज्जइ। (तत्र दिव्यं नाम यत्र केवलमेव देवचरितं वर्ण्यते) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 3

तद्दिअस (तद्दिअसिअ / अद्दिअह) [देशज] **taddiasa (taddiasia / addiaha)** तद्दिवस/ प्रतिदिन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] प्रतिदिन, अनुदिन every day {म.} *तद्दिअस*-पढअ-पेल्लिय-तम-मइलंगा इव तुरंगा। (तद्दिवस(प्रतिदिवस) प्रथमप्रेरित-तमोमलिनाङ्गा इव तुरंगा) गउडवहो, गाथा-49, पृष्ठ 8

तमी tamī तमी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] रात, अंधेरी रात dark night {म.} माया-णिम्मविअ-*तमी-मुहो* व्व चलिओ मगह-णाहो। (मायानिर्मिततमीमुख इव चलितो मगधनाथः) गउडवहो, गाथा-354, पृष्ठ 55

तम्बोल tambola ताम्बूल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पान, ताम्बूल betal leaf {शौ.} (विदूषक-) दीअदि गणिआ-कामुकाणं सकप्पूरं *तम्बोलं*। (दीयते गणिकाकामुकयोः सकर्पूरं ताम्बूलम्) मृच्छ., पृष्ठ 239/4

तम्मि [देशज] **tammi** वस्त्र < संज्ञा (नपुं.) [Noun] वस्त्र, कपड़ा a garment apparel {म.} इअं विञ्झ-गुहा-णिलयाएँ *तम्मि*-दल-सबर-सिद्ध-मग्गाए। (इति विन्ध्यगुहानिलयायाः वस्त्रदलशबरशिष्ट-मार्गायाः) गउडवहो, गाथा-338, पृष्ठ 53

तरणि taraṇi तरणि < संज्ञा (पुं., स्त्री.) [Noun] सूर्य, जहाज, नौका, घृतकुमारी का पेड़, धीकुँआर का पेड़, अर्कवृक्ष the sun, boat, Aloe Vera tree, etc. {म.} तक्खणमुक्खित्ते *तरणि*-मंडले वासव दिसाए। (तत्क्षणमुत्क्षिप्ते तरणिमण्डले वासवदिशा) गउडवहो, गाथा-1186, पृष्ठ 174

तरुण (तलुण) taruṇa (taluṇa) तरुण < विशेषण [Adjective] तरुण, जवान young, youthful, adult, juvenile {म.} सिद्धेत्थेहि महम्मइ तरुणी *तरुणेण* विज्जेण। (सिद्धार्थैः प्रहण्यते तरुणी तरुणेन वैद्येन) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 178/520

तलवग्ग tala-vagga तलवर्ग [सेवकवर्ग] < संज्ञा (पुं.) [Noun] सेवकजन, परिकर, नौकर servant, suite, etc. {म.} पंचमसरस्स गेओ *तलवग्गो* कामदेवस्स। (पञ्चमस्वरस्य गेयः सेवकवर्गः कामदेवस्य) वज्जालग्गं, अणंगवज्जा, पृष्ठ 134/395

तलिण taliṇa तलिन < विशेषण [Adjective] सूक्ष्म, बारीक, तुच्छ, क्षुद्र, दुर्बल, प्रतल thin, small, insignificant {म.} पढम कुसुमाहि *तलिणं* पच्छा-कुसुमं वण-लआण। (प्रथमकुसुमात् तलिनं पश्चात्कुसुमं वनलतानाम्) गउडवहो, गाथा-69, पृष्ठ 12

तलुणी (तरुणी) taluṇī (taruṇī) तरुणी < विशेषण [Adjective] युवती, नवयुवती, तरुणी a young or youthful woman {मा.} (भिक्षु-) एशा *तलुणी* इत्थिआ, एशो भिक्खु त्ति शुद्धे मम एशे धम्मे। (एषा तरुणी स्त्री, एष भिक्षुरिति शुद्धो मम एष धर्म्म:) मृच्छ., पृष्ठ 449/8 {म.} चलचलयकोडिमोडणकराइ नयणाइ *तरुणीणं*। (चञ्चलकोटिमोटनकराणि नयनानि तरुणीनाम्) वज्जालग्गं, नयणवज्जा, पृष्ठ 100/292

तवणिज्ज tavaṇijja तपनीय < विशेषण [Adjective] सुवर्ण, सोना, तपाने योग्य gold {म.} ओणविअ-सवण-*तवणिज्ज*-मंजरी-रुद्ध-कुंडलालोअं। (अवनमित-श्रवण-तपनीय-मञ्जरी-रुद्धकुण्डलालोकम्) गउडवहो, गाथा-206, पृष्ठ 33

तवष्षिणी (तवस्सिणी) tavaṣṣiṇī (tavassiṇī) तपस्विनी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] तपस्विनी, साध्वी, साधिका ascetic, one who practices, self modification, etc. {मा.} (नन्दगोप-) जषोदा वि *तवष्षिणी* णेव जाणादि दाळओ वा दाळिआ वा पषूद त्ति मोहं गदा। (यशोदापि तपस्विनी नैव जानाति दारको वा दारिका वा प्रसूत इति मोहं गता) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 517

तवसि (तवस्सि / तवश्शि) tavasi (tavassi / tavaśśi) तपस्विन् < संज्ञा (पुं.) [Noun] तपस्या करने वाला, साधु, मुनि, ऋषि an ascetic, a mendicant, etc. {मा.} (चेट-) अधवा एशे एआइ *तवश्शी* । (अथवा एष एकाकी तपस्वी) मृच्छ., पृष्ठ 324/6

तवोवण tavovaṇa तपोवन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] तपोवन, तपस्या करने का स्थान forest where ascetic performs, austerities, etc. {शौ.} (उभौ-) राअरक्खि-दव्वाइं *तवोवणाइं* णाम। (राजरक्षितव्यानि तपोवनानि नाम) अभि.शाकु., पृष्ठ 143/1

तह (तहा) taha (tahā) तथा < अव्यय [Indeclinable] उस तरह, उस प्रकार, तथा

like that, exactly so, etc. {म.} मिच्छत्त-माइआइं लोगविरुद्धाइं य *तहेव*। (मिथ्यात्वादिकानि लोकविरुद्धानि च तथैव) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 2

ता tā तत् (तद्) < अव्यय [Indeclinable] तो that, referring to some thing not present, it {शौ.} (चेटी-) *ता* किं त्ति अत्तं विण्णविस्सं। (तत् किमिति मातरं विज्ञापयिष्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 194/4

ताड tāḍa √ताडय् < क्रिया [सक.] [Verb] पीटना, ताड़न करना, आघात करना, प्रेरणा करना to beat, to strike, to hit, etc. {शौ.} (भट-) *ताडिदे* तुवं किं करिस्ससि। (ताडिते त्वं किं करिष्यसि) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 272

ताडंक tāḍaṅka ताड्क < संज्ञा (पुं.) [Noun] कुंडल, कान का आभूषण, कर्णाभूषण ear-ornament, ear-ring, etc {म.} वलिआगअण्ण-*ताडंक*-मलिअ-थण-कुंकुमालेक्खं। (वलितागतान्यताड्क-मृदितस्तनकुड्कुमालेख्यम्) गउडवहो, गाथा-206, पृष्ठ 33

ताडीअ tāḍīa √ताडय् < क्रिया [सक.] [Verb] पीटना, पीटा जाना, ताड़न करना, आघात करना, प्रेरणा करना to beat, to knock, to knock down, to defeat, thumping, etc. {मा.} (सिद्धार्थक-) णं विण्णवेमि *ताडीअन्तेण* मए। (ननु विज्ञापयामि ताड्यमानेन मया) मुद्रा., श्लोक 10, पृष्ठ 72/5

ताद (ताअ) tāda (tāa) तात < संज्ञा (पुं.) [Noun] पिता, पुत्र a father, a term of affection, term of respect applied to elders or other venerable personages {शौ.} (सख्यौ-) जइ एत्थ अज्ज *तादो* संणिहिदो भवे। (यद्यत्राद्य तात: संनिहितो भवेत्) अभि.शाकु., पृष्ठ 147/1 {शौ.} (रदनिका-) *तादस्स* पुणो वि रिद्धीए सुवण्णसअडिआए कीलिस्ससि। (तातस्य पुनरपि ऋद्ध्या सुवर्णशकटिकया क्रीडिष्यसि) मृच्छ., पृष्ठ 318/6

तारा tārā तारा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] तारा, नक्षत्र, बौद्धों की शासन देवी (महायानानुसार) star, a constellation of stars, etc. {म.} अत्थमिय चंदबिंबे *ताराहि* न कीरए जोण्हा। (अस्तमिते चन्द्रबिम्बं

ताराभिर्न क्रियते ज्योत्स्ना) वज्जालग्गं, चंदवज्जा, पृष्ठ 90/264

तारुण्ण tāruṇṇa तारुण्य < संज्ञा (पुं.) [Noun] तारुण्य, ज़वानी young age, youth, youthfulness, maturity {म.} एक्कग्गाहिणि सोक्खेक्कबंधवं गलइ *तारुण्णं* । (एकग्राहिणि सौख्यैकबान्धवं गलति तारुण्यम्) वज्जालग्गं, माणवज्जा, पृष्ठ 118/350

ताल (ताड) tāla (tāḍa) ताल < संज्ञा (पुं.) [Noun] ताड़ का पेड़ palm tree {म.} अम्हं पुण पत्थिव पत्थिओ वि *तालो* तुमं जाओ। (अस्माकं पुन: पार्थिवि प्रार्थितोऽपि तालस्त्वं जात:) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 52/155

तालीपत्त tālī-patta तालीपत्र < संज्ञा (नपुं.) [Noun] ताल-पत्र का बना हुआ आभूषण, ताल-वृक्ष के पत्ता का बना हुआ पंखा made of palm tree, a kind of ear ornament, a kind of fan manufactured by palm leaves {शौ.} (ब्राह्मणी-) हद्धि *तालीपत्तं* खु एदं। (हा धिक् तालीपत्रं खल्वेतत्) चारु., भासनाटक., गाथा-15/3, पृष्ठ 231

तिणकवल tiṇa-kavala तृणकवल< संज्ञा (नपुं.) [Noun] तृणों का कौर, घास का कौर grass morsel, straw mouthful {म.} मा सुमरसु चंदणपल्लवाण करिणाह गेण्ह *तिणकवलं*। (मा स्मर चन्दन-पल्लवानां करिनाथ गृहाण तृणकवलम्) वज्जालग्गं, गयवज्जा, पृष्ठ 66/192

तिणजाळ tiṇa-jāḷa तृणजाल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] जाल, कारीगरी वाले छिद्रों से युक्त गृहांश, गवाक्ष विशेष, मछली वगैरह पकड़ने का जाल, पाश विशेष A blade of grass net, straw trip, mesh, fine, lattice or lace work, etc. {मा.} (दामक-) अहो महन्तं *तिणजाळं* षामिणो णन्दगोवष्ष। (अहो महत् तृणजालं स्वामिनो नन्द-गोपस्य) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 534

तित्ति titti तृप्ति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] तृप्ति, संतोष satiation, satisfaction, contentment, etc. {म.} उययस्स य वासियसीयलस्स *तित्तिं* न वच्चामो। (उदकस्य च वासितशीतलस्य तृप्तिं न व्रजाम:) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 8/21

तित्थअत्ता (तित्थजत्ता) tittha-attā (tittha-jattā) तीर्थयात्रा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun]

तीर्थयात्रा, तीर्थगमन pilgrimage, journey to holy place, etc. {शौ.} (सीता-) अय्यउत्त! णं *तित्थअत्तादो* उवावत्तमाणं कुलवदिं पच्चुग्गच्छेहित्ति सन्दिट्ठो सोमित्ती। (आर्यपुत्र! ननु तीर्थयात्राः उपावर्तमानं कुलपतिं प्रत्युद्गच्छेति सन्दिष्टः सौमित्रिः) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-13/5, पृष्ठ 293

तित्थयर titthayara तीर्थकर< (तीर्थंकर) संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] धर्म तीर्थ का प्रवर्त्तक, जिनदेव, जिनभगवान्, संसार सागर को स्वयं पार करने तथा दूसरों को पार कराने वाले महापुरुष, पंचकल्याणकों से पूजित, प्रत्येक कल्प (चतुर्थ काल) में 24 होते हैं (जैन परम्परानुसार) founder of (four) herds, lord of Jaina, propagator of eternal religion, etc. {शौ.} धुवसिद्धी *तित्थयरो* चउणाणजुदो करेइ तवयरणं। (ध्रुवसिद्धिस्तीर्थंकरः चतुर्ज्ञानयुतः करोति तपश्चरणम्) अट्ठपाहुड़ मोक्खपाहुड़ पृष्ठ 318/60

तिलय (तिलग) tilaya (tilaga) तिलक < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] टीका, ललाट में किया जाने वाला चन्दन आदि का चिह्न, वृक्ष-विशेष mark of sandal paste on the forehead, a tree, etc. {म.} *तिलयं* विलयं विवरीयं कंचुयं सेयभिन्नं सव्वंगं। (तिलकं विलयं विपरीतं कञ्चुकं स्वेदभिन्नं सर्वाङ्गम्) वज्जालग्गं, दूईवज्जा, पृष्ठ 140/416

तिलोदअ (तिलोदग / तिलोदय) tilodaa (tilodaga / tilodaya) तिलोदक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] तिल युक्त जल water with sesame seed {शौ.} (शकुन्तला-) अण्णहा अवस्सं सिंचथ मे *तिलोदअं*। (अन्यथाऽवश्यं सिञ्चत मे तिलोदकम्) अभि. शाकु., पृष्ठ 255/3

तिसंकु tisaṅku त्रिशंकु < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] बीच में, राजा विशेष जो पृथ्वी स्वर्ग के बीच लटका है (पुराणानुसार) dilemma, confusion, a king hanging between the heaven and the earth (Mythologically) {शौ.} (विदूषक-) *तिसंकु* विअ अंतराले चिट्ठ। (त्रिशंकुरिवान्तराले तिष्ठ) अभि.शाकु., पृष्ठ 204/2

तिहुवण ti-huvaṇa त्रिभुवन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] तीन लोक, त्रिभुवन the three worlds, etc. {म.} (परिपार्श्विक-) सो अस्स

कई सिरिराअसेहरो *तिहुवणं* पि धवलेन्ति। (सोऽस्य कविः श्रीराजशेखरः त्रिभुवनमपि धवलयन्ति) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 6/10

तुंग tuṇga तुङ्ग < विशेषण [Adjective] ऊँचा, उच्च, छन्द विशेष high, tall, lofty, a kind of meter {म.} ता *तुंगो* मेरुगिरी मयरहरो ताव होइ दुत्तारो। (तावत्तुङ्गो मेरुगिरिर्मकरालय-स्तावद्भवति दुस्तरः) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 36/103

तुंबी tumbī तुम्बी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] तुम्बी (सूखी कद्दू से बना जैन श्वेताम्बर साधुओं का एक पात्र) आलाबू, लौकी a gourd, pot {म.} सोहइ इमा पअत्तिअ-तुंबी-वीणा-विणोअ व्व। (शोभते इयं प्रवर्तिततुम्बीवीणाविनोदेव)गउडवहो, गाथा-691, पृष्ठ 104

तुट्ट tuṭṭa √त्रुट्, √तुड् < क्रिया [अक.] [Verb] टूटना, छिन्न होना, खण्डित होना, घटना, बीतना to tear, to break, to fall asunder, to snap, to be split, etc. {म.} सा सा तडत्ति *तुट्टइ* नरस्स दिव्वे पराहुत्ते। (सा सा तटदिति त्र्युट्यति नरस्य दैवे पराग्भूते) वज्जालग्गं, दिव्ववज्जा, पृष्ठ 42/124

तुण्हीअ (तुण्हिअ) tuṇhīa (tuṇhia) तूष्णीक < विशेषण [Adjective] चुप रहने वाला, मौन silent, taciturn, etc. {शौ.} (वासवदत्ता-) एसम्हि *तुण्हीआ* भविस्सम्महासेणबहू। (एषास्मि तूष्णीका भविष्यन्महासेनवधूः) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/2, पृष्ठ 14

तुमं tumam युष्मद् (त्वम्) < सर्वनाम [Pronoun] तुम You {शौ.} (शकुन्तला-) अदो खु पिअंवदा सि *तुमं* । (अतः खलु प्रियंवदाऽसि त्वम्) अभि.शाकु., पृष्ठ 136/1

तुम्ह tumha युष्मद् < सर्वनाम [Pronoun] तुम you {शौ.} (तापसी-) सोत्थि भोदु *तुम्हाणं* । (स्वस्ति भवतु, युष्मभ्यम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13/5, पृष्ठ 229

तुरंग turaṅga तुरङ्ग< संज्ञा (पुं.) [Noun] अश्व, घोड़ा horse, steed {शौ.} (सिद्धार्थक-) कसपहरभएण जाअकम्पुत्त-रङ्गा गिहिदजअण-सज्जा संपअंते *तुरंगा।* (कशाप्रहारभयेण जातकम्पोत्तराङ्गा गृहीत-

जयनसज्जाः संप्लवन्ते तुरङ्गा) मुद्रा., श्लोक 3, पृष्ठ 82/6

तुरिअ turia त्वरित < विशेषण [Adjective] त्वरित, उतावला quick, hasty, prompt {म.} अत्थक्को रसरहिओ देसविहीणो-sणुणासिओ *तुरिओ*। (अविरतो रसरहितो देशविहीनोऽनुनासिकस्त्वरितः) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 10/27

तुलाकोडि (तुलाओडि) tulākoḍī (tulāoḍi) तुलाकोटि < संज्ञा (नपुं.) [Noun] नूपुर anklet worn on the feet by women {म.} खलिओ तइँ रहसुक्खित्त-मणि-*तुलाकोडि*-कुंडलाहरणो। (स्खलितं त्वया रभसोत्क्षिप्त-मणितुलाकोटि कुण्डलाभरणम्) गउडवहो, गाथा-293, पृष्ठ 46

तुलिदं (तुरिअं) tulidam (turiam) त्वरितम् < क्रियाविशेषण [Adverb] शीघ्र, त्वरित quick, etc. {मा.} (चेट-) ता *तुलिदं* वहामि। (तत् त्वरितं वहामि) मृच्छ., पृष्ठ 391/8

तुवर tuvara √त्वर् < क्रिया [अक.] [Verb] शीघ्र जाना, तेज होना quickly, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) हञ्जे! गच्छ *तुवरदि* मे हिअअं। (हञ्जे! गच्छ त्वरते मे हृदयम्) मृच्छ., पृष्ठ 325/6

तुवरी tuvarī तुवरी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] अरहर, तुअर lentils, etc. {म.} पामरअरसेउल्ला णिवडइ *तुवरी* वविज्जंती। (पामरकरस्वेदार्द्रा निपतति तुवरी उप्यमाना) गाहा-58,पृष्ठ 86/4

तुसार tusāra तुषार< संज्ञा (नपुं.) [Noun] शीत, हिम, बर्फ snow, frost, blight{म.} (देवी-) छोल्लन्ति दंतरअणाइ गए *तुसारे*। (स्फुरन्ति दन्तरत्नानि गते तुषारे) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 18/14

तुस्स (तूस) tussa (tūsa) √ तुष् < क्रिया [अक.] [Verb] खुश होना to be happy, to be pleased, etc. {शौ.} (बकुलावलिका-) किदत्था दाणिं वो सिस्सा जाए गुरुअणो एवं *तुस्सदि*। (कृतार्थेदानी वः शिष्या यस्या गुरुजन एवं तुष्यति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-3/1, पृष्ठ 243

तेलोक्कसुपुरिस telokka-su-purisa त्रैलोक्यसुपुरुष < विशेषण [Adjective] तीनों लोकों में एक से एक सुन्दर पुरुष smart

man in three loka's, etc.{शौ.} (पेलव-) सहि! समागता एदे *तेलोक्कसुपुरिसा* सकेसवा अ लोअवाला। (सखि! समागता एते त्रैलोक्यसुपुरुषाः सकेशवाश्च लोकपालाः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 174

तेल्ल (तिल्ल) tella (tilla) तैल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] तेल, स्निग्ध, स्नेह oil {मा.} (चेट-) *तेल्लेण* विणा पदीविआओ पज्जालीअन्ति। (तैलेन विना प्रदीपिका: प्रज्वाल्यन्ते) मृच्छ., पृष्ठ 91/1

थ

थ tha थ< संज्ञा (पुं.) [Noun] दन्त्य स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular dental consonant {म.}खघथधभाण हकारो मुहमेहकहावहू पह्वएसु।(खघथधभानां हकारो सुखमेधकथा-वधूप्रभूतेषु) नाट्य, श्लोक 10/17, पृष्ठ 543

थ tha अथ < अव्यय [Indeclinable] तब, पश्चात्, मंगलसूचक, यदि, और then, after, auspicious, if, and {म.} अज्झवसिएण बंधो, सत्ते मारेज्ज मा थ मारेज्ज। अध्यवसितेन बन्ध, सत्त्वान् मारयेद् मा अथ मारयेत्) समण., गाथा-154/12, पृष्ठ 48

थउड thauḍa स्थपुट < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा, विषम और उन्नत प्रदेश uneven, high and low, depressed and elevated {म.} अंगाइँ विण्हु णो वामणत्तणे विसम-मास *थउडाइं।* (अङ्गानि विष्णोर्वामनत्वे विषममांसस्थपुटानि) गउडवहो, गाथा-16, पृष्ठ 3

थक्क thakka स्थति < विशेषण [Adjective] स्थिर होना, बैठना, रहना sit, motionless, unmoved, stable {म.} *थक्के* भरे विसूरइ अउव्ववग्गं गओ धवलो। (स्थिते भरे खिद्यतेऽपूर्ववल्गां गतो धवलः) वज्जालग्गं, धवलवज्जा, पृष्ठ 62/183

थण thaṇa स्तन < संज्ञा (पुं.) [Noun] स्तन, पयोधर breast {म.} *थणया* तह दुग्गयचिंतियं व हियए न मायंति। (स्तनौ तथा दुर्गतचिन्तेव हृदये न मातः) वज्जालग्गं, थणवज्जा, पृष्ठ 102/301

थणुल्लअ thaṇullaa स्तनक < संज्ञा (पुं.) [Noun] लघु स्तन small breast {म.} तइ विहिओ मुद्ध-*थणुल्लएहिं* मालूर-

होमो व्व। (त्वयाविहितो मुग्धस्तनकैर्मालूस-होम इव) गउडवहो, गाथा-325, पृष्ठ 51

थद्ध (थड्ढ) thaddha (thaḍḍha) स्तब्ध विशेषण < [Adjective] स्तब्ध, निश्चल stunned, flabbergasted, stilled, stupefied, etc.{म.} *थद्धो* वंकग्गीवो अवंचिओ विसमदिट्ठिदुप्पेच्छो। (स्तब्धो वक्रग्रीवो-ऽवाञ्चितो विषमदृष्टिदुष्प्रेक्ष्य:) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 18/50

थवक्क thavakka स्तबक < संज्ञा (पुं.) [Noun]समुदाय, समूह, धार्मिक ग्रंथ का एक अध्याय bunch of flowers, bouquet, chapter of a holy book {म.} लब्भइ कुलवहु सुरए *थवक्कओ* सयलसोक्खाणं। (लभ्यते कुलवधूसुरते स्तबक: सकलसौख्यानाम्) वज्जालग्गं, सुरयवज्जा, पृष्ठ 110/326

थाम thāma स्थामन् < संज्ञा (नपुं.) [Noun] स्थान, जगह place {म.} तुह दारं *थाम*-त्थाम-दिण्ण-रुहिरोवहारमाभाइ। (तव द्वारं स्थानस्थानदत्तरुधिरोपहारमाभाति) गउडवहो, गाथा-294, पृष्ठ 47

थाह thāha स्ताघ < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] तला, गहराई, गहराई का अन्त, सीमा surface, level, depth, limit, etc. {म.} जह ते वि बंधवा जलणिहि व्व *थाहं* न याणंति। (यथा तेऽपि बान्धवा जलनिधेरिव तलं न जानन्ति) वज्जालग्गं, सुघरिणीवज्जा, पृष्ठ 154/456

थुव (थुग) thuva (thuga) √स्तु< क्रिया [सक.] [Verb] स्तुति करना, गुण वर्णन करना to praise, to worship by hymns, etc. {म.} न हसंति परं न *थुवंति* अप्पयं पियसयाइ जंपंति। (न हसन्ति परं न स्तुवन्त्यात्मानं प्रियशतानि जल्पन्ति) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 14/37

थेर thera स्थविर < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] बूढ़ा, वृद्ध, जैन-बौद्ध साधु old, aged, Jaina-Bauddha monk {म.} *थेरो* पइ त्ति मा रुवसु पुत्ति दिन्ना सि सुग्गामे। (स्थविर: पतिरिति मा रुदिहि पुत्रि दत्तासि सुग्रामे) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 160/472

द

द da द < संज्ञा (पुं.) [Noun] स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular dental consonant {म.} कगतदयवाणं णिच्चं वीयम्मि ठिओ सरो होइ। (कगतदयवानां नित्यं द्वितीये स्थितः स्वरो भवति) नाट्य., श्लोक 10/17, पृष्ठ 543

दंड daṇḍa दण्ड < संज्ञा (पुं.) दण्ड, शारीरिक या आर्थिक दण्ड, दमन, डंडा, यष्टिका, राजसत्ता का प्रतीक रूप दण्ड, चार हाथ के परिमाण का नाप, किंवदंती punishment, rod, stick, etc. {म.} ताणं चिय सो *दंडो* जे ताण रस न याणंति। (तेषामेव स दण्डो ये तेषां रसं न जानन्ति) वज्जालग्गं, गाहावज्जा, पृष्ठ 6/17

दंडकट्ठ daṇḍa-kaṭṭha दण्डकाष्ठ< संज्ञा (नपुं.) [Noun] लकड़ी का डंडा/ छड़ी wood stick, etc. {शौ.} (विदूषक-) कहं *दंडकट्ठं* एदं। (कथं दण्डकाष्ठमेतत्) मालविका., कालिदास ग्रन्था.,श्लोक-15,पृष्ठ 306/4

दंत danta दन्त < संज्ञा (पुं.) [Noun] दाँत, दन्त, किंवदंती tooth, etc. {म.} एक्कं *दंतम्मि* पयं बीयं कुंभम्मि तइयमलहंतो। (एकं दन्ते पदं द्वितीयं कुम्भे तृतीयमलभमानः) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 58/172

दंतच्छोह danta-cchoha दंतक्षोभ < संज्ञा (पुं.) [Noun] दाँत की चोट, दंत क्षोभ, दंत शूल toothache, dental disturbance {म.} *दंतच्छोहं* तडवियडमोडणं सरसपल्ल-वुल्लिहणं। (दन्तक्षोभं तटविकटमोटनं सरस-पल्लवोल्लेखनम्) वज्जालग्गं, विंझवज्जा, पृष्ठ 64/186

दंति danti दन्तिन् < संज्ञा (पुं.) [Noun] दन्ती, हस्ती, हाथी, पर्वत विशेष having large or protected teeth, tusked, notched, elephant, tusker, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) अदिसअगरुएणं दाणदप्पेण दन्ती सजलजलदलोलं उव्वहन्ता णदन्ति। (अतिशयगुरुणा दानदर्पेण दन्तिनः सजलजलदलोलामुद्वहन्तो नदन्ति) मुद्रा., श्लोक 3, पृष्ठ 82/6

दंस daṁsa √दश् < क्रिया [सक.] [Verb] डसना, काटना, दाँत से काटना to sting, to bite, etc. {शौ.} (प्रथमा-) तदो तं सप्पो भविअ *दंसइ।* (ततस्तं सर्पो भूत्वा दंशति)

अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/7, पृष्ठ 127

दंसण daṁsaṇa दर्शन< संज्ञा (पु., नपुं.) [Noun]दर्शन, अवलोकन, निरीक्षण, आँख, सम्यक्त्व, श्रृद्धा, दर्शन शास्त्र seeing, looking, observing, visit, view, philosophy, etc. {म.} स उड्डो जस्स वि *दंसणेण* वडवा जलं देइ। (स खनको यस्यापि दर्शनेन वडवा जलं ददाति) वज्जालग्गं, उड्डवज्जा, पृष्ठ 202/589

दंसणीअ (दंसणीय) daṁsaṇīa (daṁsaṇīya) दर्शनीय < विशेषण [Adjective] दर्शनीय, देखने योग्य, निरीक्षण के योग्य, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करने के योग्य, देखने के लिए उचित, सुहावना, मनोहर, सुन्दर, न्यायालय में उपस्थित होने के योग्य to be seen, visible, observable, perceptible, good looking, handsome, beautiful, to be produced in a count of justice, etc. {शौ.} (वासवदत्ता-) णहि णहि! *दंसणीओ* एव्व। (नहि नहि! दर्शनीय एव) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/2, पृष्ठ 14

दइव (दइव्व) daiva (daivva) दैव < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध, आगम divine, fortune, fate, unseen {म.} विहिणा जं चिय लिहियं नलाडवट्टीइ तेण *दइवेण*। (विधिना यदेव लिखितं ललाटपट्टे तेन दैवेन) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 44/129

दक्ख dakkha दक्ष< विशेषण [Adjective] दक्ष, निपुण, चतुर skilful, adroitness, expert, adroit, skilled, adroitness, efficency {मा.} (संवाहक-) आइदिमन्तो अविब्भमन्तो अणुच्छित्तो ळळिदो ळळिददाए अविम्हओ चउरो महुरो *दक्खो* सदक्खिञ्ञो अभिमदो आइदो तुट्ठो होदि। (आकृतिमान् अविभ्रमन् अनुत्सिक्तो ललितो ललिततयाविस्मयश्चतुरो मधुरो दक्षः सदाक्षिण्योऽभिमत आचितस्तुष्टो भवति) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 217

दक्खिणमारुद dakkhiṇa-māruda दक्षिणमारुत < संज्ञा (पुं.) [Noun] दक्खिनी पवन, दक्षिणी दिशा से चलने वाली वायु southern air, etc.{शौ.} (विदूषक-) एसो पमदवणपरिसरो। आणमिअ पच्चुवगदो भवं आअन्तुओ *दक्खिणमारुदेण*। (एष प्रमदवनपरिसरः। आनम्य प्रत्युपगतो

भगवानागन्तुको दक्षिणमारुतेन) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 156

दक्खिणा dakkhiṇā दक्षिणा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दक्षिणा, यज्ञान्त में कर्मसमाप्ति के उपरान्त दिया जाने वाला द्रव्य a present or gift to Brāhmaṇas, a gift {शौ.} (सूत्रधार-) *दक्खिणा* कावि दे भविस्सदि। (दक्षिणा कापि ते भविष्यति) मृच्छ., पृष्ठ 91/1

दट्ठ daṭṭha दष्ट < विशेषण [Adjective] डसा, जिसको दाँत से काटा गया हो वह to sting, a person who has been bitten, etc. {शौ.} (विदूषक-) परित्ताअदु परित्ताअदु भवं। सप्पेणम्हि *दट्ठो* । (परित्रायतां परित्रायतां भवान्। सर्वेणास्मि दष्टः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-3, पृष्ठ 293/4

दत्तिआ (दत्तिया) dattiā (dattiyā) दात्रिका< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] दान करने वाली स्त्री, छोटी दाँती, घास काटने का शस्त्र-विशेष, दाँतेदार हसिया female donor, donor, giver, sickle, scythe, etc.{म.} (सूत्रधार-) चिरं जीव! एवं सोभणाणि भोअणाणि *दत्तिआ* होहि। (चिरं जीव! एवं शोभनानि भोजनानि दात्री भव) चारु., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 4

दद्दुर daddura दर्दुर< संज्ञा (पुं.) [Noun] मेढ़क, एक प्रकार का वाद्ययंत्र, वाद्य विशेष, प्रहार, आघात, चमड़े से अवनद्ध मुँहवाला कलश frog, tamboun, drum, etc. {म.} *दद्दुर*-उडं व दर-फुडिअ-विअड-पुड-मंडलं गअणं। (दर्दुरपुटमिव दरस्फुटित-विकटपुट मण्डलं गगनम्) गउडवहो, गाथा-1167, पृष्ठ 172

दधि (दहि) dadhi (dahi) दहि < संज्ञा (नपुं.) [Noun] दही, दधि curd, yogurt {मा.} (वृद्धगोपालक-) अण्णष्हिं गेहे गच्छिअ *दधिं* भक्खइ। (अयस्मिन् गृहे गत्वा दधि भक्षति) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 535

दप्प dappa दर्प < संज्ञा (पुं.) [Noun] दर्प, अहंकार, पराक्रम, जोर, धृष्टता, अरुचि से काम का आसेवन pride, arrogance, haughtiness, conceit, vanity, boastfulness, etc. {मा.} (वकुलावलिका-) उवदेसाणुरूवा चलणा लंभिअ अज्ज दाव गव्विदा भविस्सं। हन्त सिद्धो मे *दप्पो*। (उपदेशानुरूपौ चरणौ लब्ध्वाद्य तावद्गर्विता

भविष्यामि। हन्त सिद्धो मे दर्पः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 279/3

दप्पण dappaṇa दर्पण < संज्ञा (पुं.) दर्पण, शीशा, कांच mirror, looking glass, etc. {म.} छारेण *दप्पणो* विय अहिययरं निम्मलो होइ। (क्षारेण दर्पण इवाधिकतरं निर्मलो भवति) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 12/33

दलिद्द (दरिद्द) dalidda (daridda) दरिद्र < विशेषण [Adjective] धन रहित, निर्धन, निःस्व, दरिद्र poor, needy, destitute, etc. (विदूषक-) *दलिद्दो* किं अकिवणं मन्तेदि। (दरिद्रः किं अकृपणं मन्त्रयति) मृच्छ., पृष्ठ 188/3

दविण daviṇa द्रविण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] सम्पत्ति, द्रव, धन valuable possession or property, wealth, riches, object, etc. {म.} अणरसिएहि न लब्भइ *दविणं* व विहीणपुण्णेहिं। (अरसिकैर्न लभ्यते द्रविणमिव विहीनपुण्यैः) वज्जालग्गं, गाहावज्जा, पृष्ठ 4/11

दसण dasaṇa दशन < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] दाँत, दंश, काटना teeth, bite, etc. {म.} सारस-वावी-परिपंडुरेसु से *दसण-*वासेसु। (सारसवापीपरिपाण्डुरेष्वस्य दशन-वासःसु) गउडवहो, गाथा-782, पृष्ठ 117

दसरह dasaraha दशरथ < संज्ञा (पुं.) [Noun] दशरथ, रामचन्द्रजी के पिता का नाम Dasaratha, father of Ramchandra {शौ.} (प्रतिहारी-) अय्य! महाराओ देवासुरसङ्गामेसु अप्पडिहदमहारहो *दसरहो* आणवेदि सिग्घं भट्टिदारअस्स रामस्स रज्जप्पहावसञ्जोअकारआ अहिसेअ-सम्भारा आणीअन्तु त्ति। (आर्य! महाराजो देवासुरसङ्ग्रामेष्वप्रतिहतमहारथो दशरथ आज्ञापयति शीघ्रं भर्तृदारकस्य रामस्य राज्यप्रभावसंयोगकारका अभिषेकसंभारा आनीयन्तामिति) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-1, पृ. 250

दसा dasā दशा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दशा, स्थिति, सौ वर्ष के प्राणी की दस-दस वर्ष की अवस्था, आयु या जीवन की अवस्था, कर्मों का फल, भाग्य, ग्रहों की स्थिति (जन्म के समय), जैन आगम में ग्रन्थ विशेष (जैन परम्परानुसार) condition, period or stage of life (as childhood, youth, old age) the position of a planet at a person's birth, a partitcular text in Jain Agama (According to Jain tradition), etc.

{म.} तवधम्मणियममइए विसमा वि *दसा* समा होइ। (तपोधर्मनियममये विषमापि दशा समा भवति) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 30/84

दसाविसेस dasā-visesa दशाविशेष < संज्ञा (पु., नपुं.) [Noun] दशाविशेष, विशेष स्थिति special condition {शौ.} (विदूषक-) पुरुस-जोव्वणाणि विअ गिहजोव्वणाणि खु *दसाविसेसं* अणुहोन्ति। (पुरुषयौवनानीव गृहयौवनानि खलु दशाविशेषमनुवभवन्ति) चारु., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 196/1

दहमुह daha-muha दशमुख < संज्ञा (पुं.) [Noun] दश मुख वाला व्यक्ति, रावण ten faced, Rāvaṇa {म.} सुणह अणुराअइण्हं सीआदुक्खक्खअं *दहमुहस्स* वहं। (शृणुतानुरागचिह्नं सीतादुःखक्षयं दश-मुखस्य वधम्) सेतुबन्धं, गाथा-12/1, पृष्ठ 12

दहि dahi दधि < संज्ञा (त्रिलिंगी) [Noun] दही, तेला, लगातार तीन दिन को उपवास curd, yoghurt, continuas three days fast {शौ.} (सूत्रधार-) घिदं गुळं *दहिं* तण्डुला अ सव्वं अत्थि। (घृतं, गुडो, दधि, तण्डुलाश्च सर्वमस्ति) चारु., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 193

दाआद (दायाद) dāāda (dāyāda) दायाद < संज्ञा (पु.) [Noun] दायाद, पैतृक सम्पत्ति का भागीदार heir, claimant, successor of possible property, etc. {शौ.} (सारसिक-) मोइदो से *दाआदो* महावसेणो दूदो अ तेण महासाराणि रअणाणि वाहणाणि सप्पिआरिआभूइट्ठं परिअणं उवाअणी-करिअ भट्टिणो सआसं पेसिदो त्ति। (मोचितोऽस्य दायादो माधवसेनः दूतश्च तेन महासाराणि रत्नानि शिल्पकारिकाभूयिष्ठं परिजन-मुपायनीकृत्य भर्तुः सकाशं प्रेषित इति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., अंक-5,पृष्ठ 312

दाडिमफल dāḍima-phala दाडिमफल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] दाडिमफल, अनार pomegranate fruit {म.} *दाडिमफलं* व पेम्मं एक्के पक्खे य होइ सकसायं। (दाडिमफलमिव प्रेमैकस्मिन्पक्षे भवति सकषायम्) वज्जालग्गं, पेम्मवज्जा, पृष्ठ 114/334

दाण dāṇa दान < संज्ञा (नपुं.) [Noun] दान, उत्सर्ग, जो दिया जाय वह, स्व-पर के उपकार के लिए आहार-औषध-ज्ञान व अभय आदि दूसरों को प्रदान करना सौंपना,

समर्पण करना, धर्मार्थ पुरस्कार, मदमस्त हाथी के मस्तक से चूने वाला रस donation, charity, gift, present, etc. {शौ.} उत्तम-पत्त-विसेसे उत्तम-भत्तीए उत्तमं *दाणं*, एयदिणे वि य दिण्णं इंदसुहं उत्तमं देदि। (उत्तमपात्रविशेषे उत्तमभक्त्या उत्तमं दानम्, एकदिने अपि न दत्तम् इन्द्रसुखम् उत्तमं ददाति) कत्ति. 366, पृष्ठ 266

दाणव dāṇava दानव < संज्ञा (पुं.) [Noun] दानव, राक्षस, असुर demon, monster, giant, etc. {मा.} (वृद्धगोपालक-) तदो माषमत्ते णन्दगोववुत्ते षअडो णाम *दाणवो* षअडवेषं गह्विअ आअदो। (ततो मासमात्रे नन्दगोपपुत्रे शकटो नामदानव: शकटवेषं गृहीत्वागत:) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 535

दाणवी dāṇavī दानवी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दानवी राक्षसी, असुरी female demon, giantess, etc.{मा.} (वृद्धगोपालक-) तदो तं विजाणिअ षुविदा पाडिदा चम्मवषेषा *दाणवी* भविअ तत्तो एव्व मुदा। (ततस्तां विज्ञाय सुप्ता पतिता सापि दानवी भूत्वा तत एव मृत:) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 535

दाणवेंदसंरंभ dāṇavenda-saṁraṁbha दानवेन्द्रसंरम्भ< संज्ञा (पुं.) [Noun] राक्षसों का उपद्रव, दानवों का आतंक demon's terror {शौ.} (उर्वशी-) उवकिदं क्खु *दाणवेंदसंरभेण* । (उपकृतं खलु दानवेंद-संरंभेण) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-1, पृष्ठ 144

दाणि (दाणिं / इयाणिं) dāṇi (dāṇiṁ / iyāṇīṁ) इदानीम् < अव्यय [Indeclinable] इस समय, अभी now, at present, etc. {शौ.} (मदनिका-) ता को *दाणि* सो भट्टिदारिआए कामीअदि ? (तत् क इदानीं स: भर्तृदारिकया काम्यते ?) मृच्छ., पृष्ठ 98/2

दार dāra दार < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] स्त्री, महिला, दार wife, woman, etc. {म.} मामि न उत्तम पुरिसा परस्स *दाराइ* पेच्छंति। (मामि नोत्तमपुरुषा: परस्य दारान् प्रेक्षन्ते) वज्जालग्गं, सईवज्जा, पृष्ठ 158/471

दारअ (दार / दारग / दारय) dāraa (dāra / dāraga / dāraya) दारक < संज्ञा (पुं.) [Noun] बच्चा, पुत्र a boy, a son, a child

{शौ.} (वसन्तसेना-) कस्स उण अअं *दारओ* ? (कस्य पुनरयं दारकः?) मृच्छ., पृष्ठ 318/6

दारिआ dāriā दारिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दारिका, लड़की, पुत्री, बेटी a daughter, a female child, etc. {शौ.} (वृद्धा-) गदा मे *दारिआ* मित्तघरअं अत्तणो जोव्वणं अणुभविदुं। (गता मे दारिका मित्रगृहमात्मनो यौवनमनुभवितुम्) मृच्छ., पृष्ठ 468/9

दारुण dāruṇa दारुण < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] कष्ट, दुःख, दुर्भिक्ष, विषम, भयंकर, भीषण, क्रोधयुक्त, रौद्र harsh, stern, severe, stiff unkind, cruel, pitiless, dreadful, horrible, formidable, etc. {शौ.} (कुरङ्गी-) इदं एत्थ *दारुणं* मणोहरं च। (इदमत्र दारुणं मनोहरं च) अविमार., भास., गाथा-13/3, पृष्ठ 136

दालिद्द dālidda दारिद्र्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] निर्धनता, दीनता poverty, wretchedness {म.} सीलं वरं कुलाओ *दालिद्दं* भव्वयं च रोगाओ। (शीलं वरं कुलात् दारिद्र्यं भव्यं च रोगात्) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 30/85

दाव dāva तावत् < अव्यय [Indeclinable] अभी, इतना, उतना, इतना बड़ा, उतना समस्त, सारा, पहले, किसी की ओर से, निस्सन्देह, सचमुच, के विषय में पूर्ण रूप से so much, that much, so many, so great, so large, meanwhile, just now, indeed, etc. {मा.} (संवाहक-) *दाव* दइश्शं। (तावत् दास्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 121/2

दावाणल dāvāṇala दावानल < संज्ञा (पुं.) [Noun] जंगल की आग forest conflagration, forest fire {म.} सरसा वि दुमा *दावाणलेण* डज्झंति सुक्खसंवलिया। (सरसा अपि द्रुमा दावानलेन दह्यन्ते शुष्कसंवलिताः) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 22/63

दाहिण (दक्खिण) dāhiṇa (dakkhiṇa) दक्षिण< संज्ञा/ विशेषण [Noun/Adjective] दाहिना, दक्षिण, दक्षिण दिशा में स्थित, निपुण, चतुर, हितकर, अनुकूल south, able, skilful, right, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) फुरदि *दाहिणं* लोअणं। (स्फुरति दक्षिणं लोचनम्) मृच्छ., पृष्ठ 392/8

दिअह (दियह / दिअस) diaha (diyaha / diasa) दिवस < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun]

दिन a day {शौ.} (प्रियंवदा-) अणु*दिअहं* खु परिहीअसि अंगेहिं। (अनुदिवसं खलु परिहीयसेऽङ्गैः) अभि.शाकु., पृष्ठ 221/3

दिउणदर diuṇa-dara द्विगुणतर < विशेषण [Adjective] दूना, दुगना double, twofold {शौ.} (विदूषक-) दोग्गच्च-पीडिअस्स मण्णे *दिउणदरा* पीडा हु विस्सदि। (दौर्गत्यपीडितस्य मन्ये द्विगुणतरा पीडा भविष्यति) मृच्छ., पृष्ठ 81/1

दिग्घिआ digghiā दीर्घिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वापी, जलाशय, वापी सीढ़ी वाली, कूप-विशेष a lake, to go in a pond, a well or lake with steps {शौ.} (विदूषक-) इदो अ उदअंत-सूरसमप्पहेहिं कमल-रत्तोप्पलेहिं सज्झाअदि विअ *दीहिआ* । (इतश्च उदयत्सूर-समप्रभैः कमल-रक्तोत्पलैः सन्ध्यायते इव दीर्घिका) मृच्छ., पृष्ठ 248/4

दिट्ठ diṭṭha दृष्ट < विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] विलोकित, कथित, प्रतिपादित, अभिमत, ज्ञात, प्रमाण से जाना हुआ, दर्शन, विलोकन, प्रत्यक्ष या अनुमान प्रमाण से जानने योग्य वस्तु seen, viewed, observed, visible, inspected, etc. {शौ.} (विदूषक-) भो! *दिट्ठं* । (भो! दृष्टम्) अभि.शाकु., पृष्ठ 169/2

दिट्ठमेत्त diṭṭha-metta दृष्टमात्र < संज्ञा (नपुं.) [Noun] दृष्टमात्र, अवलोकित, देखते ही seen, looked at, to be seen, just when observed, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) पसीददु वअस्सो। *दिट्ठमेत्तो* ज्जेव अज्जचाणक्केण आणत्तो हिय। (प्रसीदतु वयस्यः। दृष्टमात्र एवार्य-चाणक्येनाज्ञप्तोऽस्मि) मुद्रा., श्लोक 1, पृष्ठ 81/6

दिट्ठसंताण diṭṭha-santāṇa दृष्टसंतान < संज्ञा (पुं.) [Noun] संतान का मुंह देखना offspring, to see the face of child, etc. {शौ.} (पलेव-) ता दाव तुमं जहाकामं पुरुरवसं उवचिट्ठ जाव सो तुइ *दिट्ठसंताणो* भोदि त्ति। (तत्तावत्त्वं यथाकामं पुरुरवसमुपतिष्ठ यावत्स त्वयि दृष्टसन्तानो भवेदिति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-3, पृष्ठ 175

दिट्ठि diṭṭhi दृष्टि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दृष्टि, आँख, नजर, दर्शन, मत, अवलोकन, निरीक्षण, बुद्धि, मति, विवेक eyesight, vision, perception, understanding, knowledge, view, look, intellect {म.}

दिट्ठी दिट्ठत्थामे कज्जधुरव्व णिअए धणुम्मि णिसण्णा। (दृष्टिर्दृष्टस्थाम्नि कार्यधुरेव निजके धनुषि निषण्णा) सेतुबन्धं, गाथा-44/1, पृष्ठ 30

दिट्ठिपध diṭṭhipadha दृष्टिपथ< संज्ञा (पुं.) [Noun] दृष्टिपथ, विलोकित मार्ग the range of sight, visibility, etc. {शौ.} (शोधनक-) ता *दिट्ठिपधं* परिहरिअ गमिस्सं। (तद् दृष्टिपथं परिहृत्य गमिष्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 451/9

दिढ (दढ) diḍha (daḍha) दृढ < विशेषण/ क्रियाविशेषण [Adjective/ Adverb] दृढ़, अच्छी तरह, मजबूत, बलवान, पोढ़, निश्चल, निष्कम्प, समर्थ, प्रगाढ़, कठोर, कठिन, अतिशय, अत्यन्त firm, fixed, steady, resolute, determined, unyielding rigid, inflexible, etc. {शौ.} (सीता-) अय्यउत्त! *दिढं* खु सुमरामि। (आर्यपुत्र! दृढं खलु स्मरामि) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-3/7, पृष्ठ 312

दिढ (दिड्ढ / दढ) diḍha (diḍḍha / daḍha) दृढ < विशेषण/ क्रियाविशेषण [Adjective/ Adverb] दृढ़, मजबूत, बलवान, प्रोढ़, निश्चल, निष्कम्प, समर्थ, अति-निविड़, प्रगाढ़, कठोर, कठिन steady, resolute, determind, unyielding, rigid, inflexible, tense, strong, tight, stable, durable, hard, firm, fixed, etc. {शौ.} (विदूषक-) ताए दंसणेण उम्मादिदो णं केवलं तं आआसदि मं वि बम्हणं असिदव्वविमुहं *दिढं* पीडेदि। (तस्या दर्शनेनोत्मादितो ननु केवलं तामायासयति मामपि ब्राह्मणमशितव्य विमुखं दृढं पीडयति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 153

दिण diṇa दिन < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] दिन, दिवस, वासर day, etc. {म.} सूरो न दिणेण विणा *दिणो* वि न हु सूरविरहम्मि। (सूर्यो न दिनेन विना दिनमपि न खलु सूर्यविरहे) वज्जालग्गं, मित्तवज्जा, पृष्ठ 24/66

दिणअर (दिणकर / दिणयर) diṇaara (diṇakara / dinayara) दिनकर < संज्ञा (पुं.) [Noun] दिनकर, रवि, सूर्य the sun {म.} गहिअदिसापरिणाहं मऊहजालं व *दिणअरस्स* फुरन्तम्। (गृहीतदिक्परिणाहं मयूखजालमिव दिनकरस्य स्फुरत्) सेतुबन्धं, गाथा-50/1, पृष्ठ 33

दिण्ण diṇṇa दत्त < विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] दिया हु आ, वितीर्ण, निवेशित, स्थापित, प्रदत्त, प्रस्तुत किया हु आ, सौंपा हु आ, रक्खा हु आ, स्थापित [सं] भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम गणधर, एक जैन आचार्य (जैन परम्परानुसार) given away, presented, delivered, assigned, handed over, etc. {शौ.} (विदूषक-) भो वअस्स! अअं सन्धी दुवेहिं ज्जेव *दिण्णो* भवे। (भो वयस्य! अयं सन्धिर्द्वाभ्यामेव दत्तो भवेत्) मृच्छ., पृष्ठ 176/3 {शौ.} (चेटी-) अदिणिव्विण्णं अज्जेण पडिवअणं *दिण्णं*। (अति-निर्विण्णमार्येण प्रतिवचनं दत्तम्) मृच्छ., पृष्ठ 127/2

दिन्न dinna दत्त < विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] दिया हु आ, वितीर्ण, निवेशित, स्थापित, प्रदत्त, प्रस्तुत किया हु आ, सौंपा हु आ, रक्खा हु आ, स्थापित [सं] भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम गणधर, एक जैन आचार्य (जैन परम्परानुसार) given away, presented, delivered, assigned, handed over, etc. {म.} संतं न देंति वारेंति देंतयं *दिन्नयं* पि हारंति। (सति न ददति वारयन्ति ददतं दत्तमपि हारयन्ति) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 20/56

दियर (दिअर) diyara (diara) देवर < संज्ञा (पुं.) [Noun] देवर, पति का छोटा भाई husband's younger brother, brother-in-law {म.} असरिसचित्ते *दियरे* सुद्धमणा पिययमे विसमसीले। (असदृशचित्ते देवरे शुद्धमना: प्रियतमे विषमशीले) वज्जालग्गं, सईवज्जा, पृष्ठ 156/465

दियहद्ध diyahaddha दिवसार्ध < संज्ञा (नपुं.) [Noun] आधा दिन, दिवस का अर्द्ध भाग half day, half part of a day {म.} पढम च्चिय *दियहद्धे* कुड्डो रेहाहि चित्तलिओ। (प्रथम एव दिवसार्धे कुड्यं रेखाभिश्चित्रितम्) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 128/377

दिव्व divva दिव्य < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] देव सम्बन्धी, भाग्य, स्वर्ग सम्बन्धी, स्वर्गीय, उत्तम, सुंदर, मनोहर, मुख्य, प्राचीन काल में अपुत्रक राजा की मृत्यु हो जाने पर जिस चमत्कार-जनक घटना से राजगद्दी के लिए किसी मनुष्य का निर्वाचन होता था वह हस्ति-गर्जन, अश्व-हेषा आदि अलौकिक प्रमाण, तेला तीन दिन divine, etc. {म.} तं जह *दिव्वा* तह दिव्व-माणुसी माणुसी तह च्चेय। (तद् यथा दिव्या

तथा दिव्यमानुषी मानुषी तथा एव) लीलावई, पृष्ठ 10/35

दिव्वायत्त divvāyatta दैवायत्त< विशेषण [Adjective] भाग्याधीन, भाग्य पर निर्भर dependent on fate {म.} *दिव्वायत्ते* कज्जे सव्वाइ नरस्स विहडंति। (दैवायत्ते कार्ये सर्वाणि नरस्य विघटन्ते) वज्जालग्गं, दिव्ववज्जा, पृष्ठ 42/120

दिशा (दिसा / दिसि / दिसी) diśā (disā / disi / disī) दिश् < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दिशा, पूर्व आदि दस दिशाएँ, प्रौढा स्त्री direction, side, quarter, etc. {मा.} (क्षपणक-) तुम्हाणं उत्तलाए *दिशाए* दक्खणिं दिशं प्पत्थिदाणं दक्खणिदुवालिओ णक्खत्तओ। (युष्माकमुत्तरस्या दिशो दक्षिणां दिशं प्रस्थितानां च दक्षिणद्वारिकं नक्षत्रम्) मुद्रा., श्लोक-18, पृष्ठ-60/4

दिस (दक्ख / पास) disa (dakkha / pāsa) √ दृश्< क्रिया [सक.] [Verb] देखना, अवलोकन करना to see, to observe {शौ.} (नलिनिका-) एत्थ को वि ण *दिस्सदि।* (अत्र कोऽपि न दृश्यते) अविमार., भास., गाथा-4/2, पृष्ठ 124

दिसा (दिसि / दिसी) disā (disi / disī) दिश्/ दिक् < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दिशा, पूर्व आदि दस दिशाएँ direction, side, east etc. ten directions {म.} जच्चंधमोत्तियाइ व *दिसासु* घोलंति नयणाइं। (जात्यन्धमौक्तिके इव दिक्षु घूर्णतो नयने) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 128/376

दीण dīṇa दीन < विशेषण [Adjective] दीन, गरीब, दुःखित, हीन, न्यून, शोकातुर poor, indigent, needy, humble, unfortunate, etc. {म.} *दीण* अब्भुद्धरिउं पत्ते सरणागए पियं काउं। (दीनमभ्युद्धर्तुं प्राप्ते शरणागते प्रियं कर्तुम्) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 16/44

दीणक्खर dīnakkhara दीनाक्षर< विशेषण [Adjective] दीन वाणी, दीन वचन needy words, poverty {म.} नो गंतूण खलाणं चवंति *दीणक्खरं* धीरा। (नो गत्वा खलानां जल्पन्ति दीनाक्षरं धीराः) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 34/97

दीव dīva दीप < संज्ञा (पुं.) [Noun] दीप, प्रदीप, आलोक, संगीत का एक प्रकार, प्रदीप का कार्य करने वाला कल्पवृक्ष a lamp, light, bright, shining, a mode of

music or song (believed to cause fire), a kind of Kalpa-vrakksha, etc {म.} *दीवो* वि तग्गयमणो गयं पि तेल्लं न लक्खेइ। (दीपोऽपि तद्गतमना गतमपि तैलं न लक्षयति) वज्जालग्गं, सुरयवज्जा, पृष्ठ 108/319

दीवय (दीवअ) dīvaya (dīvaa) दीपक< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] दीपक, प्रदीप, आलोक, प्रकाश, छन्द विशेष, राग विशेष, प्रकाशक, शोभा कारक lamp, illuminating, bright, shining, light, etc. {म.} अहिणि व्व कुडिलगमणा रोरहरे *दीवय* व्व निण्णेहा। (अहिरिव कुटिलगमना दरिद्रगृहे दीपक इव निःस्नेहा) वज्जालग्गं, बालासंवरणवज्जा, पृष्ठ 192/560

दीह dīha दीर्घ < विशेषण [Adjective] लम्बी/ लम्बा, दो मात्रा वाला स्वर, बड़ा long, deep, long lasting, long vowel {शौ.} (चेटी-) *दीहं* णीससन्ति। (दीर्घं निश्वसतः) मृच्छ., पृष्ठ 133/2

दीहचक्खु dīha-cakkhu दीर्घचक्षु < संज्ञा (नपुं.) [Noun] दीर्घचक्षू, विशाल नेत्र large-eyed, far sighted, etc. {शौ.} (पुरुष-) जेदु कुमारो। अज्ज गुम्माहिकिदो *दीहचक्खू* विण्णवेदि। (जयतु कुमारः। आर्य गुल्माविकृतो दीर्घचक्षुर्विज्ञापयति) मुद्रा., श्लोक 8, पृष्ठ 69/5

दीहरच्छि dīharacchi दीर्घाक्षि < विशेषण [Adjective] दीर्घ/ लम्बी आँख वाली, विशाल लोचन वाली large-eyed, far sighted, etc. {म.} अप्पणकज्जेण वि *दीहरच्छि* थोरयरदीहरणरणया। (आत्म-कार्येणापि दीर्घाक्षि महत्तरदीर्घ-रणरणका:) वज्जालग्गं, पंचमवज्जा, पृष्ठ 98/288

दीहाउ dīhāu दीर्घायुष् < संज्ञा (नपुं.) [Noun] दीर्घजीवी, लम्बी आयु long lived, etc.{चाण्डाली} (चाण्डाल-) *दीहाउओ*! एवं भणन्ते चिलं मे जीव। (दीर्घायुः! एवं भणन् चिरं मे जीव) मृच्छ., पृष्ठ 538/10

दीहिआ dīhiā दीर्घिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वापी, जलाशय, वापी सीढ़ी वाली, कूप-विशेष a lake, to go in a pond, a well or lake with steps {मा.} (भिक्षु-) कधं उदअं मग्गेदि, दूले च *दिग्घिआ* । (कथमुदकं मार्गयति, दूरे च दीर्घिका) मृच्छ., पृष्ठ 447/8

दुआरअ duāra-a द्वारक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] दरवाजा, प्रवेश मार्ग, तोरण, मार्ग,

शरीर के द्वार या छिद्र, साधन या उपाय a door, gate, entrance, entry etc. {म.} (विदूषक-) उग्घाडेहि *दुआरअं।* (उद्घाटय द्वारकम्) मृच्छ., पृष्ठ 152/3

दुआररक्खअ duāra-rakkhaa द्वाररक्षक< विशेषण [Adjective] द्वाररक्षक, द्वारपाल, द्वारा की रक्षा करने वाला gate protector, door keeper, gatekeeper, commissionaire, etc{शौ.}(बकुलावलिका-) तुमं *दुआररक्खओ* होहि। (त्वं द्वाररक्षको भव) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 302/4

दुआरसोहा duāra-sohā द्वारशोभा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दरवाजे की शोभा, द्वारशोभा main gate with decorations {शौ.} (विदूषक-) ता कि एदं पवेसिअ महादेवं विअ *दुआरसोहा* इध घरे णिम्मिदा ? (तत् किम् एतां प्रविश्य महादेवमिव द्वारशोभा इह गृहे निर्मिता ?) मृच्छ., पृष्ठ 244/4

दुक्कय (दुक्किद) dukkaya (dukkida) दुष्कृत < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पाप कर्म, दुष्कृत sinful act, etc. {मा.} (शकार-) *दुक्किदश्श* केलिशे ? (दुष्कृतस्य कीदृश: ?) मृच्छ., पृष्ठ 415/8

दुक्कर dukkara दुष्कर < विशेषण [Adjective] दुष्कर, कठिन, कष्ट साध्य hard to do, difficult to be performed, arduous, hard, troublesome, etc. {म.} सक्किहिइ *दुक्करं* घरगयं पि दट्ठुं तुमं बाला। (शक्ष्यति दुष्करं गृहगतमपि द्रष्टुं त्वां बाला) वज्जालग्गं, ओलग्गावियावज्जा, पृष्ठ 148/437

दुक्ख dukkha दुःख < संज्ञा [Noun] दुःख, कष्ट पीड़ा, क्लेश, मन का क्षोभ, असुख sorrow, suffering, misery, ailment, illness ache, pain, distress, trouble, uneasiness, restlessness {शौ.} (चेटी-) किं विहवमन्ददाए वेसवासप्पसङ्गकादरो *दुक्खं* त्ति जइ ण आअच्छे। (किं विभवमन्दतया वेशवासप्रसङ्गकातरो दुःखमिति यदि नागच्छेत्) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 215

दुक्खभाइ dukkhabhāi दुक्खभागिन् < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] अभागिन्, दुखिया illfated, sorrowful, unhappy, etc. {शौ.} (इरावती-) अण्णहा दुक्खभाइणीए एव्वं ण करीअदि। (अन्यथा दुःखभागिन्यैवं न क्रियते) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19, पृष्ठ 286/3

दुक्खसाअर dukkha-sāara दुःखसागर < संज्ञा (पु.) [Noun] दुःखसागर, गहन दुःख deep distress, endless trouble or mystery, boundless affliction, etc. {शौ.} (सीता-) हा अय्यउत्त! एदस्सिं *दुक्खसाअरे* मं णिक्खविअ कहिं गदो सि। (हा आर्यपुत्र! एतस्मिन् दुःखसागरे मां निक्षिप्य कुत्र गतोऽसि) अभिषेक., भासनाटक., श्लोक-9/5, पृष्ठ 357

दुक्खिय (दुक्खिअ) dukkhiya (dukkhia) दुःखित < विशेषण [Adjective] दुःखित, दुःखयुक्त, दुखिया afflicted, distressed, sorrowful, unhappy, grieved {म.} रज्जावंति न रज्जहिं देंति असोक्खं न *दुक्खिया* हुंति। (रञ्जयन्ति न रज्यन्ते ददत्यसौख्यं न दुःखिता भवन्ति) वज्जालग्गं, बालासंवरणवज्जा, पृष्ठ 188/550

दुग्गम duggama दुर्गम < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] दुःसाध्य, मुश्किल, कठिन, जहाँ दुःख से प्रवेश किया जा सके वह difficult, inaccessible, unapproachable, difficult to understand, etc. {म.} अप्पाणं अमुयंता जो आरंभंति *दुग्गमं* कज्जं। (आत्माननमुञ्चन्तो य आरभन्ते दुर्गमं कार्यम्) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 32/91

दुग्गय duggaya दुर्गत < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] दुर्गत, दुःखी, विपत्तिग्रस्त, धन-हीन, दरिद्रता, दुःख distressed, indigent, poor, miserable, trembled, oppressed, etc. {म.} अहियाइमाणिणो *दुग्गयस्स* छाहिं पइस्स रक्खंती। (अभिजातिमानिनो दुर्गतास्य च्छायां पत्यू रक्षन्ती) वज्जालग्गं, सुघरिणीवज्जा, पृष्ठ 156/462

दुज्जण dujjaṇa दुर्जन < संज्ञा (पुं.) [Noun] दुष्ट मनुष्य, खल wicked person, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) अवरज्झन्तेण वि *दुज्जणेण* उवकिदं। (अपराध्यमपि दुर्जनेन उपकृतम्) मृच्छ., पृष्ठ 53/1

दुज्जय dujjaya दुर्जय < विशेषण [Adjective] दुर्जय, जो कष्ठ से जीता जा सके unconquerable, invincible, etc. {शौ.} (सहजन्या-) सहि! जुत्तं भणासि *दुज्जओ* दाणओ त्ति। (सखि! युक्तं भणसि दुर्जयो दानव इति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12/1, पृष्ठ 146

दुज्जाद (दुज्जाय) dujjāda (dujjāya) दुर्जात < विशेषण [Adjective] दुर्जात्, विपदा, दुःख से निकलने योग्य qualified out of misery, etc. {शौ.} (मालविका-) तुम दाव *दुज्जादे* गच्छतस्स सहायिणी होहि। (त्वं तावद् दुर्जाते गच्छतः सहायिनी भव) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-14, पृष्ठ 281/3

दुट्ठ duṭṭha दुष्ट < विशेषण [Adjective] दुष्ट, दोष युक्त, दूषित evil-minded, vicious, bad, depraved, profligate, etc. {शौ.} (चन्दनदास-) उवक्खित्तं णेण *दुट्ठेण* किंपि। (उपक्षिप्तमनेन दुष्टेन किमपि) मुद्रा., श्लोक-21, पृष्ठ 14/1

दुट्ठचेडिआ duṭṭha-ceḍiā दुष्टचेटिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दुष्ट दासी, दुष्ट सेविका bad female slave {शौ.} (विदूषक-) सत्थि भोदीए। एदं *दुट्ठचेडिअं* पेक्खिअ तं राअरहस्सं हिअअं भिन्दिअ णिक्कमदि विअ। (स्वस्ति भवत्यै। एतां दुष्टचेटिकां प्रेक्ष्य तद्राजरहस्यं हृदयं भित्त्वा निष्क्रामतीव) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 152

दुदिअ (दुइअ / दुइज्ज / दुईअ / बीय) dudia (duia / duijja / duīa/ bīya) द्वितीय < विशेषण [Adjective] दूसरा second {शौ.} (विदूषक-) एदु एदु अज्जो! इमं *दुदिअं* पओट्ठं पविसदु अज्जो। (एतु एतु आर्यः! इमं द्वितीयं प्रकोष्ठं प्रविशतु आर्यः) मृच्छ., पृष्ठ 232/2

दुद्दिण duddiṇa दुर्दिन < विशेषण [Adjective] बुरा दिन, बादलों से व्याप्त दिन a bad day in general, a rainy or cloudy day, stormy or rainy weather {शौ.} (विदूषक-) अरे! कहि तुमं ईदिसे *दुद्दिणे* अन्धआरे आअदो। (अरे! कस्मिन् त्वमीदृशे दुर्दिने अन्धकारे आगतः) मृच्छ., पृष्ठ 269/5

दुप्पेच्छ duppeccha दुष्प्रेक्ष्य< विशेषण [Adjective] दुष्प्रेक्ष, अदर्शनीय difficult to be looked at, disagreeable to the sight, etc. {म.} कामणिहाणो व्व थणा पुण्ण-विहूणाण *दुप्पेच्छा* । (काम-निधानमिव स्तनौ पुण्यविहीनानां दुष्प्रेक्ष्यौ) वज्जालग्गं, थणवज्जा, पृष्ठ 104/304

दुब्बल dubbala दुर्बल < विशेषण [Adjective] दुर्बल, निर्बल weak, feeble,

thin, lean {म.} नरणाह मह कुडुंबं छुहछुहियं *दुब्बलं* होइ। (नरनाथ मम कुटुम्बं सुधाधवलितं (क्षुधाक्षुधितं) दुर्बलं भवति) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 54/161

दुब्भिक्खिकाल dubbhikkha-kāla दुर्भिक्षकाल < संज्ञा (पुं.) [Noun] बुरा समय, दुर्भिक्षकाल famine, etc. {शौ.} (विदूषक-) *दुब्भिक्खकाले* वुड्ढरंको विअ उद्धकं सासाअसि 'एसा सा सा' त्ति। (दुर्भिक्षकाले वृद्धरङ्क इव उर्ध्वकं श्वासायसे 'एषा सा सा' इति) मृच्छ., पृष्ठ 269/5

दुम्मुह dummuha दुर्मुख (द्विमुख) < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] दुर्मुख, द्विमुख, दो मुख वाला, बलदेव का धारिणी देवी से उत्पन्न एक पुत्र (जैन परम्परानुसार) ugly, two faced, etc. {म.} नहमास-भेयजणणो *दुम्मुहओ* अत्थि-खंडणसमत्थो। (नखमांसभेदजननो दुर्मुखो(द्विमुखो)ऽर्थि-(ऽस्थि-) खण्डनसमर्थः) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 18/51

दुम्मोअ du-mmoa दुर्मोक < विशेषण [Adjective] छूटने वाली, दुःख से छुड़ाने योग्य released, abatement, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) आं *दुम्मोआ* विअ मे पडिहादि। तहा वि मोआइस्सं दाव। (आम् दुर्मोच्येव मे प्रतिभाति। तथापि मोचयिष्ये तावत्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक- 17/1, पृष्ठ 149

दुराआर (दुरायार) durāāra (durāyāra) दुराचार< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] दुराचार, दुराचारी, दुष्ट आचरण वाला, दुष्ट आचरण misconduct, amoral, vicious, wrongdoing, wrongful conduct, etc. (सिद्धार्थक-) तदो असमिक्खकारी एसो *दुराआरो* त्ति उज्झिअ मलअकेदुकडअं कुसलदाए भअविलोलसेणिअपरिवारा सकं सकं विसअं अभिप्पत्थिदा पत्थिवा। (ततो ऽसमीक्ष्यकार्येष दुराचारो इत्युज्झित्वा मलयकेतु कटकभूमि कुशलतायै भयविलोलसैनिकपरिवाराः स्वक स्वक विषयमभिप्रस्थिताः पार्थिवाः) मुद्रा., श्लोक 1, पृष्ठ 81/6

दुल्लक्ख dullakkha दुर्लक्ष्य < विशेषण [Adjective] दुर्लक्ष्य, दुर्विज्ञेय, अलक्ष्य, जो कठिनाई से देखा जा सके hardly visible, difficult to see, bad intention, etc. {म.} अव्वो महाणुभावा विरज्जमाणा वि

दुल्लक्खा । (अहो महानुभावा विरज्यमाना अपि दुर्लक्ष्या) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 94/279

दुल्लह dullaha दुर्लभ < विशेषण [Adjective] कठिनता से प्राप्त, विशेष, दुर्लभ, अप्राप्य difficult to be attained or accomplished, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) *दुल्लहा* गुणा विहवा अ। (दुर्लभा गुणा विभवाश्च) मृच्छ., पृष्ठ 129/2

दुव्वोज्झ duvvojjha दुर्वाह्य< विशेषण [Adjective] दुर्वह, दुःख से ढोने योग्य unbridled, difficult to bear or carry, unendurable, intolerable, insupportable {म.} अह तोडइ नियकंधं अह कड्ढइ गुरुभरम्मि *दुव्वोज्झं* । (अथ त्रोटयति निजस्कन्धमथ कर्षति गुरुभारे दुर्वाह्यम्) वज्जालग्गं, धवलवज्जा, पृष्ठ 62/181

दुश्शाशळ / दुस्सासण duśśāśḷa / dussāsaṇa दुःशासन / दुशासन < संज्ञा (पुं.) [Noun] दुःशासन, दुर्योधन का एक छोटा भाई, कौरव विशेष Duśśāsana, younger brother of Duryodhana {मा.} अहं तुमं गेण्हिअ केशहत्थे *दुश्शाशळे* शीदमिवाहु ळामि। (अहं त्वां गृहीत्वा केशहस्ते दुःशासन सीतामिवाहरामि) चारु. भासनाटक.,गाथा-12/1,पृष्ठ 200

दुस्संद (दुस्संत) dussansa (dussanta) दुष्यन्त < संज्ञा (पुं.) [Noun] चन्द्रवंशीय एक राजा, कालिदास के प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् का नायक, शकुन्तला का पति a king of chandra clan , hero of Śākuntala drama, husband of Śākuntala, etc. {शौ.} (बाल-) मम क्खु तादो *दुस्सन्दो*, ण तुमं। (मम खलु तातो दुष्यन्तेः, न त्वं) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/7, पृष्ठ 127

दुहिअ duhia दुःखित < विशेषण [Adjective] दुःखित, पीडित, दुःख युक्त afflicted, distressed, sorrowful, unhappy, grieved, etc. {म.} दइआरहिओ अहिअं *दुहिओ* विरहाणुगओ परिमंथरओ। (दयितारहितोऽधिकं दुःखितो विरहानुगतः परिमत्थरः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-14/4, पृष्ठ 199

दुहिआ duhiā दुहितृ< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दुहिता, लड़की, पुत्री daughter {शौ.} (देवी-) हं उय्याणं गआ मे *दुहिआ।*

(अहं उद्यानं गता मे दुहिता) अविमार., भास., गाथा-4/1, पृष्ठ 111

दूद (दूअ) dūda (dūa) दूत संज्ञा (पुं.) [Noun]\ दूत, संदेश वाहक messenger, emissary, legate, spy, secret agent {शौ.} (देवी-) णं महाराएण कहिदं-कुरङ्गीणिमित्तं *दूदो* आअदत्ति। (ननु महाराजेन कथितम्-कुरङ्गीनिमित्तं दूत आगतइति) अविमार., भास., गाथा-1/1, पृष्ठ 110

दूम dūma √दू, √दावय् < क्रिया [सक.] [Verb] परिताप करना, संताप करना to sorrow, to heat {म.} जं जस्स मम्मभेयं चालिज्जंतं च *दूमए* हिययं। (यद्यस्य मर्मभेदम् उच्यमानं च दूनयति हृदयम्) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 28/81

दूर dūra दूर < विशेषण [Adjective] दूर, असमीप, दूरस्थित, अन्तरित distant, remote, removed (as a difficulty), etc. {म.} दूरट्ठिया न दूरे सज्जणचित्ताण पुव्वमिलियाणं। (दूरस्थिता न दूरे सज्जनचित्तानां पूर्वमिलितानाम्) वज्जालग्गं, नेहवज्जा, पृष्ठ 26/77

दूल (दूर) dūla (dūra) दूर < संज्ञा/विशेषण [Noun/ Adjective] दूर, असमीप, अत्यन्त दूरस्थित, अन्तरित distant, remote, far, far off, far away, etc. {म.} (पुरुष-) *दूले* पच्चासत्ती दंसणं नि दुल्लभधणा। (दूरे प्रत्यासत्तिर्दर्शनमपि दुर्लभधन्यै:) मुद्रा., श्लोक-4, पृष्ठ 52/4

दूस dūsa √दूष् < क्रिया [सक.] [Verb] दूषित करना to spoil, to contaminate, to blame {म.} सो सोहइ *दूसंतो* कइयणरइयाइ विविहकव्वाइं। (स शोभते दूषयन् कविजनरचितानि विविधकाव्यानि) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 10/26

दूसिअ dūsia दूषित < विशेषण [Adjective] दूषण युक्त, कलङ्कयुक्त spoiled, foul, polluted, tainted, contaminated, infected, blamed, etc. {शौ.} (धात्री-) जइ एव करीअदि, राअउळं *दूसिअं* होइ। (यद्येवं क्रियते, राजकुलं दूषितं भवति) अविमार., भास., गाथा-4/2, पृष्ठ 122

देव deva देव < संज्ञा (पुं.) [Noun] देव, देवता god, divine being, deity, heavenly-living being {शौ.} (प्रियंवदा-) सहि! एहि

देक्कज्जं दाव णिव्वत्तेम्ह। (सखि! एहि देवकार्यं तावन्निवर्तयाव:) अभि. शाकु., पृष्ठ 263/4

देवकय्य (देवकज्ज) deva-kayya (deva-kajja) देवकार्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] देवकार्य, पवित्र कार्य religious ceremony, worship of a God, oblations {शौ.} (विदूषक-) किदं *देवकय्यं* ति तत्तहोदो निवेदइस्सामो। (कृतं देवकार्यमिति तत्रभवतो निवेदयिष्याव:) चारु., भासनाटक., गाथा-26/1, पृष्ठ 209

देवदा (देवया) devadā (devayā) देवता < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] देव, अमर, परमात्मा deity, celestial, divine dignity or power , divinity {शौ.} (सीता-) णं उद्दिसिअ *देवदाणं* पणामो करीअदि। (एनमुद्दिश्य देवतानां प्रणामः क्रियते) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-24/1, पृष्ठ 262

देवर devara देवर < संज्ञा (पुं.) [Noun] देवर, पति का छोटा भाई husband's younger brother, brother-in-law {म.} जइ *देवरेण* भणिया खग्गं घेत्तूण राउले वच्च। (यदि देवरेण भणिता, खड्गं गृहीत्वा राजकुले व्रज) वज्जालग्गं, हियालवज्जा, पृष्ठ 212/622

देवसमुदाआर deva-samudāāra देवसमुदाचार< संज्ञा (पुं.) [Noun] देव पूजा, देव के लिए समीचीन आचरण worship of a deity or God, etc. {शौ.} (सीता-) अस्समपदविभवेण अणुट्ठिओ *देवसमुदाआरो*। (आश्रमपदविभवेनानुष्ठितो देवसमुदाचारः) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-5,पृष्ठ 293

देवी devī देवी< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] देवी, स्त्री, औरत, पूजनीया महिला, राजपत्नी, दुर्गा, पार्वती goddess, female deity, title of reverence to lady, noble lady, lady, etc. {शौ.} (कुमुदिनी-) अहं वि एदं अंगुलीअअं *देवीए* उवणइस्सं। (अहमप्येतदङ्गुलीयकं देव्यायुपवेष्यामि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-3/1,पृष्ठ 242

देव्वद (देवय) davvada (devaya) दैवत< संज्ञा (नपुं.) [Noun] दैवीय, देव, देवता, भगवान् सम्बन्धी divine, godly, celestial, natural happening by chance, etc. {शौ.} (हिडिम्बा-) उम्मत्तअ *देव्वदं* खु अम्हाणं।

(उन्मत्तक दैवतं खल्वस्माकम्) मध्यम., भासनाटक, श्लोक-48/1, पृष्ठ 436

देस desa देश < संज्ञा (पुं.) [Noun] देश, जनपद, अंश, भाग, अवसर, स्थान country, region, place, space, etc. {म.} को *देसो* उव्वसिओ को वासिओ सुहअ जत्थ चलियो सि। (को देश उद्वासित: को वासित: सुभग यत्र चलितोऽसि) वज्जालग्गं, ओलग्गावियावज्जा, पृष्ठ 150/442

देसंतर desantara देशान्तर < संज्ञा (पुं.) [Noun] देशान्तर दूसरा देश, विदेशी भाग other country, foreign country, alien land, longitude, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) *देसन्तरं* पत्थिदो म्हि। (देशान्तर प्रस्थितोऽस्मि) मुद्रा., श्लोक 2, पृष्ठ 64/5

देसकाल (देसकाळ / देसयाल) desakāla (desakāḷa / desayāla) देशकाल < संज्ञा (पुं.) [Noun] देशकाल, योग्यसमय, प्रसंग time and space, right time, context {शौ.} (कैकेयी-) जाद! *देसकाले* णिवेदेमि। (जात! देशकाले निवेदयामि) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-20/3, पृष्ठ 282

दोलाघर dolā-ghara दोलागृह < संज्ञा (नपुं.) [Noun] झूला घर, दोला गृह swinging cot, cradle house, etc. {शौ.} (इरावती-) अलं मयि सिणेहेण। कहेहि कुदो दाणिं ओगमिदव्वं *दोलाघरं* पढमं गदो भट्टा ण वेत्ति। (अलं मयि स्नेहेन। कथय कुत इदानीमवगन्तव्यं दोलागृहं प्रथमं गतो भर्ता न वेति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 277/3

दोस dosa दोष < संज्ञा (पुं.) [Noun] दोष, दूषण, दुर्गुण, ऐब defect, flaw, fault, quit, blame {म.} भमरो भमरो त्ति गुणोज्झिएहि कुसुमेहि लाइओ *दोसो।* (भ्रमरो भ्रमर इति गुणोज्झितै: कुसुमैरारोपितो दोष:) वज्जालग्गं, इंदिंदिरवज्जा, पृष्ठ 84/247

दोहग्ग dohagga दौर्भाग्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] दुर्भाग्य, दुष्ट भाग्य unfortunate, unlucky {म.} वाहि न लज्जसि नच्चसि *दोहग्गे* पायडिज्जंते। (व्याधि न लज्जसे नृत्यसि दौर्भाग्ये प्रकट्यमाने) वज्जालग्गं, वाहवज्जा, पृष्ठ 70/204

दोहल dohala दोहद < संज्ञा (पुं.) [Noun] दोहद, गर्भिणी स्त्री का मनोरथ morbid desire or craving of a pregnant woman {म.} पुच्छियदोहलसद्धा उययं

चिय *दोहलं* कहइ। (पृष्टदोहदश्चद्वोदकमेव दोहदं कथयति) वज्जालग्गं, सुघरिणीवज्जा, पृष्ठ 154/457

ध

ध dha ध < संज्ञा (पुं.) [Noun] स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular dental consonant {म.} खघथ*ध*भाण हकारो मुहमेहकहावहू पह्वएसु। (खघथधभानां हकारो मुखमेघकथावधूप्रभूतेषु) नाट्य., श्लोक- 10/17, पृष्ठ 543

धण dhaṇa धन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] धन, संपत्ति, दौलत, निधि, रुपया, मूल्यवान संपत्ति, पूँजी, विजेता का प्राप्त होने वाला पुरस्कार, धनिष्ठा नक्षत्र, जोड़ की राशि wealth, property, money (gold, chattels), any valued possession, dearest treasure, the lunar mansion called dhaniṣṭhā, etc. {म.} ताणं चिय नत्थि धणं जीयं वाहस्स अप्पंति। (तेषामेव नास्ति धनं जीवं व्याधस्यार्पयन्ति) वज्जालग्गं, हरिणवज्जा, पृष्ठ 74/215

धणवंत (धणमंत) dhaṇavanta (dhaṇamanta) धनवान् < विशेषण [Adjective] धनवान् wealthy, rich {म.} जं खु खमेइ समत्थो *धणवंतो* जं न गव्वमुव्वहइ। (यत् खलु क्षमते समर्थो धनवान् यन्न गर्वमुद्वहति) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 30/87

धणिअ dhaṇia धनिक < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] धनिक, स्वामी, पैसादार rich, wealthy, opulent, affluent, plutocrat, rich and wealthy person {मा.} (संवाहक-) अय्ये! *धणिआदो* । (आर्ये! धनिकात्) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 216

धणु dhaṇu धनुष् < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] धनुष, कार्मुक, चार हाथ का परिमाण, ज्योतिष प्रसिद्ध एक राशि bow, arc of a circle, a measure equal to the length of four hands, the sign called Sagittarius of the zodiac {म.} सज्जीअं विअ जाअं अणोणमन्तं पि रामदिट्ठीअ *धणुं।* (सजीवमिव जातमनवनतमपि रामदृष्ट्या धनुः) सेतुबन्धं, गाथा-45/1, पृष्ठ 31

धणुव्वेद (धणुवेद) dhaṇuvveda (dhaṇuveda) धनुर्वेद < संज्ञा (पुं.) [Noun] धनुर्विद्या बोधक शास्त्र, चार उपवेदों में से एक उपवेद, धनुष चलाना the science of archery one of the four upavedas, etc.

{शौ.} (तापसी-) गहीदविज्जो *धणुव्वेदे* अहिविणीदो। (गृहीतविद्यो धनुर्वेदे sभिविनीतः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10/5, पृष्ठ 225

धण्णा (धन्ना) dhaṇṇā (dhannā) धन्या < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] धन्या, प्यारी, एक स्त्री का नाम virtuous lady name, wet-nurse, a name of a foster-mother, etc. {शौ.} (उर्वशी-) का णु क्खु *धण्णा* इत्थिआ जा इमिणा पत्थिअमाणा अत्ताणअं किदत्थेइ। (का नु खलु धन्या स्त्री या अनेन प्रार्थ्यमानात्मानं कृतार्थयति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 161

धत्ती dhattī धात्री < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] धाई, उपमाता, दाई, पृथिवी, भूमि, आँवले का पेड़ step mother, nourishing lady, foster mother, the earth {शौ.} (विदूषक-) अज्ज णअरापणाळिन्दे सुणामि तत्तहोदो गिहादो णिग्गदा राअदारिआए *धत्ती* सही अत्ति। (अद्य नगरापणालिन्दे शृणोमि तत्रभवतो गृहान्निर्गता राजदारकाया धात्री सखी चेति) अविमार., भास., गाथा-7/2, पृष्ठ 128

धन्न (धण्ण) dhanna (dhaṇṇa) धन्य < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] सौभाग्यशाली, भाग्यवान्, महाभाग, ऐश्वर्यशाली, धन प्रदान करने वाला fortunate, lucky, blessed, wealthy, bestowing or conferring wealth, etc. {म.} ते *धन्ना* ताण नमो ते गरुया माणिणो थिरारंभा। (ते धन्यास्तेभ्यो नमस्ते गुरवो मानिनः स्थिरारम्भाः) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 34/101

धम्म dhamma धर्म < संज्ञा (पुं.) [Noun] कर्तव्य, जो प्राणियों को उत्तम सुख में पहुँचा दे ("उत्तमे सुखे धरतीति धर्मः") उपासना करना, सत्कर्म, जाति-सम्प्रदाय आदि के प्रचलित आचार का पालन, धार्मिक या नैतिक गुण, भलाई, नेकी, अच्छे काम, शुभ कर्म, कुशल जनक-अनुष्ठान, सदाचार, पुण्य, स्वभाव, गुण, पर्याय religion, daily observances of the rituals one of the four essential puruśārtha householder for a person, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) आवण्णस्स विसअणिवासिणो जणस्स अत्तिहरेण रण्णा होदव्वं ति एसो वो *धम्मो*। (आपन्नस् विषयनिवासिनो जनस्यार्तिहरेण राज्ञा भवितव्यमित्येष युष्माकं धर्मः) अभि. शाकु., पृष्ठ 239/3

धम्मआरि dhamma-āri धर्मचारिन् < विशेषण [Adjective] धर्म के अनुसार आचरण करने वाला, भद्र व्यवहार करने वाला, कानून का पालन करने वाला, सद्गुणी, नेक, सन्यासी practising ethics or dharma or leading ethical life, observing the law, virtuous, righteous, etc. {शौ.} (अनसूया-) सणाहा दाणिं *धम्मआरिणो।* (सनाथा इदानीं धर्मचारिण:) अभि.शाकु., पृष्ठ 147/1

धम्मपदिणी dhamma-pdiṇī धर्मपत्नी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] धर्मपत्नी, भार्या wife {शौ.} (सानुमती-) अहवा सुदं मए सउन्दलं समस्सासअन्तीए महेंदजणणीए मुहादो-जण्णभोगोस्सुआ देवा एव्व तहा अणुचिट्ठिस्सन्ति जइ अइरेण *धम्मपदिणिं* भट्टा अहिणन्दिस्सदि त्ति। (अथवा श्रुतं मया शकुन्तलां समाश्वासयन्त्या महेन्द्रजनन्या मुखात्-यज्ञभागोत्सुका देवा एव तथानुष्ठास्यन्ति यथाऽचिरेण धर्मपत्नीं भर्ताऽन्दिष्यतीति) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-24/6, पृष्ठ 111

धम्मभादु (धम्मभादा) dhamma-bhādu (dhamma-bhādā) धर्मभ्राता/ धर्मभ्रातृ < संज्ञा (पुं.) [Noun] धर्म भाई, एक ही धर्म को मानने वाले लोग या प्रकृति के लोग spiritrual brother, man of the same sect, etc. {शौ.} (चर-) हंहो बह्मण अत्तकेरकस्स जेव्व मह *धम्मभादुणे* घरं होदि। (हहो ब्राह्मण आत्मीयस्यैव मम धर्मभ्रातुर्ग्रहं भवति) मुद्रा., श्लोक-17/1, पृष्ठ 6

धम्मसिद्धि (धम्मशिद्धि) dhamma-siddhi (dhamma-śiddhi) धर्मसिद्धि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] धर्मसिद्धि, धर्म की सिद्धि religious proof, etc. {शौ.} (क्षपणक-) सावगा, *धम्मसिद्धी* होदु। (श्रावक, धर्मसिद्धिर्भवतु) मुद्रा., श्लोक 2, पृष्ठ 63/5

धम्मासण dhammāsaṇa धर्मासन < संज्ञा (नपुं.) [Noun]धर्मासन, न्यायासन the throne of justice, judicial seat, tribunal, etc. {शौ.} (प्रतीहारी-) ता जाव *धम्मासण*गदं देवं पडिवालेमि। (तद्यावद्धर्मासनगतं देवं प्रतिपालयामि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., अंक-5, पृष्ठ 312

धम्मासणसमुत्थिद dhammāsaṇa-samutthida धर्मासनसमुत्थित< विशेषण [Adjective] न्यायासन से उठे, न्यायासन से खड़े हु ये taking standing posture while geting up from the seat of justice, etc.

{शौ.} (विदूषक-) एसो उण पिअवअस्सो *धम्मासणसमुत्थिदो* इदो एव आअच्छदि। (एष पुनः प्रियवयस्यो धर्मासनसमुत्थित इत एवागच्छति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2/2, अंक-2/2, पृष्ठ 153/2

धम्मिअ (धम्मिग) dhammia (dhammiga) धार्मिक < विशेषण [Adjective] धार्मिक, धर्म-तत्पर, धर्मसम्बन्धी religious, pious, virtuous, just, righteous {म.} जो *धम्मिओ* न पावइ कुरबयं मंदारयं च मुग्गरयं। (यो धार्मिको न प्राप्नोति कुरबकं (कुरतं) मन्दारकं (मन्दारतं) च मुद्गरकम् (मुग्धारतम्)) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 178/522

धम्मिट्ठ dhammiṭṭha धर्मिष्ठ < विशेषण [Adjective] अतिशय धार्मिक very pious, religious, most pious {शौ.} (सूत्रधार-) *धम्मिट्ठो* खु णिओओ। (धर्मिष्ठः खलु नियोगः) चारु., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 193

धरणी dharaṇī धरणी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पृथ्वी, धरती, धरणी earth, etc. {म.} बे पुरिसा धरइ धरा अहवा दोहिं पि धारिया *धरणी* । (द्वौ पुरुषौ धरति धराथवा द्वाभ्यामपि धारिता धरणी) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 45

धरणीगोअर dharṇī-goara धरणीगोचर < संज्ञा (पुं.) [Noun] धरती पर विचरण करने वाला, धरती पर रहने वाला earth vendor, etc. {शौ.} (नटी-) अज्ज को उण एसो *धरणीगोअरो* भविअ चन्दं गहाहिहवादो रक्खिदुं इच्छदि। (आर्यः कः पुनरेष धरणीगोचरो भूत्वा चन्द्रं ग्रहाभिभवाद्रक्षितुमिच्छति) मुद्रा., श्लोक-6/1, पृष्ठ 2

धव dhava धव < संज्ञा (पुं.) [Noun] धव, वृक्ष विशेष, पति a kind of tree, husband, etc. {म.} अववक्कल-णीसह-मूल-बंधुराअंत-बाल-*धव*-कुंजा।
(अपवल्कलनिः सहमूलबन्धुरायमाणबाल-धवकुञ्जाः) गउडवहो, गाथा-620, पृष्ठ 93

धवल dhavala धवल< संज्ञा (पुं.) [Noun] उत्तम बैल an excellent bull {म.} *धवलस्स* महाभरकड्ढणाइ कंधो च्चिय कहेइ। (धवलस्य महाभरकर्षणानि स्कन्ध एव कथयति) वज्जालग्गं, धवलवज्जा, पृष्ठ 60/179

धारिद dhārida धारित/ धृत < विशेषण [Adjective] धारण किया हुआ, पकड़वाया हुआ carried, held, etc.{शौ.} (चन्दनक-) एदे *धारिदा* मए वइल्ला अवलोएहि। (एतौ धारितौ मया वलीवर्दौ अवलोकय) मृच्छ., पृष्ठ 343/6

धीआ dhīā दुहितृ < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दुहिता, बेटी, पुत्री daughter{शौ.}(रदनिका-) आ दासीए *धीए* ! किं भणासि ? (आ दास्या: पुत्रि! किं भणसि ?) मृच्छ., पृष्ठ 174/3

धीर dhīra धीर < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] धैर्यवाला, सुस्थिर, अचञ्चल, बुद्धिमान, विद्वान, विवेकी, शिष्ट, सहिष्णु, परमेश्वर, जिनदेव, गणधरदेव (जैन परम्परानुसार) courageous, steady, constant, strong minded, brave, bold, sensible, intelligent, etc. {म.} अवहत्थिऊण दिव्वं करेइ *धीरो* समारद्धं। (अपहस्त्य दैवं करोति धीर: समारब्धम्) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 36/106

धुत्तीरय dhuttīraya धतूरक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] धतूरा, धतूरे का पौधा the white thorn-apple {म.} सो गहियकरंडो च्चिय कत्तो *धुत्तीरयं* लहइ। (स गृहीतकरण्ड एव (गृहीतकराण्डक एव) कुतो धतूरक (धूर्तारतं) लभते) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 178/522

धुरंधर dhurandhara धुरन्धर< विशेषण [Adjective] धुरी को धारण करने वाला, भार को वहन करने में समर्थ, किसी कार्य को पार पहुँचाने में शक्तिमान, भार-वाहक bearing the yoke, capable of carrying load, fit to be harnessed, laden with good qualities or important duties, chief, foremost, pre-eminent {म.} कत्तो लब्भंति *धुरंधराइ* धवलाइ भरसमत्थाइं। (कुतो लभ्यन्ते धुरन्धरा धवला भरसमर्था:) वज्जालग्गं, धवलवज्जा, पृष्ठ 62/185

धुवागीद dhuvā-gīda ध्रुवागीत < विशेषण [Adjective] ध्रुवागीत, राग का एक प्रकार a specific kind of a song, etc. {शौ.} (स्थापक-) एदं *धुवागीदं* आलवीअदि। (एतद् ध्रुवागीतम् आलप्यते) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 5/4

धूम dhūma धूम < संज्ञा [Noun] धूम, अग्नि चिह्न, क्रोधी, हींग आदि बघार, क्रोध, अप्रीति smoke, flame, etc. {शौ.} (सर्वा-)

हा हा *धूमो* उट्ठिदो। (हा हा धूम उत्थितः) बाल., भास नाटक., श्लोक-3/3, पृष्ठ 545

धोद (धोअ) dhoda (dhoa) धौत < विशेषण [Adjective] धोया हुआ, धुले हुए washed, cleansed {शौ.} (विदूषक-) ण केवलं दासीए पुत्तेण पादा धोदा, मुहं पि *धोदं* । (न केवलं दास्याः पुत्रेण पादौ धौतौ, मुखमपि धौतम्) चारु., भासनाटक., पृष्ठ 225/3

धोव (धोअ) dhova (dhoa) √ धाव् < क्रिया [सक.] [Verb] धोना, प्रक्षालित करना to wash, etc.{शौ.} (विदूषक-) रअणिअं सद्दावेहि पादाइं *धोइदुं* । (रदनिकां शब्दय पादौ धावितुम्) मृच्छ., पृष्ठ 152/3

न

न na न < संज्ञा (पुं.) [Noun] दंत्य स्थानीय व्यंजन वर्ण a particular dental consonant. *न* युवर्णस्यास्वे। हेम.1/6 पृष्ठ 428

न na न < अव्यय [Indeclinable] नहीं, ना, निषेधात्मक अव्यय no, not, prohibitive {म.} जस्स गुरुम्मि न भत्ती, न य बहुमाणो न गउरवं न भयं। (यस्य गुरौ न भक्तिः, न च बहुमानः न गौरवं न भयम्) समण., गाथा-29/3, पृष्ठ 10

नंदण (णंदण) nandaṇa (ṇandaṇa) नंदन < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] उद्यान विशेष, नन्दनवन, आनंदधाम, खुश करने वाला, सुहावना, प्रसन्न करने वाला, पुत्र special garden, pleasure garden, delighting, pleasing, gladdening, a son, etc. {म.} कंकेल्लिपल्लवोव्वेल्लमणहरे जइ वि *नंदणे* चरइ। (कङ्केल्लिपल्लवोद्वेल-मनोहरे यद्यपि नन्दने चरति) वज्जालग्गं, करहवज्जा, पृष्ठ 76/220

नक्खत्त (णक्खत्त) nakkhatta (ṇakkhatta) नक्षत्र < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] नक्षत्र, कृत्तिका, अश्विनी, भरणी आदि (ज्योतिषशास्त्रीय) star, constellation of stars (composed of 27 stars), lunar mansion, a particular branch of star termed as "Nakkhatra", etc. {म.} विवरीए रइबिंबे *नक्खत्ताणं* च ठाणगहियाण। (विपरीते रविबिम्बे (रतिबिम्बे) नक्षत्राणां (नखक्षतानां) च स्थानगृहीतानाम्) वज्जालग्गं, जोइसवज्जा, पृष्ठ 170/501

नच्चिय (णच्चिय) nacciya (ṇacciya) नर्तित < विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] नाचा हुआ, नचाया हुआ danced, made to dance, dancing, moving about, dandled {म.} उत्तिण्णगरुयभारं व *नच्चियं* नरवरकबंधं। (उत्तीर्णगुरुक-भारविय नर्तितं नरवरकबन्धम्) वज्जालग्गं, सुहउवज्जा, पृष्ठ 60/176

नयण (णयण) nayaṇa (ṇayaṇa) नयन< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] नयन, नेत्र, आँख the eye {म.} जं *नयणेहि* न दीसइ हियएण वि जं न चितियं कह वि। (यन्नयनाभ्यां न दृश्यते हृदयेनापि यन्न चिन्तितं कथमपि) वज्जालग्गं, दिव्ववज्जा, पृष्ठ 42/125

नयर (नअर / णयर / णगर) nayara (naara / ṇayara / ṇagara) नगर < संज्ञा (नपुं.) [Noun] शहर city, town {म.} तम्मि य *नयरे* अतीव सयलजणबहुमओ धम्मसत्थसंघायपाढओ, लोगववहारनीइ-कुसलो, अप्पारंभपरिग्गहो, जन्नदत्तो नाम पुरोहिओ त्ति। (तस्मिंश्च नगरे अतीव सकलजनबहुमतः, धर्मशास्त्र-संघातपाठकः, लोकव्यवहारनीति कुशलः, अल्पारम्भ-परिग्रहो यज्ञदत्तो नाम पुरोहित इति) समराइ., पृष्ठ 11/1

नरवइ (णरवइ) naravai (ṇaravai) नरपति < संज्ञा (पुं.) [Noun] राजा, नरपति king {म.} ठड्ढा खलो व्व सुयणो व्व संगया *नरवइ* व्व मंडलिया। (स्तब्धौ खल इव सुजन इव संगतौ नरपतिरिव मण्डलितौ) वज्जालग्गं, थणवज्जा, पृष्ठ 102/301

नरिंद (णरेंद / णरिंद) narinda (ṇarenda / ṇarinda) नरेन्द्र < संज्ञा (पुं.) [Noun] नरेन्द्र, राजा, स्वामी, गारुडिक king, monarch, etc. {म.} ओलग्गिओ सि धम्मम्मि होज्ज एण्हिं *नरिंद* वच्चामो। (अवलग्नोऽसि धर्मे भूया इदानीं नरेन्द्र व्रजामः) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 52/154

नवरि (णवरि) navari (ṇavari) केवल < (अनन्तर) अव्यय [Indeclinable] केवल, अनन्तर, बाद only, next, etc. {म.} एयं चिय *नवरि* फुडं हिययं गाहाण महिलियाणं च। (एतदेव केवलं स्फुटं हृदयं गाथानां महिलानां च) वज्जालग्गं, गाहावज्जा, पृष्ठ 4/11

नह (णह / णक्ख) naha (ṇaha / ṇakkha) नख < संज्ञा (पुं.) [Noun] नख, नाखून nail, etc. {म.} वग्घाण *नहा* सीहाण केसरा मोत्तिया गइंदाणं। (व्याघ्राणां नखा: सिंहानां केसरा मौक्तिकानि गजेन्द्राणाम्) वज्जालग्गं, वाहवज्जा, पृष्ठ 74/214

नाअ nāa ज्ञात < विशेषण [Adjective] जाना हुआ, निश्चय किया हुआ, समझा हुआ, सीखा हुआ known, etc. {म.} परमत्थो जो ताणं सो *नाओ* महच्छइल्लेहिं। (परमार्थो यस्तासां स ज्ञातो महाविदग्धै:) वज्जालग्गं, गाहावज्जा, पृष्ठ 6/14

नायराय (णायराय) nāya-rāya (ṇāya-rāya) नागराज < संज्ञा (पुं.) [Noun] नागों का स्वामी, नागकुमार देवों का स्वामी, इन्द्र विशेष (जैन परम्परानुसार) king of snakes, cobra the king , the king of serpents, the king of snakes particularly termed as " Nāgarāja", etc. {म.} जइ नवरि *नायराओ* देहिं जीहासहस्सेहिं। (यदि केवलं नागराजो द्वाभ्यां जिह्वा-सहस्राभ्याम्) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 22/64

निउण (णिउण) niuṇa (ṇiuṇa) निपुण < विशेषण [Adjective] चतुर, कुशल, निपुण, सूक्ष्म, जो सूक्ष्म बुद्धि से जाना जा सके skilled, adept, efficient, dexterous, expert, clever, perfect, intelligent {शौ.} (संवाहक-) अज्जआए *णिउणं* पच्चादिट्ठोम्हि। (आर्यया निपुणं प्रत्यादिष्टोऽस्मि) मृच्छ., पृष्ठ 136/2 {म.} लहिऊण मालइं पुण सो *निउणो* भमउ जइ भमइ। (लब्ध्वा मालतिं पुन: स निपुणो भ्रमतु यदि भ्रमति) वज्जालग्गं, इंदिंदिरवज्जा, पृष्ठ 84/247

निग्गुण nigguṇa निर्गुण < विशेषण [Adjective] निर्गुण, गुण रहित, गुण-हीन devoid of or beyond all qualities or propensities {म.} सगुणाण *निग्गुणाण* य गरुया पालंति जं जि पडिवन्नं। (सगुणानां निर्गुणानां च गुरव: पालयन्ति यदेव प्रतिपन्नम्) वज्जालग्गं, मित्तवज्जा, पृष्ठ 24/70

निच्चल niccala निश्चल < विशेषण [Adjective] निश्चल, स्थिर, दृढ़ certain, sure, determined, accurate knowledge, etc. {म.} तह कह वि कुणसु सिग्घं जह सुक्कं *निच्चलं* होइ। (तथा कुरू कथमपि

शीघ्रं यथा शुक्रो (शुक्रं) निश्चलो (निश्चलं) भवति) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 170/500

निद्दय (णिद्दय) niddaya (ṇiddaya) निर्दय < विशेषण [Adjective] निर्दय, निष्ठुर pitiless, merciless {म.} *निद्दय* जह सुहियस्स वि जणस्स ओ निवडिओ वाहो। (निर्दय यथा सुखितस्यापि जनस्याहो निपतितो वाष्प:) वज्जालग्गं, ओलग्गावियावज्जा, पृष्ठ 144/428

निद्दाभंग niddā-bhaṅga निद्राभङ्ग < विशेषण [Adjective] नींद का टूटना break in slumber {म.} *निद्दाभंगो* आवंडुरत्तणं दीहरा य नीसासा। (निद्राभङ्ग आपाण्डुरत्वं दीर्घाश्च नि:श्वासा:) वज्जालग्गं, माणवज्जा, पृष्ठ 120/353

निप्फल (णिप्फल) nipphala (ṇipphala) निष्फल < विशेषण [Adjective] फल रहित, निरर्थक fruitless, unsuccessful, meaningless (as a word), seedless {म.} कज्जारंभा होहिंति *निप्फला* कह चिरं कालं। (कार्यारम्भा भविष्यन्ति निष्फला: कथं चिरं कालम्) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 40/117

निम्मिय (णिम्मिअ) nimmiya (ṇimmia) निर्मित < विशेषण [Adjective] निर्मित, रचित, बनाया हुआ constructed, manufactured, produced, created {म.} तिणतूला वि हु लहु यं दीणं दइवेण *निम्मियं* भुवणे। (तृणतूलादपि खलु लघुर्दीनो दैवेन निर्मितो भुवने) वज्जालग्गं, दीणवज्जा, पृष्ठ 46/135

निरंतर (णिरंतर) nirantara (ṇirantara) निरन्तर < विशेषण [Adjective] निरन्तर, व्यवधान-रहित continuous, unremitting, constant {म.} थणजुयलं तीइ *निरंतरं* पि दट्ठूण तारिसं पडियं। (स्तनयुगलं तस्या निरन्तरमपि दृष्ट्वा तादृशं पतितम्) वज्जालग्गं, थणवज्जा, पृष्ठ 106/311

निल्लज्ज (णिल्लज्ज) nillajja (ṇillajja) निर्लज्ज < विशेषण [Adjective] निर्लज्ज, लज्जा रहित shameless, immodest, presumptuous {म.} अज्जं अणज्ज *निल्लज्ज* विज्ज पेज्जाइ न हु कज्जं। (अद्यानार्य निर्लज्ज वैद्य पेयया न खलु कार्यम्) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 174/513

निवडिद nivaḍida निपतित < विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] नीचे पड़ा हुआ, नीचे गिरा हुआ which had been fallen down, etc. {शौ.} (चन्दनक-) कधं अज्जओ गोवालदारओ सेणवित्तासिदो विअ पत्तरहो साउणिअस्स हत्थे *णिवडिदो।* (कथमार्यको गोपालदारक: श्येनवित्रासित इव पत्ररथ: शाकुनिकस्य हस्ते निपतित:) मृच्छ., पृष्ठ 345/6

निव्वह (णिव्वह) nivvaha (ṇivvaha) निर्वह [निर् √वह्] < क्रिया [सक.] [Verb] निर्वाह करना, निभाना, आजीविका चलाना to carry out, to extricate oneself, to live upon, etc. {म.} चोरो व्व कई अत्थं घेत्तूणं कह वि *निव्वहइ।* (चोर इव कविरर्थं गृहीत्वा कथमपि निर्वहति) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 8/22

निव्वहण (णिव्वहण) nivvahaṇa (ṇivvahaṇa) निर्वहण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] निर्वाह, नाटक की एक संधि carrying out, handling, end, etc. {म.} एक्कं चिय सलहिज्जइ दिणेसदियहाण नवरि *निव्वहणं।* (एकमेव श्लाघ्यते दिनेशदिवसयो: केवलं निर्वहणम्) वज्जालग्गं, मित्तवज्जा, पृष्ठ 22/65

निसंस (णिसंस) nisaṁsa (ṇisaṁsa) नृशंस < विशेषण [Adjective] नृशंस, क्रूर inhuman, cruel, savage, brutal, atrocious, merciless, non-sensitive {म.} उवरि महं चिय वम्महं पंच वि बाणा *निसंस* रे मुक्का। (उपरि ममैव मन्मथ पञ्चापि बाणा नृशंस रे मुक्ता) वज्जालग्गं, अणंगवज्जा, पृष्ठ 132/392

निसा (णिसा) nisā (ṇisā) निशा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] निशा, रात्रि, अंधकार, रात night, darkness, etc. {म.} तह वड्ढ भयवइ *निसे* जह से कल्लं चिय न होइ। (तथा वर्धस्व भगवति निशे यथा तस्य कल्यमेव न भवति) वज्जालग्गं, पवसियवज्जा, पृष्ठ 124/365

निहित्त (णिहित्त / णिहिअ) nihitta (ṇihitta / ṇihia) निहित < विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] निहित, स्थापित placed, laid, established, settled {म.} हियए जं च *निहित्तं* तं पि हयासा मुणंति बुद्धीए। (हृदये यच्च निहितं तदपि

हताशा जानन्ति बुद्ध्या) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 96/282

नीय (णीय) nīya (ṇīya) नीच < विशेषण [Adjective] नीच, अधम, जघन्य, अधस्तन low, below dignity, mean, heinous, worst, mean {म.} उन्नय *नीया नीया* वि उन्नया हुं तितक्खण च्चेव। (उन्नता नीचा नीचा अप्युन्नता भवन्ति तत्क्षणादेव) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 44/128

नीरस (णीरस) nīrasa (ṇīrasa) नीरस < विशेषण [Adjective] रस रहित, शुष्क juiceless, blank, tasteless, uninteresting (of person), non sensitive, rough {म.} विज्झाइ *नीरसाणं* हियए सरसाण पज्जलइ। (वीध्यते नीरसानां हृदये सरसानां प्रज्वलति) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 132/390

नीसास nīsāsa निःश्वास < संज्ञा (पुं.) [Noun] निःश्वास, नीचा श्वास, प्राण वायु breath, exhalation, etc. {म.} पंचमसरपसरुग्गारगब्भिणा एंति *नीसासा* । (पञ्चमस्वरप्रसारोद्गारगर्भिता आयन्ति निःश्वासाः) वज्जालग्गं, पंचमवज्जा, पृष्ठ 98/288

नूणं (णूण / णूणं) nūṇam (ṇūṇa / ṇūṇam) नूनम् < अव्यय [Indeclinable] इन अर्थों का सूचक अव्यय निःसंदेह, निश्चय ही, अवश्य, अत्यधिक संभावना के साथ, विश्वस्त रूप से, असंदिग्ध रूप से, तर्क, हेतु, प्रयोजन certainly, assured, surely, most probably, just now, immediately, therefore, etc. {म.} अद्धक्खरभणियाइं *नूणं* सविलास-मुद्धहसियाइं। (अर्धाक्षर-भणितानि नूनं सविलास-मुग्धहसितानि) वज्जालग्गं, गाहावज्जा, पृष्ठ 4/9

नेह (णेह) neha (ṇeha) स्नेह < संज्ञा (पुं.) [Noun] स्नेह, नेह, अनुराग, राग, तैल आदि चिकना पदार्थ, चिकनाई love, affection, oil, oily objects, etc. {म.} सुयणाण जए *नेहो* न चलइ दूरट्ठियाणं पि। (सुजनानां जगति स्नेहो न चलति दूरस्थितानामपि) वज्जालग्गं, नेहवज्जा, पृष्ठ 28/80

प

प pa प < संज्ञा (पुं.) [Noun] ओष्ठ स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular labial consonant प्रथमे *प*-थोर्वा। हेम.,1/55, पृष्ठ 437

पंकुणिमग्ग paṅku-ṇimagga पङ्कनिमग्न < विशेषण [Adjective] पङ्कनिमग्न, कीचड़ में डूबा हुआ In mud, to fall into a morass, etc. {मा.} (नन्दगोप-) *पंकुणिमग्गाणि* भण्ड-षअडआणि आघट्टआमि। (पङ्कनिमग्नान् भाण्डशकटान् आघट्टयामि) बाल., भासनाटक., श्लोक-20/1, पृष्ठ 522

पंच pañca पञ्चन् < संज्ञा (त्रिलिंगी)/ विशेषण [Noun/ Adjective] पाँच five {म.} अच्छउ ता इयरजणो अंगे च्चिय जाइ *पंच* भूयाइं। (आस्तां तावदितरजनोऽङ्ग एव यानि पञ्च भूतानि) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 32/93

पंचम pañcama पञ्चम < विशेषण [Adjective] पाँचवाँ, साहित्यशास्त्र के अनुसार कोकिला के रुदन को भारतीय स्वर ग्राम का पाँचवाँ स्वर माना गया है the fifth, a musical tone produced by the cuckoo etc.{शौ.} (चेटी-) इमं पंचमं पओट्ठं पविसदु अज्जो। (इमं पञ्चमं प्रकोष्ठं प्रविशतु आर्यः) मृच्छ., पृष्ठ 236/4

पंडिअ (पण्डित) paṇḍia (paṇḍita) पण्डित < विशेषण [Adjective] पण्डित, शास्त्रज्ञ, विद्वान्, तत्वज्ञ, संयत बुद्धिमान scholar, learned person, Brahman, priest in a temple, expert, well versed, etc. {शौ.} (विदूषक-) अइ उअट्ठिदा देवी पीठमद्दिअं *पंडिअ* कोसिइं पुरोकरिअ तत्त भोदी धारिणी। (अपि! उपस्थिता देवी पीठमर्दिकां पण्डितकौशिकीं पुरस्कृत्य तत्र भवती धारिणी) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13/1, पृष्ठ 250

पंथिय panthiya पथिक < संज्ञा (पुं.) [Noun] पथिक, मुसाफिर traveller, wayfarer {म.} खलिरक्खरं पि मारइ पंथिय मा पंचमं सुणसु। (स्खलनशीलाक्षरमपि मारयति पथिक मा पञ्चमं श्रुणु) वज्जालग्गं, पंचमवज्जा, पृष्ठ 96/285

पइ pai पति < संज्ञा (पुं.) [Noun] भर्ता, स्वामी, पति, मालिक, रक्षक, श्रेष्ठ, उत्तम, शासक a master, a husband, lord, an owner, governor, ruler, etc. {म.} मज्झं *पइ* कोयंडं पल्लिजुवाणा सवत्तीओ।(मध्यं पतिः कोदण्डः पल्लियुवानः सपत्न्यः) वज्जालग्गं, वाहवज्जा, पृष्ठ 70/208

पइण्णा paiṇṇā प्रतिज्ञा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] प्रतिज्ञा, शपथ, नियम, वचनदान vow, promise, pledge, etc. {शौ.} (इरावती-) वउलावलिए ! दिट्ठिआ वुच्चाहिआरविसआ संपुण्णा दे *पइण्णा।* (वकुलवालिके! दिष्टया दूत्याभिसारविषया संपूर्णा ते प्रतिज्ञा) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15, पृष्ठ 307/4

पइरिक्क [देशज] **pairikka** प्रतिरिक्त < विशेषण [Adjective] प्रतिरिक्त, शून्य, रहित, विशाल, विस्तीर्ण, तुच्छ, प्रचुर, नितान्त, एकान्त स्थान vacated, left off, empty, etc. {म.} पच्छ-ट्ठिआअवत्तण-सुण्णइअ-गवक्ख-मग्ग-*पइरिक्का।* (पश्चात् स्थितातपत्वशून्यीकृतगवाक्षमार्ग-प्रतिरिक्ताः) गउडवहो, गाथा-1083, पृष्ठ 106

पउंजणा (पउंजणया) pauñjaṇā (pauñjaṇayā) प्रयोजना < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] प्रयोग, उपयोग experiment, use, etc. {म.} दुक्खं कीरइ कव्वं कव्वम्मि कए *पउंजणा* दुक्खं। (दुःखं क्रियते काव्यं काव्ये कृते प्रयोजना दुःखम्) वज्जालग्गं, सोयारवज्जा, पृष्ठ 2/6

पउट्ठ pauṭṭha प्रवृष्ट <विशेषण [Adjective] बरसा हुआ rained, showered, met with rain {म.} मंगल-जीमूअ-उलम्मि गअण-वट्ठे *पउट्ठम्मि* । (मंगलजीमूतकुले गगनपृष्ठे प्रवृष्टे) गउडवहो, गाथा-1189, पृष्ठ 175

पउत्त pautta प्रवृत्त < भूतकालिक कृदन्त [Past Participal] प्रवृत्त, चाल, जिसने प्रवृत्ति की हो वह, आरंभ किया गया, शुरु किया गया, प्रगत, स्थिर किया हुआ, व्यस्त, संलग्न, जाने के लिऐ उद्यत, कटिबद्ध, स्थिर, निश्चित, निर्धारित, निर्बाध employed in, begun, commenced, proceeded with, engaged in, occupied with, going to, bound for, fixed, settled,determined, undisputed, flowing, circulated, etc. {शौ.} (निपुणिका-) भट्टिणि! पेक्ख। किं *पउत्तं* अज्जगोदमेण। (भट्टिनि! पश्य। किं प्रवृत्तमार्यगौतमेन) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17, पृष्ठ 284/3

पउत्ति pautti प्रवृत्ति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] प्रवृत्ति, प्रवर्तन, वृतान्त, कार्य tendency, enforcement, inclination, work {म.} णअणेहिँ दासरहिणा दिट्ठो पीओ णु पुच्छिओ णु *पउत्तिं।* (नयनाभ्यां

दाशरथिना दृष्टः पीतो नु पृष्टो नु प्रवृत्तिम्) सेतुबन्धं, गाथा-40/1, पृष्ठ 28

पउत्थ [देशज] **pauttha** प्रोषित < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] प्रवास में गया हुआ gone abroad, migrated {म.} अज्जं चेय *पउत्थो* अज्जं चिय सुन्नयाइ जायाइं। (अद्यैव प्रोषितोऽद्यैव शून्यानि जातानि) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 126/375

पओअ (प्पओअ / पओग) paoa (ppaoa / paoga) प्रयोग < संज्ञा (पुं.) [Noun] उपाय, प्रयोग, शब्द योजना, प्रयत्न, विशेष प्रकार से जुडना use, general usage, application, experiment, etc. {शौ.} (अनसूया-) रोअइ मे सुउमारो *पओओ।* (रोचते मे सुकुमारः प्रयोगः) अभि.शाकु., पृष्ठ 230/3

पओअण paoaṇa प्रयोजन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] प्रयोजन, निमित्त, कार्य, मतलब, कारण purpose, object, aim, intention, need of use, etc. {शौ.} (चेटी-) णत्थि वाआए *पओअणं।* (नास्ति वाचा प्रयोजनम्) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-1, पृ. 253

पओट्ठ (पउट्ठ) paoṭṭha (pauṭṭha) प्रकोष्ठ < संज्ञा (पुं.) [Noun] कक्ष, हाथ का पहुँचा, कलाई और कोहनी के बीच का भाग, फाटक के निकट का कमरा, घर का आँगन, चौकोर या वर्गाकार आँगन room, the fore arm, the part above the wrist, a courtyard of a house, etc. {शौ.} (चेटी-) इमं पढमं *पओट्ठं* पविसदु अज्जो। (इमं प्रथमं प्रकोष्ठं प्रविशतु आर्यः) मृच्छ., पृष्ठ 231/4

पओहर paohara पयोधर < संज्ञा (पुं.) [Noun] पयोधर, स्तन breast, that contains or carries water/ milk {म.} किविणब्भत्थणविमुहा पसयच्छि *पओहरा* तुज्झ। (कृपणाभ्यर्थनविमुखौ पसृत्यक्षि पयोधरौ तव) वज्जालग्गं, थणवज्जा, पृष्ठ 104/309

पकिदि pakidi प्रकृति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] किसी वस्तु की नैसर्गिक स्थिति, प्रकृति, माया, जड जगत्, स्वाभाविक रूप, स्वस्थ, प्रजा nature, natural form, original state, etc. {शौ.} (विदूषक-) अत्तभवं *पकिदिं* आवण्णो। (अत्रभवान्प्रकृतिमापन्नः) अभि.शाकु., पृष्ठ 180/2

पक्कण [देशज] **pakkaṇa** पक्कण < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] चाण्डाल, अनार्य देश-विशेष में रहने वाली एक मनुष्य जाति, एक नीच जाति का घर, शबर गृह, असहिष्णु, समर्थ a village of the barbarians, the hut of a chāṇḍāla or barbarians, etc. {मा.} (वृद्धगोपालक-) ही ही षरषंपादा उट्ठिदा। दारआ! दाळिआ! षिग्घं *पक्कणं* पविषह। (ही ही शरसंपाता उत्थिताः। दारकाः! दारिकाः! शीघ्रं पक्कणं प्रविशत) पञ्चरात्रम्., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 391

पक्खाल pakkhāla प्र √क्षालय् < क्रिया [सक.] [Noun] प्रक्षालित करना, शुद्ध करना, धोना to wash, to clean {मा.} (चेट-) सुहोदेसु पादेसु भूमीए पळोट्ठिदव्वं। उदअं विणासेहि। अहव आणेहि। *पक्खाळइस्सं।* (सुधौतयोः पादयोर्भूम्यां प्रलोठितव्यम्। उदकं विनाशय। अथवानय। प्रक्षालयिष्यामि) चारु., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 225

पक्खि pakkhi पक्षिन् < संज्ञा/विशेषण [Noun/ Adjective] पक्षी, तीर, शिव का विशेषण, पंखयुक्त, बाजूवाला winged, bird, arrow, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) वास-पादव-विसंठुलदाए *पक्खिणो* इदो तदो वि आहिंडंते। (वास-पादप-विसंठुलतया पक्षिणः इतस्ततोऽपि आहिण्डन्ते) मृच्छ., पृष्ठ 132/2

पक्खित्त pakkhitta प्रक्षिप्त < विशेषण [Adjective] रखा हुआ, फेंका हुआ thrown, hurled, projected, etc. {शौ.} भो! को णाम एदं जाणादि तादिसे वयं अणत्थसळिळावत्ते *पक्खित्ता* उण उम्मज्जिस्सामो त्ति। (भो! को नामैतज्जानाति तादृशे वयमनर्थसलिलावर्ते प्रक्षिप्ताः पुनरुन्मङ्क्ष्याम इति) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/4,पृष्ठ 20

पगीद pagīda प्रगीत < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] जिसने अच्छा गीत अच्छी तरह गाया हो sung well, good song, a specific kind of a song {शौ.} (विदूषक-) इमाओ अवराओ कुसुम-रस-मत्ताओ विअ महु अरीओ अदिमहुरं *पगीदाओ* गणिआदारिआओ णच्चीअन्ति। (इमा अपराः कुसुमरसमत्ताः इव मधुकर्य्यः अतिमधुरं प्रगीताः गणिकादारिकाः नृत्यन्ते) मृच्छ., पृष्ठ 234/4

पच्चक्ख paccakkha प्रत्यक्ष < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] सामने, इन्द्रियग्राह्य, प्रत्यक्ष, इन्द्रिय और विषय के संयोग से उत्पन्न ज्ञान, प्रमाण का एक प्रकार perception (sense organs), experienced by senses, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) दुवेणं णु वो अण्णोण्णाणुराओ *पच्चक्खो* । (द्वयोर्ननु युवयोरन्योन्यानुराग: प्रत्यक्षः) अभि.शाकु., पृष्ठ 239/3

पच्चक्खदंसण paccakkha-daṁsaṇa प्रत्यक्षदर्शन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] आँखों से देखना, गवाह, प्रत्यक्ष दर्शन, अपने सामने देखना direct perception, see in present, look from eyes, etc. {शौ.} (विदूषक-) जह मे जदिच्छादिट्ठप्पदिकिदी मालविआ *पच्चक्खदंसणा* होदित्ति। (यथा मे यदृच्छादृष्टप्रतिकृति मालविका प्रत्यक्ष-दर्शना भवतीति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-8/1, पृष्ठ 246

पच्चय paccaya प्रत्यय < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रत्यय, धारणा, निश्चित, विश्वास, भरोसा, श्रद्धा, विचार, भाव, सम्मति, यकीन, अनुभव, कारण, आधार, सुप्-तिङ् आदि प्रत्यय जो शब्द व धातुओं के लगते हैं, कृदन्त व तद्धित प्रत्यय, बुद्धि, समझ saffix, concept, idea, conviction, promise, determination faith, testimony, etc. {शौ.} (हिडिम्बा-) अअं पच्चओ। जेदु अय्यउत्तो। (अयं प्रत्ययः। जयत्वार्यपुत्रः) मध्यमव्यायोग., भासनाटक., श्लोक-48/1, पृष्ठ 437

पच्चुपण्ण paccupṇṇa प्रत्युत्पन्न< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] प्रत्युत्पन्न, वर्तमान काल, वर्तमान काल सम्बन्धी reproduced, present, existing at present, prompt, etc. {शौ.} (विदूषक-) णं पुच्छिदोम्हि, पुणो मन्दस्स मे तस्सिं *पच्चुप्पण्णा* मदी। (ननु पृष्टोऽस्मि। पुनर्मन्दस्य मे तस्मिन्प्रत्युत्पन्ना मतिः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-5, पृष्ठ 297/4

पच्चुवकाळ (पच्चुवआर / पच्चुवयार) pacchuvakāḷa (paccuvaāra / pccuvayāra) प्रत्युपकार < संज्ञा (पुं.) [Noun] उपकार के बदले उपकार, प्रत्युपकार reciprocity of benefaction, return of kindness or assistence, etc. {मा.} (नन्दगोप-) किं किं *पच्चुवकाळं* त्ति। (किं

किं प्रत्युपकार इति) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 521

पच्चूस (पच्चूह) paccūsa (paccūha) प्रत्यूष < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रभात काल dawn, daybreak {शौ.} (सूत्रधार-) किण्णु खु अज्ज *पच्चूस* एव्व गेहादो णिक्खन्तस्स बुभुक्खाए पुक्खरपत्तपडिदजळबिन्दू विअ चञ्चलाअन्ति विअ मे अक्खीणि। (किन्नुखल्वद्य प्रत्यूष एव गेहान्निष्क्रान्तस्य बुभुक्षया पुष्करपत्र-पतितजलबिन्दू इव चञ्चलायेते इव मेऽक्षिणी) चारु., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 3/1

पच्छण्ण pacchaṇṇa प्रच्छन्न< विशेषण [Adjective] छिपा हुआ, गुप्त, अप्रकट concealed, hidden, disguised, covered, latent {शौ.} (नलिनिका-) पेसिदो खु सोवीरराअस्स अमच्चेहि दूदो- अम्हाणं सामी तुम्हाणं णअरे सपुत्तदारकळत्तो *पच्छण्णो* पडिवसदि त्ति अम्हाणं गूढपुरिसेहि वुत्तन्तो जाणिअदु सामिणेत्ति। (प्रेषितः खलु सौवीरराजस्यामात्यैर्दूतः- अस्माकं स्वामी युष्माकं नगरे सपुत्रदारकलत्रः प्रच्छन्नः प्रतिवसतीत्यस्माकं गूढपुरुषैर्वृत्तान्तो ज्ञायतां स्वामिनेति) भासनाटक., अविमार., अंक-6, पृष्ठ 174

पच्छादाव pacchādāva पश्चात्ताव < संज्ञा (पुं.) [Noun] पश्चाताप, अनुताप, पछतावा repentance, deep regret, compunction, remorse, expiation, etc. {शौ.} (देवी-) किं दु अदक्खिण्णकिदस्स *पच्छादावस्स* भाएमि। (किंत्वदाक्षिण्यकृतात्पश्चात्तापाद् बिभेमि) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/2, पृष्ठ 172

पच्छिम pacchima पश्चिम < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] पीछे, पश्चिम दिशा, एक दिशा विशेष back side, a specific direction west, opposite direction of the east, etc. {शौ.} (वीरक-) तुमं पि *पच्छिमे* । (त्वमपि पश्चिमे) मृच्छ., पृष्ठ 334/6

पज्जत्त pajjatta पर्याप्त < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] यथेष्ट, पर्याप्ति वाला, समर्थ, उतना जितने से काम चल जाए, तृप्ति, सामर्थ्य, निवारण, योग्यता, जिसके उदय से जीव अपनी-अपनी पर्याप्तियों से युक्त होता है वह कर्म sufficient, adequte, ample, plentiful, obtained, full, whole,

entire, competent, etc. {म.} जह होइ तरु तह जइ पहु णो ता किं न *पज्जत्तं।* (यथा भवति तरुस्तथा यदि प्रभवस्तत् किं न पर्याप्तम्) वज्जालग्गं, पहुवज्जा, पृष्ठ 50/150

पज्जलिय pajjaliya प्रज्ज्वलित< विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] जलाया हु आ, देदीप्यमान being in flames, burning, flaming, bright, burnt {म.} तह नीससियं इंदिंदिरेण जह सा वि *पज्जलिया* । (तथा निःश्वसितमिन्दिन्दिरेण यथा सापि प्रज्ज्वलिता) वज्जालग्गं, इंदिंदिरवज्जा, पृष्ठ 84/248

पज्जाउल pajjāula पर्याकुल< विशेषण [Adjective] भयभीत, घबराया हु आ, भरा हु आ scared, excited, very much annoyed {शौ.} (सख्यौ-) अज्ज! इमिणा अरण्णअवुत्तंतेण *पज्जाउल* म्ह। (आर्य! अनेनारण्यकवृत्तान्तेन पर्याकुला: स्म:) अभि.शाकु., पृष्ठ 164/1

पज्जाल pajjāla प्रज्वालय् [प्र √ज्वालय्] < क्रिया [सक.] [Verb] जलाना, सुलगाना to burn, to lit, to set on fire {शौ.} (विदूषक-) *पज्जालेहि* पदीविआओ। (प्रज्वालय प्रदीपिका:) मृच्छ., पृष्ठ 90/1

पज्जुस्सुअ (पज्जूसूअ) pajjussua (pajjūsūa) पर्युत्सुक < विशेषण [Adjective] अति उत्सुक very anxious or curious, ardently eager, excessively longing (for) {शौ.} (प्रियंवदा-) अणुसूए! तस्स राएसिणो पढमदंसणादो आरहिअ *पज्जुस्सुआ* विअ सउन्दला। (अनुसूये! तस्य राजर्षेः प्रथमदर्शनादारभ्य पर्युत्सुकेव शकुन्तला) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 7, पृष्ठ 40/3

पज्जोद (पज्जोअ) pajjoda (pajjoa) प्रद्योत < संज्ञा (पुं.) [Noun] उज्जैन का एक राजा, प्रकाश, उद्योत a king of Ujjaina, light, brightness, etc. {शौ.} (चेटी-) अत्थि राआ *पज्जोदो* णाम उज्जइणीए। (अस्ति राजा प्रद्योतो नामोज्जयिन्या:) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-7/1, पृष्ठ 5

पड paḍa पत् < क्रिया [अक.] [Verb] पड़ना, गिरना, प्रणाम करना to fall, to make obeisance, to salute, etc. {शौ.} (कुटुम्बिनी-) जाद *पडसु* अपच्छिमं पिदुणो पादेसु। (जात पतापश्चिमं पितुः पादयोः) मुद्रा., श्लोक 4, पृष्ठ 94/7

पडल paḍala पटल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] फूस का छप्पर, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का खपड़ा जिससे मकान छाऐ जाते हैं, नीव्र edge of a thatch, tiles, hut of grass, etc. {म.} अहिणव-*पडल*-परिग्गह-गोर-ग्गामा दिसाहोआ। (अभिनव पटलपरिग्रह गौरग्रामा दिशाभोगाः) गउडवहो, गाथा-358, पृष्ठ 56

पडवासगन्ध paḍa-vāsa-gandha पटवासगन्ध < संज्ञा (नपुं) [Noun] वस्त्र की गन्ध, वस्त्र में कुंमकुंम आदि सुगन्धित पदार्थों की सुगन्ध smell of cloth, fregrance in the clothes {शौ.} (गणिका-) अणुदासीणं जोवणं से *पडवासगन्धो* सूएदि। (अनुदासीनं यौवनमस्य पटवासगन्धः सूचयति) चारु., भासनाटक., गाथा-26/1, पृष्ठ 209

पडिअ paḍia पतित< विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] गिरा हुआ, जिसने चलना प्रारंभ किया उसका गिरना fallen, fallen person who had started walking, descend {म.} खलवायसाण मज्झे ता हंसय कत्थ *पडिओ* सि। (खलवायसानां मध्ये तस्माद्धंस कुत्र पतितोऽसि) वज्जालग्गं, हंसवज्जा, पृष्ठ 88/257

पडिऊल (पडिकूल) paḍi-ūla (paḍi-kūla) प्रतिकूल < विशेषण [Adjective] प्रतिकूल, विपरीत, अनभिमत, विपक्ष adverse, unfavorable, opposite, contrary, hostile, etc. {शौ.} (विदूषक-) णिउणिए! किं वा पिअवअस्सेण तत्तभोदीए *पडिऊलं* किंपि समाचरिदं। (निपुणिके! किं वा प्रियवयस्येन तत्रभवत्याः प्रतिकूलं किमपि समाचरितम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 152

पडिऊलदंसण paḍiūla-daṁsaṇa प्रतिकूलदर्शन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] प्रतिकूलदर्शन, काम में बाधा डालना, विपरीत व्यवहार adverse effect, disturbance in work, etc. {शौ.} (देवी-) णत्थि क्खु भवदो अवराहो। अहं एव्व एत्थ अवरद्धा जा *पडिऊलदंसणा* भविअ अग्गदो दे चिट्ठामि। (नास्ति खलु भवतोऽपराधः। अहमेवात्रापराद्धा या प्रतिकूलदर्शना भूत्वाग्रतस्ते तिष्ठामि) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19/2, पृष्ठ 172

पडिच्छ paḍiccha प्रतीच्छ [प्रति √इष्] < क्रिया [सक.] [Verb] स्वीकार करना

to accept {शौ.} (वधू-) अज्जअ! *पडिच्छ* इमं। (आर्य! प्रतीच्छ इमाम्) मृच्छ., पृष्ठ 184/3

पडिच्छिद (पडिच्छिअ) paḍicchida (paḍicchia) प्रतीष्ट< विशेषण [Adjective] गृहीत, स्वीकृत, विशेष रूप से वाञ्छित accepted, received {शौ.} (गणिका-) *पडिच्छिदं* तए त्ति अय्यो णिवेदेदु। (प्रतीष्टं तमेत्यर्यो निर्वदयतु) चारु., भासनाटक., गाथा-5/4, पृष्ठ 245

पडिट्ठा (पइट्ठा) paḍiṭṭhā (paiṭṭhā) प्रतिष्ठा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] प्रतिष्ठा, आदर, सम्मान, कीर्ति, व्यवस्था, स्थापना, अवस्थान, स्थिति prestige, standing, status, dignity, position, reputation, renown, etc. {शौ.} (प्रथमा-) भट्टदारिए! दिट्ठिआ भट्टिणा भट्टिदारओ अद्धरज्जे *पडिट्ठं* गमइस्सदि। (भर्तृदारिके दिष्टया भर्ता भर्तृदारकोऽर्धराज्ये प्रतिष्ठां गमयिष्यते) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13/5, पृष्ठ 323

पडिणिउत्त (पडिणिअत्त) paḍi-ṇiutta (paḍi-ṇiatta) प्रतिनिवृत्त < विशेषण [Adjective] उल्टे पाँव लौट जाना, पीछे लौटा हुआ returning, turning away from {शौ.} (प्रतिहारी-) अह इं। पत्तहत्थं मं देक्खिअ *पडिणिउत्ता* । (अथ किम्। प्राप्तहस्तं मां प्रेक्ष्य प्रतिनिवृत्ता) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-22/6, पृष्ठ 109

पडिप्फलिअ (पडिफलिअ) paḍipphalia (paḍiphalia) प्रतिफलित < विशेषण [Adjective] प्रतिफलित, प्रतिबिम्बित, संक्रान्त reflected, transferred {म.} सिहर-णपहु त्त-गअणा दिसा-*पडिप्फलिअ*-कडअ-विणिअत्ता। (शिखरनप्रभूतगगना दिक्प्रतिफलितकटकविनिहताः) गउडवहो, गाथा-114, पृष्ठ 20

पडिबिम्ब paḍi-bimba प्रतिबिम्ब< संज्ञा (नपुं.) [Noun] प्रतिबिम्ब, परछाँही, प्रतिभा, प्रतिमूर्ति reflection, shadow, image, replica {म.} गअणस्स *पडिबिम्बं* धरणीअ व णिग्गमं दिसाण व णिलअं। (गगनस्येव प्रतिबिम्बं धरण्या इव निर्गमं दिशामिव निलयम्) सेतुबन्धं,गाथा-2/2,पृष्ठ 42/2-2

पडिबुज्झ paḍi-bujjha प्रति√बुध्< क्रिया [अक.] [Verb] जागृत होना, बोध पाना awakening, alertness, wakefulness, vigilance, etc. {म.} फरिससुहाअन्तं विअ

पडिबुज्झह जलणिहितणालं णलिणं। (स्पर्शसुखायमानमिव प्रतिबुध्यते जल-निहितनालं नलिनम्) सेतुबन्धं, गाथा-28/1, पृष्ठ 21

पडिबोह (पडिबोध) paḍi-boha (paḍi-bodha) प्रतिबोध [प्रति √बुध्+णि]< क्रिया [सक.] [Verb] जगाना, बोध देना, समझाना, ज्ञान प्राप्त कराना, प्रतिबोध देन to awake, to acquire knowledge, etc. {शौ.} (चेटी-) भोदु, पविसिअ *पडिबोधइस्सं* । (भवतु, प्रविश्य प्रतिबोधयिष्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 314/6

पडिमा paḍimā प्रतिमा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] प्रतिमा, मूर्ति idol, image {ठक्की/ढक्की} (द्यूतकर-) कधं कट्ठमई पडिमा। (कथं काष्ठमयी प्रतिमा) मृच्छ., पृष्ठ 106/2

पडिवअण (पडिवयण) paḍi-vaaṇa (paḍi-vayaṇa) प्रतिवचन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] प्रतिवचन, प्रत्युत्तर, जवाब, आदेश, आज्ञा reply, rejoinder, retort, order, permission, etc. {शौ.} (गान्धारी-) जाद सुयोधण! देहि मे *पडिवअणं* । (जात सुयोधन! देहि मे प्रतिवचनम्) ऊरुभङ्ग., भासनाटक., श्लोक-39/1, पृष्ठ 500

पडिवक्ख paḍi-vakkha प्रतिपक्ष < संज्ञा (पुं.) [Noun] विपरीत, विरोधी, विपर्यय, वैपरीत्य, दुश्मन opposite party, opposition, rival side, respondent, defendant, etc. {म.} रयणुज्जलपयसोहं तं कव्वं जं तवेइ *पडिवक्खं।* (रचनोज्ज्वल (रत्नोज्ज्वल) पदशोभं तत् काव्यं यत् तापयति प्रतिपक्षम् (प्रतिवक्षः)) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 8/20

पडिवज्ज paḍi-vajja [प्रति √पद्] < क्रिया [सक.] [Verb] स्वीकार करना, प्रतिपादन करना to accept, to grant, to produce, etc. {म.} पडिवज्जंति न सुयणा अह *पडिवज्जंति* अह वि दुक्खेहिं। (प्रतिपद्यन्ते न सुजना अथ प्रतिपद्यन्ते कथमपि दुःखैः) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 16/46

पडिवण्ण (पडिवन्न) paḍi-vaṇṇa (paḍi-vanna) प्रतिपन्न < विशेषण [Adjective] प्राप्त, अंगीकृत, आश्रित, जिसने स्वीकार किया हो वह achieved, obtained, approached, accomplished, executed, etc. {म.} सुयणा तहिं पि काले *पडिवन्नं*

नेय सिढिलंति। (सुजानास्तस्मिन्नपि काले प्रतिपन्नं नैव शिथिलयन्ति) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 16/47

पडिवाळ / पडिवाल paḍivāḷa / paḍivāla प्रति √पालय् < क्रिया [सक.] [verb] प्रतीक्षा करना, रक्षण करना to wait for, to guard (नन्दगोप-) भट्टा! अचोक्खिदम्हि, मदळिआ दाळिआ गहीदा मुहुत्तअं *पडिवाळेदु* भट्टा। (भर्तः! अशौचितोऽस्मि, मृता दारिका गृहीता। मुहूर्तकं प्रतिपालयतु भर्ता) बाल., भासनाटक., श्लोक-20/1, पृष्ठ 521

पडिसीस paḍi-sīsa प्रतिशीर्ष < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पगड़ी, शिरोवेष्टन, पिसान (आटा) आदि का बनाया हुआ सिर turban, honour, dignity, etc. {शौ.} (स्थापक-) अण्णा *पडिसीसआइं* पडिसारेदि। (अन्या प्रतिशीर्षकाणि प्रसारयति) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 6/4

पडिहद (पडिहय) paḍi-hada (padi-haya) प्रतिहत < विशेषण [Adjective] मारा गया, प्रतिघात-प्राप्त, प्रतिहत restrained, hampered, injured, repelled, overthrown, killed, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) सहि उव्वसि! वीसद्धा भव। आवण्णाणुकम्पिणा महाराएण *पडिहदा* क्खु दे तिदसपरिपन्थिणो हदासा दाणवा। (सखि उर्वशी! विश्रब्धा भव। अपन्नानुकम्पिना महाराजेन प्रतिहताः खलु ते त्रिदशपरिपन्थिनो हताशा दानवाः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/1, पृष्ठ 144

पडिहारभूमि paḍihāra-bhūmi प्रतीहारभूमि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] प्रतीहार-भूमि, मुख्यद्वार, दरवाजा the main door {शौ.} (पुरुष-) जेदु अमच्चो। एसो खु सअडदासो *पडिहारभूमिं* उवट्ठिदो। (जयत्वमात्यः। एष खलु शकटदासः प्रतीहारभूमिमुपस्थितः) मुद्रा., पृष्ठ 31/2

पडी paḍī पटी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पर्दा, वस्त्र a stage curtain {म.} जा लावण्ण-*पडीओ* व्व सहंति परिमास-मउईओ। (या लावण्यपट्य इव शोभन्ते परिमर्शमृद्व्यः) गउडवहो, गाथा-769, पृष्ठ 114

पढ paḍha √ पठ् < क्रिया [सक.] [Verb] पढना, अभ्यास करना, बोलना, कहना to read, to study, to speak, to recite (a poem), etc. {म.} फुडवियडपायडत्थं पाइयकव्वं *पढेयव्वं*। (स्फुटविकटप्रकटार्थं

प्राकृतकाव्यं पठनीयम्) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 10/28

पढम paḍhama प्रथम < विशेषण [Adjective] पहला, पूर्व का, सबसे आगे first, foremost, earliest, previous {शौ.} (विदूषक-) *पढमं* सपरीवाहं आसि। (प्रथमं सपरीवाहमासीत्) अभि.शाकु., पृष्ठ 203/2

पणइ paḍai प्रणयिन् < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] आश्रित, याचक, प्रार्थी, दास, भृत्य, पति, प्रणयवाला, स्नेही, प्रेमी a supplicant, beloved, etc.{म.} बाहिं चिअ वेरि-सिरीओ जेण *पणईण* दिण्णाओ। (बहिरेव वैरिश्रियो येन प्रणयिभ्यो दत्ताः) गउडवहो, गाथा-1207, पृष्ठ 177

पणइजण paṇai-jaṇa प्रणयिजन < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रियजन, आत्मीय near and dear ones{शौ.} (उर्वशी-) णं *पणइअणो* । (ननु प्रणयिजनः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12/1, पृष्ठ 146

पणइणी paṇaiṇī प्रणयिनी < विशेषण [Adjective] पत्नी, प्रिया beloved, wife, sweet-heart, etc. {म.} गाहाहि *पणइणीहि* य खिज्जइ चित्तं अइंतीहिं। (गाथाभिः प्रणयिनीभिश्च खिद्यते चित्तमना-गच्छन्तीभिः) वज्जालग्गं, गाहावज्जा, पृष्ठ 4/10

पणट्ठ pa-ṇaṭṭha प्रनष्ट < विशेषण [Adjective] प्रकर्ष से नाश को प्राप्त perished, destroyed, disappeared, etc. {म.} अंगारए *पणट्ठे* सुक्कस्स गई तह च्चेय। (अङ्गारके (अङ्गरते) प्रनष्टे शुक्रस्य गतिस्तथैव) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 168/498

पणम pa-ṇama प्र √नम् < क्रिया [सक.] [Verb] प्रणाम करना, नमन करना to make obeisance, to salute, etc. {शौ.} (बकुलावलिका-) सहि! *पणम* भट्टारं। (सखि! प्रणम भर्तारम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-6, पृष्ठ 299/4

पणमिअ paṇamia प्रणम्य < पूर्व कृदन्त [Past Participle] नमन करना, प्रणाम करना to bow, to respect, to salute, etc. {शौ.} (अनसूया-) पादेसु *पणमिअ* णिवत्तेहि णं जाव अह अग्घोदअं उवकंपेमि। (पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं यावदहमर्घोदकमुपकल्पयामि) अभि.शाकु., पृष्ठ 262/4

पणिपादलंघण paṇipāda-laṅghaṇa प्रणिपातलङ्घन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] प्रमाण करके ऐंठना to salute showing arrogance, etc. {शौ.} (विदूषक-) भो! तक्केमि संजादपच्छादावा तत्रभोदी वदोवदेसेण भवदो *पणिपादलंघणं* पमज्जिदुकाम त्ति। (भोः! तर्कयामि सञ्जातपश्चात्तापा तत्रभवती व्रतोपदेशेन भवतः प्रणिपातलङ्घनं प्रमार्ष्टुकामेति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-4/3, पृष्ठ 177

पण्ह paṇha प्रश्न < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रश्न, सवाल a question, problem {मा.} (चेट-) अले! *पण्हं* दे दइश्शं। (अरे! प्रश्नं ते दास्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 270/5

पण्होत्तर paṇhottara प्रश्नोत्तर < संज्ञा (नपुं.) [Noun] प्रश्नोत्तर, सवाल-जवाब question-answar {शौ.} (सूत्रधार-) अए *पण्होत्तरं* खु एदं। (अरे प्रश्नोत्तरं खलु एतत्) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 9/5

पत्त patta प्राप्त < विशेषण [Adjective] मिला हुआ, पाया हुआ achieved, gained, acquired, obtained {म.} दुज्जणसंगे *पत्ते* सुयणो वि सुहं न पावेइ। (दुर्जनसंगे प्राप्ते सुजनोऽपि सुखं न प्राप्नोति) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 22/63

पत्तअ (पत्त) pattaa (patta) पत्र < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पत्र, जिस पर लिखा जाता है वह कागज, पन्ना, पत्ती, पत्ता दल, पर्ण, पक्ष, पंख, पाँख (of a tree or plant) leaf, (of a bird) wing, (of an arrow), feather, paper, letter, note, newspaper, etc. {शौ.} (प्रतीहारी-) कुमार इदं सअडदासेण लिहिदं *पत्तअं* मुद्दा अ। (कुमार इदं तच्छकटदासेन लिखितं पत्रं मुद्रा च) मुद्रा., श्लोक 13, पृष्ठ 76/5

पत्तअ pattaa पत्रक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पत्रक, कागज, लेख, नवीन पत्ता, निबन्ध, पट्ट chit, slip, leaflet, young leaf, card, artical, essay, etc. {शौ.} (आहितुण्डिक-) ता जइ मे अमच्चो दंसणेण पसादं ण करेदि तदो एदं *पत्तअं* वाचेदुं पसीददु त्ति। (तस्माद्यदि मेऽमात्यो दर्शनेन प्रसादं न करोति तत् एतत् पत्रकं वाचयितुं प्रसीदत्विति) मुद्रा., श्लोक-10, पृष्ठ 24/2

पत्तण [देशज] pattaṇa पत्रण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] बाण का फलक और पंख, बाण का मूल भाग blade and feathers of

an arrow {म.} ठिअ-भमर-पक्ख-भावा णिव्वाडिअ-*पत्तणा* इव सवेअं। (स्थितभ्रमरपक्षभावानिर्वर्तितपत्रणा इव सवेगम्) गउडवहो, गाथा-345, पृष्ठ 54

पत्थ pattha √ प्र+अर्थय् < क्रिया [सक.] [Verb] प्रार्थना करना, अभिलाषा करना, रोकना to pray, to desire or wish for, to stop {म.} जे गरुयवसणपडिपेल्लिया वि अन्नं न *पत्थंति* । (ते गुरुव्यसनप्रतिप्रेरिता अप्यन्यं न प्रार्थयन्ते) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 34/101

पत्थअ (पत्थय) patthaa (patthaya) प्रार्थक < विशेषण [Adjective] अभिलाषा करने वाला, माँगने पर, माँगने वाला petitioner, to desire, etc. {शौ.} (विदूषक-) आम्। हं वि *पत्थयंतो* जदा मिट्ठहरिणी-मंसभोअणं णं लहे तदा णं संकित्तअंतो आसासेमि अत्ताणं। (आम्। अहमपि प्रार्थयमानो यदा मिष्टहरिणीमांसभोजनं न लभे

तदैतत्सङ्कीर्तयन्नाश्वासयाम्यात्मानम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10/3, पृष्ठ 182

पत्थणा (पत्थणया) patthaṇā (patthaṇayā) प्रार्थना < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] प्रार्थना, वाञ्छा, याचना, विज्ञप्ति, निवेदन prayer, solicitation, request, petition, etc. {म.} सेविज्जइ विणएणं एस च्चिय *पत्थणा* लोए। (सेव्यते विनयेनैषेव प्रार्थना लोके) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 54/158

पत्थर patthara प्रस्तर < संज्ञा (पुं.) [Noun] पत्थर, प्रस्तर stone, milestone, hard {म.} अणरसियणिविव्वसेसे किं कीरइ *पत्थरे* माणो। (अरसिकनिर्विशेषे किं क्रियते प्रस्तरे मान:) वज्जालग्गं, माणवज्जा, पृष्ठ 122/363

पत्थाणकोदुअ pttthāṇa-kodua प्रस्थान-कौतुक < विशेषण [Adjective] जाने का कौतूहल, चमत्कारिक रूप से गमन curiousity or eagerness to go, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) सहि! तुवर सउंदलाए *पत्थाणकोदुअं* णिव्वत्तिदुं। (सखि! त्वरस्व शकुन्तलाया: प्रस्थानकौतुकं निवर्तयितुम्) अभि.शाकु., पृष्ठ 269/4

पत्थारि [देशज] **patthāri** संहति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] समूह, शय्या mass,

multitude {म.} पेरंत-धवल-गअ-कण्ण-कव्वुरा मेह-*पत्थारी*। (पर्यन्तधवलगजकर्ण-कर्बुरा मेघसंहतिः) गउडवहो, गाथा-373, पृष्ठ 58

पत्थाव patthāva प्रस्ताव < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रस्ताव, प्रसंग, प्रकरण, अभिमत, अवसर, प्रमाण के फलरूप से जिसका ग्रहण हो ऐसा उपादेय तत्त्व का निर्णय प्रस्ताव है topic, chapter, proposal, suggestion, offer, etc. {म.} एक्कत्थे *पत्थावे* जत्थ पढिज्जंति पउरगाहाओ। (एकार्थे प्रस्तावे यत्र पठ्यन्ते प्रचुरगाथाः) वज्जालग्गं, पृष्ठ 2/4

पत्थिद (पत्थिअ) patthida (patthia) प्रस्थित < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] प्रस्थान करना, जाना, गति, चाल, जिसने प्रयाण किया हो वह established, fixed, departed, set out {शौ.} (मागधिका-) अज्ज णक्खत्तं सोभणं ति तेण अ दूदेण अमच्चो अय्यभूदिओ *पत्थिदो*। (अद्य नक्षत्रं शोभनमिति तेन च दूतेनामान्य आर्यभूतिकः प्रस्थितः) अविमार., भास., गाथा-13/3, पृष्ठ 135

पत्थिव patthiva पार्थिव < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] पार्थिव, राजा, नरेश, भूपति earthly, king, etc. {म.} छेआण *पत्थिवाण* य खलाण मग्गो च्चिय अउव्वो। (छेकानां पार्थिवानां च खलानां मार्ग एवापूर्वः) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 94/274

पदाण padāṇa प्रदान < संज्ञा (नपुं.) [Noun] देना, प्रदान करना, अर्पण, प्रस्तुत करना, समर्पित करना granting, offering, donating {मा.} (संवाहक-) शे दाणिं अणुक्कोशकिदेहिं *पदाणेहिं*। (स इदानीमनुक्रोशकृतैः प्रदानैः) मृच्छ., पृष्ठ 129/2

पदिव्वद padi-vvada पतिव्रत < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] पतिव्रता, धर्मपरायणा loyalty towards one's husband, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) सहि! महाणुहावाए *पदिव्वदाए* अब्भणुण्णादो अणंतराओ दे पिअसमाअमो हविस्सदि। (सखि! महानुभावया पतिव्रतयाभ्यनुज्ञातः अनन्तरायस्ते प्रिय-समागमो भविष्यति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13/3, पृष्ठ 186

पदीव (पईव) padīva (paīva) प्रदीप < संज्ञा (पुं.) [Noun] दीपक [प्र+दीपय्] जलाना, प्रकाश करना to light a lamp, etc.

{शौ.} (वसन्तसेना-) कधं *पदीवो।* (कथं प्रदीपः) मृच्छ., पृष्ठ 61/1

पदेस (पएस) padesa (paesa) प्रदेश< संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रदेश, स्थान, जगह, देश का एक भाग, प्रान्त, छोटा भाग region, zone, land, province, state, etc. {शौ.} (सहजन्या-) हला! गदो राएसी। ता अम्हे वि जधासंदिट्ठं *पदेसं* गच्छम्ह। (हला! गतो राजर्षिः। तद्वयमपि यथासंदिष्टं प्रदेशं गच्छामः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-5/1, पृष्ठ 142

पदोलीदुआर padolī-duāra प्रतोलीद्वार < संज्ञा (नपुं.) [Noun] गली का द्वार, मुख्य मार्ग का द्वार, नगर की मुख्य सड़क का द्वार a street gate, road door, main street through a town, etc. {शौ.} (वीरक-) अले! पुरत्थिमे *पदोली-दुआरे* चिट्ठ तुमं। (अरे! पुरस्तात् प्रतोलीद्वारे तिष्ठ त्वम्) मृच्छ., पृष्ठ 334/6

पदोस (पओस) padosa (paosa) प्रदोष < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] रात्रि का आरम्भ काल, प्रभूत दोष, प्रभूत दोषों से युक्त initial period of the night, great demerits, disorder, etc. {शौ.} (चेटी-) जूदिअर! अवि सुहो दे *पदोसो* त्ति! (द्यूतकर! अपि सुखस्ते प्रदोष इति) मृच्छ., पृष्ठ 296/5

पन्नत्त (पण्णत्त) pannata (paṇṇata) प्रज्ञप्त < विशेषण [Adjective] प्रज्ञप्त, निरूपित, उपदिष्ट, कथित, प्रणीत, रचित, आसेवित ordered, prescribed, arranged, etc. {म.} विज्जय अन्नं वारं मह जरओ सयरएण *पन्नत्तो*। (वैद्यान्यं वारं मम ज्वरः शतरयेण (शतरतेन)प्रज्ञप्तः) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 176/518

पप्पुअ pappua प्रप्लुत< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] आप्लावित, जलार्द्र, व्याप्त, कूदना flooded, inundated {म.} दुरुप्पडिअ-णिवडिआ दर-पप्पुअ-णीसहा गिरिणो। (दूरोत्पतितनिपतिता दरप्प्लुत-निःसहा गिरयः) गउडवहो, गाथा-128, पृष्ठ 22

पब्भट्ठ (पब्भसिअ) pa-bbhaṭṭha (pa-bbhasia) प्रभ्रष्ट < विशेषण परिभ्रष्ट, प्रस्खलित, चूका हुआ, विस्मृत, नरकावास विशेष extremely corrupt, fallen, etc. {शौ.} (अनसूया-) अव्वो आवेअक्खदाए गईए *पब्भट्ठं* मे अग्गहत्थादो पुप्फभाअणं।

(अहो आवेगस्खलितया गत्या प्रभ्रष्टं ममाग्रहस्तात्पुष्पभाजनम्) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., पृष्ठ 54/4

पब्भार pabbhāra प्राग्भार < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] पर्वत का अग्र भाग, थोड़ा नमा हुआ पर्वत का भाग, एकदेश, एक भाग, उत्कर्ष, परभाग, पर्वत के ऊपर का भाग the front, forepart {म.} ओसरिअ-सिहर-बंधा तहट्ठिओवत्त-भित्ति-*पब्भारा*। (अपसृतशिखरबन्धास्तथास्थितापवृतभित्ति प्राग्भाराः) गउडवहो, गाथा-662, पृष्ठ 99

पभाद (पभाइअ) pabhāda (pabhāia) प्रभात< संज्ञा (नपुं.) [Noun] सुबह, प्रातः काल, प्रभात [वि.] प्रकाशित dawn, early morning, etc. {शौ.} (चेटी-) *पभादं* संवुत्तं। (प्रभातं संवृत्तम्) मृच्छ., पृष्ठ 314/6 {शौ.} (विदूषक-) अज्ज वि मे तं एव्व चिंतअंतस्स अक्खीसु *पभादं* आसि। (अद्यापि मम तामेव चिन्तयतोऽक्षणोः प्रभातमासीत्) अभि.शाकु., पृष्ठ 170/2

पमदवण (पमयवण) pamada-vaṇa (pamaya-vaṇa) प्रमदवन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] प्रमदवन, राजा का अन्तःपुर स्थित वह वन जहाँ राजा रानियों के साथ क्रीड़ा करे a pleasure garden attached to the royal harem, etc. {शौ.} (विदूषक-) देविं देक्खिस्सं त्ति आआरपुप्फग्गहणकारणादो *पमदवणं* गदोम्हि। (देवीं द्रक्ष्यमीत्याचार-पुष्पग्रहणकारणात्प्रमदवनं गतोऽस्मि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-3, पृष्ठ 293/4

पमाण pamāṇa प्रमाण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] प्रमाण, ज्ञान, सत्य ज्ञान का साधन, शास्त्र, जिससे नाप किया जाय वह, परिमाण evidence, proof, a measurement, etc. {मा.} (संवाहक-) शंपदं शुणिअ अज्जआ *पमाणं*। (साम्प्रतं श्रुत्वा आर्या प्रमाणम्) मृच्छ., पृष्ठ 132/2

पमाद (पमाय) pamāda (pamāya) प्रमाद < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रमाद, आलस्य, असावधानी, लापरवाही, भूलचूक carelessness, negligence, unattentive, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) अहो *पमादो*। (अहो प्रमादः) मृच्छ., पृष्ठ 140/2

पमादक्खलिद pamāda-kkhalida प्रमादस्खलित < संज्ञा (नपुं.) [Noun] लापरवाही से हुई गलती mistake by carelessness, etc. {शौ.} (पेलव-) आम,

तस्सिं उव्वसीए वअणं *पमादक्खलिदं* आसि। (आम्, तस्मिन्नुर्वश्या वचनं प्रमादस्खलितमासीत्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 174

पमुह (प्पमुह) pamuha (ppamuha) प्रमुख < विशेषण [Adjective] मुख्य, प्रमुख chief, etc. {शौ.} (वीरक-) अरे रे वीरअ-विसल्ल-भीमंगअ-दंड-कालअ-दंडसूर-*प्पमुहा*। (अरे रे वीरक-विशल्य-भीमाङ्गद-दण्डकालक-दण्डशूरप्रमुखाः) मृच्छ., पृष्ठ 334/6

पय paya पद < संज्ञा (पुं., नपु.) [Noun] शब्द समूह, पैर, पाद चिन्ह, निमित्त, कारण, विभक्ति के साथ का शब्द, पद्य का चौथा हिस्सा, पदवी word as used in a sentence, stanza, foot, feet, one fourth of poetry, etc. {म.} कह कह वि रएइ *पयं* मग्गं पुलएइ छेयमारुहइ। (कथं कथमपि रचयति पदं मार्गं प्रलोकयतिच्छेकम् (छेदम्) आरोहति) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 8/22

पयइ payai प्रकृति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] प्रकृति, किसी वस्तु की नैसर्गिक स्थिति, माया, स्वाभाविक रूप nature, temperament, original natural form, etc. {म.} सव्वस्स एह *पयई* पियम्मि उप्पाइए पिय काउं। (सर्वस्यैषा प्रकृतिः प्रिय उत्पादिते प्रियं कर्तुम्) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 14/39

पयडिय payaḍiya प्रपतित < विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] गिरा हुआ, प्रपतित, पतित degrades, fallen, etc. {म.} सोयारकण्णकुहरम्मि *पयडियं* पायडं होइ। (श्रोतृकर्णकुहरे प्रपतितं प्रकटं भवति) वज्जालग्गं, सोयारवज्जा, पृष्ठ 4/8

पयत्त payatta प्रयत्न < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रयत्न, चेष्टा, उद्यम, कोशिश attempt, effort, endeavour, exertion, manner of articulation {म.}अज्जं पुण्णा अवही करेसु मुहमंडणं *पयत्तेण*। (अद्य पूर्णोऽवधिः कुरुष्व मुखमण्डनं प्रयत्नेन) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 130/382

पयाव payāva < प्रताप संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रताप, तेज, प्रखरता, प्रकृष्ट ताप, प्रखर ऊष्मा dignity, majesty, glory, courage, magnanimity, brilliance, heat, warmth {म.} वियलइ धणं न माणं झिज्जइ अंगं न झिज्जइ *पयावो* । (विगलति धनं न मानः क्षीयतेऽङ्गं न क्षीयते

प्रताप:) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 56/163

पयास (पगास) payāsa (pagāsa) प्रकाश< संज्ञा (पुं.) [noun] प्रकाश, प्रभा, चमक, उजाला, दीप्ति, कांति, आभा light, brilliance, splendor, manifestation, revelation, etc. {म.} जस्स *पयासो* लोए धवलेइ महामहीवट्टं। (यस्य प्रकाशो लोके धवलयति महामहीपृष्ठम्) वज्जालग्गं, चंदवज्जा, पृष्ठ 90/266

पय्याउळ payyāuḷa पर्याकुल < विशेषण [Adjective] उद्विग्न, भयभीत, उत्तेजित, क्षुब्ध, घबराया हुआ, मैला, गंदा, अव्यवस्थित, क्रमहीन, उथल-पुथल very much annoyed, perturbed, bewildered, excited, disturbed, etc. {शौ.} (प्रतिहारी-) अय्य! एदं सुणिअ *पय्याउळं* विअ मे हिअअं। (आर्य! एतच्छ्रुत्वा पार्याकुलमिव मे हृदयम्) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-5/6,पृष्ठ 303

पर para पर < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] भिन्न, इतर, दूसरा, दूर का, बाद का, पीछे का, आगे का, श्रेष्ठ, तत्पर, तल्लीन, अनात्मीय, शत्रु other, different, another, beyond, further, after, greatest, etc. {म.} संतेहि असंतेहि य *परस्स* किं जंपिएहि दोसेहिं। (सद्भिरसद्भिश्च परस्य किं जल्पितैर्दोषै:) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 28/82

परंपर (परंपरग / परंपरय) pampara (paramparaga / pamparaya) परम्पर < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] परम्परा, अविच्छिन्न धारा, भिन्न-भिन्न, व्यवहित tradition, difference, etc. {म.} (परिपार्श्विक-) इत्ति अस्स *परंपरए* अप्पा माहत्तमारूढो। (इत्यस्य परम्परया आत्मा माहात्म्यमारूढः) कर्पूर.,श्लोक-9/1,पृष्ठ 12

परंमुह (परम्मुह / परमुह) parmmuha (parammuha / paramuha) पराङ्मुख< संज्ञा (पुं.) [Noun] पराङ्मुख, विमुख, उदासीन having the face averted, turned away, averse, etc. {म.} आलिहियभित्तिबाउल्लयं व न *परंमुहं* ठाइ। (आलिखितभित्तिपुत्रक इव न पराङ्मुखं तिष्ठति) वज्जालग्गं, मित्तवज्जा,पृष्ठ 24/68 {म.} (सिद्धार्थक-) आणत्तीए गुणेसु दोसेसु *परंमुहं* कुणन्तीए। (आनयन्त्यै गुणेषु दौषेषु च पराङ्मुख कुर्वन्त्यै) मुद्रा., श्लोक 9, पृष्ठ 69/5

परक्कम parakkama पराक्रम< विशेषण [Adjective] शूरवीरता, बहादुरी, साहस, विरोधी अभियान करना, प्रयत्न, उद्योग, विष्णु का नाम courage, heroics, bravery etc. {म.} (कर्णपूरक-) जाए अज्ज कण्णउरअस्स *परक्कमो* ण दिट्ठो। (यया अद्य कर्णपूरकस्य पराक्रमो न दृष्टः) मृच्छ., पृष्ठ 138/2

परत्थ parattha परार्थ < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] परोपकार, उपकार, परार्थ, दूसरे का उपकार for others, the good of others, highest, interest of others, altruism, etc. {म.} तह वि कुणंति *परत्थं* नियसरीरेण लोयस्स। (तथापि कुर्वन्ति परार्थं निजकशरीरेण लोकस्य) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 16/48

परमत्थ / परमट्ठ paramattha / paramaṭṭha परमार्थ < संज्ञा (पुं.) [Noun] परमार्थ, श्रेष्ठतम मूल्य, तत्त्व, सत्य, सर्वोच्च या नितांत अलौकिक सत्य, वास्तविक आत्मज्ञान, ब्रह्म या परमात्मा संबंधी ज्ञान, सच्चाई, वास्तविकता, उत्कृष्ट अर्थ, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष लक्षण वाले परमार्थों में जो परम उत्कृष्ट है वही मोक्ष लक्षण वाला अर्थ पर supreme value, absolute truth, spiritual knowledge, highest truth or merit, release from rebirth, ultimate or transcendental reality etc. {शौ.} भावो हि पढमलिंगं ण दव्वलिंगं च जाण *परमत्थं*। (भाव: हि प्रथमलिंगं न द्रव्यलिंगं च जानीहि परमार्थम्) अट्ठपाहुड, भावपाहुड, पृष्ठ 157/2 {म.} *परमत्थओ* अणत्थबहुलाए अत्थकहाए अणुसज्जंति। (परमार्थतः अनर्थबहुलायाम् अर्थकथायाम् अनुषजन्ति) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 4

परलोअ (परलोग) para-loa (para-loga) परलोक< संज्ञा (पुं.) [Noun] परलोक, दूसरा लोक, आने वाला जन्म, भव other world, the coming life, etc. {शौ.} (कुटुम्बिनी-) *परलोअं* पत्थिदो अज्जो ण देसन्तरं। (परलोक प्रस्थित आर्यो न देशान्तरम्) मुद्रा., श्लोक 3, पृष्ठ 94/7

परवस paravasa परवश < विशेषण [Adjective] दूसरे के अधीन, पराश्रित dependent, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) धम्मचरणे वि *परवसो* अअं जणो। (धर्मचरणेऽपि परवशोऽयं जनः) अभि.शाकु., पृष्ठ 154/1

परहुअ parahua परभृत < संज्ञा (पुं.) [noun] परभृता, कोयल (क्योंकि यह दूसरे के द्वारा अर्थात् कौवे से पाली पोसी जाती है) the cuckoo, so called because she is nourished by (another) a crow, etc. {म.} (राजा-) मोरा *परहुअ* हंस रहंगो अलि गअ पव्वअ सरिअ कुरंगं। (मयूरः परभृता हंसा रथाङ्गः अलिर्गजः पर्वतः सरित्कुरङ्गमः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-72/4, पृष्ठ 216

पराइद (पराइअ) parāida (parāia) पराजित < विशेषण [Adjective] पराजित, पराभव प्राप्त defeated, overcome, conquered, overthrown, vanquished {मा.} (संवाहक-) तदो बहूणि दिणाणि मए पराइदेण पुरिसेण कदाइ अहं पि दहसु सुवण्णेसु *पराइदो* म्हि। (ततो बहूनि दिनानि मया पराजितेन पुरुषेण कदाचिदहमपि दशसु सुवर्णेषु पराजितोऽस्मि) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 219

पराहुत्त [देशज] **parāhutta** पराङ्मुख< विशेषण [Adjective] विमुख, पराङ्मुख having the face turned the other way, averse from, regardless, indifferent {म.} कत्तो लब्भंति मरुत्थलीउ दिव्वे *पराहुत्ते* (कुतो लभ्यन्ते मरुस्थल्यो दैवे पराङ्मुखे) वज्जालग्गं, करहवज्जा, पृष्ठ 76/222

परिआल [देशज] **pariāla** वेष्टि < विशेषण [Adjective] वेष्टित, परिवृत fenced, surrounded {म.} सो जयइ जामइल्ला-अमाण-मुहलालि-वलय-*परिआलं।* (स जयति यामिकायमानमुखरालिवलय-वेष्टिताम्) गउडवहो, गाथा-20, पृष्ठ 3

परिओस pariosa परितोष < संज्ञा (पुं.) [Noun] आनन्द, सन्तोष, परितोष gratification, satisfaction, contentment {म.} न वि तह पढमसमागमसुरयसुहे पाविए वि *परिओसो* । (नापि तथा प्रथमसमागमसुरतसुखे प्राप्तेऽपि परितोषः) वज्जालग्गं, सुरयवज्जा, पृष्ठ 110/325

परिक्खद (परिक्खअ) pari-kkhada (pari-kkhaa) परिक्षत < विशेषण [Adjective] आहत, चोटिल wounded, injured {शौ.} (मदनिका-) तस्सिं गेहे कोवि वावादिदो *परिक्खदो* वा ? (तस्मिन् गेहे कोऽपि व्यापादितः परिक्षतो वा?) मृच्छ., पृष्ठ 205/4

परिग्गह (परिगह) pariggaha (parigaha) परिग्रह < संज्ञा (पुं.) [Noun] परिग्रह, धन

आदि का संग्रह, ग्रहण, स्वीकार, ममत्व, मूर्छा, ममत्वपूर्वक जिसका संग्रह किया जाये वह, पत्नी के रूप में स्त्री का ग्रहण, संचय receiving, acquring, acquisition, putting on, acceptance, accepting, accepting a womon as wife, taking a women in marriage, collection of wealth, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) अज्ज णं एसो मे पसादो जं अमच्चस्स इमाए मुद्दए *परिग्गहं* करेदि। (आर्य नन्वेष मे प्रसादो यदमात्योऽस्या मुद्रायाः परिग्रहं करोति) मुद्रा., श्लोक-22, पृष्ठ 33/2

परिचअ paricaa परिचय < संज्ञा (पुं.) [Noun] परिचय, जान-पहचान, विशेष रूप से ज्ञान introduction, acquaintance, familiarity {म.} जत्थ मणं न नियत्तइ तं पेम्मं *परिचओ* सेसो। (यत्र मनो न निवर्त्तते तत्प्रेम परिचय: शेष:) वज्जालग्गं, पेम्मवज्जा, पृष्ठ 116/340

परिचारअ paricāraa परिचारक < विशेषण [Adjective] नौकर-चाकर, सेवक, भृत्य, परिचारक servant, attendant, male nurse, etc. {शौ.} (सुमित्रा-) पइदीओ *परिचारआ* सज्जणा अ पुत्तअस्स मे विजअं वड्ढन्ति। (प्रकृतयः परिचारकाः सज्जनाश्च पुत्रकस्य मे विजयं वर्धयन्ति) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-9/7, पृष्ठ 316

परिचिद (परिचिय) paricida (pariciya) परिचित < विशेषण [Adjective] परिचित सुहृद, ज्ञात, जाना हुआ, पहचाना हुआ acquainted, known, familiar, acquaintance, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) अमच्च एत्थ मे पढमपविट्ठस्स णत्थि कोवि *परिचिदो* जत्थ एदं अमच्चस्स पसादं णिक्खिविअ णिव्वुदो भविस्सं। (अमात्य अत्र मे प्रथमप्रविष्टस्य नास्ति कोऽपि परिचितो यत्रैतममात्यस्य प्रसादं निक्षिप्य निर्वृतो भविष्यामि) मुद्रा., श्लोक-23, पृष्ठ 32/2

परिच्चत्त pari-ccatta परित्यक्त < विशेषण [Adjective] जिसका परित्याग किया गया हो quitted, deserted, renounced {शौ.} (मदनिका-) *परिच्चत्तम्हि* अज्जआए। (परित्यक्ताऽस्मि आर्यया) मृच्छ., पृष्ठ 223/4

परिच्चत्तमच्छर pariccatta-macchara परित्यक्तमत्सर < विशेषण [Adjective] ईर्ष्या त्यक्त, वैर भाव का त्याग leave jealousy, give up anger, void of

jealousy, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) *परिच्चत्तमच्छरेण* अणुअंपिअ म्हि देव्वेण (परित्यक्तमत्सरेणानुकम्पिताऽस्मि दैवेन) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/7, पृष्ठ 128

परिजण (परिअण) pari-jaṇa (pari-aṇa) परिजन < संज्ञा (पुं.) [Noun] परिवार, कुल, कुटुंब, दास, अनुचर family, followers, attendent, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) कथं *परिजणो* वि परिब्भट्ठो। (कथं परिजनोऽपि परिभ्रष्टः) मृच्छ., पृष्ठ 45/1

परिणअ (परिणय / परिणमिअ) pariṇaa (pariṇaya / pariṇamia) परिणत < विशेषण [Adjective] परिणत, परिपक्व, वृद्धि प्राप्त, अवस्थान्तर को प्राप्त humble, submissive, ripened, mature, culminated, well developed, changed, etc. {म.} कलहंसाणं कलरओ ठाइ ण संठाइ *परिणअं* सिहिविरुअं। (कलहंसानां कलरवस्तिष्ठति न संतिष्ठते परिणतं शिखिविरुतम्) सेतुबन्धं, गाथा-23/1, पृष्ठ 18

परिणाम pariṇāma परिणाम < संज्ञा (पुं.) [Noun] परिणाम, अन्त, नतीजा, निष्पत्ति, फल, प्रभाव, पकना, परिपक्वता, पूर्णविकास, समाप्ति, उपसंहार, अवसान, ह्रास, बदलना, परिवर्तन, रूपान्तरण, अलंकार शास्त्र में रूपक से मिलता जुलता एक अलंकार जिसमें उपमेय के गुण उपमान में परिवर्तित कर दिऐ जाते हैं result, end, consequence, alteration, result, transformation ripening, full development, termination, conclusion, close decline, lapse (of time), a figure of speech allied to Rūpaka by which the properties of any object are transformed to that with which {म.} *परिणामो* कह होसइ न याणिमो तस्स पेम्मस्स। (परिणामः कथं भविष्यति न जानीमस्तस्य प्रेम्नः) वज्जालग्गं, पेम्मवज्जा, पृष्ठ 112/331

परित्तज (परिच्चय / परिच्चअ) pari-ttaja (pari-ccaya / pari-ccaa) परि √त्यज् < क्रिया [अक.] [Verb] छोड़ देना, छोड़ना to leave, to forsake, to give up, to let go {शौ.} (वासवदत्ता-) ण खु अहं पाणाणि *परित्तजामि*। (न खल्वहं प्राणान् परित्यजामि) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/3, पृष्ठ 17

परिदेव parideva परिदेव < विशेषण [Adjective] रोना-धोना, विलाप lamentation, crying, moaning, weeping, sorrowfully, etc. {शौ.} (विदूषक-) णं अदिट्ठाए उव्वसीए भवदो *परिदेविदं* सुणिअ समाणानुराअसूअआइं अक्खराइं विसज्जिआइं होन्ति। (ननु अदृष्टयोर्वश्या भवतः परिदेवितं श्रुत्वा समानुराग-सूचकान्यक्षराणि विसृष्टानि भवन्ति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-11/2, पृष्ठ 163

परिपाळिद (परिपालिय) paripāḷida (paripāliya) परिपालित < विशेषण [Adjective] बचाना, रक्षित protected, cherished, complied with {शौ.} (धात्री-) दिट्ठिआ अय्येण *परिपाळिदो* अअं जणो। (दिष्ट्यार्येण परिपालितोऽयं जनः) अविमार., भास., गाथा-7/2, पृष्ठ 127

परिब्भट्ठ pari-bbhaṭṭha परिभ्रष्ट < विशेषण [Adjective] पतित, स्खलित sinner, corrupt {शौ.} (नेपथ्ये-) गुत्तिवालअं वावादिअ, बन्धणं भेदिअ, *परिब्भट्ठो* अवक्कमदि। (गुप्तिपालकं व्यापाद्य, बन्धनं भित्वा, परिभ्रष्टः अपक्रामति) मृच्छ., पृष्ठ 327/6

परिब्भमिअ paribhamiya परिभ्रम्य < पूर्वकालिक कृदन्त [Conjunctive Participle] घूमकर, भटका हुआ to turned, roaming about aimlessly {शौ.} (विदूषक-) अहं पि दाव दिअसे णअरं *परिब्भमिअ* अलद्धभोआ पाउडगणिआ विअ रत्तिं पस्सदो सइदुं आअच्छामि। (अहोमपि तावद् दिवसे नगरं परिभ्रम्यालब्धभोगा प्राकृतगणिकेव रात्रौ पार्श्वतः शयितुमागच्छामि) अविमार., भास., गाथा-7/2, पृष्ठ 129

परिभव pari-bhava परिभव < संज्ञा (पुं.) [Noun] तिरस्कार, अपमान, क्षति पहुँचाना, प्रतिष्ठा भंग, निरादर, मानहानि, पराजय insult, defeat, disgrace, contempt, failure, etc. {शौ.} (वासवदत्ता-) अय्य! तह परिस्समो परिखेदं ण उप्पादेदि, जह अअं *परिभवो।* (आर्य! तथा परिश्रमः परिखेदं नोत्पादयति, यथायं परिभवः) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-3/1, पृष्ठ 2

परिभोअ (परिभोग) pari-bhoa (pari-bhoga) परिभोग < संज्ञा (पुं.) [Noun]

परिभोग, बार-बार भोग, जिसका बार-बार भोग किया जाय वह वस्त्र आदि, जिसका एक ही बार भोग किया जाऐ- जो एक ही बार काम में लाया जाऐ वह आहार, पान आदि वाह्य वस्तुओं का भोग consumption, enjoyment, etc. {म.} वसुहा-सयण-पहु प्पंत-रेणु-*परिभोअ*-विहु रिअ-कवोलं (वसुधाशयनप्रभवद् रेणुपरिभोगविधुरित-कपोलम्) गउडवहो, गाथा-839, पृष्ठ 125

परिवड्ढ (परिअड्ढ) parivaḍḍha (pariaḍḍha) परि √वृध् < क्रिया [अक.] [Verb] बढ़ना, उन्नति करना to increase, to grow, to expand, to progress {म.} अत्थो च्चिय *परिवड्ढउ* जेण गुणा पायडा हुंति। (अर्थ एव परिवर्धतां येन गुणाः प्रकटा भवन्ति) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा, पृष्ठ 50/144

परिवत्तिद (परिअट्टिय / परिअत्तिय) parivattida (pariaṭṭiya / pariattiya) परिवर्तित < विशेषण [Adjective] परिवर्तित, बदलाया हुआ changed, altered commuted, converse modified {शौ.} (चेट-) तदो मए हत्थिहत्थामद्दताडिअमाणो दन्तन्तरपरिवत्तमाणो हत्थिहत्थपडिदचरणो तदो हा हा विपाडिदो हा हा हदो त्ति जणवादे संवुत्ते तदो दिण्णकरप्पहारेण *परिवत्तिदं* हत्थिं करिअ भोइदो सो परिव्वाजो। (ततो मया हस्तिहस्तामर्दताड्यमानो दन्तान्तरपरिवर्तनमानो हस्तिहस्तपतित-चरणः ततो हा हा विपाटितो हा हा हत इति जनवादे संवृत्ते ततो दत्तकरप्रहारेण परिवर्तितं हस्तिनं कृत्वा मोचितः स परिव्राजः) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 221

परिवाडि (परिवाडी) parivāḍi (parivāḍī) परिपाटि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] परम्परा, परिपाटी, पद्धति, रीति, पंक्ति, क्रम, सूत्रार्थ वाचना, अध्यापन custom, tradition, convention, etc. {म.} देह-*परिवाडि*-पीडा-हुंकास्तरंगिओ विणिक्खमइ। (देह परिपाटीपीडाहुंकारतरङ्गितो विनिष्कामति) गउडवहो, गाथा-851, पृष्ठ 126

परिवुत्थ parivuttha पर्युषित < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] रहना, निवास, बास, रहा हुआ resting, staying, sojourned, etc. {म.} आलीयमाण-भासा *परिवुत्थं* महिस-सत्थाण। (आलीयमानभासाः पर्युषितं महिषसार्थानाम्) गउडवहो, गाथा-840, पृष्ठ 82

परिवुद (परिवुड) pari-vuda (pari-vuḍa) परिवृत< विशेषण [Adjective] परिवृत, परिकरित, वेष्टित surrounded, encircled, encompassed, circumscribed, spread throughout, pervaded, etc. {मा.} (गोपालक-) एषो भट्टा काळिअ 'णाम महाणाअ' परिपीडिअ गोवकण्णाआहि *परिवुदो* ट्ठिओ। (एष भर्ता कालियं नाम महानागं परिपीड्य गोपकन्यकाभिः परिवृतः स्थितः) बाल., भासनाटक., श्लोक-12/4, पृष्ठ 546

परिवुद pari-vuda परिवृत < विशेषण [Adjective] परिवृत, परिकरित, वेष्टित surrounded, encircled, encompassed, circumscribed, pervaded, etc. {मा.} (गोपालक-) एषो भट्टा काळिअ 'णाम महाणाअ' परिपीडिअ गोवकण्णाआहि *परिवुदो* ट्ठिओ। (एष भर्ता कालियं नाम महानागं परिपीड्य गोपकन्यकाभिः परिवृतः स्थितः) बाल., भासनाटक., श्लोक-12/4, पृष्ठ 546

परिव्वाजिआ (परिव्वाइया) parivvājiā (parivvāiyā) परिव्राजिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] संन्यासिनी, परिव्राजिका female ascetic, nun, anchorite, mark, etc. {शौ.} (देवी-) मूढे *परिव्वाजिए* ! मं जाग्गतंपि सुत्तं विअ करेसि। (मूढे परिव्राजिके! मां जाग्रतामपि सुप्तामिव करोषि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17/1, पृष्ठ 253

परिसंठिय pari-saṇṭhiya परिसंस्थित < विशेषण [Adjective] परिसंस्थित, स्थित, रहा हुआa standing pose, etc. {म.} भवण-सिहरेसु पुर-सुंदरीण *परिसंठिअं* सहइ। (भवनशिखरेषु पुरसुन्दरीणां परिसंस्थितं शोभते) गउडवहो, गाथा-207, पृष्ठ 33

परिसक्कण pari-sakkaṇa परिष्वष्कण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] परिभ्रमण moving about, going around, stroll {म.} अरइ-*परिसक्कणा* रणिर-णेउराराव-संगलंतीसु। (अरतिपरिष्वष्कणात् रणनशीलनूपुराराव-संगलन्तीषु) गउडवहो, गाथा-460, पृष्ठ 71

परिसङ्किदवण्ण parisaṅkida-vaṇṇa परिशंकितवर्ण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] परिशंकितवर्ण, भयभीत चेहरा, मुँह का रग उड़ा होना, भयभीत, शंकालू सहमी to be feared or apprehended, scared, terrified face, to mistrust, etc. {शौ.} (सीता-) हञ्जे, ओदादिआ *परिसङ्किदवण्णा* विअ दिस्सइ।

(हञ्जे, अवदातिका परिशङ्कितवर्णेव दृश्यते) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-1, पृ. 251

परिसडिअ pari-saḍia परिशटित < विशेषण [Adjective] सड़ा हुआ, विनष्ट rotted, decomposed {म.} *परिसडिअ-*वेणु-दल-रंग-पिंगलं गलइ गिरि-अड-दरीसु। (परिशटितवेणुदलरङ्गपिङ्गलं गलति गिरितटदरीषु) गउडवहो, गाथा-614, पृष्ठ 93

परिसुद्धि pari-suddhi परिशुद्धि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] विशुद्धि, निर्मलता toilette, complete purity, etc. {म.} कीएँ वि अहिणव-भुमआ-णडाल-*परिसुद्धि*-लद्ध-परिणाहं। (कस्या अपि अभिनवभ्रूललाट-परिशुद्धिलब्धपरिणाहम्) गउडवहो, गाथा-1123, पृष्ठ 165

परिस्संत (परिसंत) pari-ssanta (pari-santa) परिश्रान्त < विशेषण [Adjective] परिश्रान्त, थका हुआ fatigued, very much tired, worn out, exhausted feeling much exerted, etc. {शौ.} (वृद्धगोपालक-) *परिस्सन्तो* खु अहं। (परिश्रान्तः खल्वहम्) बाल., भासनाटक., श्लोक-4/3, पृष्ठ 540

परिस्सम pari-ssama परिश्रम < संज्ञा (पुं.) [Noun] मेहनत, परिश्रम hard work, labour {शौ.} (वसन्तसेना-) *परिस्समो* अज्जस्स बाधेदि। (परिश्रम आर्यस्य बाधते) मृच्छ., पृष्ठ 130/2

परिहर pari-hara परि √हृ < क्रिया [सक.] [Verb] त्याग करना, छोड़ना, आसेवन करना to abandon, to give up, to leave, etc. {म.} सुणह सोअव्वाइं, पसंसह पसंसणिज्जाइं, परिहरह *परिहरिअव्वाइं* आयरह आयरिअव्वाइं। (शृणुत श्रोतव्यानि, प्रशंसत प्रशंसनीयानि, परिहरत परिहर्तव्यानि, आचरत, आचरितव्यानि) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 2

परिहारवई parihāravaī परिहारवती < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] ऋतुमती a woman in her menstruation {म.} *परिहारवइं* व पियं मइल-च्छायं पिअच्छंता। (परिहारवतीमिव प्रियां मलिनच्छायां पश्यन्तः) गउड़वहो, गाथा-921, पृष्ठ 136

परिहास pari-hāsa परिहास < संज्ञा (पुं.) [Noun] उपहास, हंसी, मसखरी laughing, joking, fun, etc.{शौ.} (नटी-)

परिहासो क्खु मए किदो। (परिहास: खलु मया कृत:) मृच्छ., पृष्ठ 15/1

परिहासणिमित्त parihāsa-ṇimitta परिहासनिमित्त < संज्ञा (नपुं.) [Noun] हंसी के निमित्त, ठिठोली, परिहास के लिए persiflage, jesting, jocularity, etc. {शौ.} (निपुणिका-) णं भट्टिणीए ओलोअदु। *परिहासणिमित्तं* कहिं वि अदिट्ठेण भत्तुणा होदव्वं। (ननु भट्टिन्यवलोकयतु। परिहासनिमित्तं कुत्राप्यदृष्टेन भर्ता भवितव्यम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 277/3

परुण्ण (परुइय) paruṇṇa (paruiya) प्ररुदित < विशेषण [Adjective] जो रोने लगा हो वह crying bitterly, weeping {म.} छिज्जइ झिण्णावि तणू अट्ठिअवाहं पुणो *परुण्णं* व मुहं। (क्षीयते क्षीणापि तनुरास्थितबाष्पं पुन: प्ररुदितमिव मुखम्) सेतुबन्धं, गाथा-35/1, पृष्ठ 25

परोवयार (परोवआर) parovayāra (parovaāra) परोपकार < संज्ञा (पुं.) [Noun] परोपकार, दूसरे की भलाई benevolence, munificence, generosity, etc. {म.} नेच्छसि परावयारं *परोवयारं* च निच्चमावहसि। (नेच्छसि परापकारं परोपकारं च नित्यमावहसि) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा,पृष्ठ 14/41

पलअ (पलय) palaa (palaya) प्रलय < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रलय, विनाश, युगान्त, कल्पान्त-काल, जगत् का अपने कारण में लय deluge, disastrous flood, universal death, complete annihilation, etc. {म.} सेला चलंति *पलए* मज्जायं सायरा वि मेल्लंति। (शैलाश्चलन्ति प्रलये मर्यादां सागरा अपि मुञ्चन्ति) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 16/47

पलमगुलु palamagulu परमगुरु< विशेषण [Adjective] श्रेष्ठतम गुरु, गुरुतर (गुरु के गुरु), पूजनीय, भगवान grand teacher, his holiness, a lord, etc. {मा.} (शकार-) तुमं पि मे गुलु *पलमगुलु* पेक्खिअशि। (त्वमपि मे गुरु: परमगुरु: (असि) प्रेक्ष्यसे) मृच्छ., पृष्ठ 395/8

पललोअ pala-loa परलोक < विशेषण [Adjective] दूसरा लोक, परलोक the next, other world, heaven or hell{मा.}(शकार-)

के शे *पललोए*? (क: स: परलोक: ?) मृच्छ., पृष्ठ 415/8

पलहि [देशज] **palahi** कार्पास < संज्ञा (पुं., स्त्री.) [Noun] कपास cotton {म.} गह-*पलहि*-वीअ-णिवहो पच्छा पुंजिज्जइ णिसाए। (ग्रहकार्पासबीजनिवहः पश्चात् पुञ्जीक्रियते निशया) गउडवहो, गाथा-1173, पृष्ठ 172

पलास (पलाश / पलस) palāsa (palāśa / palasa) पलाश< संज्ञा (पुं.) [Noun] पलाश, किंशुक का वृक्ष, ढाक पत्र, पत्ता name of a tree, also called Kiṃśuka, a leaf or petal in general, etc. {म.} इह माहवीण कोमल-*पलास*-दर-कविस-बंधणाहरणं। (इह माधवीनां कोमलपलाशदर कपिश-बन्धनाभरणम्) गउडवहो,गाथा-594,पृष्ठ 90 {मा.} (शकार-) सहआरपादवं सेवित्ता ण *पलास*-पादवं अंगीकरिस्सं। (सहकारपादपं सेवित्वा न पलाशपादपमङ्गीकरिष्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 426/8

पलित्त palitta प्रदीप्त < विशेषण [Adjective] प्रदीप्त, प्रज्वलित illuminated, lighted, kindled, inflamed {म.} जाओ पियं पियं पइ एक्कं विज्झाइ तं चिय *पलित्तं*। (यात: प्रियं प्रियं प्रति एकं निर्वापयति तमेव पदीप्तम्) वज्जालग्गं, वेसावज्जा, पृष्ठ 192/563

पलिश्शंत (पलिस्संत / परिस्संत) paliśśanta (palissanta / parissanta) परिश्रान्त < विशेषण [Adjective] थका हुआ, थक कर चूर-चूर हुआ tired, exhausted, etc. {मा.} (स्थावरकश्चेट-) अधवा चक्कपलिवट्टिआए *पलिश्शंतश्श* भालिके पवहणे पडिभाशेदि । (अथवा चक्र-परिवृत्तिकया परिश्रान्तस्य भारिकं प्रहवणं प्रतिभासते) मृच्छ., पृष्ठ 325/6

पल्लव pallava पल्लव < संज्ञा (पुं.) [Noun] पल्लव, पत्र, पत्ता sprout, spring, leaf {म.} नमिऊण गोरिवयणस्स *पल्लवं* ललियकमलसरभमरं। (नत्वा गौरीवदनस्य पल्लवं ललितकमल-सरोभ्रमरम्) वज्जालग्गं, रुद्दवज्जा, पृष्ठ 208/610

पल्लवगुच्छअ (पल्लवगुच्छ) pallava-gucchaa (pallava-guccha) पल्लवगुच्छक < संज्ञा (पुं.) [Noun] फूलों का गुच्छा, फूलों का स्तवक, पल्लवगुच्छ bunch of flowers, etc. {शौ.} (बकुलावलिका-) ण दाव भट्टा। एसो

असोअसाहावलंबी *पल्लवगुच्छओ* । ओदंसेहि णं। (न तावद्भर्ता। एषोऽशोकशाखावलम्बी पल्लवगुच्छः। अवतंसयैनम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-14, पृष्ठ 282/3

पल्लविद (पल्लविअ) pallavida (pallavia) पल्लवित < विशेषण [Adjective] पल्लवित, पल्लवाकार, अंकुरित, प्रादुर्भूत, उत्पन्न, पल्लव युक्त sprouted full of young shoots or sprouts, flourishing, thriving, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) साअरं उज्झिअ कहिं वा महाणई ओदरइ को दाणिं सअहारं अन्तरेण अदिमुत्तलदं *पल्लविदं* सहेदि। (सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति कं इदानीं सहकारअन्तरेणातिमुक्तलतां पल्लवितां सहते) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 10, पृष्ठ 43/3

पल्ली pallī पल्ली < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गाँव, छोटा-सा गाँव, चोरों के निवास का गहन स्थान a small village, a hamlet {म.} इह *पल्ली*-धूमुब्भेअ-धूसरिज्जंत-कुंज-रमणिज्जा। (इह पल्लीधूमोद्भेद-धूसरायमाणकुञ्जरमणीयाः) गउडवहो, गाथा-645, पृष्ठ 97

पल्हत्थ (पलोट्ट) palhattha (palotta) पर्यस्त < विशेषण [Adjective] फैंका हुआ, क्षिप्त, हत, विक्षिप्त, पतित, गिरा हुआ, प्रवृत्त, फैला हुआ thrown about, scattered, etc. {म.} धराअट्ठिअ-*पल्हत्थ*-विज्जु-वलयं व महि-वेढं। (धाराकृष्टपर्यस्त विद्युद्वलयमिव महीपीठम्) गउडवहो, गाथा-415, पृष्ठ 64

पवज्ज pavajja प्र √पद् < क्रिया [सक.] [Verb] स्वीकार करना to accept, to admit {म.} ता विसमा कज्जगई जाव न धीरा पवज्जंति। (तावद्विषमा कार्यगतिर्यावन्न धीराः प्रपद्यन्ते) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 36/103

पवल pavala प्रवर < विशेषण [Adjective] उत्तम, श्रेष्ठ, किसी गोत्र के श्रेष्ठतम आचार्यों के नाम एक शाखा decent, sublime, etc. {मा.} (शकार-) एशे मह बहिणीपदिणा शव्वुज्जाणाणं पवले पुप्फकलण्डउज्जाणे दिण्णे। (एतन्मम भगिनीपतिना सर्वोद्यानानां प्रवरं पुष्पकरण्डकोद्यानं दत्तम्) मृच्छ., पृष्ठ 378/8

पवलपुलिश pavala-puliśa प्रवरपुरुष< संज्ञा (पुं.) [Noun] श्रेष्ठ, श्रद्धेय पुरुष great, reverend person {मा.} (शकार-) भावे! भावे! मं पवलपुलिशं मणुश्शं वाशुदेवकं ? (भाव! भाव! मां प्रवरपुरुषं मनुष्यं वासुदेवकम् ?) मृच्छ., पृष्ठ 403/8

पवस pavasa प्रवास < विशेषण [Adjective] प्रवास करना, निवास करना, विदेश गमन करना migration, going or journeying abroad, foreign residence {म.} रे ससिवाहणवाहण मा पवससु एरिसम्मि कालम्मि। (रे शशिवाहनवाहन मा प्रवसेदृशे काले) वज्जालग्गं, पवसियवज्जा, पृष्ठ 126/371

पवहण pa-vahaṇa प्रवहण< संज्ञा (नपुं.) [Noun] नौका, जहाज, गाड़ी आदि वाहन, बन्द गाड़ी या पालकी (स्त्रियों के लिए), ढोने वाला boat, ship, vehicle in general, a covered carriage or litter (for woman), conveyance, etc. {शौ.} (प्रथमा चेटी-) गहिदावगुंठणं पक्खदुआरए सज्जं पवहणं। (गृहीतावगुण्ठनं पक्षद्वारे सज्जं प्रवहणम्) मृच्छ., पृष्ठ 192/1

पवहणिअ pavahaṇia प्रवहणिक< विशेषण [Adjective] गाड़ीवान् cart-driver {शौ.} (वसन्तसेना-) को एत्थ *पवहणिओ* ? (कोऽत्र प्रवहणिकः ?) मृच्छ., पृष्ठ 222/4

पवाद (पवाय) pavāda (pavāya) प्रवात< संज्ञा (पुं.) [Noun] बयार, प्रकृष्ट पवन, वहा हु आ पवन, तेज हवा wind, gale, tempest, storm, etc. {मा.} (वकुलावलिका-) सहि! एक्कस्स दे चलणस्स अवसिदो राअणिक्खेवो। केवलं मुहमारुदो लम्भइदव्वो। अहवा *पवादं* एदं ठाणं। (सखि एकस्य ते चरणस्यावसितो रागनिक्षेपः। केवलं मुखमारुतो लम्भयितव्यः। अथवा प्रबातमेतत्स्थानम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 27 {शौ.} (विदूषक-) णं *पवादे* वि णिक्कम्पा गिरिओ। (ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरयः) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-8/6, पृष्ठ 100

पवादसअण pavāda-saaṇa प्रवातशयन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] वयार वाला भवन, हवामहल, प्रकृष्ट पवन वाला कमरा palace in the air, aired roon, etc. {शौ.} (प्रतिहारी-) देव *पवादसअणे* देवी णिसण्णा रत्तचन्दणधारिणा परिअणहत्थागदेण

चलणेण भअवदीए कहाहि विणोदिज्जमाणा चिट्ठदि। (देव! प्रवातशयने देवी निषण्णा रक्तचन्दनधारिणा परिजनहस्तगतेन चरणेन भगवत्या कथाभिर्विनोद्यमाना तिष्ठति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2, पृष्ठ 292/4

पविट्ठ pavitṭha प्रविष्ट < विशेषण [Adjective] प्रवेश किया हुआ, अन्तर्गत, अन्दर गया हुआ gone into or entered, etc. {ढक्की(ठक्की)} (द्यूतकर-) वसन्तसेणागेहं पविट्ठो सो। (वसन्तसेनागेहं प्रविष्टः सः) मृच्छ., पृष्ठ 126/2

पवित्त pavitta पवित्र < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] पवित्र, निर्दोष, शुद्ध, स्वच्छ, दर्भ, कुशा pure, holy, sacred, clean, etc. {म.} देसो तेण *पवित्तो* अच्छउ नयरं वसंतेण। (देशस्तेन पवित्र आस्तां नगरं वसता) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 92/272

पविरल्लिअ [देशज] **pavirallia** प्रविस्तृत< विशेषण [Adjective] विस्तृत, विस्तार वाला, विस्तारित spread, expanded {म.} पलयम्मि जं च *पविरल्लिअं* व बहलाइ गोजालं। (प्रलये यच्च प्रविस्तृतमिव बहलायते गो जालम्) गउडवहो, गाथा-50, पृष्ठ 8 {म.} विरसा सिवाओ सोणिअ-कण्णुल्ल-*पविरेल्लिअ*-रवाओ। (विरसाः शिवाः शोणितकणर्द्रविस्तारितरवाः) गउडवहो, गाथा-435, पृष्ठ 67

पवेविर pavevira प्रवेपितृ < विशेषण [Adjective] कंपनशील, काँपने वाला trembling, a person who thrilled {म.} सुहय गयं तुह विरहे तिस्सा हिययं *पवेविरं* अज्ज। (सुभग गतं तव विरहे तस्या हृदयं प्रवेपनशीलमद्य) वज्जालग्गं,ओलग्गाविया-वज्जा, पृष्ठ 146/431

पवेश pavesa प्रवेश < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रवेश करना, भीतर जाना, भीतरी स्थूलता, पैठ, घुसना, नाटक का एक हिस्सा entrance, entry, admission, admittance, approach, access, reach, etc.{शौ.} (चर-) ता देहि मे *पवेसं* जाव दे उवज्झाअस्स जमपडं पसारिअ धम्मं उपदिसामि। (तस्माद्देहि मे प्रवेशं यावत्ते उपाध्यायाय यमपटं प्रसार्य धर्ममुपदिशामि) मुद्रा., श्लोक-17/1, पृष्ठ 6

पव्वइद (प्पव्वइद / पव्वइअ) pavvaida (ppavvaida / pavvaia) प्रव्रजित <

विशेषण [Adjective] प्रव्रजित, संन्यासी, दीक्षित, संन्यस्त, गत, प्राप्त renunciated, initiated, etc.{मा.} (चेट-) सुणादु अज्जु आ-एसो उग्गवेगेण ओगाहणणिव्वत्तिदेण पस्सुदमदगन्धं राअमग्गं करन्तेण मङ्गळहत्थिणा भद्दकवोदएण अणेअपुरुससङ्कुळेसु राअमग्गेसु उत्तरिअपडविराअदाए अहिअळक्खणीओ कोच्चि *प्पव्वइदो* समासादिदो। (श्रृणोत्वज्जुका- एष उग्रवेगेनावगाहन-निवर्तितेन प्रसुतमदगन्धं राजमार्गं कुर्वता मङ्गलहस्तिना भद्रकपोतकेनानेक-पुरुषसङ्कुलेषु राजमार्गेषूत्तरीयपट-विरागतयाधिकलक्षणीयः कश्चित् प्रव्रजितः समासादितः) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 221

पव्वज्जा (पवज्जा) pavvajjā (pavajjā) प्रव्रज्या < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दीक्षा, संन्यास, गमन, गति wandering about as a religious mendicant, initiation as a pupil or disciple, etc.{म.} वेल्लहलकमल-हत्था रायसिरी अहवा *पव्वज्जा* । (विकसितकमलहस्ता राजश्रीरथवा प्रव्रज्या) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 34/96

पव्वदीसर pavvadīsara पर्वतेश्वर < संज्ञा (पुं.) [Noun] पर्वतेश्वर, पर्वतों का स्वामी, हिमालय, विशाल पहाड़ lord of the mountains, the Himālaya, etc. {शौ.} (प्रतीहारी-) इच्छामि अज्जेण अब्भणुण्णादो देवस्य *पव्वदीसरस्स* पारलोइअं कादुं तेण धारिदपुव्वाइं भूसणाइं भअवन्ताणं बह्मणाणं, पडिवादेमि त्ति। (इच्छाम्यार्येणाभ्यनुज्ञातो देवस्य पर्वतेश्वरस्य पारलौकिकं कर्तुं तेन धारितपूर्वाणि भूषणानि भगवद्भ्यो ब्राह्मणेभ्यः प्रतिपादयामिति) मुद्रा., श्लोक-19/1, पृष्ठ 11

पव्वालिअ pavvālia प्लावित < विशेषण [Adjective] प्लावित (जलादि से आप्लावित) जल व्याप्त, सराबोर किया हुआ flooded, inundated, etc. {म.} *पव्वालि-आ*णणस्स वि सयंभुणो साअरजलेण। (प्लाविताननस्यापि स्वयंभुवः सागरजलेन) गउडवहो, गाथा-813, पृष्ठ 121

पषूद (पसूद / पसूअ) paṣūda (pasūda / pasūa) प्रसूत < विशेषण [Adjective] प्रसूत, उत्पन्न born, begotten, etc. {मा.} (नन्दगोप-) अज्ज अड्ढळत्ते अम्हाणं कुडुम्बिणीए, णहि णहि, तुम्हाणं दाषीए

जषोदाए *पषूदा* इअं च दाळी तवष्षिणी जादमत्ता एव्व ओग्गदप्पाणा षंवुत्ता। (अद्यार्धरात्रेऽस्माकं कुटुम्बिन्या, नहि नहि युष्माकं दास्या यशोदया प्रसूतेयं च दारी तपस्विनी जातमात्रैवापगतप्राणा संवृत्ता) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 518

पसंग pasaṅga प्रसङ्ग < संज्ञा (पुं. नपुं.) [Noun] प्रसंग, परिचय, उपलक्ष, आसक्ति, भक्ति, व्यसन, संलग्नता, मेल-जोल, अन्तःसंपर्क, साहचर्य, अवसर, संयोग, घटना, युक्ति, अनुमान, प्रस्ताव, अधिकार context, reference, topic, contact, connection, intercourse, incident, occasion, etc. {शौ.} (करभक-) तदो चन्दउत्तेण अण्णाभङ्गकलुसिदेण *पसंग*-सूइदं अमच्चस्स गुण पसंसिअ अपब्भंसिदो अहिआरादो चाणक्कहदओ (ततश्चन्द्र-गुप्तेनाज्ञाभङ्गकलुषितेन प्रसङ्गसूचितम-मात्यस्य गुणं प्रशस्यापभ्रष्टो-ऽधिकाराच्चाणक्यहतकः) मुद्रा., श्लोक-10, पृष्ठ-55

पसण्ण pasaṇṇa प्रसन्न < विशेषण [Adjective] प्रसन्न, खुश, स्वस्थ, स्वच्छ glad, delighted, pleased, happy, cheerful, etc. {शौ.} (मागधिका-) जदि मे महाराओ *पसण्णो*, एत्थ एव्व जामादुओ आणीदव्वो त्ति। (यदि मे महाराजः प्रसन्नः, अत्रैव जामातानेतव्य इति) अविमार., भास., गाथा-13/3, पृष्ठ 135

पसण्णहिअअ pasaṇṇa-hiaa प्रसन्नहृदय< विशेषण [Adjective] प्रसन्न हृदय, ख़ुशमिज़ाज cheerful heart, delighted, happy, etc. {शौ.} (सीता-) किंणु खु मं अन्तरेण *पसण्णहिअओ* अय्यउत्तो भवे। (किन्नु खलु मामन्तरेण प्रसन्नहृदय आर्यपुत्रो भवेत्) अभिषेक., भासनाटक., गाथा-1/2, पृष्ठ 331

पसादीकिद pasādī-kida प्रसादीकृत < विशेषण [Adjective] प्रसन्न किया हुआ pleased, bestow as a favour, etc. {शौ.} (चेटी-) अज्जा अज्जउत्तेण तुम्हाणं *पसादीकिदा*, ण जुत्तं मम एदं गेण्हिदुं। (आर्या आर्यपुत्रेण युष्माकं प्रसादीकृता न युक्तं ममैतां गृहीतुम्) मृच्छ., पृष्ठ 317/6

पसाधण pasādhaṇa प्रसाधन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] प्रसाधन, सजावट, सामग्री adornment, decoration, dressing {शौ.} (चेट-) हञ्जे! उवणेहि मे *पसाधणं* अत्ताणअं

पसाधइस्सं। (हञ्जे! उपनय मे प्रसाधनम् आत्मानं प्रसाधयिष्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 322/6

पसाधणकला pasādhaṇa-kalā प्रसाधनकला < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] प्रसाधनकला, तैयार होने का तरीका, सिंगार की कला art of dressing, style of adornment, etc. {शौ.} (मालविका-) हला अत्तणो चलणं त्ति लज्जेमि णं पसंसिदुं। केण *पसाहणकलाए* अहिणीदासि। (सखि! आत्मनश्चरण इति लज्जे एनं प्रशंसितुम्। केन प्रसाधनकलायामभिनीतासि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 279/3

पसाय pasāya प्रसाद < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रसन्नता, कृपा, मेहरबानी, ख़ुशी happiness, calmness, favour, kindness {म.} दारिद्दय तुज्झ नमो जस्स *पसाएण* एरिसी रिद्धी। (दारिद्र्य तुभ्यं नमो यस्य प्रसादेनेदृश्यृद्धि:) वज्जालग्गं, दारिद्द-वज्जा, पृष्ठ 48/139

पसाहणगव्व pasāhaṇa-gavva प्रसाधनगर्व < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रसाधनगर्व, श्रृंगार करने की विद्या का गर्व decoration proud, dressing conceit, etc. {शौ.} (विदूषक-) अज्ज किल देवीए एव्वं पंडितकोसिई भणिदा- भअवदि! जं तुमं *पसाहणगव्वं* वहसि तं दंसेहि मालविआए सरीरे विवाहणेवत्थं त्ति। (अद्य किल देव्यैवं पण्डितकौशिकी भणिता- भगवति! यत्त्वं प्रसाधनगर्वं वहसि तद्दर्शय मालविकायाः शरीरे विवाहनेपथ्यमिति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-3/5, पृष्ठ 312

पसीद (पसिअ) pasīda (pasia) प्रसीद [प्र √सद्] < क्रिया [अक.] [Verb] प्रसन्न होना, प्रसन्न करना to be pleased, to be happy {शौ.} (चेटी-) *पसीददु पसीददु* अज्जआ। (प्रसीदतु प्रसीदतु आर्या) मृच्छ., पृष्ठ 193/4

पसु pasu पशु < संज्ञा (पु.) [Noun] पशु, जन्तु-विशेष, सींग पूँछवाला प्राणी, चतुष्पद प्राणि-मात्र, बकरा an animal in general, a being, a sacrificial animal such as a goat, an oblation, a victim, etc. {म.} गोमहिसतुंरगाणं *पसूण* सव्वाण जुज्जए ठाणं। (गोमहिषतुरंगाणां पशूनां सर्वेषां युज्यते स्थानम्) वज्जालग्गं,विंझवज्जा,पृष्ठ 64/189

पसुत्त pa-sutta प्रसुप्त < विशेषण [Adjective] सोया हुआ slept, sleeping {शौ.} (रदनिका-) बाहिर-दुआर-सालाए *पसुत्तो* वड्ढमाणओ, सोवि एत्थ ण दीसइ। (बहिर्द्वारशालायां प्रसुप्तो वर्द्धमानकः, सोऽप्यत्र न दृश्यते) मृच्छ., पृष्ठ 173/3

पसूणलच्छी pasūṇa-lcchī पसूनलक्ष्मी< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] फूले हुए पुष्पों/ वृक्षों की शोभा to blossom, tree beauty, etc. {शौ.} (प्रतीहारी-) इच्छम्मि अज्जउत्तेण सह असोअरुक्खस्स *पसूणलच्छिं* पच्चक्खीकादुं त्ति। (इच्छाम्यार्यपुत्रेण सहाशोकवृक्षस्य प्रसूनलक्ष्मीं प्रत्यक्षीकर्तुमिति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., अंक-5, पृष्ठ 312

पसूद (पसूअ) pasūda (pasūa) प्रसूत< विशेषण [Adjective] प्रसूत, उत्पन्न, जन्म होना born, begotten, etc.{शौ.} (तापसी-) जह भद्दमुहो भणादि। अच्छरासंबन्धेण इमस्स जणणी एत्थ देवगुरुणो तवोवणे *पसूदा*। (यथा भद्रमुखो भणति। अप्सरः संबन्धेनास्य जनन्यत्र देवगुरोस्तपोवने प्रसूता) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-120/7, पृष्ठ 125

पस्सदो passado पार्श्वतः < अव्यय [Indeclinable] समीप में, पास, निकट, नज़दीक near, at hand, by the side, close to {शौ.} (चेटी-) किं भणसि 'एसा भट्टिदारिआ माहवीळदामण्डवस्स *पस्सदो* कन्दुएण कीळदि' त्ति। (किं भणसि, एषा भर्तृदारिका माधवीलतामण्डपस्य पार्श्वतः कन्दुकेन क्रीडतीति) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/2, पृष्ठ 12

पहळादिअ (पहलादिद) pahaḷādia (pahalādida) प्रह्लादित < विशेषण [Adjective] प्रह्लादित, आनन्दित pleased, delighted, joyful, etc. {शौ.} (सीता-) किण्णुहु अय्यउत्तस्स आगमणेण *पहळादिअस्स* हिअअस्स अज्ज आवेओ विअ संवुत्तो। (किन्नुखल्वार्यपुत्रस्यागमनेन पल्हादितस्य हृदयस्यायावेग इव संवृत्तः) अभिषेक., भासनाटक., श्लोक-3/5, पृष्ठ 355

पहव pahava प्र √भू < क्रिया [अक.] [Noun] समर्थ होना, करना, उत्पन्न होना to able, to do, to rise, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) पोरव! रक्ख अविणमं। मअणसंतत्तावि ण सु अत्तणो *पहवामि* । (पौरव! रक्षाविनियम् ! मदन संतप्ताऽपि न

खल्वात्मनः प्रभवामि) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 20, पृष्ठ 49/3

पहाण pahāṇa प्रधान < विशेषण [Adjective] मुख्य, मूल, प्रमुख, बड़ा, उत्तम, सर्वश्रेष्ठ जैसा कि प्रधानामात्य, मुख्य रूप से, अन्तर्हित, प्रचलित, प्रबल head, chief, prime, leading, general, etc. {शौ.} (धारिणी-) जइ वि एवं तह वि राअपरिग्गहो *पहाणत्तण* उवहरदि। (यद्यप्येवं तथापि राजपरिग्रहः प्रधानत्वमुपहरति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12/1, पृष्ठ 250

पहाव pahāva प्रभाव < संज्ञा (पु.) [Noun] प्रभाव, शक्ति, सामर्थ्य, महात्म्य, कोष और दण्ड का तेज influence, effect, dignity, power, pressure, impression, etc. {शौ.} (उर्वशी-) तेण हि *पहावदो* जाणीहि दाव कहिं सो मम हिअअचोरो किं वा अणुचिट्ठदि त्ति। (तेन हि प्रभावतो जानीहि तावत्क स मम हृदयचौरः किं वानुतिष्ठतीति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/3, पृष्ठ 180

पहिय (पहिअ) pahiya (pahia) पथिक, पान्थ < विशेषण [Adjective] पथिक, मुसाफिर traveller, wayfarer {म.} ओ *पहिय* पंथदीवय पुणो तुमं कत्थ दीसिहिसि। (हे पथिक पान्थदीपक पुनस्त्वं कुत्र द्रक्ष्यसे) वज्जालग्गं, पंथियवज्जा, पृष्ठ 150/442 {म.} खरपवणचाडुचालिरकंठट्ठियदिन्न-कप्पडो पहिओ। (खरपवनचाटुचलनशील-कण्ठस्थितदत्तकर्पटः पथिकः) वज्जालग्गं, पंथियवज्जा, पृष्ठ 150/444

पहु pahu प्रभु < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] प्रभु, स्वामी, भगवान्, समर्थ, अधिपति, नायक god, lord, ruler, proprietor, sovereign, master {म.} आलिहियकुंजरस्स व तुह *पहु* दाणं चिय न दिट्ठं। (आलिखितकुञ्जरस्येव तव प्रभो दानमेव न दृष्टम्) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 52/155

पहुत्तण pahuttaṇa प्रभुत्व < विशेषण [Adjective] प्रभुत्व, आधिपत्य, सर्वोपरिता, स्वामित्व, शासन mastery, ownership, domination, sovereignty, etc. {म.} अजसस्स न बीहिज्जइ *पहुत्तणं* तेण रमणिज्जं। (अयशसो न भीयते प्रभुत्वं तेन रमणीयम्) वज्जालग्गं, पहु वज्जा, पृष्ठ 50/148

पाअव pāava पादप < संज्ञा (पुं.) [Noun] पौधा, वृक्ष plant, tree {शौ.} (प्रियंवदा-) जह वणजोसिणी अणुरूवेण *पाअवेण* संगदा। (यथा वनज्योत्स्नानुरूपेण पादपेन संगता) अभि.शाकु., पृष्ठ 138/1

पाअष (पायस / पाअस) pāaṣa (pāyasa / pāasa) पायस < संज्ञा (पु, नपुं.) [Noun] पायस, दूध का मिष्टान्न, खीर emulsion, a dish made of rice, milk and sugar {मा.} (नन्दगोप-) अण्णष्हिं गेहे गच्छिअ *पाअषं* भुज्जइ। (अन्यस्मिन् गेहे गत्वा पायसं भुङ्क्ते) बाल., भासनाटक., श्लोक-29/1, पृष्ठ 524

पाआरखण्ड pāāra-khaṇḍa प्राकारखण्ड < संज्ञा (पुं.) [Noun] कोट का खण्ड, भवन का हिस्सा a fence part, part of a building/ wall {शौ.} (वीरक-) जो वि एसो *पाआरखण्डो* एदं अहिरुहिअ चन्दणेण समं गदुअ अवलोएमि। (योऽपि एष प्राकारखण्डः एतमधिरुह्य चन्दनेन समं गत्वा अवलोकयामि) मृच्छ., पृष्ठ 334/6

पाइयकव्व pāiya-kavva प्राकृतकाव्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] प्राकृत काव्य, प्राकृत कविता Prakrit poetry literature {म.} अमयं पाइयकव्वं पढिउं सोउं च जे न जाणंति। (अमृतं प्राकृतकाव्यं पठितुं श्रोतुं च ये न जानन्ति) वज्जालग्गं,पृष्ठ 2/2

पाउअकवि pāua-kavi प्राकृतकवि < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत कवि, प्राकृत की कविता करने वाले, भाषाकोविद a prakrit poet, a nature poet, Linguist, etc. {म.} (आहितुण्डिक-) भिद्द विण्णवेहि मह वअणेण अमच्चं। ण केवलं अहं सप्पजीवी *पाउअकवी* खु अहं। (भद्र विज्ञापय मम वचनेनामात्यम्। न केवलमहं सर्पजीवी प्राकृतकविः खल्वहम्) मुद्रा., श्लोक-10, पृष्ठ 24/2

पाउद (पाइअ / पागय/ पाउअ / पाअअ / पायय / पाकट) pāuda (pāia / pāgaya / pāua / pāaa / pāyaya / pākaṭa) प्राकृत < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] प्राकृत, सामान्यजन सम्बन्धी भाषा, आर्यावर्त की प्राचीन भाषा, मौलिक, नैसर्गिक, स्वाभाविक, प्रकृति से उत्पन्न, [पुं.] साधारण बुद्धि वाला मनुष्य Prakrit, language of common man, etc. {शौ.} (सूत्रधार-) ता किं ति सक्किअं परिहरिअ *पाउदबंधे* पउट्टो कई ? (तत् किमिति संस्कृतं

परिहृत्य प्राकृतबन्धे प्रवृत्तः कवि ?) कर्पूर., पृष्ठ 10/1

पाउसणदी pāusa-ṇadī प्रावृण्नदी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वर्षा काल की नदी river of rainy season, etc. {शौ.} (विदूषक-) *पाउसणदी* विअ अप्पसण्णा गदा देवी। ता उट्ठेहि उट्ठेहि। (प्रावृण्नदीवाप्रसन्ना गता देवी। तदुतिष्ठ उतिष्ठ) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/2, पृष्ठ 172

पाडच्च (पाडच्चर) pāḍacca (pāḍaccara) पाटच्चर < संज्ञा (पुं.) [Noun] चोर a thief {शौ.} (विदूषक-) अअं अवरो *पाडच्चरो* विअ दिढबद्धो मन्दुराए साहामिओ। (अयमपरः पाटच्चर इव दृढबद्धो मन्दुरायां शाखामृगः) मृच्छ., पृष्ठ 232

पाडलिउत्त pāḍaliutta पाटलिपुत्र < संज्ञा (पुं.) [Noun] पटना, पाटलिपुत्र (बिहार), ऐतिहासिक नगरी ancient city, the capital of Magadha, situated near the confluence of the Śoṇa and the Ganges and identified by some with the modern Patna {मा.} (संवाहक-) *पाडलिउत्ते* मे जम्मभूमी। (पाटलिपुत्रे मे जन्मभूमिः) मृच्छ., पृष्ठ 127/2

पाण pāṇa प्राण < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] प्राण, जीवन शक्ति, श्वास, वायु, ऊर्जा, बल, सामर्थ्य, जीव या आत्मा, प्राणों के समान आवश्यक या प्रिय vital breath, life, animus, soul, spirit vitality, dear one, beloved, sweetheart, etc. {म.} अवठंभिऊण धणुहं वाहेण वि मुक्किया *पाणा*। (अवष्टम्भ्य धनुर्व्याधेनापि मुक्ताः प्राणाः) वज्जालग्गं, हरिणवज्जा, पृष्ठ 74/219

पाणभोअण pāṇa-bhoaṇa पानभोजन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] भोजन-पानी, खाना-पानी food and water, etc.{शौ.} (विदूषक-) भोदि! विसेसेण *पाणभोअणं* तुवरावेहि। (भवति! विशेषेण पानभोजनं त्वरय) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12/2, पृष्ठ 264

पाणहर pāṇa-hara प्राणहर < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राणों का हरण, जीव नाश, मौत sentence, fatal, deadly, etc. {म.} (पुरुष-) अण्णहा *पाणहरो* से दण्डो त्ति। (अन्यथा प्राणहरोऽस्य दण्ड इति) मुद्रा., श्लोक 17, पृष्ठ 90/6

पाणिअ pāṇia पानीय < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पानी योग्य पानी, जल drinkable water {शौ.} (चेट-) अहं *पाणिअं* गेण्हामि। (अहं पानीयं गृह्णामि) मृच्छ., पृष्ठ 152/3

पाद (पाय) pāda (pāya) पात < संज्ञा (पुं.) [Noun] पतन, सम्बन्ध drop, fall, failure relation, etc. {मा.} (वृद्धगोपालक-) हा हा भट्टा! एसो भट्टिदामोदळो पुप्फाणुकारेहि पदेहि आआरवन्तं विअ जमुणाहळं महाणाअं *पादेण* परिघट्टअन्तो पुप्फाणि अवइणोदि। (हा हा भर्तः। एष भर्तृदामोदरः पुष्पानुकाराभ्यां पदाभ्यामाकारवन्तमिव यमुनाह्रदं महानागं पातेन परिघट्टयन् पुष्पाण्यवचिनोति) बाल., भासनाटक., श्लोक-7/4, पृष्ठ 546

पादपीठ (पादवीढ) pāda-pīṭha (pāda-vīḍha) पादपीठ < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पैर रखने का आसन, पैर पीढा footstool, etc. {शौ.} (उर्वशी-) को णु क्खु एसो सबाणासणो *पादपीठे* सअं महाराएण संजमीअमाण-सिंहडओ चिट्ठदि। (को नु खल्वेष सबाणासनः पादपीठे स्वयं महाराजेन संयम्यमानशिखण्डकस्तिष्ठति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-11/5, पृष्ठ 227

पादमूल (पायमूल / पामूल) pāda-mūla (pāya-mūla / pā-mūla) पादमूल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पैर का मूल भाग, एड़ी heel, ankle, etc.{शौ.} (चर-) मम वि अमच्चरक्खसस्स णामंकिदेत्ति अज्जस्स *पादमूलं*पविदा। (मयापि अमात्यराक्षसस्य नामाङ्कितेति आर्यस्य पादमूलं प्रापिता) मुद्रा., श्लोक-19/1, पृष्ठ 10

पादमूळ (पामूल) pāda-mūḷa (pāmūla) पादमूल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पैर का मूल भाग, एड़ी the sole of the foot, the heel, etc.{शौ.} (सीता-) तक्केमि अय्यउत्तेण अभणिअ किञ्चि दिग्घं णिस्ससिअ महाराअस्स *पादमूळेसु* पडिअंत्ति। (तर्कयाम्यार्यपुत्रेणाभणित्वा किञ्चिद् दीर्घं निःश्वस्य महाराजस्य पादमूलयोः पतितमिति) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-5/1, पृष्ठ 256

पादरास pāda-rāsa प्रातराश < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रातःकालीन भोजन, सुबह का नाश्ता, कलेवा breakfast {शौ.} (सूत्रधार-) अय्ये! किं अत्थि अम्हाणं गेहे को वि

पादरासो। (आर्ये! किमस्त्यस्माकं गेहे कोऽपि प्रातराशः) चारु., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 3

पादवंदण pāda-vandaṇa पादवन्दन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] चरणों में प्रणाम करना, पैरों में वंदना करना saluting the feet, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) दारअसहिदा वो *पादवंदणं* करेमि। (दारकसहिता वां पादवन्दनं करोमि) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-27/7, पृष्ठ 132

पादालवास pādāla-vāsa पातालवास < संज्ञा (पुं.) [Noun] पाताल, पाताल में निवास करना hades, living of hell, etc. {शौ.} (विदूषक-) किं अवरं। मालविआ बउलावलिआ अ *पादालवासं* णिगलपदीओ अदिट्ठसुज्जपादं णागकण्णआओ विअ अणुहोन्ति। (किमपरम्। मालविका वकुलावलिका च पातालवासं निगडपद्यावदृष्टसूर्यपादं नागकन्यके इवानुभवतः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., पृष्ठ 291/4

पादोदअ pādodaa पादोदक< संज्ञा (नपुं.) [Noun] पादोदक, पैर धोने का पानी, वह पानी जिसमे पुण्यात्मा तथा सम्मानित व्यक्तियों के पैर धोते है water for washing the feet, the water which is used by holy men's feet, etc. {शौ.} (अनसूया-) इदं *पादोदअं* भविस्सदि। (इदं पादोदकं भविष्यति) अभि.शाकु., पृष्ठ 145/1

पामर pāmara पामर < संज्ञा (पुं.) [Noun] पामर, मूढ, जड़बुद्धि wicked, rascal, scoundrel, idiot, fool {म.} न हु *पामरस्स* विहुरे आरापरिघट्टणं सहइ। (न खलु पामरस्य विधुर आरापरिघट्टनं सहते) वज्जालग्गं, धवलवज्जा, पृष्ठ 62/180

पायव pāyava पादप < संज्ञा (पुं.) [Noun] पादप, वृक्ष plant, tree {म.} सेसा फुल्लंतु फलंतु *पायवा* को निवारेइ। (शेषाः पुष्पन्तु फलन्तु पादपाः को निवारयति) वज्जालग्गं, इंदिंदिरवज्जा, पृष्ठ 82/238

पायाल pāyāla पाताल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पाताल, रसातल hades, lower world, hell {म.} *पायाले* गंतव्वं ता गच्छउ अग्गठाणं पि। (पाताले गन्तव्यं तद्गच्छत्वग्रस्थानमपि) वज्जालग्गं, किविणवज्जा, पृष्ठ 198/580

पारद्ध pāraddha प्रारब्ध < विशेषण [Adjective] जिसका प्रारम्भ किया गया है, प्रारब्ध begun, commenced {म.} ताहं चिय लज्जिज्जइ *पारद्धं* परिहरंतेण। (तेभ्य एव लज्ज्यते प्रारब्धं परिहरता) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 32/93

पारलोइअ pāraloia पारलौकिक < विशेषण [Adjective] परलोक सम्बन्धी, आगामी जन्म से सम्बन्ध रखने वाला the next world, beyond world, ultra mundane, other worldly, super natural {शौ.} (नटी-) अज्ज! *पारलोइओ।* (आर्य! पारलौकिकः) मृच्छ., पृष्ठ 16/1

पारावद pārāvada पारावत/ पारापत < संज्ञा (पुं.) [Noun] कपोत, कबूतर a pigeon {शौ.} (चेट-) कधं *पारावदं* पेक्खदि, मं ण पेक्खदि। (कथं पारावतं/ पारापतं प्रेक्षते, मां न प्रेक्षते) मृच्छ., पृष्ठ 268/5

पारिजाय (पारिय) pārijāya (pāriya) पारिजात < संज्ञा (पुं.) [Noun] पारिजात, देव वृक्ष, कल्पतरु, फरहद का पुष्प जो रक्त वर्ण का और अत्यन्त शोभायमान होता है, स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक (कहते हैं कि समुद्र मंथन से 'परिजात' की उपलब्धि हुई जिसे इन्द्र ने अपने नन्दनकानन में लगाया कृष्ण ने इन्द्र से छीनकर इसे अपनी प्रिया सत्यभामा के बाग में लगाया) coral tree, one of the five trees of paradise(said to have been produced at the churning of the ocean and come into the possession of Indra from whom it was wrested by Krishna and planted into the garden of his beloved Satyabhama), etc. {म.} वसिऊण सग्गलोए गंधं गहिऊण *पारिजायस्स*। (ऊषित्वा स्वर्गलोके गन्धं गृहीत्वा पारिजातस्य) वज्जालग्गं, सुरतरुविसेसवज्जा, पृष्ठ 86/253

पारितोसिअ pāritosiya पारितोषिक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पुरस्कार, तुष्ट करने वाली सामग्री an award, reward {शौ.} (वसन्तसेना-) इदं दे *पारितोसिअं।* (इदं ते पारितोषिकम्) मृच्छ., पृष्ठ 143/3

पारी [देशज] **pārī** पारी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दूध दुहने का बर्तन, दोहन-भाण्ड/ पात्र विशेष a milking vessel, etc. {म.} कामं गोरस-*पारी*-णिवेस-पंडूइं सलिलाइं। (कामं गोरस-पारी-निवेश-पाण्डूनि सलिलानि) गउडवहो, गाथा-577, पृष्ठ 87

पालंब pālamba प्रालम्ब< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] वक्षस्थल पर झूलती हुई माला, गले का आभूषण, अवलम्बन, सहारा, दीर्घ, ध्वजा के नीचे लटता वस्त्रांचल a garland worn round the neck and reaching to the breasts, etc. {म.} आरसणा-गुण-पडिबद्ध-कुंडलो कुसुम-*पालंबो*। (आरशनागुण-प्रतिबद्धकुण्डलः कुसुमप्रालम्बः) गउडवहो, गाथा-833, पृष्ठ 124

पालण pālaṇa पालन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पालन, रक्षण, [वि.] रक्षक protecting, maintenance, etc. {शौ.} (विदूषक-) मूले छिण्णे कुदो पादवस्स *पालणं?* (मूले छिन्ने कुतः पादपस्य पालनम्) मृच्छ., पृष्ठ 517/9

पाली pālī पाली < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पंक्ति, श्रेणि, तथागत बुद्ध के उपदेशों की भाषा विशेष row, line, language of Buddha canons {म.} फुल्ल-करवीर-*पाली*-समुज्जला रण्ण-वावीओ। (फुल्लकरवीरपालीसमुज्ज्वला अरण्य-वाप्यः) गउडवहो, गाथा-589, पृष्ठ 89

पाव pāva प्राप् [प्र √आप्] < क्रिया [सक.] [Verb] प्राप्त करना to receive, to get {म.} दुक्खेहि कह वि *पावइ* चोरो अत्थं कई कव्वं। (दुखैः कथमपि प्राप्नोति चोरोऽर्थं कविः काव्यम्) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 8/23

पाव pāva पाप < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] पापीजन, अधर्मी, अशुभ, कुकर्म sin, evil, evil deed, vice {शौ.} (गणिका-) अळङ्कारणिमित्तं *पावा* मं अणुसरन्ति। (अलङ्कारनिमित्तं पापा मामनुसरन्ति) चारु., भासनाटक., गाथा-28/1, पृष्ठ 211

पासगपीठ (पासअपीठ) pāsaga-pīṭha (pāsaa-pīṭha) पाशकपीठ < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पाशा खेलने का पीठ, मेज casino table, table {शौ.} (विदूषक-) अद्धवाचिदो *पासअपीठे* चिट्ठइ पोत्थओ। (अर्द्धवाचितं पाशकपीठे तिष्ठति पुस्तकम्) मृच्छ., पृष्ठ 234/4

पासल्ल [देशज] **pāsalla** पार्श्वाय् < संज्ञा (नपुं.) [Noun] वक्र होना, पार्श्व घुमाना to turn, to bend, prostrated, bent {म.} *पासल्ल*-भव-पज्जत्त-हु अवहा पाअव-णिवेसा। (पार्श्वायितभावपर्याप्तहु तवहाः पादपनिवेशाः) गउडवहो, गाथा-560, पृष्ठ 85

पासल्लिअ pāsallia पार्श्वीकृत < विशेषण [Adjective] पार्श्व में किया हुआ, टेढ़ा किया हुआ, बगल में किया हुआ thrown or placed on one side {म.} *पासल्लिआण* जे पडिगआण खुत्तग्ग-दंत-भावेण। (पार्श्वीकृतानां ये प्रतिगजानां निमग्नदन्तभावेन) गउड़वहो, गाथा-266, पृष्ठ 42

पासाद (पासाय) pāsāda (pāsāya) प्रासाद< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] महल, प्रासाद palace, palatial building {शौ.} इदाणिं *पासादेसु* वसीअदि, अन्तेउरदिग्घिआसु ण्हाईअदि पकिदिमहु रसुअमाराणि मोदअखज्जआणि खज्जीअन्ति त्ति अणच्छरसंवासो उत्तरकुरुवासो मए अणुभवीअदि। (इदानीं प्रासादेषूष्यते, अन्त:पुरदीर्घिकासु स्नाय्यते, प्रकृतिमधुर-सुकुमाराणि मोदकखाद्यानि, खाद्यन्त इत्यनप्सरस्संवास उत्तरकुरुवासो मयानुभूयते) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/4, पृष्ठ 21

पिंडखज्जूर piṇḍa-khajjūra पिण्डखर्जूर< संज्ञा (नपुं.) [Noun] पिंडखजूर, मीठा छुआरा date (fruit), etc. {शौ.} (विदूषक-) जह कस्स वि *पिंडखज्जूरेहिं* उव्वेजिदस्स तिन्तिणीए अहिलासो भवे तह इत्थिआरअणपरिभाविणो भवदो इअं अब्भत्थणा। (यथा कस्यापि पिण्डखर्जूरैरुद्वेजितस्य तिन्तिण्यामभिलाषो भवेत् तथा स्त्रीरत्नपरिभाविनो भवत् इयमभ्यर्थना) अभि.शाकु.,कालिदासग्रन्था., श्लोक 8, पृष्ठ 30/2

पिअ pia प्रिय < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] प्रिय, पति, इष्ट, प्रेमी/ प्रेमिका dear, lover and beloved, favourite, husband, etc. {शौ.} (विदूषक-) तधा वि किं पिअं ? (तथापि किं प्रियम् ?) मृच्छ., पृष्ठ 179

पिअदर piadara प्रियतर < विशेषण [Adjective] प्रियतर, अधिक प्रिय, अपेक्षाकृत प्यारा dearer, etc. {शौ.} (उर्वशी-) णत्थि मे वाआविहवो अदो *पिअदरं* मंतिदुं। (नास्ति मे वाग्निभवोऽत: प्रियतरं मन्त्रयितुम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19/3, पृष्ठ 191

पिअसही pia-sahī प्रियसखी < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] अभिन्न सखी, प्यारी सखी lovely friend, etc. {शौ.}

(अनसूया-) रक्खिदव्वा खु पकिदिपेलवा *पिअसही*। (रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी) अभि.शाकु., पृष्ठ 264/4

पिआसमागम piā-samāgama प्रियासमागम < विशेषण [Adjective] प्रिय का समागम होना, प्रिय से मिलना meeting with lover or beloved, etc. {शौ.} (विदूषक-) भो! जहा परिहीअमाणेहि अंगेहिं अहिअं सोहसि तहा अदूरे *पिआसमागमं* दे पेक्खामि। (भोः! यथा परिहीयमाणैरङ्गैरधिकं शोभसे तथाऽदूरे प्रियासमागमं ते प्रेक्षे) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-8/3, पृष्ठ 179

पिचुमंद picumanda पिचुमन्द < संज्ञा (पुं.) [Noun] निम्बवृक्ष, नीम का पेड़ Neem tree {शौ.} (चेटी-) किं एदं वेसवासजणो सव्वो दक्खिणो होइ त्ति। पेक्खदु अज्जुआ चम्पआरामे *पिचुमन्दा* जाअन्ति। (किमेतद् वेशवासजनः सर्वो दक्षिणो भवतीति। पश्यत्वज्जुका चम्पकारामे पिचुमन्दा जायन्ते) चारु., भासनाटक., अंक-4, पृष्ठ 237

पिट्ठि piṭṭhi पृष्ठ < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पीठ, शरीर के पीछे का भाग back, spine, back portion of body {म.} सो च्चिय सयडे सो च्चिय हलम्मि सो च्चिय वहेइ *पिट्ठीए* । (स एव शकटे स एव हले स एव वहति पृष्ठे) वज्जालग्गं, धवलवज्जा, पृष्ठ 62/184

पिणद्ध piṇaddha पिनद्ध < भूत. कृ./ विशेषण [Past Participle/ Adjective] पहनाना, धारण करना, बंधा हुआ, जकड़ा हुआ, सुसज्जित, छिपाया हुआ, आवेष्टित fastened, tied or put on, dressed, hid, concealed, pierced, wrapped, covered, enveloped, etc. {शौ.} (अनसूया-) अत्थि तेण राएसिणा संपत्थिदेण सणामहेअंकिअं अंगुलीअअं सुमरणीअं त्ति सअं *पिणद्धं*। (अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम्) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-1, पृष्ठ 55/4

पित्त pitta पित्त < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] पित्तदोष, शरीर में स्थित तीन दोषों में एक (शेष दो वात और कफ हैं) bile,gall, villous tumour, etc. {शौ.} (विदूषक-) णहि घिदवअणेण *पित्तं* णस्सदि। (नहि घृतवचनेन पित्तं नश्यति) भासनाटक., अविमार., गाथा-5/5, पृष्ठ 180

पिदा (पिअर / पिउ) pidā (piara / piu) पिता (पितृ) < संज्ञा (पुं.) [Noun] पिता, जनक a father {शौ.} (संवाहक-) कुदो मे *पिदा*? (कुतो मे पिता ?) मृच्छ., पृष्ठ 112/2

पिदामह pidāmaha पितामह < संज्ञा (पुं.) [Noun] दादा, बाबा, पितामह grand father, etc. {शौ.} (विदूषक-) भो बम्हण-संकामिदक्खरेण दे पितामहेण अब्भणुण्णादोसि। (भोः ब्राह्मण-संक्रामिताक्षरेण ते पितामहेनाम्यनु-ज्ञातोऽसि) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-7/3, पृष्ठ 179

पियंगु piyaṅgu प्रियङ्गु < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] लता विशेष का नाम name of a creeper, as per the convention of Indian poetics, it is to blossom at the leg, touch of a fair lady {म.} खज्जूर-मंजरी-पिंजराण इह परिमलो *पियंगूण* । (खर्जूरमञ्जरी-पिञ्जराणामिह परिमलः प्रियङ्गूनाम्) गउडवहो, गाथा-585, पृष्ठ 88

पिययम piyayama प्रियतम < विशेषण [Adjective] प्रियतम, प्रियों में प्रिय dearest, husband {म.} तं वंचिओ सि *पिययम* तीए बाहोहसंवलिज्जंता। (त्वं वञ्चितोऽसि प्रियतम तस्या बाष्पौघसंवल्यमाना:) वज्जालग्गं, पंचमवज्जा, पृष्ठ 98/289

पिषाष (पिसास / पिसल्ल) piṣāṣa (pisāsa / pisalla) पिशाच < संज्ञा (पुं.) [Noun] पिशाच, व्यंतर देवों की एक जाति evil spirit, vampire, demon, etc. {मा.} (वसुदेव-) किण्णु ळक्खशो वा, आदु *पिषाषो* वा। (किंनु राक्षसो वा, उत पिशाचो वा) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 518

पिसुण pisuṇa पिशुन < विशेषण [Adjective] खल, दुर्जन, चुगलखोर backbiter, tale carrier, malignant, vile, wicked, etc. {म.} विंधइ जणस्स हिययं *पिसुणो* बाणु व्व लग्गंतो। (विध्यति जनस्य हृदयं पिशुनो बाण इव लगन्) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 18/53

पिहुल pihula पृथुल < विशेषण [Adjective] बड़ा, विस्तीर्ण big, large, etc. {म.} *पिहुलं* मसिभायणयं अत्थि मसी वित्थरं च तलवट्टं। (पृथुलं मषीभाजनमस्ति मषी विस्तृतं च तालपत्रम् (वराङ्गम्)) वज्जालग्गं, लेहयवज्जा, पृष्ठ 174/510

पीडिद pīḍida पीडित < विशेषण/ भूतकालिक कृदन्त [Adjective/ Past Participle] पीडित, पीडा से युक्त, तंग किया हुआ, सताया हुआ, अत्याचारग्रस्त, नोचा गया, निचोड़ा गया, दबाया गया, विवाहित, अतिक्रान्त, उजड़ा हुआ, बर्बाद किया हुआ, ग्रहणग्रस्त pained, harmed, injured, pressed, afflicted, tortured, distressed, oppressed, etc. {शौ.} (चेटी-) अहं च *पीडिदा* ण भविस्सं। (अहं च पीडिता न भविष्यामि) चारु., भासनाटक., गाथा-5/4, पृष्ठ 242

पीढग pīḍha-ga पीठक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] आसन, पीढ़ा a seat, etc. {मा.} (शकार-) शोवण्णं दे पीढगे कालइश्शं। (सौवर्णं ते पीठकं कारयिष्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 413/8

पीदि (पीइ / पीई) pīdi (pīi / pīī) प्रीति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] प्रीति, अनुराग, स्नेह, प्रेम, रावण की एक पत्नी affection, love, endearment, pleasure, delight, a wife of Ravaṇa {शौ.} (गणिका-) गच्छदु अय्यो सुहिज्जणदंसणेण *पीदिं* णिव्वत्तेदुं। (गच्छत्वार्यः सुहृज्जनदर्शनेन प्रीतिं निर्वर्तयितुम्) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 220 {शौ.} (दामक-) णं षव्वाणं गोवजणाणं *पीदी* वड्ढइ। (ननु सर्वेषां गोपजनानां प्रीतिर्वर्धते) बाल., भासनाटक., अंक-3,पृष्ठ 535

पीलावय (पीडावय) pīlāvaya (pīḍāvaya) पीडापक < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] पीडक, (ईख पेरने वाला यन्त्र), तेली, यंत्र से तेल निकालने वाला oilman, etc. {म.} *पीलावय* तुज्झ गुणो अज्ज वि ऊणो रसो जाओ। (पीडक तव गुणोऽद्याप्यूनो रसो जातः) वज्जालग्गं, जंतियवज्जा, पृष्ठ 184/537

पुंजिअ puñgia पुञ्जित < विशेषण [Adjective] पुञ्जित, एकत्रित massed, collected, accumulated {म.} तं तं *पुंजिअ* बहलो भरेइ मुहलुब्भडो पवणो। (तं तं पुञ्जितबहलो बिभर्ति मुखरोद्भटः पवनः) गउडवहो, गाथा-231, पृष्ठ 37

पुच्छ puccha √ प्रच्छ् < क्रिया [सक.] [verb] पूछना, उपालम्भ देना, प्रश्न करना to ask, to interrogate, to investigate , to give disrespect {शौ.} (गणिका-) दे महु अराति *पुच्छीअन्ति* । (ते मधुकरा इति

पृच्छयन्ते) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 215

पुढवी (पुहवी) puḍhavī (puhavī) पृथ्वी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पृथ्वी, धरती, भूमि, ज़मीन, तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ की माता का नाम (जैन परम्परानुसार) earth,etc. {शौ.} उप्पडदि पडदि धावदि *पुढवीओ* खणदि लिंगरूवेण। (उत्पतति पतति धावति पृथिवीं खनति लिंगरूपेण) अट्ठपाहुड मोक्ष पाहुड पृष्ठ 365-66/15 {म.} अज्ज वि सुपुरिसकेसरि किसोरचलणंकिया पुहवी। (अद्यापि सुपुरुषकेसरि किशोरचरणाङ्किता पृथ्वी) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 1

पुण्ण puṇṇa पुण्य < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] शुभ कर्म का परिणाम, सुकृत का परिणाम, पुण्य holy, pure, virtuous, auspicious {मा.} (भिक्षु-) तुमं धण्णे, तुमं *पुण्णो*। (त्वं धन्यः, त्वं पुण्यः) मृच्छ., पृष्ठ 378/8 {म.} समसुहदुक्खाइ मणे *पुण्णेण* विणा न लब्भंति। (समसुखदुःखानि मन्ये पुण्येन विना न लभ्यन्ते) वज्जालग्गं, नेहवज्जा, पृष्ठ 26/73

पुण्णमाशी (पुण्णमासी) puṇṇamāśī (puṇṇamāsī) पौर्णमासी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पूर्णिमा तिथि, तिथि विशेष, पूरनमासी the full moon day, special day, etc. {मा.} (क्षपणक-) शावगा णिलूविदे आ मज्झण्णादो णिव्वुत्तशमस्तकल्लाणा *पुण्णमाशी* । (श्रावक निरूपितः। आ मध्याहान्निर्वृत्त-समस्तकलाणा पौर्णमासी) मुद्रा., श्लोक-18, पृष्ठ 61/4

पुण्णिमा puṇṇimā पूर्णिमा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पूर्णिमा, पूर्णमासी, पूनो, वह दिन जब चन्द्रमा पूर्ण हो जाता है, तिथि विशेष the night or day of full moon, etc. {म.} चंदो धवलिज्जइ पुण्णिमाइ अह *पुण्णिमा* वि चंदेण। (चन्द्रो धवलीक्रियते पूर्णिमयाथ पूर्णमिापि चन्द्रेण) वज्जालग्गं, मित्तवज्जा, पृष्ठ 26/73

पुत्त putta पुत्र < संज्ञा (पुं.) [Noun] पुत्र, लड़का, बेटा a son, a child {म.} परपत्थणापवन्नं मा जणणि जणेसु एरिसं *पुत्तं*। (परप्रार्थनाप्रपन्नं मा जननि जनयेदृशं पुत्रम्) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 46/133

पुत्तमुह putta-muha पुत्रमुख < संज्ञा (नपुं.) [Noun] बेटे का मुख, पुत्र का मुख

a son's face, etc. {चाण्डाली} (चाण्डालौ-) एशे अज्जचालुदत्ते *पुत्तमुहं* पेक्खदु। (एष आयर्चारुदत्तः पुत्रमुखं प्रेक्षताम्) मृच्छ., पृष्ठ 533/10

पुत्ति (पुत्ती) putti (puttī) पुत्री < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पुत्री, लड़की daughter, girl {म.} भमरी होहिसि जइ, लहसि *पुत्ति* वयणस्स गंधेण। (भ्रमरी भविष्यसि यदि, लभसे पुत्रि वदनस्य गन्धेन) वज्जालग्गं, कण्हवज्जा, पृष्ठ 202/594

पुत्थअ (पुत्थय) puttha (putthaya) पुस्तक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पुस्तक, पोथी, किताब book {शौ.} भोदि! एदं अक्खरं मम *पुत्थए* णत्थि। (भवति! एतदक्षरं मम पुस्तके नास्ति) अविमार., भास., गाथा-5/2, पृष्ठ 120

पुप्फ puppha पुष्प < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पुष्प, फूल, कुसुम flower, etc. {शौ.} (मागधिका-) उम्मत्तिए! णणु *पुप्फं* वि वासीअदि। (उन्मत्तिके! ननु पुष्पमपि वास्यते) अविमार., भास., अंक-4, पृष्ठ 147

पुप्फभाअण puppha-bhāaṇa पुष्पभाजन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] फूलों का पात्र flower pot {शौ.} (अनसूया-) अव्वो! आवेगक्खलिदाए गईए पब्भट्ठं मे अग्गहत्थादो *पुप्फभाअणं।* (अहो! आवेगस्खलितया गत्या प्रभ्रष्टं ममाग्रहस्तात्पुष्पभाजनम्) अभि.शाकु., पृष्ठ 262/4

पुरओ purao पुरतस् < अव्यय [Indeclinable] पुरतः, सामने, आगे, अभिमुख before, in front, etc. {म.} जइ उत्तमो वि भण्णइ मह *पुरओ* सो वि सुयणु अणुदियहं। (यद्युत्तमोऽपि भण्यते मम पुरतः सोऽपि सुतन्वनुदिवसम्) वज्जालग्गं, सईवज्जा, पृष्ठ 158/471

पुरव purava पूर्व < विशेषण [Adjective] पूर्व या पहले, प्रथम earlier, former {म.} तं अत्थारुण-रवि-मंडलेण मुंडोवहार-*पुरवं* व। (त्वमस्तारुणरविमण्डलेन मुण्डोपहार-पूर्वमिव) गउडवहो, गाथा-307, पृष्ठ 48

पुराकिद (पुराकय) purā-kida (purā-kaya) पुराकृत < विशेषण [Adjective] पूर्व काल में किया हुआ done formerly, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) णूणं मे सुअरिअप्पडिबंधअं *पुराकिदं* तेसु दिअहेसु परिणाममुहं आसि जेण साणुक्कोसो वि

अज्जउत्ते मइ विरसो संवुत्तो। (नूनं मे सुचरितप्रतिबन्धकं पुराकृतं तेषु दिवसेषु परिणाममुखमासीद्येन सानुक्रोशोऽप्यार्य-पुत्रो मयि विरसः संवृत्तः) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-24/7, पृष्ठ 129

पुरिस purisa पुरुष < संज्ञा (पुं.) [Noun] नर, पुरुष, मनुष्य, देह में निवास करने वाला देही, विकार रहित आत्मा (सांख्य अनुसार) a male being, man, the soul, the supreme being, a person, etc. {शौ.} (विदूषक-) राअमग्गे गणिआ विडा चेडा राअवल्लहा अ *पुरिसा* संचरन्ति। (राजमार्गे गणिका विटाश्चेटा राजवल्लभाश्च पुरुषाः सञ्चरन्ति) मृच्छ., पृष्ठ 34/1

पुरिसत्तण purisattaṇa पुरुषत्व < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पुरुषकर्म, पौरुष manhood, manly, of a man, valour, vigor {म.} कस्स वि धन्नस्स घरे महिला *पुरिसत्तणं* कुणइ। (कस्यापि धन्यस्य गृहे महिला पुरुषत्व (नं) करोति) वज्जालग्गं, सुरयवज्जा, पृष्ठ 108/321

पुरुमिल्ल (पुरिमिल्ल) purumilla (purimilla) पूर्वीय < विशेषण [Adjective] पहले का, पुरातन, प्राचीन former, previous, old {म.} रअणि-विरमम्मि णवरं *पुरुमिल्ल*-णरिंद-णिद्दवणं। (रजनीविरमे केवलं पूर्वीयनरेन्द्रनिष्ठापनम्) गउडवहो, गाथा-1073, पृष्ठ 158

पुरुरव pururava पुरूरवस् < संज्ञा (पुं.) [Noun] चंद्र वंशीय राजा, एक प्रसिद्ध राजा a famous king of Chandra clan, etc. {शौ.} सहि! णत्थि मे वाआविहवो पसंसिदुं, इदं तु चिंतेमि अवि णाम अहं *पुरुरवा* भवेअं त्ति। (सखि! नास्ति मे वाग्विभवः प्रशंसितुम्, इदं तु चिन्तयामि अपि नामाहं पुरुरवा भवेयमिति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/3, पृष्ठ 180

पुरोभाइ purobhāi पुरोभागिन् < विशेषण [Adjective] उद्दण्डता, ढठिाई self willed, naughty, officious, fanaticism {शौ.} (चेटी-) अज्जुए! सिणेहो पुच्छदि, ण *पुरोभाइदा*। किं चिन्तीअदि। (अज्जुके! स्नेहः पृच्छति, न पुरोभागिता। किं चिन्त्यते) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 213

पुरोहिद (पुरोहिअ) purohida (purohiya) पुरोहित < संज्ञा (पुं.) [Noun] पुरोहित, होम आदि से शान्तिकर्म करने वाला ब्राह्मण

priest, paster {प्राच्या} (विदूषक-) गाअन्तो दाव मणुस्सो रत्तसुमणावेट्ठिदो विअ *पुरोहिदो* दिढं ण सोहइ। (गायंस्तावन्मनुष्यो रक्तसुमनोवेष्टित इव पुरोहितो दृढं न शोभते) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 224

पुलाण pulāṇa पुराण < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] पुराणशास्त्र, पुराना, प्राचीन, पूर्व काल सम्बन्धी ancient, mythology, mythological scriptures, old, etc. {मा.} (शकार-) तहिं तुमं पुक्खलिणीए *पुलाण*-कुलत्थ-जूश-शवलाइं दुश्शगन्धिआइं चीवलाइं पक्खालेशि। (तत्र त्वं पुष्करिण्यां पुराण-कुलत्थ-यूष-शबलानि दूष्यगन्धीनि चीवराणि प्रक्षालयसि) मृच्छ., पृष्ठ 378/8

पुलिंद pulinda पुलिन्द < संज्ञा (पुं., स्त्री.) [Noun] उस देश में रहने वाला मनुष्य, अनार्य देश विशेष a savage tribal, a mountaineer {म.} जं महइ विंझ-वण-गोअराण लोओ *पुलिंदाण।* (यन्महति विन्ध्यवनगोचराणां लोकः पुलिन्दानाम्) गउडवहो, गाथा-949, पृष्ठ 140

पुलोस pulosa प्लोष < संज्ञा (पुं.) [Noun] जलाना, दाह, दहन burning, etc. {म.} इह ताओ *पुलोस*-सुअंध-जव-कसायाणणेहिं पिज्जंति। (इह ताः प्लोषसुगन्ध-यवकषायाननैः पीयन्ते) गउडवहो, गाथा-589, पृष्ठ 89

पूअणीअ pūaṇīa पूजनीय < विशेषण [Adjective] पूजनीय, पूजा के योग्य, सम्माननीय revered, adorable, venerable, respectable {शौ.} (गणिका-) *पूअणीओ* खु सो जणो। (पूजनीयः खलु स जनः) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 214

पूआ (पूजा) pūā (pūjā) पूजा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पूजा, पूजन, सेवा worship, service, etc. {शौ.} (ब्राह्मणी-) पमादादो अदिक्कमो किदो। अज्ज *पूआ*णिव्वत्तीअदि। (प्रमादाद् अतिक्रमः कृतः। अद्य पूजा निर्वर्त्यते) चारु., भासनाटक., गाथा-15/3, पृष्ठ 233

पूआविसेस pūā-visesa पूजाविशेष < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] विशिष्ट पूजा, खास पूजा special worship, special adoration {मा.} (संवाहक-) *पूआविसेसेण* जाणामि कय्यं ति। (पूजाविशेषेण जानामि कार्यमिति) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 216

पूइद (पूइय) pūida (pūiya) पूजित < विशेषण [Adjective] पूजित, अर्चित, सेवित worshipped, adored, revered, venerated {शौ.} (धात्री-) अमच्चो अय्यभूदिओ कण्णाउररक्खओ कासिराअ-दूदेण सह अम्हाअं महाराएण *पूइदो* पत्थिदो अ। (अमात्य आर्यभूतिकः कन्यापुररक्षकः काशिराजदूतेन सहास्माकं महाराजेन पूजितः प्रस्थितश्च) अविमार., भास., गाथा-7/2, पृष्ठ 127

पूतणा (पूअणा / पूआणी) pōtaṇā (pōaṇā / pōāṇī) पूतना < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पूतना, दुष्ट राक्षसी/ व्यन्तरी, डाकिनी Pūtanā, name of lady demon who tried to kill kṛṣṇa in guise of a milk women, etc. {मा.} (वृद्धगोपालक-) अण्णं च इदं अच्छळिअं। दषरत्तप्पषूदे णन्दगोववुत्ते *पूतणा* णाम दाणवी विषषम्पूरिदत्थणा णन्दगोवीए रूवं गेण्हअि आअदा। (अन्यच्चेदमाश्चर्यम्। दशरात्रप्रसूते नन्दगोपपुत्रे पूतना नाम दानवी विषसम्पूरितस्तना नन्दगोप्या रूपं गृहीत्वागता) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 535

पूरिय (पूरिद) pūriya (pūrida) पूरित < विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/Past Participle] पूरित, पूर्ण किया गया, भरा गया filled up, full, completed, fulfilled, etc. {म.} अन्नं न रुच्चइ च्चिय मज्झ पियासाइ *पूरियं* हिययं। (अन्नं (अन्यत्) न रोचत एव, मम पिपासया (प्रियाशया) पूरितं हृदयम्) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 178/521

पूवअ (पूअल) pūvaa (pūala) पूप < संज्ञा (पुं.) [Noun] पूआ, मालपूआ, खाद्य-विशेष a small round cake of flour, etc. {शौ.} (विदूषक-) पच्चन्ति अ *पूवआ* । (पच्यन्ते च पूपकाः) मृच्छ., पृष्ठ 236/4

पेक्ख pekkha प्रेक्ष् [प्र √ईक्ष्] < क्रिया [सक.] [Verb] अवलोकन करना, देखना to see, to examine {शौ.} (विदूषक-) पेक्खदु भवं। (प्रेक्षतां भवान्) मृच्छ., पृष्ठ 175/3 {शौ.} (विदूषक-) किदं तुए उववणं तवोवणं ति *पेक्खामि।* (कृतं त्वयोपवनं तपोवनमिति प्रेक्षे) अभि.शाकु., पृष्ठ 195/2

पेक्खणावसाण pekkhaṇāvasāṇa प्रेक्षणावसान < संज्ञा (नपुं.) [Noun] नाटक की समाप्ति end of a drama, etc. {शौ.} (पेलव-) महिंदेण उण *पेक्खणावसाणे*

लज्जावणदमुही सा एव्वं भणिदा- जस्सिं तुमं वद्धभावासि तस्स मे रणसहाअस्स राएसिणो पिअं एत्थ करणिज्जं। (महेन्द्रेण पुनः प्रेक्षणावसाने लज्जावनतमुखी सा एवं भणिता-यस्मिंस्त्वं बद्धभावासि तस्य मे रणसहायस्य राजर्षेः प्रियमत्र करणीयम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-3, पृष्ठ 175

पेक्खाघर pekkhā-ghara प्रेक्षागृह< संज्ञा (नपुं.) [Noun] प्रेक्षाघर, नाटक घर auditorium, auditory, theatre, etc. {शौ.} (विदूषक-) तेण हि दुवे वि वग्गो *पेक्खाघरे* संगीदरअणं करिअ तत्रभवदो दूदं पेसअह। (तेन हि द्वावपि वर्गो प्रेक्षागृहे संगीतरचनां कृत्वा तत्रभवतो दूतं प्रेषयतम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19/1, पृष्ठ 255

पेढाल [देशज] **peḍhāla** विपुल< विशेषण [Adjective] विपुल, वर्तुल, गोलाकार plump, round, etc. {म.} *पेढाल*-थणहराअड्ढि-कक्खडे वीडअ-द्वाणे। (विपुलस्तनभराकृष्टिपीने वीटिकास्थाने) गउडवहो, गाथा-731, पृष्ठ 109

पेम्म pemma प्रेमन् < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] प्रेम, स्नेह, लगाव love, affection, attachment, erotic sentiment, etc. {म.} जं न धुणावइ सीसं कव्वं *पेम्मं* च किं तेण। (यन्न धूनयति शीर्षं काव्यं प्रेम च किं तेन) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 10/25

पेल्लिअ (पेरिअ) pellia (peria) प्रेरित < विशेषण [Adjective] प्रेरित, जिसको प्रेरणा दी गई हो वह inspired,driven, pushed {म.} सो वो सुहाइँ उवणेउ विअड-तइअच्छि-*पेल्लिअं* जस्स। (स वः सुखान्युपनयतु विकटतृतीयाक्षिप्रेरितं यस्य) गउडवहो, गाथा-31, पृष्ठ 5

पेसिद (पेसविअ / पेसिअ) pesida (pesavia/ pesia) प्रेषित< विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] भेजा हुआ, प्रेषित, डाली हुई (दृष्टि), आदिष्ट, निदेशित, भेजा हुआ (संदेशा देकर), मुड़ा हुआ, स्थिर, निर्दिष्ट होकर sent, to cast a glance, ordered, instructed, dispatched, consigned, remitted, etc. {मा.} (वसन्तसेना-) किं क्खु अज्जचारुदत्तेण वाहणपडिस्समं परिहरन्तेण अण्णो मणुश्शो अण्णं पवहणं *पेसिदं* भविस्सदि? (किं खलु आर्यचारुदत्तेन वाहनपरिश्रमं परिहरता अन्यो मनुष्योऽन्यत्

प्रवहणं प्रेषितं भविष्यति ?) मृच्छ., पृष्ठ 392/8

पेसिय pesiya प्रेषित < विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] भेजा हुआ, प्रेषित, डाली हुई (दृष्टि), आदिष्ट, निदेशित, भेजा हुआ (संदेशा देकर), मुड़ा हुआ, स्थिर, निर्दिष्ट होकर sent, to cast a glance, ordered, instructed, dispatched, consigned, remitted, etc. {म.} तह तेण वि सा दिट्ठा तीए तह तस्स *पेसिया* दिट्ठी। (तथा तेनापि सा दृष्टा तया तथा तस्य प्रेषिता दृष्टि:) वज्जालग्गं, पियाणुराय-वज्जा, पृष्ठ 140/412

पेहुण [देशज] **pehuṇa** पक्ष < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मयूरपंख, पिच्छ wing feather, etc. {म.} तुंगाअंति व तणुआ पवि-खंडिअ-*पेहु णा*गिरयः। (तुङ्गायन्तीव तनवः पविखण्डितपक्षा गिरयः) गउडवहो,गाथा-127, पृष्ठ 22

पोक्खर pokkhara पुष्कर < संज्ञा (नपुं.) [Noun] तालाब, जल, नील कमल, अजमेर नगर के पास का जलाशय-तीर्थ, हाथी की सूँढ़ का अग्र भाग, तलवार की म्यान pond, water, a blue lotus, the tip of an elephant's trunk, the blade of a sword, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) *पोक्खर*-वत्त-पडिद-जलबिन्दु-सरिसेहि कीलसि तुमं पुरिस-भाअधेएहिं। (पुष्कर-तत्र-पतित-जलबिन्दु-सदृशै: क्रीडसि त्वं पुरुषभागधेयै:) मृच्छ., पृष्ठ-320/6

पोट्टवित्थार [देशज] **poṭṭa-vitthāra** उदरविस्तार < संज्ञा (पुं.) [Noun] पेट विस्तार big belly, big stomach {शौ.} (विदूषक-) अहो! से अपवित्तडाइणीए *पोट्टवित्थारो*। (अहो! तस्या: अपवित्रडाकिन्या उदरविस्तार:) मृच्छ., पृष्ठ 244/4

पोरायण porāyaṇa पुरातन < विशेषण [Adjective] पुराना, प्राचीन, प्राक्कालीन, क्षीण old, ancient, past, antiquity, etc. {शौ.} जलणो वि पवणसहिदो डहंति *पोरायणं* कम्मं। (ज्वलन्नपि पवनसहित: दहति पुरातनं कर्म) अट्ठपाहुड शीलपाहुड पृष्ठ 395/34

पोरिस porisa पौरुष < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पौरुष, पुरुषत्व, पराक्रम courage, manliness, manhood, vigour {म.} छन्नं धम्मं पयडं च *पोरिसं* परकलत्तवंचणयं। (छन्नो धर्म: प्रकटं च पौरुषं

परकलत्रवञ्चनम्) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 32/90

पोह poha प्रोथ < संज्ञा (पुं.) [Noun] मुख प्रान्त, अश्व के मुख का प्रान्त भाग nose or nostrils of a horse, etc. {म.} जो *पोह-खण-परिट्ठिअ-संखाअ-प्फेण-पिंड-घडिएहिं।* (यः प्रोथक्षणप्रतिष्ठतिसंस्त्यान-फेनपिण्डघटितैः) गउडवहो, गाथा-257, पृष्ठ 41

प्पहार (पहर / पहार) ppahāra (pahara / pahāra)प्रहार < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रहार, मार, जहाँ पर प्रहार किया हो वह स्थान assault, blow, stroke {मा.}(वृद्धगोपालक-) तेण *प्पहारेण* उक्खित्तचक्खू षो वि दाणवो भविअ तत्तो एव्व मुदो। (तेन प्रहारेणोत्क्षप्तिचक्षुः सोऽपि दानवो भूत्वा तत एव मृतः) बाल., भास नाटक., अंक-3, पृष्ठ 536

फ

फ pha फ < संज्ञा (पुं.) [Noun] ओष्ठ स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular labial consonant. पाटि-परुष-परिघ-परिखा-पनस-पारिभद्रे फः।। हेम. 2/232, पृष्ठ 462

फंससुह phaṁsa-suha स्पर्शसुख < संज्ञा (नपुं.) [Noun] स्पर्श करने का सुख, कोमल touch-sense, soft {म.} अच्छउ ता *फंससुहं* अमयरसाओ वि दूररमणिज्जं। (आस्तां तावत्स्पर्शसुखममृतरसादपि दूररमणीयम्)वज्जालग्गं,पियाणुरायवज्जा, पृष्ठ 138/407

फडिअमणिसोवाण phaḍia-maṇi-sovāṇa स्फटिकमणिसोपान < संज्ञा (नपुं.) [Noun] स्फटिकमणि की सीढियाँ ladder of crystal, etc. {शौ.} (विदूषक-) इमिणा गंगातरंग-सस्सिरीएण फडिअमणिसोवाणेण आरोहदु भवं पदोसावसररमणिजं मणिहम्मिअ-पिट्ठं। (एतेन गङ्गातरङ्गसश्रीकेण स्फटिकमणि-सोपानेनारोहतु भवान्प्रदोषावसररमणीयं मणिहर्म्यपृष्ठम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-5/3, पृष्ठ 178

फण phaṇa फण < संज्ञा (पुं.) [Noun] सॉप का फण hod (of a snake) {मा.} (सर्वा-) अच्छलिअं भट्टा! अच्छलिअं। काळिअस्स पञ्च फणाणि अक्कमंतो हळलीषअं पकीळदि। (आश्चर्यं भर्तः! आश्चर्यम्। कालियस्य पञ्च फणानाक्रामन्

हल्लीसकं प्रकीडति) बाल., भासनाटक., श्लोक-6/3, पृष्ठ 546

फणस phaṇasa पनस < संज्ञा (पुं.) [Noun] कटहल का पेड़ jackfruit, jack tree {म.} आसन्नफलो *फणसो* व्व नाह सयलस्स सेवयजणस्स। (आसन्नफलो पनस इव नाथ सकलस्य सेवकजनस्य) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 52/155

फरुस pharusa परुष < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] कठोर, कर्कश, कठिन, कुवचन, निष्ठुर वाक्य hard, rough, rugged, stiff, harsh, cruel, stern (as words), etc. {म.} *फरुसं* न भणसि भणिओ वि हससि हसिऊण जंपसि पियाइं। (परुषं न भणसि भणितोऽपि हससि हसित्वा जल्पसि प्रियाणि) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 14/40

फल phala फल < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] फल, वृक्षादि का शस्य, परिणाम, नतीजा, प्रभाव, फसल, पैदावार, पुरस्कार, लाभ या मूलराशि का ब्याज, गणना-फल, जायफल, हल का फल, फाली, इष्टानिष्ट कर्म का शुभ या अशुभ परिणाम fruit of a tree, as result, effect, crop produce, reward, consequence, profit or interest on capital, the result of a calculation (math) etc. {म.} ववसायपायवो सुपुरिसाण लक्खिज्जइ फलेहिं। (व्यवसायपादपः सुपुरुषाणां लक्ष्यते फलैः) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 40/115

फलिह phaliha स्फटिक < संज्ञा (पुं.) [Noun] स्फटिक मणि, मणि विशेष, आकाश crystal, etc. {म.} पाणोसरंत-मइरं व *फलिअ*-चसअं इमा वअणं। (पानोपसरन्मदिरमिव स्फटिकचषकमस्या वदनम्) गउडवहो, गाथा-690, पृष्ठ 103

फिट्ट [देशज] **phiṭṭa** भ्रष्ट < विशेषण [Adjective] भ्रष्ट, विनष्ट broken, spoilt, corrupt, depraved {म.} जाए माणप्पसरे *फिट्टे* नेहे गयम्मि सब्भावे। (याते मानप्रसरे भ्रष्टे स्नेहे गते सद्भावे) वज्जालग्गं, पेम्मवज्जा, पृष्ठ 116/345

फुट्ट (फुट) phuṭṭa (phuṭa) √ स्फुट्, √ भ्रंश् < क्रिया [अक.] [Verb] विकसना, फूटना, फटना, नष्ट होना to blossom {म.} झिज्जउ हिययं *फुट्टंतु* लोयणा होउ अज्ज मरणं पि। (क्षीयतां हृदयं स्फुटतां लोचने भवत्वद्य मरणमपि) वज्जालग्गं, हिययसंवरणवज्जा, पृष्ठ 152/449

फुड phuḍa स्फुट < विशेषण [Adjective] स्पष्ट, विशद expanded, bright, pure {म.} ववसायसायरे सुपुरिसाण लच्छी *फुडं* वसइ। (व्यवसायसागरे सुपुरुषाणां लक्ष्मी स्फुटं वसति) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 40/118

फुर phura √ स्फुर् < क्रिया [अक.] [Verb] फरकना, हिलना, विकसना, खिलना, प्रकाशित होना, प्रकट होना, स्फूर्तियुक्त होना to throb, to palpitate, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) किं ण्णेदं *फुरदि* दाहिणं लोअणं ? (किन्नु इदं स्फुरति दक्षिणं लोचनम् ?) मृच्छ., पृष्ठ 325/6

ब

ब ba ब < संज्ञा (पुं.) [Noun] ओष्ठ स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular labial consonant. बन्धो न्धः। हेम., 4/247, पृष्ठ 573

बंधव bandhava बान्धव < संज्ञा (पुं.) [Noun] बान्धव, भ्राता, दोस्त, नातेदार, सम्बन्धी a relation, a maternal relation, a friend {म.} जह *बंधव* त्ति कलिउं लोए सीसेहि वुब्भंति। (यथा बान्धवा इति कलयित्वा लोके शीर्षैरुह्यन्ते) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 94/276

बंधुरिअ bandhuria बन्धुरित < विशेषण [Adjective] विनत, नम्रीभूत, नमा हुआ, पिंडीकृतbent, inclined, fowed, etc. {म.} संकंत-पंक-गारव-*बंधुरिअ*तणाओ पअवीओ। (संक्रान्तपङ्कगौरवबन्धुरित-तृणाः पदव्यः) गउडवहो, पृष्ठ 84/656

बंभचेर (बंभच्चेर) bambhacera (bambhaccera) ब्रह्मचर्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] ब्रह्मचर्य, काम सेवन का त्याग करना एवं आत्मा में लीन होना, धार्मिक शिष्यवृत्ति, धार्मिक अध्ययन, आत्मसंयम, इन्द्रियनिग्रह मन-वचन-काय से स्त्री सेवन आदि अब्रह्म का त्याग करना, 5 महाव्रतों में एक व्रत, दसलक्षण धर्म का दसवाँ धर्म, जीवन का प्रथम आश्रम celibacy, a vow, the first stage or order of life, self-restraint, etc. {म.} भूमीसयणं जरचीरबंधणं *बंभचेरयं* भिक्खा। (भूमिशयनं जरच्चीरबन्धनं ब्रह्मचर्यं भिक्षा) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 52/152

बंभण (बम्हण) bambhaṇa (bamhaṇa) ब्राह्मण < संज्ञा (पुं.) [Noun] ब्राह्मण, चार

वर्णों में एक वर्ण, ब्रह्म ज्ञान से युक्त अथवा प्रवृत्त Brāhmaṇa, a man belonging to the first of the four original castes of the Hindus, a type of caste, etc. {म.} देवाण *बंभणाण* य पुत्ति पसाएण एत्तियं कालं। (देवानां ब्राह्मणानां च पुत्रि प्रसादेनेतावन्तं कालम्) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 160/475

बइअर baiara व्यतिकर < संज्ञा (पुं.) [Noun] सम्बन्ध, व्यसन, दुःख interference, interruption, sorrow, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) हला! रमणीए क्खु काले इमस्स लदापाअवमिहु णस्य वइअरो संवुत्तो। (हला! रमणीये खलु काले एतस्य लतापादपमिथुनस्य व्यतिकरः संवृत्तः) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20, पृष्ठ 13/1

बइल्ल [देशज] **bailla** बलीवर्द्द < संज्ञा (पुं.) [Noun] बैल a bull, an ox {मा.} (चेट-) एदे णाशा लज्जु-कडुआ *बइल्ला* । (एते नासिकारज्जु-कटुका बलीवर्द्दाः) मृच्छ., पृष्ठ 323/8

बज्झ bajjha बध्य < विशेषण [Adjective] बँधने योग्य, बाँधा जाने वाला fit to tie, bondable, etc. {मा.} (वृद्धगोपालक-) तदो ळुट्ठाए णन्दगोवीए दामं गह्मिअ तष्ष मज्झे बन्धिअ षेषं उळूहळे *बज्झं* । (ततो रुष्टया नन्दगोप्पा दाम गृहीत्वा तस्य मध्ये वद्धवा शेषमुलूखले बद्धम्) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 535

बद्ध baddha बद्ध < विशेषण [Adjective] बद्ध, बंधा हुआ, नियंत्रित, संश्लिष्ट, संयुक्त, निबद्ध, रचित tied bound, closed, fixed, etc. {मा.} (नन्दगोप-) एदिणा कंषष्ष ळञ्ञो वअणं षुणिअ अवळद्धो कषाहि ताळिअ णिअळेहि *बद्धो* म्हि। (एतेन कंसस्य राज्ञो वचनं श्रुत्वापराद्धः कशाभिस्ताऽयित्वा निगलैबद्धोऽस्मि) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 518

बद्धराअ baddharāa बद्धराग < विशेषण [Adjective] राग से बंधा हुआ bound emotion, fixed attachment {म.} दूरं गए वि कयविप्पिए वि अन्नत्थ *बद्धराए* वि। (दूरं गतेऽपि कृतविप्रियेऽप्यन्यत्र बद्धरागेऽपि) वज्जालग्गं, पेम्मवज्जा, पृष्ठ 116/340

बप्फ bappha बाष्प < संज्ञा (पुं.) [Noun] आंसू, भाप, ऊष्मा tear, steam, hot breath,

heat {शौ.} (विदूषक-) *बप्फं* ण णिग्गच्छइ। (वाष्पं न निर्गच्छति) भासनाटक., अविमार., गाथा-4/5, पृष्ठ 168

बलपलक्कम bala-palakkama बलपराक्रम < विशेषण [Adjective] अत्यअधिक पराक्रम vigour, great bravery {मा.} (नन्दगोप-) षुणादु भट्टा मम *बळपळक्कमं*। (शृणोतु भर्ता मम बलपराक्रमम्) बाल., भासनाटक., श्लोक-20/1, पृष्ठ 522

बहिणीपदि bahiṇī-padi भगिनीपति< संज्ञा (पुं.) [Noun] बहिन का पति, बहनोई, जीजा sister's husband (brother-in-law) {मा.} (शकार-) तदो तेण *बहिणीपदिणा* परितुट्ठेण मे कीलिदुं लक्खिदं शव्वुज्जाणाणं पवलं पुप्फकलण्डके जिण्णुज्जाणे दिण्णे। (ततस्तेन भगिनीपतिना परितुष्टेन मे क्रीडितुं रक्षितं सर्वोद्यानानां प्रवरं पुष्पकरण्डकं जीर्णोद्यानं दत्तम्) मृच्छ., पृष्ठ 464/9

बहुमद bahu-mada बहुमत< विशेषण [Adjective] अत्यन्त अभीष्ट, बहुत प्यारी/प्यारा, अनुमोदित much desired, respected, very sweet, majesty, etc. {शौ.} (तापसी-) वच्छे! भत्तुणो *बहुमदा* होहि। (वत्से! भर्तु बहुमता भव) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12/5, पृष्ठ 227

बहुमाण bahumāṇa बहुमान < संज्ञा (पुं.) [Noun] बहुमान्, अतिशय आदर, बहुतमानना great respect or regard, high esteem, etc. {शौ.} (उर्वशी-) महंतो क्खु से इमस्सिं *बहुमाणो* (महान्खलु अस्य एतस्यां बहुमानः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13/3, पृष्ठ 185

बहुमुल्ल (बहुमोल्ल) bahu-mulla (bahu-molla) बहुमूल्य < विशेषण/संज्ञा [Adjective/ Noun] अधिक मूल्य वाला, मूल्यवान् costly, high-priced {शौ.} (विदूषक-) *बहुमुल्लं* सुवण्णभण्डअं ति ण परितुट्ठा अवरं मग्गिदुं आअदा। (बहुमूल्यं सुवर्णभाण्डकम् इति न परितुष्टा, अपरं मार्गयितुमागता) मृच्छ., पृष्ठ 274/5

बहुल bahula बहुल< विशेषण [Adjective] प्रचुर, बहुत, बहुविध, व्याप्त much, many, very, abundant {म.} दाणं न ददति *बहुलं* नेहं दरिसंति नेय रज्जंति। (दानं न ददति बहुलं स्नेहं दर्शयन्ति नैव रज्यन्ते) वज्जालग्गं, बालासंवरणवज्जा, पृष्ठ 188/547

बहुलाह bahu-lāha बहुलाभ< संज्ञा (पुं.) [Noun] बहुत लाभ many advantage, more profit, etc. {म.} एयं चिय *बहुलाहो* जीविज्जइ जं खलाण मज्झम्मि। (एतदेव बहुलाभो जीव्यते यत् खलानां मध्ये) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 20/59

बहुसो bahuso बहुशः < क्रियाविशेषण [Adverb] बहुत बार, अनेक बार more {म.} (स्थापक-) ईसारोसप्पसाअप्पणइसु *बहुसो* सग्गगंगाजलेहिं। (ईर्ष्यारोष-प्रसादप्रणतिषु बहुशः स्वर्गगङ्गाजलैः) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 5/4

बह्मबन्धु (बंभबंधु) bahamabandhu (baṁbhabandhu) ब्रह्मबन्धु < संज्ञा (पुं.) [Noun] बाँभन/ वामन, ब्राह्मणवन्धु Brahman as a friend {शौ.} (निपुणिका-) इमं भुजंगभीरुअं *बह्मबन्धुं* इमिणा भुअंगकुडिलेण दंडकट्ठेण खंभंतरिदा भाइस्सं। (इमं भुजंगभीरुं ब्रह्मबन्धुमनेन भुजङ्गकुटिलेन दण्डकाष्ठेन स्तम्भान्तरिता भाषयिष्यामि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15, पृष्ठ 306/4 {शौ.} (इरावती-) कहं क्खु *बम्हबन्धू* अण्णहा जीविस्सदि। (कथं खलु ब्रह्मबन्धुरन्यथा जीविष्यति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17, पृष्ठ 284/3

बाल bāla बाल< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] शिशु, बच्चा, अबोध, बाल, केश, मूर्ख, नया, असंयत child, boy, an ignorant or immature person, hair, foolish, etc. {शौ.} (हिडिम्बा-) किं *बाळो*। (किं बालः) मध्यम., भासनाटक, श्लोक-48/1, पृष्ठ 436

बालकइ bāla-kai बालकवि < संज्ञा (पुं.) [Noun] तरुण या नया कवि child poet, etc. {म.} (पारिपार्श्वकि-) *बालकई* कइराओ णिब्भरराअस्स तह उवज्झाओ। (बालकविः कविराजो निर्भयराजस्य तथोपाध्यायः) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 12/9

बालतंत bāla-tanta बालतंत्र < संज्ञा (नपुं.) [Noun] बाल सिद्धान्त, बाल मत, बाल दर्शन, बाल शास्त्र, अज्ञानी सिद्धान्त childish theory, child principle, child discipline, foolish theory, etc. {म.} मोत्तूण *बालतंतं* तह य वसीकरणमंततंतेहिं। (मुक्त्वा बालतन्त्रं तथा च वशीकरणमन्त्रतन्त्रैः) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 178/520

बालभाअ bāla-bhāa बालभाव < संज्ञा (नपुं.) [Noun] बालभाव, बच्चा/ बच्ची, लड़कपन childhood, baby, boyhood, etc. {शौ.} (कुमुदनी-) सरिसं क्खु *बालभाअस्स*। अदो अवरं कहेहि। (सदृशं खलु बालभावस्य। अतोऽपरं कथय) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-3/1, पृष्ठ 242

बालय (बालअ / बाल) bālaya (bālaa / bāla) बालक < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] शिशु, बालक, मूर्ख, असंयत boy, child, an ignorant or immature person, etc. {म.} अद्दंसणेण बालय सुट्ठु वि नेहाणुबद्धमणसाणं। (अदर्शनेन बालक सुष्ठ्वपि स्नेहानुबद्धमनसो:) वज्जालग्गं, पेम्मवज्जा, पृष्ठ 118/347

बालरुक्ख bāla-rukkha बालवृक्ष < संज्ञा (पुं.) [Noun] छोटे वृक्ष, छोटे पौधे, लघुपादप small tree, sapling, small plants, etc. {शौ.} (सीता-) ता जाव अय्यउत्तो ण आअच्छदि दाव इमाणं *बालरुक्खाणं* उदअप्पदाणेण अणुक्कोसइस्सं। (तद् यावदार्यपुत्रो नागच्छति, तावदिमान् वालवृक्षानुदकप्रदानेनानुक्रोशयिष्यामि) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-5, पृष्ठ 293

बाला bālā बाला < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कुमारी, लड़की, किशोरी, एक छन्द girl, etc. {म.} (राजा-) जं *बाला* मुहकुंकुमम्मि वि घणे वट्टंति ठिल्लाअरा तं मणे सिसिरं विणिज्जिअ बला पत्तोवसन्तूसवो। (यत् बालामुखकुंकुमेऽपि घने वर्तन्ते शिथिलादर: तन्मन्ये शिखिरं विनिर्जित्य बलात् प्राप्तो वसन्तोत्सव:) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 17/13

बाह bāha व्याध < संज्ञा (पुं.) [Noun] व्याध a hunter {म.} इह *बाहेहिँ* बराहाण बाण-विहआणमणुसरिज्जंति। (इह व्याधैर्वराहाणां बाणविहतानामनुसर्यन्ते) गउडवहो, गाथा-627, पृष्ठ 94

बाह bāha वाष्प < संज्ञा (पुं.) [Noun] ऑशू a tear {शौ.} पहरिस-मिसेण *बाहो* जं बंधु-समागमे समुत्तरइ। (प्रहर्षमिषेण वाष्पो यद् बन्धुसमागमे समुत्तरति) गउडवहो, पृष्ठ 139/941

बाहोआर bāhoāra बाष्पावतार < संज्ञा (नपुं.) [Noun] अश्रु प्रवाह, आँशुओं का बहना stream or flow of tears {म.}

जाआ सकज्जला इव *बाहोआरा* गिरि-वहू ण। (जाताः सकज्जला इव बाप्पावतारा गिरिवधूनाम्) गउडवहो, गाथा-132, पृष्ठ 23

बिंदु bindu बिन्दु < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] बिन्दु, अल्प अंश, बिन्दी, शून्य, अनुस्वार, दोनों भ्रू का मध्य भाग, रेखागणित का एक चिन्ह a drop, small particle, a dot, point, a zero, etc. {म.} न पडइ जलस्स *बिंदू* सुंदरि चित्तट्ठिए सुक्के। (न पतति जलस्य (बीजस्य) बिन्दुः सुन्दरि चित्रास्थे (चित्तस्थे) शुक्रे) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 170/501

बिंदुइअ binduia बिन्दुचित < विशेषण [Adjective] बिन्दु-बिन्दु (रस) पान करने वाला, बिन्दुविलिप्त covered with drops, dotted {म.} इह कहवि समासाइअ णवसहआर-मअरंद-*बिंदुइआ*। (इह कथमपि समासादितनवसहकारमकरन्द बिन्दुचिताः) गउडवहो, गाथा-605, पृष्ठ 91

बिंदुइअ binduia बिन्दुकित < विशेषण [Adjective] पसीने से बिंदु युक्त होना, बिन्दुविलिप्त sweaty, etc. {म.} दइयाएँ कोवि णिद्दा-परिस्समुब्भिण्ण-सेअ-*बिंदुइअं*। (दयितायाः कोऽपि निद्रापरिश्रमोद्भिन्नस्वेद-बिन्दुकितम्) गउडवहो, गाथा-1162, पृष्ठ 171

बिंबोट्ठ bimboṭṭha बिम्बोष्ठ < विशेषण [Adjective] बिंब फल के समान लाल-लाल सुंदर होठों वाला/ वाली one with lips as bright and red as Ivy gourd fruit {म.} (राजा-) *बिम्बोट्ठे* बहलं ण देन्तमिअणं णो गन्धतेल्लाविला वेणीओ विरअंति लेंति ण तहा अंगम्मि कुप्पासअं। (बिम्बोष्ठे बहलं न ददति मदनं नो गन्धतैलाविला वेणीर्विरचियन्ति प्राप्नुवन्ति न तथाङ्गेऽपि कुर्पासकम्) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 16/13

बिउण bi-uṇa द्विगुण < विशेषण [Adjective] दुगुना doubling, duplication {म.} तह तह धीराण मणे वड्ढइ *बिउणो* समुच्छाहो। (तथा तथा धीराणां मनसि वर्धते द्विगुणः समुत्साहः) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 38/113

बिडालिआ (बिडाल / बिडाली) biḍāliā (biḍāla / biḍālī) बिडालिका/ बिडाल < संज्ञा (स्त्री) [Noun] बिडालिका, बिल्ली cat, tobby, puma, etc. {शौ.} (विदूषक-) अहो,

अणत्थो संपडिदो। बंधणब्भट्टो गिहकवोदो *बिडालिआए* आलोए पडिदो। (अहो अनर्थः संपतितः। बन्धनभ्रष्टो गृहकपोतो बिडालिकाया आलोके पतितः) मालविका, कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17/4, पृष्ठ 308

बीअ (बीय) bīa (bīya) बीज < संज्ञा (नपुं.) [Noun] बीज, अनाज, कारण, शुक्र, बीजगणित, बीजमंत्र, "ह्रीं" अक्षर, मंत्रों का मूल अक्षर या शब्द, जिसमें वनस्पति आदि रूप अंकुरण करने की क्षमता हो seeds, mystical letter of mantra or incantation, etc. {शौ.} पच्चयभावे दोसा णस्संति णिरासया जहा *बीयं* । (प्रत्ययभावे दोषाः नश्यन्ति निराश्रयाः यथा बीजम्) मूला., पृष्ठ 986/2

बीजपूरअ (बीजऊरय) bīja-pūraa (bīja-ūraya) बीजपूरक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] नीबू, विशेष प्रकार का नीबू lemon, special kind of lemon, etc. {शौ.} (मधुकरिका-) णं संणिहिदं *बीजपूरअं* (ननु संनिहितं बीजपूरकम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., अंक-3, पृष्ठ 267

बीयदियह bīya-diyaha द्वितीयदिवस < संज्ञा (नपुं.) [Noun] दूसरा दिन, द्वितीय दिन second day {म.} जह *बीयदियहे* सविलक्खलक्खिए वयणकमलम्मि। (यथा द्वितीयदिवसे सविलक्षलक्षिते वदनकमले) वज्जालग्गं, सुरयवज्जा, पृष्ठ 110/325

बीह bīha √भी < क्रिया [अक.] [Verb] डरना, भयभीत होना to fear, to fright, to terror, etc. {म.} दिट्ठाण को न *बीहइ* विंतरसप्पाण व खलाणं। (दृष्टेभ्यः को न बिभेति व्यन्तरसर्पेभ्य इव खलेभ्यः) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 20/58

बुड्ढ buḍḍha वृद्ध < विशेषण [Adjective] वृद्ध, बूढ़ा old, aged man {शौ.} (विदूषक-) धणविणासदुक्खस्स उण चिन्तिअमाणस्स वसन्ते *बुड्ढस्स* सरत्थम्बस्स विअ अङ्कुरङ्कुरा उब्भमन्ति। (धनविनाश-दुःखस्य पुनश्चिन्त्यमानस्य वसन्ते वृद्धस्य शरस्तम्बस्ये-वाङ्कुराङ्कुरा उद्भ्रमन्ति) चारु., भासनाटक., गाथा-6/1, पृष्ठ 198

बुद्धि buddhi बुद्धि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] बुद्धि, मति, मेधा, प्रज्ञा intellect, intelligence, wisdom, sense, etc. {शौ.} (विदूषक-) अपुव्वो जणो मम *बुद्धिं* अजाणन्तो अहिअदरं पसंदेदि। (अपूर्वो जनो

मम बुद्धिमजानन्न्धिकतरं प्रशंसति) भासनाटक., अविमार., गाथा-1/5, पृष्ठ 164

बुद्धोवाशिआ buddhovāśiā बुद्धोपासिका < संज्ञा/ विशेषण [Noun/Adjective] वुद्धोपासिका, बुद्ध की उपासिका a lady worshipper of Buddha {मा.} (भिक्षु-) शा ज्जेव *बुद्धोवाशिआ*। (सैव बुद्धोपासिका) मृच्छ., पृष्ठ 447/8 {मा.} (भिक्षु-) किं मं ण शुमलेदि *बुद्धोवाशिआ* दश-शुवण्णाणिक्कीदं? (किं मां न स्मरति बुद्धोपासिका दश-सुवर्णानि क्रीतम् ?) मृच्छ., पृष्ठ 448/8

बुध budha बुध < संज्ञा (पुं.) [Noun] बुध, ग्रह-विशेष, पण्डित planet mercury, Wednesday, wise, sagacious, etc. {मा.} (क्षपणक-) गमणे बुधश्श लग्गे उदिदस्तमिदम्मि केदुम्मि। (गमने बुधस्य लग्नमुदितास्तमिते च केतौ) मुद्रा., श्लोक-18, पृष्ठ-60/4

बुभुक्खा bubhukkhā बुभुक्षा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] भूख, बुभुक्षा hunger, appetite, lust, etc. {शौ.} (विभूषक-) दिट्ठिआ मए *बुभुक्खिदेण* सोत्थिवाअणं विअ उवलद्धं भवदा उक्कंठिदेण समासासणं। (दिष्ट्या मया बुभुक्षितेन स्वस्तिवाचनमिवोपलब्धं भवतोत्कण्ठितेन समाश्वासनम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12/2, पृष्ठ 164

बुह buha बुध < विशेषण [Adjective] पण्डित, विद्वान, जानकार, बुद्धि से चैतन्य, एक ग्रह, एक दिन wise, sagacious, mercury, Wednesday, etc. {म.} अबुहा *बुहाण* मज्झे पढंति जे छंदलक्खणविहू णा। (अबुधा बुधानां मध्ये पठन्ति ये छन्दोलक्षणविहीना:) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 10/30

बे (बि) be (bi) द्वि < विशेषण [Adjective] दो, द्वि two {म.} *बे* मग्गा भुवणयले माणिणि माणुन्नयाण पुरिसाण। (द्वौ मार्गौ भुवनतले मानिनि मानोन्नतानां पुरुषाणाम्) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 32/95

बोक्कार [देशज] ***bokkāra*** बुक्कार< संज्ञा (पुं.) [Noun] गर्जन, सिंह नाद, गर्जना roar {म.} मुक्के वि णर-मइंदत्तणम्मि *बोक्कार*-कलुसिअ-गलस्स। (मुक्तेऽपि नरमृगेन्द्रत्वे बुक्कारकलुषितगलस्य) गउडवहो, गाथा-10, पृष्ठ 2/10

भ

भ bha भ < संज्ञा (पुं.) [Noun] ओष्ठ स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular labial consonant {म.} खघथधभा उण हत्तं उवेति अत्थं अ मुंचंता। (खघथधभाः पुनः हत्वमुपेयन्ति अर्थञ्चामुञ्चमानाः) नाट्य, श्लोक-8/17, पृष्ठ 543

भंडाआर (भंडागार) bhaṇḍāāra (bhaṇḍāgāra) भाण्डागार < संज्ञा (पुं.) [Noun] भंडार, कोठा, कोशगृह, वखार treasury, storehouse, emporium, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) ता इच्छामि अहं इमाए मुद्दाए मुद्दिअ अमच्चस्स *भण्डाआरे* ठाविदुं। (तस्मादिच्छाम्यहमनया मुद्रया मुद्रयित्वामात्यरयैव भाण्डागारे स्थापयितुम्) मुद्रा., श्लोक-22, पृष्ठ 32/2

भअ (भय) bhaa (bhaya) भय < संज्ञा (नपुं.) [Noun] डर, आतंक, भय terror, fear, horror {शौ.} (वसन्तसेना-) कुदो दे *भअं*? (कुतस्ते भयम् ?) मृच्छ., पृष्ठ 124/2

भअवदी (भगवई) bhaavadī (bhagavaī) भवगती < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पूज्या, ऐश्वर्य सम्पन्ना, दुर्गा और लक्ष्मी आदि देवियों के लिए प्रयुक्त a respectable lady, an epithet of Durga and Lakshmi, etc. (शकुन्तला-) मणोरहो क्खु मे भणिदो *भअवदीए*। (मनोरथः खलु मे भणितो भगवत्यै) अभि. शाकु.,कालिदास ग्रन्था., श्लोक-33/7, पृष्ठ 135

भइणिआ (भइणी / भइगि / भइणि / णइणी / बहिणिआ) bhaiṇiyā (bhaiṇī / bhaigi / bhaiṇi / ṇaiṇī / bahiṇiāi) भगिनिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] बहिन, सहोदरा sister, real sister, etc. {शौ.} (तापसी-) भद्दे! इमं दाव भद्दमुहस्स *भइणिअं* कोच्चि राआ ण वरेदि। (भद्रे! इमां तावद् भद्रमुखस्य भगिनिकां कश्चिद् राजा न वरयति) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-7/1, पृष्ठ 4

भगवं (भयवं) bhagavaṁ (bhayavaṁ) भगवान् (भगवत्) < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] भगवान्, यशस्वी, श्रद्धेय, दिव्य, पवित्र (देव, उपदेव तथा अन्य प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों का विशेषण), देव, देवता, विष्णु, शिव, बुद्ध, जिन का विशेषण, जो सर्वशक्तिमान एवं ज्ञान सहित हैं वह भगवान हैं supreme one, lord, one with omnipotence and

omniscience, etc. {शौ.} भिक्खं वक्कं हिययं सोधिय जो चरदि णिच्चं सो साहू। एसो सुट्ठिवो साहू भणिओ जिणसासणे *भयवं*। (भिक्षा वाक्यं हृदयं विशोध्यं यः चरति नित्यं स साधुः। एष सुस्थितः साधुः भणितः जिनशासने भगवान्) मूला., पृष्ठ 1006/2

भग्ग bhagga भाग्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] नियति, प्रारब्ध, नसीब, तक़दीर fate, destiny, fortune, etc. {म.} हत्थिहत्थचंचलाणि पुरुस*भग्गाणि* होंति। (हस्तिहस्तचंचलानि पुरुषभाग्यानि भवन्ति) अविमार., पृष्ठ 50/2

भग्गपयाव bhagga-payāva भग्नप्रताप< संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रताप का टूटना, भग्न होना insulted, humiliated {म.} पुरिसो *भग्गपयावो* विहिणा विवरीयरूवेण। (पुरुषो भग्नप्रतापो विधिना विपरीतरूपेण) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 44/130

भट्टा bhaṭṭā भर्ता (भर्तृ) < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] स्वामी, पति, प्रभु, भरण पोषण कर्ता a husband, a lord, master, superior, a leader, chief {शौ.} (दौवारिक-) आणवेदु *भट्टा*। (आज्ञापयतु भर्ता) अभि.शाकु., पृष्ठ 170/2

भट्टिणी bhaṭṭiṇī भट्टिनी/ भर्त्री < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] स्वामिनी, मालकिन a queen, a princess, a lady of high rank, the wife of a Brāhmaṇa, land lady {शौ.} (चेटी-) *भट्टिणि*! सच्चं! (भट्टिनी! सत्यम्!) मृच्छ., पृष्ठ 182/3

भड bhaḍa भट < संज्ञा (पुं.) [Noun] वीर, योद्धा, म्लेच्छों की जाति, वर्ण-संकर जाति, राक्षस hero, a brave man, fighter, an outcast, of a degraded tribe, etc. {म.} अंतावेढियचलणो जाइ *भडो* एक्कमेक्कस्स। (अन्त्रावेष्टितचरणो याति भट एकैकस्य) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 56/167

भण bhaṇa √ भण् < क्रिया [सक.] [Verb] कहना, बोलना, प्रतिपादन करना to say, to speak, to express {शौ.} (वसन्तसेना-) एव्वं भणासि। (एवं भणसि ?) मृच्छ., पृष्ठ-191/4

भत्ता (भत्तु) bhattā (bhattu) भर्ता (भर्तृ) < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] स्वामी, पति, प्रभु, भरण पोषण कर्ता a husband, a

lord, master, superior, a leader, chief {शौ.} (नटी-) मम जम्मंतरे वि *भत्ता* भविस्ससि। (मम जन्मान्तरेऽपि भर्ता भविष्यसि) मृच्छ., पृष्ठ 16/1

भदंत bhadanta भदन्त < विशेषण [Adjective] भदन्त, पूज्य, सुख कारक, कल्याणकारक, बौद्ध साधु (for Buddhist monks) reverend, honorable, revered, etc. {मा.} (क्षपणक-) कुविदे ण तुम्हाणं *भदंते*। (कुपितो न युष्माकं भदन्तः) मुद्रा., श्लोक 19, पृष्ठ 61/4

भद्द (भद्दअ) bhadda (bhada) भद्र संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] भद्र, साधु, सरल, भला, सज्जन, उत्तम, श्रेष्ठ, कल्याण, मंगल civil, urbane, good, noble, auspicious, dear, gentleman {म.} संघपउमस्स *भद्दं*, समणगण-सहस्सपत्तस्स। (संघपद्मस्य भद्रं, श्रमणगणसहस्रपत्रस्य) समणसुत्तं, पृष्ठ 10/31

भद्दमुह bhadda-muha भद्रमुख< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] सज्जन मुख, अच्छा मुख good face, happy, gentle, auspicious {शौ.} (विदूषक-) तुवरदु तुवरदु *भद्दमुहो*, पिता दे मारिदुं णीअदि। (त्वरतां त्वरतां भद्रमुख, पिता ते मारयितुं नीयते) मृच्छ., पृष्ठ 533/10

भद्दमोरअ bhadda-mora भद्रमयूरक< संज्ञा (पुं.) [Noun] अच्छा मोर, भद्र मोर, सुन्दर मोर good Peacock, noble Peacock, etc. {शौ.} (बाल-) अज्जुए रोअदि मे एसो *भद्दमोरओ* । (मातः! रोचते मे एष भद्रमयूरः) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/7, पृष्ठ 126

भम bhama √ भ्रम् < क्रिया [सक.] [Verb] भ्रमण करना, घूमना to going round, to travel, to stroll, to turn {म.} *भमइ* भडो जसलुद्धो ससंकलो मत्तहत्थि व्व। (भ्रमति भटोयशोलुब्धः सश्रृङ्खलो मत्तहस्तीव) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 56/166

भमंत bhamanta भ्रमत् < विशेषण/ वर्त. कृ. [Adjeective/ Present Participle] घूमता हुआ revolve, rotate, stroll {म.} अहवा पावंति सिरिं अहव *भमंता* समप्पंति। (अथवा प्राप्नुवन्ति श्रियमथवा भ्रमन्तः समाप्यन्ते) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 32/94

भमर (भसल) bhamara (bhasala) भ्रमर< संज्ञा (पुं.) [Noun] भौंरा, भ्रमर, मनचला व्यक्ति beetle, large black bee etc. {म.} जह इत्थ तत्थ कत्थ वि *भमरा* दुक्खेहि लक्खंते। (यथात्र तत्र कुत्रापि भ्रमरा दु:खैर्लक्ष्यन्ते) वज्जालग्गं, मालईवज्जा, पृष्ठ 80/232 {म.} जस्स वि गंधविलित्ता *भसला भसलेहि* पिज्जंति। (यस्यापि गन्धविलिप्ता भ्रमरा भ्रमरै: पीयन्ते) वज्जालग्गं, मालईवज्जा, पृष्ठ 80/233

भमरसंपाद bhamara-sampāda भ्रमरसंपात < संज्ञा (पुं.) [Noun] भौरें के डर से, भ्रमर बाधा molestation by a bee, etc. {शौ.} मुद्धे! *भमरसंपादो* भविस्सदि त्ति वसन्तावदारसव्वस्सं किं ण चूदप्पसवो आदंसिदव्वो। (मुग्धे! भमर-संपातो भविष्यतीति वसन्तावतारसर्वस्वं किं न चूतप्रसवोऽवतंसितव्यः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13, पृष्ठ 281/3

भरद (भरध / भरह) bharada (bharadha / bharaha) भरत < संज्ञा (पुं.) [Noun] राजा दशरथ का पुत्र भरत (रामचन्द्र जी का छोटा भाई) राजा दुष्यन्त का पुत्र भरत, नाट्यशास्त्र के कर्ता भरतमुनि, नृप विशेष, शबर, भरत के वंशज राजा, आदिनाथ का ज्येष्ठ पुत्र प्रथम चक्रवर्ती राजा (जैन परम्परानुसार) अभिनेता रंगमंच पर अभिनय करने वाला पात्र, भाड़े क Son of Daśaratha (Ram's younger brother) the son of Duṣyanta and Śakuntalā, of an ancient sage who is supposed to have been the founder of science of music and dramaturgy, an actor, a hired soldier, etc. {शौ.} (नन्दिनिका-) हळा! दिट्ठो अम्हेहि कोदूहळेण भट्टिदारओ *भरदो*। (हला! दृष्टोऽस्माभिः कौतूहलेन भर्तृदारको भरतः) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-4, पृष्ठ 283

भव bhava √ भू < क्रिया [अक./ सक.] [Verb] होना, अस्तित्त्व होना to exist, to be present, to achieve, etc. {शौ.}(देवकी-) सव्वहा ण *भविस्सदि*। (सर्वथा न भविष्यति) बाल., भासनाटक., श्लोक-10/1, पृष्ठ 514

भवं bhavaṁ भवान् < सर्वनाम [Pronoun] आप you {शौ.} (विदूषक-) आणवेदु *भवं*। (आज्ञापयतु भवान्) अभि.शाकु., पृष्ठ 178/2

भवण bhavaṇa भवन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] भवन, गृह, वसति, मकान, उत्पत्ति सत्ता ansion, building, edifice, etc. {शौ.}

(रम्भा-) सा णो पिअसही उव्वसी कुबेर *भवणादो* णिवत्तमाणा केणावि दाणवेण चित्तलेहादुदीआ अद्धापथं ज्जेव णंदिग्गाहं गिहिदा। (सा नः प्रियसख्युर्वशी कुबेरभवनान्निवर्तमाना केनापि दानवेन चित्रलेखा द्वितीया अर्धपथ एव नन्दिग्राहं गृहीता) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था.,श्लोक-4/1, पृष्ठ 141

भवदी bhavadī भवती < सर्वनाम [Pronoun] देवी, आदरणीया, पूज्य श्रीमती, आप (स्त्रीलिंग सम्बोधन) your ladyship, lady, a respectful or honorific pronoun translated by your honor, your lordship, worship or highness, etc.{शौ.} (विदूषक-) इदो इदो *भवदी*। (इतो इतो भवती) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-21/3, पृष्ठ 191

भाईरही bhāīrahī भागीरथी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] भागीरथी, गंगा नदी one of the names of the river Ganges, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) सहि! पेक्ख पेक्ख। एदं भअवदीए *भाईरहीए* जमुणासंगमविसेस-पावणेसु सलिलेसु अत्ताणअं ओलोअंतस्स विअ पइट्ठाणस्स सिहाभरणभूदं तस्स राएसिणो भवणं उवट्ठिदम्ह। (सखि! प्रेक्षस्व प्रेक्षस्व। एतद्भगवत्याः भागीरथ्याः यमुनासङ्गम-विशेषपावनेषु सलिलेष्वात्मानमवलोकयत इव प्रतिष्ठानस्य शिखाभरणभूतं तस्य राजर्षेर्भवनमुपस्थिते स्वः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 160

भाउ (भा) bhāu (bhā) √ भी < क्रिया [अक.] [Verb] भयभीत होना, डरना to scared, to terrified {शौ.} (नटी-) मा *भाआहि* मा *भाआहि*। (मा बिभीहि मा बिभीहि) चारु., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 192

भागधेअ (भागहेअ) bhāgadhea (bhāgahea) भागधेय < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] भाग्य fortune {शौ.} (विदूषक-) कुदो अम्हाणं एत्तिअं *भाअधेअं* ? (कुतः अस्माकमेतावद् भागधेयम् ?) मृच्छ., पृष्ठ 262/5

भादा bhādā भ्राता < (भ्रातृ) संज्ञा (पुं.) [Noun] भाई, बन्धु, मराठी में भाई a brother, etc. {शौ.} (चेटी-) अज्ज! एसो अज्जआए *भादा* भोदि। (आर्य्य! एष आर्य्याया भ्राता भवति) मृच्छ., पृष्ठ 243/4

भादु (भाउ) bhādu (bhāu) भ्राता (भ्रातृ) < संज्ञा (पुं.) [Noun] भाई, बन्धु, मराठी में

भाई a brother, etc. {शौ.} (चन्दनक-) ता जाव अहं पि पुत्त-*भादु*-पडिवुदो एदं ज्जेव अणुगच्छामि। (तद्यावदहमपि पुत्रभ्रातृपरिवृत एतमेवानुगच्छामि) मृच्छ., पृष्ठ 356/6

भादुमणोरह bhādu-maṇoraha भ्रातृमनोरथ < संज्ञा (पुं.) [Noun] भाई का मनोरथ brother's wish/ desire {शौ.} (सीता-) एहि वच्छ! *भादुमणोरहं* पूरेहि। (एहि वत्स! भ्रातृमनोरथं पूरय) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-14/4, पृष्ठ 288

भावञ्ञ bhāvaññā भावज्ञ < विशेषण [Adjective] अभिप्राय को जानने वाला cognizant of sense {मा.} (नटी-) को एत्थ विम्हओ अय्यो *भावञ्ञो* त्ति। (कोऽत्र विस्मय आर्यो भावज्ञ इति) अविमार., भास., गाथा-1/1, पृष्ठ 109

भावणा bhāvaṇā भावना < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] इच्छा, चिन्तन, संस्कार करण, अनुप्रेक्षा, पर्यालोचन, विचार, धारणा, चित्त का व्यापार विशेष, बारम्बार चिंतन sentiments, feeling, emotion, etc. {शौ.} णाणम्मि भावणा खलु, कादव्वा दंसणे चरित्ते य। (ज्ञाने भावना खलु कर्तव्या दर्शने चारित्रे च) तिलो. भाग 3, 3/27

भावत्थ bhāvattha भावार्थ < संज्ञा (पुं.) [Noun] भाव के साथ अर्थ, तात्पर्य, रहस्य gist, substance, essential meaning, purpose {म.} संपयं एयासिं चेव गुरूवएसाणुसारेणं वित्थरेण *भावत्थो* कहिज्जइ। (सांप्रतमेतासां चैव गुरूपदेशानुसारेण विस्तरेण भावार्थः कथ्यते) समराइ.,चरियसंगहो.,पृष्ठ 5

भाविद bhāvida भावित < विशेषण [Adjective] भावित, भावयुक्त, भाव विभोर, वासित, निर्दोष comprehended, thought of conceived, imagined, etc. {शौ.} (मालविका-) हला! तदा संभमदिट्ठे भट्टिणी रूवे जहा ण वितिण्ह म्हि तहा अज्जवि, मए *भाविदो* अवितिण्हदंसणो भट्टा। (सखि! तदा संभ्रमदृष्टे भर्तृ रूपे यथा न वितृष्णास्मि तथाप्यापि मया भावितोऽवितृष्णदर्शनो भर्ता) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-7, पृष्ठ 299/4

भासा bhāsā भाषा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वाणी, ज़बान, बोली, सरस्वती का विशेषण, भावाभिव्यक्ति / बोलचाल को भाषा कहते हैं

यह अक्षरी और अनक्षरी होती है language, dialect, goddess of knowledge according to Hindu mythology, etc. {अर्ध मा.} *भासा* ओहारिणी। (भाषा अवधारिणी) पण्णा., भाग 2, 11/830 पृष्ठ 47

भासाभिण्ण bhāsā-bhiṇṇa भाषाभिज्ञ < विशेषण [Adjective] भाषाभिज्ञ, भाषा का जानकारlanguage expert, linguist {शौ.} (चन्दनक-)खस-खत्ति-खडो-विलअ-कण्णाट-कण्ण-प्पावरण-दविड-चोल-चीण-वव्वर-खेर-खाण-मुख-मधुघाट-पहु दाणं मिलिच्छजादीणं अणेअ-देस-*भासाभिण्णा* जहेट्ठं मन्तआम। (खस-खत्ति-खडा-खडट्टो-विलय-कर्णाट-कर्ण-प्रावरण-द्रविड-चोल-चीन-वर्वर-खेर-खान-मुख-मधुघात-प्रभृतीनां म्लेच्छजातीनाम् अनेकदेश-भाषाभिज्ञा यथेष्टं मन्त्रयाम:) मृच्छ., पृष्ठ 347/6

भासुरमुह bhāsura-muha भासुरमुख < संज्ञा (पुं.) [Noun] भास्वर मुख, तेज युक्त मुख shiny face, brilliant, etc. {म.} दट्ठूण *भासुरमुहं* खलसीहं को न बीहेइ। (दृष्ट्वा भासुरमुखं खलसिंहं को न बिभेति) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 20/60

भिंद bhinda √ भिद् < क्रिया [सक.] [Verb] विभाग करना, तोडना apportionment, to break, emaciated, etc. {मा.} (नंदगोप-) पड्खुणि मग्गमाणष्षा धळणीं *भिन्दिअ* जुगप्पमाणा षळिळधाळा उट्ठिदा। (पांसून् मार्गयतो धरणीं भित्वा युगप्रमाणा सलिलधारोत्थित) बाल., भासनाटक., श्लोक-20, पृष्ठ 521/1

भिक्खा bhikkhā भिक्षा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] भीख, याचना to ask, beg or ask for, to solicit {म.} अहवा विमलकवाले *भिक्खं* भमिऊण पेयवणे। (अथवा विमलकपाले भिक्षां भ्रान्त्वा प्रेतवने) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 34/99

भिक्खु bhikkhu भिक्षु < संज्ञा (पुं.) [Noun] भिक्षु, सन्यासी, मुनि, ऋषि friar, Buddhist sadhu or mendicant, etc. {शौ.} पंचविहचेलचायं खिदिसयणं दुविहसंजमं *भिक्खू*। (पंचविधचेलत्यागं क्षितिशयनं द्विविधसंयमं भिक्षु:) अट्ठपाहु ड भावपाहु ड पृष्ठ 211/81

भिच्च bhicca भृत्य < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] भृत्य, नौकर, अच्छी तरह पोषण करने वाला, भरणीय, पोषणीय

servant, attendant, etc. {म.} परिणइमज्झम्मि सही विहु रेमंतिव्व *भिच्चो* व्व। (परिणतिमध्ये सखी विधुरे मन्त्रीव भृत्य इव) वज्जालग्गं, सईवज्जा, पृष्ठ 158/ 466

भित्ति bhitti भित्ति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] दीवार, भित्ति, भीत wall, pillar, mural, etc. {शौ.} (सुधाकर-) सोहवण्णअदत्तचन्दण-पञ्चाङ्गुळा भित्तीओ। (सौधवर्णकदत्त-चन्दनपञ्चाङ्गुला भित्तय:) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-3,पृष्ठ 273

भीअ (भीद / भीत / भीय) bhīda (bhīa / bhīta / bhīya) भीत < विशेषण [Adjective] भीत, डरा हुआ fear, scare, fright, dread, etc. {शौ.} (बाल-) अम्हहे! बलिअं क्खु भीओ म्हि। (अहो! बलीयः खलु भीतोऽस्मि) अभि.शाकु.,कालिदास ग्रन्था., श्लोक-14/7, पृष्ठ 123

भीअ (भिह) bhīa (bhiha)√ भी < क्रिया [सक.] [Verb] डरना, भयभीत होना to fear, etc. {शौ.} (उर्वशी-) सहि! *भीआमि* सहसापभावादो विण्णादुं। (सखि! बिभेमि सहसा प्रभावाद्विज्ञातुम्) विक्रमो.,कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 161 {शौ.} (देवी-) किं दु अदक्खिण्णकिदस्स पच्छादावस्स *भाएमि*। (किंत्वदाक्षिण्यकृतात्पश्चात्तापाद् बिभेमि) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/2, पृष्ठ 172

भुंज bhuñja √ भुज् < क्रिया [सक.] [Verb] भोजन करना, पालन करना, भोग करना, अनुभव करना to eat, to obey, to observe, etc. {म.} अह *भुंजइ* सह पियकामिणीह (हि) कच्चोलथालसिप्पीहिं। (अथ भुङ्क्ते सह प्रियकामिनीभि: कच्चोलस्थालशुक्तिभि:) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 34/99

भुअंगणिम्मोअ bhuaṅga-ṇimmoa भुजङ्गनिर्मोक < संज्ञा (पुं.) [Noun] सॉप की केंचुली skin or slough of snake, etc. {शौ.} (विदूषक-) अविहा अविहा। भो! किं णु क्खु एदं *भुअंगणिम्मोअं* मं खादिदुं णिवडिदो। (अविधा अविधा। भो:! किं नु खलु एतत् भुजङ्गनिर्मोकं मां खादितुं निपतितः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-11/2, पृष्ठ 163

भुअण bhuaṇa भुवन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] भुवन, जगत, संसार the world, the earth {शौ.} (वैतालिक-) अकुड्.कुममचंदणं दसदिसाबहू मण्डणं। (अकंकणमकुण्डलं भुवण-मंडली भूसणं) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 175/26/3

भुजंग bhujaṅga भुजंग/ भुजङ्ग< संज्ञा (पुं.) [Noun] सॉप, सर्प, विट, वेश्यागामी, उपपति, जुआड़ी, चोर, बदमाश, ठग snake, serpent, cohusband, thief, etc. {मा.} (वृद्धगोपालक-) एषो गोवज्जहादो णिक्कमिअ परिघट्टिअवम्मीअमूलो *भुजङ्गेहि* कुवण्णेहिं णीळुप्पळादामेहि षिंगळग्गेहि विअ वषभो षोभदि। (एष गोव्रजाद् निष्क्रम्य परिघट्टितवल्मीकमूलो भुजङ्गै: कुवर्णै: नीलोत्पलदामभि: शृङ्गलग्नैरिव वृषभ: शोभते) बाल., भासनाटक., अंक-3

भुजजुअळ (भुजजुअल / भुअजुअल) bhuja-juaḷa (bhuja-juala / bhua-juala) भुअजुअल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] बाह युगल, भुजा युगल, दोनों बाजुओं two hand, both side, etc. {मा.} (चाणूर-) एहि दामोदळ! अज्ज में *भुजजुअळेहि* सिद्धिं गच्छ। (एहि दामोदर! अद्य मे भुजयुगलेन सिद्धिं गच्छ) बाल., भासनाटक., अंक-5, पृष्ठ 553

भुज्जवत्त bhujja-vatta भूर्जपत्र < संज्ञा (नपुं.) [Noun] भोजपत्र the bark of Bhoj tree, bark of birch , etc. {शौ.} (उर्वशी-) ता पहावणिम्मिदेण भुज्जवत्तेण संपादिद उत्तरा होदु इच्छामि। (तत्प्रभावनिर्मितेन भूर्जपत्रेण संपादितोत्तरा भवितुमिच्छामि) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-11/2, पृष्ठ 163

भुय (भुअ) bhuya (bhua) भुज्< संज्ञा (पुं., स्त्री.) [Noun] भुजा, हाथ, गणित-प्रसिद्ध रेखा विशेष arm, hand, side of mathematical figure {म.} इह पंथे मा वच्चसु गयवइ भणियं *भुयं* पसारेवि। (अस्मिन्पथि मा व्रज गतपतिकया भणितं भुजं प्रसार्य) वज्जालग्गं, पवसियवज्जा, पृष्ठ 126/373

भुयदंड bhuya-daṇḍa भुजदंड < संज्ञा (पुं.) [Noun] बाहु दण्ड् भुजदण्ड strong arms, etc. {म.} दुव्वारवेरिवारणणिवारणा जस्स भुयदंडा। (दुर्वारवैरिवारणनिवारणौ

यस्य भुजदण्डौ) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 58/171

भूमि bhūmi भूमि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] भूमी, पृथ्वी, क्षेत्र, स्थल, जमीन, काल, मंजिल land, the earth, site, ground, field, soil, etc. {शौ.} (विदूषक-) अहं भरिदगद्दभो विअ भूमीए पळोट्टामि। (अहं भरितगर्दभ इव भूम्यां प्रलुठामि) चारु., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 226

भूमिआ bhūmiā भूमिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] अभिनय, किसी पुस्तक की प्रस्तावना या परिचय acting, preface, etc. {शौ.} (पारिपार्श्विक-) जदो महाराअदेईणं *भूमिअं* घेत्तूणं अज्जो अज्जभारिआ अ जवणिअंतरे वट्टदि। (यतो महाराज-देव्योर्भूमिकां गृहीत्वा आर्य आर्यभार्या च जवनिकान्तरे वर्त्तते) कर्पूर., पृष्ठ 16/1

भूमिदळ (भूमिदल) bhūmi-daḷa (bhūmi-dala) भूमितल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] भूमितल, धरा पृष्ठ ground level, surface of the earth, etc. {मा.} (गोपालक-) एषो अळिट्ठवषभो णाम दाणवो पिण्डीकिद-णिग्घादरूवो *भूमिदळं* खुरपुडेहि ळिहन्तो, जष्ष घोषो मेघरव त्ति षड्किदो जादो। (एषोऽरिष्टवृषभो नाम दानवः पिण्डीकृत-निर्घातरूपो भूमितलं खुरपुटैर्लिखन् यस्य घोषो मेघरव इति शङ्कितो जातः) बाल., भासनाटक., श्लोक-4/3, पृष्ठ 540

भूमिदेअ bhūmi-dea भूमिदेव < संज्ञा (पुं.) [Noun] भूमिदेवता, राजा, नरेन्द्र, स्वामी earth god, earth deity, king, monarch soverign, etc. {म.} कल्लाणकुलहराणं देवाणं अ *भूमिदेआणं।* (कल्याणकुलधराणां देवानां च भूमिदेवानाम्) मुद्रा., श्लोक-1, पृष्ठ 51/4

भूमिपडिद bhūmi-paḍida भूमिपतित < भूतकालकि कृदन्त [Past Participle] धरती पर गिरा हुआ fallen on earth, etc. {शौ.} (प्रथमा-) एदं कित मादापिदरो अप्पाणं च वज्जिअ अवरो *भूमिपडिदं*ण गेण्हादि। (एतां किल मातापितरावात्मानं च वर्जयित्वाऽपरो भूमिपतितां न गृह्णाति) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/7, पृष्ठ 127

भूमी / भूमि bhūmī / bhūmi भूमि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] भूमि, पृथ्वी, क्षेत्र, स्थल, जमीन, काल, मंजिला, धरातल land, earth, site, ground, field, soil, etc.

(दुर्जय-) अअं महाराओ *भूमीए* उवविट्ठो। (अयं महाराजो भूमिम् उपविष्टो) ऊरुभङ्ग., भासनाटक., श्लोक-42/1, पृष्ठ 501 {शौ.} (विदूषक-) अहं भरिदगद्दभो विअ *भूमीए* पळोट्ठामि। (अहं भरितगर्दभ इव भूम्यां प्रलुठामि) चारु., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 226

भेडक (भेलय) [देशज] **bheḍaka (bhelaya)** भेलक/ उडूप < संज्ञा (पुं.) [Noun] बेड़ा, नौका, नाव a boat, raft, etc. {मा.} (शकार-) अहं ते भेडक दइश्शं। (अहं ते उडूपं दास्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 411/8

भोअण (भोयण) bhoaṇa (bhoyaṇa) भोजन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] आहार, खाना, भक्ष्य, क्षुधा निवृत्ति के लिए खाने योग्य पदार्थ food, etc. {शौ.} (विदूषक-) अम्हाणं उण भोअणवेला उवट्ठदि। (अस्माकं पुनर्भोजनवेलोपस्थिता) मालविका., पृष्ठ 244/2

भोअणवेला bhoaṇa-velā भोजनवेला< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] भोजनवेला, भोजन का समय time for meals, etc.{शौ.} (विदूषक-) अविहा अविहा। अम्हाणं *भोअणवेला* उवट्ठिदा। (अविधा अविधा। अस्माकं भोजनवेलोपस्थिता) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12/2, पृष्ठ 264

भोदी bhodī भवती < सर्वनाम [Pronoun] आप, महोदया you, ladyship {शौ.} (विदूषक-) उवविसदु *भोदी*। (उपविशतु भवती) मृच्छ., पृष्ठ 249/4

भोयहीण bhoya-hīṇa भोगहीन < विशेषण [Adjective] भोगहीन without enjoyment {म.} असमत्थमंततंताण कुलविमुक्काण *भोयहीणाणं*। (असमर्थमन्त्रतन्त्रेभ्य: कुलविमुक्तेभ्यो भोगहीनेभ्य:) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 20/58

म

म ma म < संज्ञा (पुं.) [Noun] ओष्ठ स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular labial consonant श्यामके *मः*।। हेम., 1/71, पृष्ठ 439

मं maṁ मम् < सर्वनाम [Pronoun] मेरा my (सीता-) हद्धी, हद्धी, ताइं एव्वं चिरपरिइदाइं अक्खराइं पञ्चवटीदंसणेण *मं* मन्दभाइणिं अणवंधंति। (हा धिक्, तान्येव चिरपरिचतान्यक्षराणि पञ्चवटी दर्शनेन मां

मन्दभगिनीमनुबध्नन्ति) उत्तर., श्लोक-7/3, पृष्ठ 16

मंगल maṅgala मङ्गल < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] कल्याण, शुभ, सप्ताह का तीसरा दिन, शुभ-शकुन आशीर्वाद, नांदी, उत्सव (विवाह आदि), शुभ संस्कार जो पाप रूपी मल को गलाता है अथवा जो सुख या पुण्य को लाने वाला है वह मंगल है, एक ग्रह का नाम state of auspiciousness, name of a planet (Mars), etc. {शिला.} कत्तव्वमेव तु मंगलं, अप्फलं तु खो एतरिसं मंगलं। (कर्तव्यमेव तु मङ्गलम् अल्पफलं तु खलु एतादृशं मंगलम्) भारतीय पुरा., अशोक के अभिलेख, नवां शिलालेख नं 3, पृष्ठ 101

मंगलकम्म maṅgala-kamma मङ्गलकर्म < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मंगलकर्म, मंगलकार्य festive occasion, a religious or auspicicus ceremony, etc. {शौ.} (विदूषक-) वड्ढदु भवं। सिद्धाणि दे *मंगलकम्माणि*। (वर्धतां भवान्। सिद्धानि ते मङ्गलकर्माणि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-5, पृष्ठ 297/4

मंगलकाल maṅgala-kāla मङ्गलकाल < संज्ञा (पुं.) [Noun] मंगलवेला, शुभ अवसर an auspicious occasion, etc. {शौ.} (उभे-) सहि! उइअं ण दे *मंगलकाले* रोइदं। (सखि! उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-4, पृष्ठ 60/4

मंगुल [देशज] **maṅgula** मङ्गुल (पाप) < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] अमंगल, पाप, असुन्दर an evil, a sin, etc. {म.} सुयणो न कुप्पइ च्चिय अह कुप्पइ मंगुलं न चिंतेइ। (सुजनो न कुप्यत्येवाथ कुप्यति मङ्गुलं (पापं) न चिन्तयति) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 12/34

मंजरी (मंजरि / मंजरिआ) mañjarī (mañjari / mañjariā) मञ्जरी/ मञ्जरिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] नवोत्पन्न सुकुमार पल्लवाकार लता, बौर blossom, sprout, shoot, cluster of flowers {म.} परिधूसरा वि सहयारमंजरी वहउ मंजरीणामं। (परिधूसरापि सहकारमञ्जरी वहतु मञ्जरीनाम्) वज्जालग्गं, वसंतवज्जा, पृष्ठ 216/631

मंजूसा (मंजुसा) mañūsā (mañjusā) मञ्जूषा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] संदूक, डब्बा, पेटी, आधार, बड़ी टोकरी, पिटारा,

मजीठ, पत्थर, छोटी संदूक box, case, basket, a small chest (for jewels), etc. {शौ.} (विदूषक-) मुहा दाणिं *मंजूसा* विअ रअणभंडअं जोव्वणगव्वं वहसि। (मुधेदानीं मञ्जूषेव रत्नभाण्डं यौवनगर्वं वाहसि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-7, पृष्ठ 299/4 {शौ.} (उद्यानपालिका-) अम्हो एसो देवीए परिअणब्भंतरो किंपि जदुमुद्दालंछिदं *मंजूसं* गेण्हिअ चदुस्सालादो कुज्जो सारसिओ णिक्कामदि। (अहो एष देव्याः परिजनाभ्यन्तरः किमपि जतुमुद्रालाञ्छितां मञ्जूषां गृहीत्वा चतुशालातः कुब्जः सारसिको निष्क्रामति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., अंक-5, पृष्ठ 310

मंडल maṇḍala मण्डल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मण्डल, समूह, देश, गोल, वृत्ताकार पिण्ड, गोलक, चक्र, गोलाकार वस्तु, परिधि, कोई भी गोल वस्तु, भामण्डल, सूर्य, चन्द्र के इर्द गिर्द पड़ने वाला घेरा, समाज, ऋग्वेद का एक खण्ड division, orb, halo, sky, disc (as of the sun or moon) chamber as of traders board, territory, multitude, etc. {शौ.} जाणान्ति तन्तजुत्तिं जहट्ठिदं *मंडलं* अहिलिहन्ति। (जानन्ति तन्त्रयुक्तिं यथास्थितं मण्डलमभिलिखन्ति) मुद्रा., श्लोक-1, पृष्ठ 20/1

मंडिद maṇḍida मण्डित < विशेषण [Adjective] अलंकृत, भूषित corroborated, supported, decorated, embellished, adorned {शौ.} (चेटी-) अणळंकिदं पि अज्जुअं *मण्डिदं* विअ पेक्खामि। (अनलङ्कृतामप्यज्जुकां मण्डितमिव पश्यामि) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 213

मंत manta मन्त्रय् < क्रिया [सक.] [Verb] मंत्रणा करना, गुप्त परामर्श करा, आमंत्रण या जाप करना to recite prayer on beads, to advice, counsel, invitation and the name of recitation God, etc. {शौ.} (पद्मावती-) मम हिअएण एव्व सह *मंतिदं*। (मम हृदयेनैव सह मन्त्रितम्) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-15/1, पृष्ठ 11

मंतिद mantida मन्त्रित < विशेषण/ भूतकालकि कृन्दन्त [Adjective/ Past Participle] कहा हु आ, बोला हु आ, जिसका परामर्श किया जा चुका है, जिस पर सलाह ली गई, परामर्श लिया गया है, मंत्र पढा हु आ, अभिमंत्रित, निश्चित, निर्धारित chanted, enforced by the power of mantra {शौ.}

(गणिका-) हञ्जे! किं मए *मन्तिदं*। (हञ्जे! किं मया मन्त्रितम्) चारु., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 213

मंतिपद manti-pada मन्त्रिपद< संज्ञा (नपुं.) [Noun] मंत्रिपद अमात्य/ दीवान का ओहदा minister, collocation of a poets works, etc. {शौ.} (समृद्धार्थक-) तहा सव्वलोअपच्चक्खं उज्झिदाहिआरो चिट्ठिअ अज्जचाणक्को किं पुणो वि तं ज्जेव *मंतिपदं* आरूढो। (तथा सर्वलोकप्रत्यक्ष-मुज्झिताधिकारः स्थितवार्यचाणक्यः किं पुनरपि तदेव मन्त्रिपदमारूढः) मुद्रा., श्लोक 3, पृष्ठ 82/6

मंदमेधा manda-medhā मन्दमेध < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मन्दमेधा, मोटी बुद्धि, मोटी समझ वाला dullard, laggard, blockhead, etc. {शौ.} (देवी-) जदा उण *मंदमेधा* सिस्सा उवदेसं मलिणेन्ति तदा आअरिअस्स ण दोसो। (यदा पुनर्मन्दमेधा शिष्या उपदेशं मलिनयन्ति तदाऽऽचार्यस्य न दोषः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-16/1, पृष्ठ 252

मंदर mandara मन्दर < संज्ञा (पुं.) [Noun] मेरु पर्वत, पर्वत विशेष mythic gold mountain, special mountain {म.} खुहिअसमुद्दाहिमुहो महणारम्भम्मि *मंदरो* विअ चलिओ। (क्षुभितसमुद्राभिमुखो मथनारम्भे मन्दर इव चलितः) सेतुबन्धं, गाथा-49/1,पृष्ठ 33

मअ (मय / मिय) maa (maya / miya) मृग < संज्ञा (पुं.) [Noun] मृग, हरिण deer {म.} घाएण *मओ* सद्देण मई चोज्जेण वाहवहु या वि। (घातेन मृगः शब्देन मृगी आश्चर्येण व्याधवधूरपि) वज्जालग्गं, हरिणवज्जा, पृष्ठ 74/219

मअआसील maaā-sīla मृगयाशील < विशेषण [Adjective] शिकार को उद्यत devoted to hunting {शौ.} (विदूषक-) एदस्स *मअआसीलस्स* रण्णो वअस्सभावेण णिव्वण्णिो म्हि। (एतस्य मृगयाशीलस्य राज्ञो वयस्यभावेन निर्विण्णोऽस्मि) अभि. शाकु., पृष्ठ 169/2

मअण maaṇa मदन < संज्ञा (पुं.) [Noun] कामदेव, एक प्रकार का आलिंगन, धतूरे का पौधा, बकुल का वृक्ष, मादक, पागलपन,

मोम Bees wax, cupid, madness, etc. {म.} *मअण*-विणिवेस-दिट्ठं महा-मणीणं व पडिबिंबं। (मदनविनिवेशदृष्टं महा-मणीनामिव प्रतिबिम्बम्) गउडवहो, गाथा-916, पृष्ठ 65

मअणलेह maaṇa-leha मदनलेख < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] प्रेम पत्र, प्रियजन को प्रेमपूर्ण लिखा पत्र, मदन लेख love letter, etc. {शौ.} (प्रियवदा-) हला! *मअणलेहो* से करीअदु।(हला! मदनलेखोऽस्य क्रियताम्) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 11, पृष्ठ 44/3

मअणव्वाहि maaṇa-vvāhi मदनव्याधि< संज्ञा (पुं., स्त्री.) [Noun] प्रेम का रोग, प्रेम होना fiver of love, to affection, etc. {शौ.} (विदूषक-) एसा वि भवं विअ *मअणव्वाहिणा* परिमिट्ठा भविस्सदि। (एषापि भवानिव मदनव्याधिना परिमृष्टा भविष्यति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-8, पृष्ठ 273/3

मअतिलअ maa-tilaa मदतिलक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मदतिलक, कस्तूरी चिन्ह a round shaped mark in musk {म.} बाहु-सिहरेसु दीसइ कामिणि-संकामिएण *मअ-तिलओ*। (बाहु शिखरेषु दृश्यते कामिनी-संक्रामितेन मदतिलकः) गउडवहो, गाथा-249, पृष्ठ 40

मअरहर (मयरहर) maara-hara (mayara-hara) मकरगृह < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] मकरगृह, सागर ocean, etc. {म.} होंति सवाडव-जलण व्व गअण-मग्गे वि *मअरहरा*। (भवन्ति सवाडवज्वलना इव गगनमार्गेऽपि मकरगृहाः) गउडवहो, गाथा-807, पृष्ठ 120

मइ mai मति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मति, बुद्धि, इन्द्रिय और मन से होने वाला ज्ञान intellect, thought, view, opinion, etc. {म.} उवयारे जस्स *मई* उवयरियं जो न पम्हुसइ। (उपकारे यस्य मतिरुपकृतं यो न विस्मरति) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 16/45

मइरा mairā मदिरा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मदिरा, शराब, सुरा wine, liquor, alcohol {म.} *मइरा* मयंककिरणा महु मासो कामिणीण उल्लावो।(मदिरा मृगाङ्ककिरणा

मधुमास: कामिनीना-मुल्लाप:) वज्जालग्गं, अणंगवज्जा, पृष्ठ 134/395

मइविहअ mai-vihaa मतिविभव < विशेषण [Adjective] बुद्धि की शक्ति power of intelligence, etc. {शौ.} (विदूषक-) एत्तिओ एव्व मे *मइविहओ*। (एतावानेव मे मतिविभवः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10, पृष्ठ 162/2

मग्ग magga मार्ग < संज्ञा (पुं.) [Noun] रास्ता, मार्ग a way, road, path {शौ.} (कर्णपूरक-) एदेण ज्जेव *मग्गेण* पवुत्तो गन्तुं गेहं। (एतेनैव मार्गेण प्रवृत्तो गन्तुं गेहम्) मृच्छ., पृष्ठ 144/3

मच्छ maccha मत्स्य < संज्ञा (पुं.) [Noun] मत्स्य, मछली, मीन राशि, देश विशेष fish, pisces, special country, etc. {शौ.} (विदूषक-) भिण्णहत्थे *मच्छे* पलायिदे णिव्विण्णो धीवरो भणादि- गच्छ, धम्मो मे हविस्सदि त्ति। (भिन्नहस्ते मत्स्ये पलायिते निर्विण्णो धीवरो भणति- गच्छ, धर्मो मे भविष्यतीति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13/3, पृष्ठ 187

मच्छंडिआ macchaṇḍiā मत्स्यण्डिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] कच्ची खाड, खण्डशर्करा raw or unrefined sugar, a sort of sugarcane, candied sugar, etc. {शौ.} (विदूषक-) ही ही। वअस्स! एदं क्खु सीहु पाणुव्वेजिदस्स *मच्छंडिआ* उवणदा। (आश्चर्यमाश्चर्यम्। वयस्य! एतत्खलु सीधुपानोद्विजितस्य मत्स्यण्डिकोपनता) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-5, पृष्ठ 272/3

मच्छर macchara मत्सर < संज्ञा (पुं.) [Noun] मत्सर, रूठना, ईर्ष्या, कोप, कृपण jealous, envied, insatriable, greedy, niggardly, self-interested, etc. {शौ.} (चेटी-) जेदु जेदु भट्टिणी! भट्टिणी! देवी भणादि- मे *मच्छरस्स* एसो कालो। (जयतु जयतु भट्टिनी! भट्टिनी! देवी भणति- न मे मत्सरस्येष कालः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15, पृष्ठ 304/4

मज्झ majjha मध्य < संज्ञा (पुं.) [Noun] बीच, मध्य the middle, central {शौ.} (विदूषक-) जहा सव्वणागाणं *मज्झे* डुण्डुहो तधा सव्वबम्हणाणं मज्झे अहं बम्हणो। (यथा सर्वनागानां मध्ये डुण्डुभः तथा

सर्वब्राह्मणानां मध्येऽहं ब्राह्मण:) मृच्छ., पृष्ठ 153/3

मज्झण्ह majjhaṇha मध्याह्न < संज्ञा (पुं.) [Noun] दोपहर midday, noon {मा.} (शकार-) *मज्झण्हे* ण शक्कीअदि पादेहिं गन्तुं। (मध्याह्ने न शक्यते पादाभ्यां गन्तुम्) मृच्छ., पृष्ठ 387/8

मज्झत्थ majjhattha मध्यस्थ < विशेषण [Adjective] मध्यस्थ, तटस्थ, लल्लोचप्पो, अस्पष्टता, बीच में रहा हुआ situated in the middle, medial, intermediary, mediator, etc. {शौ.} (इरावती-) अलं सेवाए। *मज्झत्थदं* परिगहिअ भणाहि। (अलं सेवया। मध्यस्थतां परिगृह्य भण) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 277/3

मट्टिआ (मट्टी) maṭṭiā (maṭṭī) मृत्तिका, मृद् < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मिट्टी clay, earth, soil {शौ.} (रदनिका-) तदो उण तं मग्गन्तस्स मए इअं *मट्टिआ*-सअडिआ कदुअ दिण्णा। (तत: पुनस्तां मार्गयतो मया इयं मृत्तिका-शकटिका कृत्वा दत्ता) मृच्छ., पृष्ठ 319/6

मडमड (मडमडमड) maḍamaḍa (maḍamaḍamaḍa) मडमडाय् < क्रिया [सक., अक.] [Verb] मड मड आवाज होना उस तरह चूर चूर करना, खाना, मारना, मड मड आवाज करना to gulped down the throat, to swallowed {मा.} (शकार-) मा खु कवाडशम्पुडप्पविट्ठं विअ पक्ककवित्थं शीशं दे चुण्णचुण्णं *मडमडाइश्शं* ति। (मा खलु कवाटसम्पुटप्रविष्टमिव पक्ककपित्थं शीर्षं ते चुर्णचुर्णंमडमडायिष्यामि इति) चारु. भासनाटक., गाथा-26/1, पृष्ठ 208

मडय maḍaya मृतक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मृतक, मरा हुआ, मुर्दा dead body, corpse, etc. {म.} पावासियाण *मडयं* छिविऊण अमंगलं होइ। (प्रवासिनां मृतकं स्पृष्ट्वामङ्गलं भवति) वज्जालग्गं, पवसियवज्जा, पृष्ठ 124/367

मडह [देशज] **maḍaha** लघु < विशेषण [Adjective] छोटा, लघु, स्वल्प small, short, little, low {म.} *मडहो* वि मइंदो करिवराण कुंभत्थलं दलइ। (लघुरपि मृगेन्द्र: करिवराणां कुम्भस्थलं दलयति) वज्जालग्गं, सीहवज्जा, पृष्ठ 68/202

मण maṇa मनस् < संज्ञा (नपुं.,पुं.) [Noun] मन, अन्त:करण mind, etc. {शौ.} (विदूषक-) संपदं णअरगमणस्स *मणो* कहं पि ण करेदि। (साम्प्रतं नगरगमनस्य मन: कथमपि न करोति) अभि.शाकु., पृष्ठ 169/2 {म.} (देवी-) ईसीस चंदणरसम्मि *मणं* कुणंति। (ईषदीषच्चन्दनरसे मन: कुर्वन्ति) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 18/14

मणहरण (मणहर) maṇaharaṇa (maṇahara) मनोहरण/ मनोहर < विशेषण [Adjective] मनोहर, सुन्दर glourious, attractive, wonderful, spectacular {शौ.} (विदूषक-) तुम्हाणं क्खु पेम्ममणिम्मलजले मअण-समुद्दे त्थण-णिअम्ब-जहणा-ज्जेव जाणवत्त-*मणहरणा*। (युष्माकं खलु प्रेमनिर्म्मलजले मदनसमुद्रे स्तननितम्ब-जघनान्येव यानपात्राणि मनोहराणि) मृच्छ., पृष्ठ 246/4

मणि mani मणि < संज्ञा (पुं.) [Noun] मणि, मुक्ता आदि रत्न Jewel, gem, etc. {शौ.} (उर्वशी-) किदो अ अअं सावन्तो गोरीचरणराअसंभवं *मणिं* विणा तदो ण मुच्चिस्सदि त्ति। (कृतश्चायं शापान्त: गौरीचरणरागसंभवं मणिं विना ततो न मोक्ष्यत इति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-72/4,पृष्ठ216{म.} वेणीबन्धणमइलं सोअकिलन्तं व से पणामेइ *मणिं* । (वेणीबन्धमलिनं शोकक्लाम्यन्तमिवास्य प्रणमति मणिम्) सेतुबन्धं, गाथा-39/1, पृष्ठ 28

मणिबंध maṇi-bandha मणिबन्ध < संज्ञा (पुं.) [Noun] कलाई, हाथ और प्रकोष्ठ के बीच का अवयव, मणिबन्ध wrist, etc. {शौ.} (प्रथमा-) अम्हहे! रक्खकरण्डअं से *मणिबन्धे* ण दीसदि। (अहो! रक्षाकरण्डकमस्य मणिबन्धे न दृश्यते) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/7, पृष्ठ 126

मणिसिलापट्ट maṇisilā-patta मणिशिलापट्ट < संज्ञा (पुं.) [Noun] रत्नजड़ी पत्थर की चौकी stoolwith precious stone, etc. {शौ.} (विदूषक-) भो एसो क्खु *मणिसिलापट्टअ*सणाहो अदिमुत्तलदामंडवो भमरसंघट्टपडिदेहिं कुसुमेहिं सअं विअ किदोवआरो भवंतं पडिच्छदि। (भोः एष खलु मणिशिला-पट्टकसनाथोऽतिमुक्तलतामण्डपो भ्रमर-संघट्टपतितैः कुसुमैः स्वयमिव कृतोपचारो

भवन्तं प्रतीच्छति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-7/2, पृष्ठ 157

मणुस्स (मणुस) maṇussa (maṇusa) मनुष्य < संज्ञा (पुं., स्त्री.) [Noun] मनुष्य, मानव, मर्त्य man, human being, etc. {शौ.} (सानुमती-) उस्सवप्पिआ क्खु मणुस्सा। (उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः) अभिज्ञानशाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-4/6, पृष्ठ 96

मणोरह maṇoraha मनोरथ < संज्ञा (पुं.) [Noun] मन की अभिलाषा, इच्छा, पक्ष का तृतीय दिवस wish, desire etc. {शौ.} (शकुन्तला-) एसो णूणं तुह अत्तगदो *मणोरहो*। (एष नूनं तवात्मगतो मनोरथः) अभि.शाकु., पृष्ठ 138/1

मणोरहाउत्त maṇorahāutta मनोरथावुत्त< संज्ञा (पुं.) [Adjective] बहिन का पति, जीजा साहब brother in law, husband of elder sister {शौ.} (चेटी-) किं ण सक्कं सोदुं। को अम्हाणं *मणोरहाउत्तो*। (किं न शक्यं श्रोतुम्। कोऽस्माकं मनोरथावुत्तः) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 214

मणोहर mṇohara मनोहर< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] मनोहर, रमणीय, सुन्दर, पक्ष का तृतीय दिवस lovely, charming, alluring, captivating, etc. {शौ.} (कुरङ्गी-) हला! अदिसीदळं मणोहरं च दे सरीरं। (हला! अतिशीतलं मनोहरं च ते शरीरम्) अविमार., भास., गाथा-3/5, पृष्ठ 161

मण्ड (मंड) maṇḍa √ मण्ड < क्रिया [सक.] [Verb] भूषित करना, सजाना, मण्डन करना to decorate, to arrange in order, to beautify {शौ.} (गणिका-) किं अय्यचारुदत्तो *मण्डइस्सिदि*। (किमार्य-चारुदत्तो मण्डयिष्यति) चारु., भासनाटक., अंक-4, पृष्ठ 237

मत्त matta मत्त < विशेषण [Adjective] मत्त, मद युक्त, दारू, नशा intoxicated, drunken, wayward, vagrant, etc. {शौ.} (चाणूर-) एसो म्हि जुद्धसज्जो *मत्तो* हत्थीव दप्पसम्पुण्णो। (एषोऽस्मि युद्धसज्जो मत्तो हस्तीव दर्पसंपूर्णः) बाल., भासनाटक., अंक-5, पृष्ठ 551

मत्थय (मत्थ/मत्थअ) matthaya (mattha / matthaa) मस्तक < संज्ञा (पुं.) [Noun]

सिर, माथा head, the top{शौ.} (विदूषक-) णव-णलिण-कोमलं अञ्जलिं *मत्थए* कदुअ पडिच्छिआ। (नव-नलिन-कोमलमञ्जलिं मस्तके कृत्वा प्रतीष्टा) मृच्छ., पृष्ठ 262/5

मद (मय) mada (maya) मद < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] मद, अभिमान, हाथी के गण्डस्थल से झरता प्रवाही, आमोद, कस्तूरी, मत्तता haughtiness, arrogance, pride, intoxication, passion, fluid of passion from a male elephant's temple, etc. {मा.} (इरावती-) हला! ण मे चलणा अण्णदो पवट्टन्ति। *मदो* मं विआरेदि। आसंकिदस्स दाव अन्तं गमिस्सं। (सखि! न मे चरणावन्यतः प्रवर्तेते। मदो मां विकारयति। आशङ्कितस्य तावदन्तं गमिष्यामि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 278/ 3

मदिविहव madi-vihava मतिविभव< संज्ञा (पुं.) [Noun] मतिविहव, बुद्धि की पहुँच, बुद्धि का वैभव sagacity, intellectual capacity, etc. {शौ.} (विदूषक-) एत्तिओ मे *मदिविहवो* भवन्तं सेविदुं। (एतावान्मे मतिविभवो भवन्तं सेवितुम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10/1, पृष्ठ 263

मद्द (मद्दण) madda (maddaṇa) मर्दन< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] मर्दन, अंग-चम्पी, मालिश, हिंसा करना, मर्दन करने वाला massage, pounding, etc. {म.} इह दिण्ण-भूमि-*मद्दा* परिलूणासण्ण-विडवि-साहग्गा। (इह दत्तभूमिमर्दनाः परिलूनासन्नविटपिशाखाग्राः) गउडवहो, गाथा-548, पृष्ठ 83

मधुर (महुर) madhura (mahura) मधुर< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] मीठा, कोमल sweet, charming, melodious (sound), delicate {मा.} (वसन्तसेना-) चदुरो मधुरो अ अअं उवण्णासो। (चतुरो मधुरश्चायमुपन्यासः) मृच्छ., पृष्ठ 88/1

मन्दभग्ग mandabhagga मन्दभाग्या < संज्ञा/विशेषण [Noun/ Adjective] मंदभाग्या, अभागिनी, कम भाग्यवाली ill luck, misfortune, etc.{शौ.} (मालविया-) सहि! मह उण मन्दभग्गाए सिविणसमाअमो वि भट्टिणो दुल्लहो। (सखि! मम पुनर्मन्दभाग्यायाः स्वप्नसमागमोऽपि भर्तुर्दुलभ आसीत्) मालविका.,कालिदास ग्रन्था., श्लोक-11,पृष्ठ 302/4

मन्दभाअ (मन्दभग्ग / मन्दभाइ) manda-bhāa (manda-bhagga / manda-bhāi) मन्दभाग/ मन्दभाग्य/ मंदभागिन् < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] भाग्यहीन, दुर्भाग्यशाली, कमनसीब unfortunate, ill-fated, miserable {शौ.} (वसन्तसेना-) ता संसइदम्हि मन्दभाआ। (तत् संशयिताऽस्मि मन्दभागा) मृच्छ., पृष्ठ 398/8

मयण mayaṇa मदन < संज्ञा (पुं.) [Noun] मदन, कन्दर्प, कामदेव, प्रेम, प्रणयोन्माद, वसन्तऋतु, मधुमक्खी, भौंरा, मोम, एक प्रकार का आलिंगन, धतूरे का पौधा, वकुलवृक्ष the god of love, intoxicating, delighting, the spring season, a bee, a kind of embrace, the khadera tree, the Bakula tree, etc. {म.} जह जह वड्ढंति थणा वियसइ मयणो सवम्महा दिट्ठी। (यथा यथा वर्धते स्तनौ विकसित: मदन: समन्मथा दृष्टि:) वज्जालग्गं, वाहवज्जा, पृष्ठ 72/209

मर mara √मृ < क्रिया [अक.] [Verb] मरना to die, to expire {म.} अह *मरइ* धुरालग्गो संचुण्णियसंधिबंधणो धवलो। (अथ म्रियते धुरालग्न: संचूर्णितसन्धि-बन्धनो धवल:) वज्जालग्गं, धवलवज्जा, पृष्ठ 62/180

मरण maraṇa मरण < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] मरण, मौत, जीवन का अभाव death, demise, etc. {म.} पत्थररेहव्व समा *मरणे* वि न अन्नहा होइ। (प्रस्तररेखेव समा मरणेऽपि नान्यथा भवति) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 16/46

मरिस marisa √ मृष् < क्रिया [सक.] [Verb] सहन या क्षमा करना to bear, endure, to suffer, etc. {शौ.} (कैकेयी-) जाद! का णाम मादा पुत्तअस्स अवराहं ण *मरिसेदि*। (जात! का नाम माता पुत्रकस्यापराधं न मर्षयति) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-15/6, पृष्ठ 309

मरुवअ maruvaa मरुबक < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] लता विशेष, मरुआ a kind of plant (marjoram) {म.} मउल-णिविडासु इह *मरुवअस्स* मुह-पाडलासु वल्लीसु। (मुकुलनिबिडासु इह मरुबकस्य मुखपाटलासु वल्लीषु) गउडवहो, गाथा-586, पृष्ठ 89

मलअ (मलय) malaa (malaya) मलय< संज्ञा (पुं.) [Noun] पर्वत विशेष, दक्षिण का एक सुगन्धियुक्त पर्वत mountain special, a bounding in sandal trees (poets usually represent the breeze from the Malaya mountain the odour of sandal trees and other plants growing there, which peculiarly affects persons who are smit with love) {म.} सइ दुद्दिणसामलअं पत्ता भग्गधुअचन्दणरसा *मलअं* । (सदा सुर्दिनश्यामलतं प्राप्ता भग्नधुतचन्दनरसा मलयम्) सेतुबन्धं, गाथा-59/1, पृष्ठ 38

मलआणिल malaāṇila मलयानिल < संज्ञा (पुं.) [Noun] मलयाचल से बहता शीलत पवन the wind flowing from the Malaya mountain {म.} (राजा-) प्पउट्टा ज्जेव्व *मलआणिला* । (प्रवृत्ता: एव मलयानिला:) कर्पूर., पृष्ठ 24/1

मलिअ malia मृदित< विशेषण [Adjective] मृदित, जिसका मर्दन किया गया हो वह crushed, etc. {म.} तं चेअ *मलिअ*-बिस-दंड-विरसमालक्खिमो इण्हिं। (तदेव मृदितबिसदण्डविरसमालक्षयाम इदानीम्) गउडवहो, गाथा-188, पृष्ठ 31

मलिण maliṇa मलिन < विशेषण [Adjective] मैला, मल-युक्त dirty, filthy, gloomy {म.} कमलाइ कद्दमे संभवंति न खु हुंति *मलिणाइं*। (कमलानि कर्दमे संभवन्ति न खलु भवन्ति मलिनानि) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 30/86

मसअभीद masa-bhīda मशकभीत< विशेषण [Adjective] मच्छरों से भयभीत afraid of mosquitoes {शौ.} (विदूषक-) एदे दाणि दासीए वुत्ता अत्थवावारा गोवदारआ विअ *मसअभीदा* गिहादो णिग्गच्छन्ति। (एत इदानीं दास्याः पुत्रा अर्थव्यापारा गोपदारका इव मशकभीता गृहाद् निर्गच्छन्ति) चारु., भासनाटक., गाथा-6/1, पृष्ठ 198

मसाण masāṇa श्मशान < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मसान, श्मशान, मरघट funeral ground, etc. {शौ.} (शोधनक-) तं ताइं ज्जेव आहरणाइं गले बन्धिअ डिण्डिमं ताडिअ दक्खिण-*मसाणं* णइअ सूले भज्जेध त्ति। (तं तान्येव आभरणानि गले बद्ध्वा डिण्डिमं ताडयित्वा, दक्षिण-श्मशानं नीत्वा शूले भङ्क्त इति) मृच्छ., पृष्ठ 516/9

महंत (मह) mahanta (maha) महत् < विशेषण [Adjective] महत्, बडा, बृद्ध, विस्तीर्ण, उत्तम, विपुल great, big, large, etc. {शौ.} (उर्वशी-) पिअंवदा *महंतो* क्खु कालो तुए पइट्ठाणदो णिग्गदस्स। (प्रियंवदा महान्खलु कालस्तव प्रतिष्ठानान्निर्गितस्य) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-74/4, पृष्ठ 219

महच्छरिय mahacchariya महाश्चर्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] महत् आश्चर्य, बड़ा आश्चर्य great wonder, big suspense {म.} अपुव्वरसविसेसं जणेइ जं तं *महच्छरियं*। (अपूर्वरसविशेषं जनयति यत्तन्महाश्चर्यम्) वज्जालग्गं, सोयारवज्जा, पृष्ठ 4/7

महण mahaṇa मथन < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] मन्थन करना, विलोडण, विलोना, विक्षुब्ध करना, घिसना, रगड़ना, चोट पहुँचाने वाला, क्षति देने वाला, मारने वाला, नष्ट करने वाला stirring, churning, etc. {म.} *महणम्मि* ससी *महणम्मि,* सुरतरू महणसंभवा लच्छी। (मन्थने शशी मन्थने सुरतरूर्मन्थनसम्भवा लक्ष्मी:) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 12/32

महत्तर mahattara महत्तर < विशेषण [Adjective] महत्तर, बहुत बड़ा, मुखिया, प्रधान, अंतःपुर का रक्षक bigger, greater, better, etc. {म.} (शक्र-) महत्तरं भिक्खं याचेमि। (महत्तरां भिक्षां याचे) कर्णभार., भासनाटक., श्लोक-17/1, पृष्ठ 483

महप्प mahappa महात्मन् < संज्ञा (पुं.) [Noun] महात्मा, महापुरुष a great or eminent man, a holy or pious man, etc. {शौ.} सो सीलो य *महप्पा* भमित्थ गुणवित्थरं भविए। (स: शील: यो महात्मा भ्रमेत् गुणविस्तारे भव्ये) अट्ठपाहुड़ शील पाहुड़ पृष्ठ 396/36

महाणई mahā-ṇaī महानदी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] महानदी, बड़ी नदी a great river, big river {म.} सेलं *महाणईअ* व सिरीअ चिरणिग्गआइ वि अमुच्चन्तं। (शैलं महानद्येव श्रिया चिरनिर्गतयाप्यमुच्य-मानम्) सेतुबन्धं, गाथा-16/2, पृष्ठ 44

महाणस mahāṇasa महानस < संज्ञा (नपुं.) [Noun]रसोई घर, चौका kitchen, casine (French term) {शौ.} (विदूषक-)

विविहसुरहि धूमुग्गारेहि णिच्चं सन्ताविज्जमाणं णीससदि विअ *महाणसं* दुआर-मुहेहिं। (विविध-सुरभि-धूमोद्गारैः नित्यं सन्ताप्यमानं निःश्वसितीव महानसं द्वारमुखैः) मृच्छ., पृष्ठ 236/4

महाणिमित्त mahā-ṇimitta महानिमित्त < संज्ञा (नपुं.) [Noun] महानिमित्त, महान् उद्देश्य/ प्रयोजन, बड़ा निमित्त great motive, big goal, etc. {शौ.} (देवकी-) हद्धि, पुत्तअस्स मे महाणुभावत्तणं सूअइस्सन्दाणि जम्मसमअसमुब्भूदाणि *महाणिमित्ताणि* पच्चक्खीकरअन्ती अवि कंसहदअणि-संसत्तणं चिन्तअन्ती सुट्ठु ण पच्चआमि मन्दभाइणी। (हा धिक्, पुत्रकस्य मे महानुभावत्वं सूचयिष्यन्ति जन्मसमय-समुद्भूतानि महानिमित्तानि प्रत्यक्षीकुर्वत्यपि कंसहतकनृशंसत्वं चिन्तयन्ती सुष्ठु न प्रत्येमि मन्दभागिनी) बाल.,भासनाटक., श्लोक-8/1, पृष्ठ 513

महाणुभाव (महाणुभाअ) mahāṇubhāva (mahāṇubhāa) महानुभाव< विशेषण/संज्ञा [Adjective/Noun] महानुभाव, महाशय, महोदय gentleman, sir, etc. {शौ.} (मदनिका-) ता तस्स ज्जेव *महाणुभावस्स* पडिणिज्जादेहि। (तत् तस्यैव महानुभावस्य प्रतिनिर्यातय) मृच्छ., पृष्ठ 215/4

महापसु mahāpasu महापशु < संज्ञा (पुं.) [Noun] महापशु- मनुष्य great animal-man {म.} विससिज्जंत-*महापसु*-दंसण-संभम-परोप्परारूढा। (विशस्यमान-महापशु-दर्शन-संभ्रमपरस्परारूढाः) गउडवहो, गाथा-319, पृष्ठ 50

महाबलपलक्कम mahābala-palakkama महाबलपराक्रम < विशेषण [Adjective] महान बल पराक्रम से युक्त, अत्यअधिक पराक्रम वाला big vigour, too much bravery {मा.} (वृद्धगोपालक-) तदो गोवजणेहि उत्तं- *महाबलपलक्कमो* अज्जप्पहु दि भट्टिदामोदळो णाम होदु त्ति। (ततो गोपजनैरुक्तं-महाबलपराक्रमोऽद्यप्रभृति भर्तृदामोदरो नाम भवतु इति) बाल., भासनाटक.,अंक-3,पृष्ठ 536

महाराअ mahārāa महाराज < संज्ञा (पुं.) [Noun] महाराज a great king, a respectful mode of addressing kings or other great personages, emperor {शौ.} (प्रियंवदा-) अहवा *महाराएण,* गच्छ दाणिं।

(अथवा महाराजेन, गच्छेदानीम्) अभि. शाकु., पृष्ठ 159/1

महि (मही) mahi (mahī) मही संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मही, पृथिवी, धरती, एक नदी, छन्द विशेष the earth, a river, etc. {म.} वेलालिङ्गनमुक्कं छिविओसरिएहि वेलवन्तं व *महिं*। (वेलालिङ्गनमुक्तां स्पृष्टापसृतकैर्वेपयन्तमिव (पक्षे-व्याकुलन्तमिव) महीम्) सेतुबन्धं, गाथा-8/2, पृष्ठ 45

महिंद mahinda महेन्द्र < संज्ञा (पुं.) [Noun] महेन्द्र, इंद्र राजा an epithet of Indra, the king of Gods {शौ.} (पेलव-) महिंदेण उण अणुगहीदा। (महेन्द्रेण पुनरनुगृहीता) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-3, पृष्ठ 175

महिमंडल mahi-maṇḍala महीमण्डल< संज्ञा (नपुं.) [Noun] महीमण्डल, भूमण्डल the earth, soil {म.} फणसेण समं *महिमंडलम्मि* का तरुवराण समसीसी। (पनसेन समं महीमण्डले का तरुवराणां समशीर्षिका) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 54/156

महिला mahilā महिला < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] महिला, औरत, स्त्री lady {म.} (पारिपार्श्वकि-) पुरिस *महिलाणँ* जेत्तिअमिहंतरं तेत्तिअमिमाणं। (पुरुष-महिलानां यावदिहान्तरं तावत् तासाम्) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 11/8 {म.} अहवा *महिलाण* चिरं हियए को नाम संठाइ। (अथवा महिलानां चिरं हृदये को नाम संतिष्ठति) वज्जालग्गं, थणवज्जा, पृष्ठ 106

महिहर mahi-hara महीधर संज्ञा (पुं.) [Noun] पर्वत, महीधर, राजा mountain, hill, king, etc. {म.} किंणरमहु रुग्गी-अमणोहरु देक्खावहि महु पिअअम महिहरु। (किंनरमधुरोद्गीतमनोहर दर्शय मम प्रियतमां महीधर) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-50/4, पृष्ठ 209

महुअर mahuara मधुकर < संज्ञा (पुं.) [Noun] भौंरा, भ्रमर, मधुकर a large black bee {शौ.} (शकुन्तला-) सलिलसे-असंभमुग्गदो णोमालिअं उज्झिअ वअणं मे *महुअरो* अहिवट्टइ। (सलिलसेक-संभ्रमोद्गतो नवमालिका-मुज्झित्वा वदनं मे मधुकरोऽभिवर्तते) अभि.शाकु., पृष्ठ 140/1 {शौ.} (विदूषक-) *महुअस*विरुअ-महु रं

वज्जदि वंसो। (मधुकर-विरुत-मधुरं वाद्यते वंश:) मृच्छ., पृष्ठ 234/4

महुमह mahumaha मधुमथ < संज्ञा (पुं.) [Noun] विष्णु, वासुदेव, उपेन्द्र epithets of viṣṇu, etc. {म.} विहिविहियं चिय लब्भइ अमयं देवाण *महुमहे* लच्छी। (विधिविहितमेव लभ्यतेऽमृतं देवानां मधुमथने लक्ष्मी:) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 46/132

महुमहण mahu-mahaṇa मधुमथन < संज्ञा (पुं.) [Noun] विष्णु, समुद्र, सेतु Vishnu, ocean, bridge {म.} अप्पलहु अपरिसण्हं अणाअपरमत्थपाअडं *महुमहणं*(अल्पलघुकपरिक्षक्ष्णमज्ञातपरमार्थप्रकटं मधुमथनम्) सेतुबन्धं, गाथा-1/1, पृष्ठ 1

महुमास mahu-māsa मधुमास < संज्ञा (पुं.) [Noun] चैत मास, मधुमास Chaitra, madhumāsa, the first month of Hindi calendar year (March-April) {म.} पउरजुवाणो गामो *महुमासो* जोव्वणं पई थेरो। (प्रचुरयुवको ग्रामो मधुमासो यौवनं पति: स्थविर:) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 160/476

महुर mahura मधुर < विशेषण [Adjective] मधुर, मीठा, कोमल sweet, pleasant melodious, mellifluence, soft {शौ.} (गणिका-) *महुरं* खु इच्छिदव्वं। (मधुरं खल्वेष्टव्यम्) चारु., भासनाटक., गाथा-28/1, पृष्ठ 211

महुरदा mahuradā मधुरता < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] मधुरता, माधुर्य, सुहावनापन, रोचकता sweetness, melodiousness, mellifluence, softness, etc. {शौ.} (विदूषक-) पेक्खदु भवं। ण क्खु से पडिच्छन्दादो परिहीअदि *महुरदा* (पश्यतु भवान्। न खल्वस्याः प्रतिच्छन्दात्परिहीयते मधुरता) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2/2, पृष्ठ 259

महुराउरी mahurāurī मथुरापुरी संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मथुरापुरी, भारत की एक नगरी Mathurāpurī, historical city in India {म.} धवलं धवलच्छीए महुरं महुराउरीइ मज्झम्मि। (धवलं धवलाक्ष्या मधुरं मथुरापुर्या मध्ये) वज्जालग्गं, कण्हवज्जा, पृष्ठ 204/597

महुवासर mahu-vāsara मधुवासर < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] वसन्त के दिन

the day or season of spring, etc. {म.} *महु वासरे* कीलंती धणिआ ण दिट्ठी पइं। (मधुवासरे क्रीडन्ती धन्या न दृष्टा त्वया) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-36/4, पृष्ठ 205

महेसी (महेरिसी) mahesī (maherisī) महर्षि < संज्ञा (पुं.) [Noun] महर्षि, महामुनि great sage or seer, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) एसो दुव्वासो सुलहकोवो *महेसी* तह सविअ वेअबलुप्फुल्लाए दुव्वाराए गईए पडिणिवुत्तो। (एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिस्तथा शपत्वा वेगबलोत्फुल्लया दुर्वारया गत्या प्रतिनिवृत्तः) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., पृष्ठ 54/4

माअही māahī मागधी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मागधी प्राकृत, काव्य की एक रीति, मगध देश की भाषा, भ. बुद्ध के उपदेशों की भाषा Māgadhī Prakrit, a type of rhetorics, language of Magadh, etc. {म.} वच्छोमी तह *माअही* फुरउ णो सा किं च पंचालिआ। (वात्सगुल्मी [वैदर्भी] तथा मागधी स्फुरतु नः सा किञ्च पाञ्चालिका) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 1/1

माइ (माआ / मादर / माआरा / माउ / मादु) māi (māā / mādara / māārā / māu / mādū) माता (मातृ) < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] माता, जननी, देवी, देवता, नारी, माया, लक्ष्मी, विभूति, भूमि mother as a term of respect or endearment, progenitor goddess, godly women, deity women, illusion, Laxmi, etc. {म.} कंपंति वलंति समूससंति ओ *माइ* सिमिसिमायंति। (कम्पन्ते वलन्ते समुच्छ्वसन्त्यहो मातः सिमिसिमायन्ते) वज्जालग्गं, पियाणुराय-वज्जा, पृष्ठ 136/405

माउवच्छल māu-vacchala मातृवत्सल< विशेषण [Adjective] माता स्नेही, माँ का मोह, मातृ वत्सल motherly, mother's love, etc. {शौ.} (उभे-) णामसारिस्सेण वंचिदो *माउवच्छलो*। (नाम सादृश्येन वञ्चितो मातृवत्सलः) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/7, पृष्ठ 126

माण māṇa मान < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] मान, अहंकार, सम्मान, माप, परिमाण pride, prestige, arrogance, regard, etc. {म.} (वैतालिक-) *माणं* दो खण्डअन्ता रइरहसअरा चोलसीमन्तणिणं। (मानं द्विः खण्डयन्तो रतिरभसकरा

चोलसीमन्तनीनाम्) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 20/15

माणस māṇasa मानस < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] सरोवर विशेष, मानस, मन, मन का Mānas sarovar, special pond, mind, psyche, heart {म.} नवणलिणमुणालुल्लोलमालियं हंस *माणसं* मोत्तुं। (नवनलिनमृणालोल्लोलमालितं हंस मानसं मुक्त्वा) वज्जालग्गं, हंसवज्जा, पृष्ठ 88/261

माणि māṇi मानिन् < विशेषण [Adjective] स्वाभिमानी, मानवाला self-respecting {म.} जे जे गुणिणो जे जे वि *माणिणो* जे वियड्ढसंमाणा। (ये ये गुणिनो ये येऽपि मानिनो ये विदग्धसम्माना:) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा, पृष्ठ 48/140

माणिणी māṇiṇī मानिनी < विशेषण [Adjective] मान वाली, अहंकार वाली arrogant, self respecting woman {म.} *माणिणि* दो वि गइंदा एक्कक्खंभे न बज्झंति। (मानिनि द्वावपि गजेन्द्रावेक-स्तम्भे न बध्येते) वज्जालग्गं, माणवज्जा, पृष्ठ 120/355

माणिणीअ māṇiṇīa माननीय < विशेषण [Adjective] माननीय, पूज्यनीय, मान वाला honorable, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) ण *माणणीएसु* अत्ताणं अवराहइस्सं। (न माननीयेष्वात्मानमपराधयिष्ये) अभि. शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 18, पृष्ठ 48/3

माणुस māṇusa मानुष < संज्ञा (पुं.) [Noun] मनुष्य, मानव, आदमी, कथा का एक प्रकार man, human, etc. {म.} तं जहा-दिव्वं, दिव्वमाणुसं, *माणुसं* च। (तद्यथा-दिव्यं, दिव्यमानुषं, मानुषं च) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 3

माणुस्स māṇussa मानुष्य < विशेषण [Adjective] मनुष्य जैसा आचरण, मानुषी स्त्री, मनुष्य से सम्बन्ध रखने वाली humanlike, befitting to human being, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) किं उण *माणुस्सअं* विडंबीअदि। (किं पुनर्मानुष्यं विडम्ब्यते) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 161

मादा mādā माता (मातृ) < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] माता, जननी, देवी, देवता, नारी,

माया, लक्ष्मी, विभूति, भूमि mother as a term of respect or endearment, progenitor goddess, godly women, deity women, illusion, Laxmi, etc. {मा.} (संवाहक-) कुदो मे मादा? (कुतो मे माता ?) मृच्छ., पृष्ठ 112/2

मादुळ (मादुल / माउल) māduḷa (mādula / māula) मातुल < संज्ञा (पुं.) [Noun] मामा, मातुल, धतूरे का पौधा, एक प्रकार का सांप maternal uncle, mother's brother, etc. {मा.} (दामक-) भोदु, इह चिट्ठदु गोधणं, जाव *मादुळं* उवषप्पिष्षं। *मादुळ*! वन्दामि। (भवतु, इह तिष्ठतु गोधनं यावन्मादुलमुपसप्स्यामि। मातुल! वन्दे) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 534

मादुळकुळ māduḷa-kuḷa मातुलकुल संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] माता का वंश, माता सम्बन्धी कुल, मामा का घर a maternal uncle's family, maternal uncle home, etc. {शौ.} (कैकयी-) जाद! *मादुळकुळे* वत्तमाणस्स पइदीहू दो दे विप्पवासो। (जात! मातुलकुले वर्तमानस्य प्रकृतीभूतस्ते विप्रवासः) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-15/6, पृष्ठ 309

मारुअतणय mārua-taṇaya मारुततनय< संज्ञा (पुं.) [Noun] हनूमान, वायु पुत्र Hanuman, one of the mightiest generals of Rama {म.} पेच्छइ *मारुअतणअं* मणोरहं चेअ चिन्तिअसुहोवणअं। (प्रेक्षते मारुततनयं मनोरथमेव चिन्तित-सुखोपनतम्) सेतुबन्धं, गाथा-36/1, पृष्ठ 25

मारुइ mārui मारुति < संज्ञा (पुं.) [Noun] हनूमान Hanuman {म.} पढमं विअ *मारुइणा* हरिसमरिज्जन्तलोअणेण मुहेण। (प्रथममेव मारुतिना हर्षम्रियमाणलोचनेन मुखेन) सेतुबन्धं, गाथा-37/1, पृष्ठ 26

मालई mālaī मालती < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मालती पुष्प, लता विशेष a kind of creeper which yields fragrant flowers {म.} उअ सहइ थरहरंती वि दुब्बला *मालइ* च्चेव। (पश्य सहते कम्पमानापि दुर्बला मालत्येव) वज्जालग्गं, मालईवज्जा, पृष्ठ 80/234

मालूर mālūra मालूर < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] बिल्व वृक्ष, बेल का गाछ, बेल का फल Bilva tree, etc. {म.} *मालूर*-पत्त-माला-कंटअ-कअ-सोणिअ व्व आहासि।

(मालूरपत्रमालाकण्टककृतशोणिते वाभासि) गउडवहो, गाथा-304, पृष्ठ 48

मासिअ māsia मासिक < विशेषण [Adjective] महीने-महीने, मासिक, मांस सम्बन्धी monthly, per mensem, menstruation, monthly journal, etc. {शौ.} (सारसिक-) महु अरिए! विज्जाभरिआणं ब्रह्मणाणं णिच्चदक्खिणं *मासिइं* पुरोहिदस्स हत्थं पावइस्सं। (मधुकरिके! विद्याभरितानां ब्राह्मणानां नित्यदक्षिणां मासिकीं पुरोहितस्य हस्तं प्रापयिष्यामि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., अंक-5, पृष्ठ 311

माहव māhava माधव < संज्ञा (पुं.) [Noun] वसन्तऋतु, श्रीकृष्ण, नारायण, वैशाख मास the spring season, Krishna, etc. {म.} जिअ-लक्खो मा इर *माहवम्मि* कुसुमाउहो होउ। (जितलक्ष्यो मा किल माधवे कुसुमायुधो भवतु) गउडवहो, गाथा-603, पृष्ठ 91

मिअंक mianka मृगाङ्क < संज्ञा (पुं.) [Noun] चाँद, चन्द्र विमान, इक्ष्वाकुवंश का राजा the moon, etc. {मा.} (संवाहक-) के दाणि तश्श भूदल-*मिअंकस्स* णामं ण जाणादि। (क इदानीं तस्य भूतलमृगाङ्कस्य नाम न जानाति) मृच्छ., पृष्ठ 129/2

मिअंग (मयंग) mianga (mayanga) मृदङ्ग < संज्ञा (पुं.) [Noun] मृदङ्ग, वाद्य विशेष a kind of drum, a musical instrument {शौ.} (सूत्रधार-) इमे तिण्णि *मिअंगा* सज्जीअंति। (इमे त्रयो मृदङ्गाः सज्ज्यन्ते) कर्पूर., पृष्ठ 7/1

मिअक्खि miakkhi मृगाक्षिन् < विशेषण [Adjective] मृगाक्षि, हरिण के समान नेत्र वाली doe-eyed {मा.} (वृद्धगोपालक-) अम्हाणं गोवकण्णआओ। घोषसुन्दळि! वणमाळे! चन्दळेहे! *मिअक्खि* ! आअच्छह आअच्छह षिग्धं। (अस्माकं गोपकन्यकाः। घोषसुन्दरि! वनमाले! चन्द्रलेखे! मृगाक्षि! आगच्छतागच्छत शीघ्रम्) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 538

मिअतिण्हिआ (मिअतण्हा) mia-tinhia (mia-tanhā) मृगतृष्णिका< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मृगतृष्णा, भ्रम mirage, delusion, etc. {शौ.} (विदूषक-) णिउणए! विण्णावेहि मम वअणेण कासिराअदुहिदरं परिस्सन्तम्हि इमाए *मिअतिण्हिआए*

वअस्सं णिअत्तावेदुम्। (निपुणिके! विज्ञापय मम वचनेन काशिराजदुहितरम्परिश्रान्तो sस्मयेतस्या मृगतृष्णिकाया वयस्यं निवर्तयितुम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2,पृष्ठ

मिअपोद (मिअपोअ) mia-poda (mia-poa) मृगपोत < संज्ञा (पुं.) [Noun] मृगछौना, मृग शिशु, हिरण का बच्चा young one of a deer, fawn, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) अणसूए! जह एसो इदो दिण्णदिट्ठी उस्सुओ *मिअपोदओ* मादरं अण्णेसदि। (अनसूये! यथैव इतो दत्तदृष्टिरुत्सुको मृगपोतको मातरमन्विष्यति) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 18, पृष्ठ 48/3

मिअलंछन mia-lañchana मृगलाञ्छन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] चन्द्रमा, मृग का चिह्न है ऐसा गृह विशेष, मृग के चित्त वाला the moon, etc. {शौ.} (देवी-) हंजे णिउणिए! एसो रोहिणीसंजोएण अहिअं सोहदि भअवं *मिअलंछणो*। (हिञ्जे निपुणिके! एष रोहिणी संयोगेनाधिकं भगवान् शोभते मृगलाञ्छन:) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-11/3, पृष्ठ 183

मिच्छा micchā मिथ्या< अव्यय [Indeclinable] झूठ, धोखे से, गलत तरीके से, अशुद्धता के साथ, असत्य, काल्पनिक, मायामय, अवास्तविक falsely, deceitfully, wrongly, incorrectly, etc. {शौ.} (माथुर-) अहं पि णाम माथुरु धुत्तु जूदं *मिच्छा* आदंसआमि। (अहमपि नाम माथुरो धूर्त: द्यूतं मिथ्या आदर्शयामि) मृच्छ., पृष्ठ 120/2

मित्त mitta मित्र < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] मित्र, सखा, दोस्त, सूर्य, अनुराधा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव, अहोरात्र का मुहूर्त friend, ally, etc. {म.} तं *मित्तं* कायव्वं जं किर वसणम्मि देसकालम्मि। (तन्मित्रं कर्तव्यं यत् किल व्यसने देशकाले) वज्जालग्गं, मित्तवज्जा, पृष्ठ 24/68

मित्ति mitti मैत्री < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मैत्री, दोस्ती, सहभाव friendship, cordiality, alliance, etc. {म.} विज्जुप्फुरियं रोसो *मित्ती* पाहाणरेह व्व। (विद्युत्स्फुरितं रोषो मैत्री पाषाणरेखेव) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 14/42

मित्तिआमोरअ mittiā-mora मृत्तिकामयूर< संज्ञा (पुं.) [Noun] मिट्टी का मोर soil

Peacock, clay Peacock {शौ.} (द्वितीया-) वच्छ! इमस्स *मितिआमोरअस्स* रम्मत्तणं देक्खति भणिदो सि। (वत्स! अस्य मृत्तिकामयूरस्य रम्यत्वं पश्यति भणितोऽसि) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-20/7, पृष्ठ 126

मित्तुमण्डण mittu-maṇḍaṇa मृत्युमण्डन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] मृत्युमण्डन, अन्तिम श्रृंगार death sentence, last elegant make-up, etc. (मालविका-) अहवा एदं एव्व मे *मित्तुमण्डणं*भविस्सदि। (अथवा एतदेव मे मृत्युमण्डनं भविष्यति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10, पृष्ठ 275/3

मिलाण milāṇa म्लान < विशेषण [Adjective] म्लान, निस्तेज, गंदा withered faded languid, gloomy, etc. {शौ.} (समाहितिका-) मालविआ वि इमेसु दिअसेसु अणुहूदमुत्ता विअ मालदीमाला *मिलाणा* लक्खीअदि। (मालविकाप्येषु दिवसेष्वनुभूतमुक्तेव मालतीमाला म्लाना लक्ष्यते) मालविका., कालिदास, ग्रन्था., अंक-3, पृष्ठ 268

मिहुण mihuṇa मिथुन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मिथुन, स्त्री-पुरुष का युग्म, राशि का तीसरा चिन्ह couple, mating, Gemini the 3rd sign in zodiac, etc. {म.} (देवी-) पाअंतपुंजिअपडं *मिहुणाइ* पेच्छ। (पादान्तपुञ्जितपटं मिथुनानि प्रेक्षस्व) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 18/14

मीण mīṇa मीन < संज्ञा (पुं.) [Noun] मछली, मीन, राशि विशेष fish, twelfth sign of the Zodiac, etc. {शौ.} (विदूषक-) केवलं अणिमिसेहि णअणेहिं *मीणा* विडंबीअंदिति। (केवलमनिमिषैर्नयनैर्मीना विडम्ब्यन्ते इति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17/3, पृष्ठ 190

मुंड muṇḍa मुण्ड < संज्ञा/ विशेषण [Noun / Adjective] मुण्ड, सिर, दीक्षित head, skull, etc. {मा.} (क्षपणक-) शावगा मुण्डं मुण्डाविअ णक्खत्ताणि पुच्छसि। (श्रावक मुण्ड मुण्डयित्वा नक्षत्राणि पृच्छसि) मुद्रा., श्लोक 2, पृष्ठ 64/5

मुउल (मउल) muula (maula) मुकुल < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] कली, कलिका, थोड़ी विकसित कली, बौर, देह, आत्मा a bud, anything like a bud, the soul or spirit, bud like junction of the fingers, etc. {शौ.} (नेपथ्य-) अच्चरिअं अच्चरिअं।

अपुण्णे एव्व पंचरत्ते दोहलस्स *मुउलेहिं* संणद्धो तवणीआसोओ जाव देवीए णिवेदेमि। (आश्चर्यमाश्चर्यम्। अपूर्ण एव पञ्चरात्रे दोहदस्य मुकुलैः संनद्धस्तपनीयशोकः यावद्देव्यै निवेदयामि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17/4,पृष्ठ

मुक्क (मुत्त) mukka (mutta) मुक्त < विशेषण [Adjective] आजाद, बन्धन रहित, मोक्षप्राप्त independent, liberated, free from the bondage of Karma, etc. {शौ.} (विदूषक-) संगच्छेहि णिअडाइं, एसो वि *मुक्को,* सम्पदं अम्हे वच्चिस्सामो। (सङ्गच्छ निगडानि, एषोऽपि मुक्तः, साम्प्रतं वयं व्रजिष्यामः) मृच्छ., पृष्ठ 366/7

मुक्करोस mukka-rosa मुक्तरोष< विशेषण [Adjective] मुक्तरोष, क्रोध रहित, गुस्सा छोड़ना, मान छोड़कर free of anger, anger less, etc. {शौ.} (विदूषक-) भो! ण जाणामि सोत्थिवाअणं मे देइ त्ति आदु वदव्ववदेसेण *मुक्करोसा* भवदो पणिपादलंघणं पमज्जिदुकाम त्ति। (भोः! न जानामि स्वस्तिवाचनं मे ददातीति अथवा व्रतव्यपदेशेन मुक्तरोषा भवतः प्रणिपातलङ्घनं प्रमार्ष्टुकामेति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-11/3, पृष्ठ 183

मुक्ख (मुरुक्ख) mukkha (murukkha) मूर्ख < विशेषण [Adjective] अज्ञानी, बेवकूफ, मूर्ख stupid, dull-headed, foolish, silly, etc. {शौ.} (विदूषक-) *मुक्ख!* वसन्ते। (मूर्ख! वसन्ते) मृच्छ., पृष्ठ 271/5

मुट्ठि muṭṭhi मुष्टि < संज्ञा (पुं. स्त्री.) [Noun] मुष्टि, मुक्का fist, etc. {म.} कुंठि व्व पउरकुडिला वेसा *मुट्ठीइ* संवहइ। (संदंशिकेव प्रचुरकुटिला वेश्या मुष्ट्या संवहति) वज्जालग्गं, वेसावज्जा, पृष्ठ 192/562

मुट्ठिप्पहार muṭṭhi-ppahāra मुष्टिप्रहार< संज्ञा (पुं.) [Noun] मुट्ठी से प्रहार करना, मुट्ठी द्वारा ताडित to knock out with fist, etc. {मा.} (वृद्धगोपालक-) तदो षड्कळिषणं कण्ठे णिक्खिविअ गच्छंत तं विजाणिअ भट्टिणा षड्कळिषणेण तष्ष दाणवष्ष षीषे *मुट्ठिप्पहारो* किदो। (ततः संकर्षणं कण्ठे निक्षिप्य गच्छन्तं तं विज्ञाय भर्त्रा संकर्षणेन तस्य दानवस्य शीर्षे मुष्टिप्रहारः कृतः) बाल., भासनाटक., अंक-3

मुणाल muṇāla मृणाल < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] मृणाल, कमल की तन्तुमय जड़, पद्मकन्द के ऊपर की लता, पद्मनाल stalk of the lotus plant, etc. {म.} जं करिणिकरग्गुम्मूलिएण पहओ *मुणालेण*। (यत् करिणोकराग्रोन्मूलितेन प्रहतो मृणालेन) वज्जालग्गं, गयवज्जा, पृष्ठ 64/191

मुणिअ muṇia मुणित/ ज्ञात < विशेषण [Adjective] ज्ञात, जाना हुआ known {शौ.} (विदूषक-) ण केवलं सुळोआ एव, तेसं अत्थो वि *मुणिओ*। (न केवलं श्लोका एव तेषामर्थोऽपि ज्ञातः) अविमार., भास., गाथा-5/2, पृष्ठ 119

मुणिचरिय muṇi-cariya मुनिचरित < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मुनियों का आचरण asceticism {म.} *मुणिचरियं* दुग्गयसेवयाण धम्मो परं नत्थि। (मुनिचरितं दुर्गतसेवकानां धर्मः परं नास्ति) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 52/152

मुणिसंघ muṇi-saṅgha मुनिसंघ < संज्ञा (पुं.) [Noun] मुनियों का संघ, मुनिजनों का समूह sage group, ascetic community {शौ.} (सर्वा-) भट्टा! एदाणि *मुणिसंघहि* अणवइदपुव्वाणि पुप्फाणि पळामिट्ठाणि चन्दादिच्चकिरणेहि । अपरिमद्दिदाणि भाआमो भट्टा। (भर्तः! एतानि मुनिसङ्घैरनवचितपूर्वाणि पुष्पाणि परामृष्टानि चन्द्रादित्यकिरणैर-परिमर्दितानि। बिभीमो भर्तः!) बाल., भासनाटक., श्लोक-12/4

मुत्त (मुक्क) mutta (mukka) मुक्त < विशेषण [Adjective] मुक्त, त्यक्त, मोक्षप्राप्त freed, liberated, released, emancipated, unfettered, free, independent, open, etc.{शौ.} (मालविका-) एदं दाव बहु मणिदव्वं जं जीविदसंसआदो *मुत्तो*। (एतत्तावद्बहु-मन्तव्यम् यज्जीवित-संशयान्मुक्तः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-13/5, पृष्ठ 323

मुत्तावली (मुत्तावली) muttavalī (muttāvalī) मुक्तावली < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मुक्तावली, मोती की माला a string of pearls, collection of poetic gems {मा.} (ब्राह्मणी-) मम ञ्ञादिकुळादो ळद्धा सदसहस्समुळळा मुत्तावळी। (मम ज्ञातिकुलाद् लब्धा शतसहस्रमूल्या मुक्तावली) चारु., भासनाटक., गाथा-15/3, पृष्ठ 233

मुत्था muttha मुस्त < संज्ञा (त्रिलिंगी) [Noun] नागरमोथा (तृण विशेष), मोथा a kind of grass, etc. {म.} संपीड-विरस-दीहरिअ-तलिण-*मुत्थाओ* भूमीओ। (संपीडनविरसदीर्घीकृत तलिनमुस्ता भूमयः) गउडवहो, गाथा-557, पृष्ठ 84

मुदङ्गसद्द mudaṅga-sadda मृदङ्गशब्द< संज्ञा (नपुं.) [Noun] मृदंग की धमक, मृदंग का शब्द sound of drum (instrument), etc. {शौ.} (विदूषक-) अहवा *मुदङ्गसद्दो* एव्व णो उत्थावइस्सदि। (अथवा मृदङ्गशब्द एव न उत्थापयिष्यति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19/1, पृष्ठ 255

मुद्दिद muddida मुद्रित < विशेषण [Adjective] मुद्रित, मोहर लगा हुआ, चिन्हित, अंकित, मुद्रांकित, बंद किया हुआ, मुहर बंद, अनखिला printed, stamped, sealed, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) अज्ज अअं मुद्दिदो लेहो। (आर्य अयं मुद्रितो लेखः) मुद्रा., श्लोक-20/1,पृष्ठ 12

मुद्ध muddha मुग्ध < विशेषण [Adjective] मुग्ध, मोहित, जडीभूत चित्त, नाट्यशास्त्र में नायक की एक कोटि, मूढ़ lovely, perplexed, foolish, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) जाद! *मुद्धेण* मुहेण अदिकरुणं मंतेसि। (जात! मुग्धेन मुखेन अतिकरुणं मन्त्रयसि) मृच्छ., पृष्ठ-321/6

मुद्धा muddhā मुग्धा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मुग्धा, नायिका का एक भेद, काम-चेष्टा-रहित यौवना an artless and immature young girl, etc. {म.} न कहइ कुडुंबविहडणभएण तणुयायए *मुद्धा।* (न कथयति कुटुम्बविघटनभयेन तनूभवति मुग्धा) वज्जालग्गं, सईवज्जा, पृष्ठ 156/465

मुय (मुअ) muya (mua) मृत < विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] मरा हुआ, मृत्यु को प्राप्त, मृतक जैसा, व्यर्थ, निष्फल, भस्म किया हुआ dead, deceased, useless, inefficacious, reduced, etc. {म.} तण्हासुसियसरीरे *मुयम्मि* वप्पीहयकुडुंबे। (तृष्णाशोषितशरीरे मृते चातककुटुम्बे) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 54/157

मुरउ (मुरअ / मुरय / मुरव) murau (muraa / muraya / murava) मुरज

(मृदङ्ग) < संज्ञा (पुं.) [Noun] एक प्रकार का ढोल या मृदंग a musical instrument {म.} *मुरउ* व्व खलो जिण्णम्मि भोयणे विरसमारसइ। (मुरज इव खलो जीर्णे भोजने विरसमारसति) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 18/52

मुल्ल mulla मूल्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मूल्य, कीमत cost, value {शौ.} (चेटी-) एसा क्खु अज्जुआ एव्वं पुच्छिदुं आअदा-कित्तिअं ताए रअणावलीए *मुल्लं* ति। (एषा खलु आर्या एवं प्रष्टुमागता-कियत्तस्या रत्नावल्यां मूल्यम् इति) मृच्छ., पृष्ठ 300/5

मुळ्ळभूद (मुल्लभूद) muḷḷa-bhūda (mulla-bhūda) मूल्यभूत < विशेषण [Adjective] मूल्य में ही, मूल्यभूत में in price, incost original value {शौ.} (विदूषक-) तदो तस्स अलङ्कारस्स *मुळ्ळभूदं* इमं मुत्तावलिं पडिच्छदु भोदी। (ततस्तस्यालङ्कारस्य मूल्यभूतामिमां मुक्तावलीं प्रतीच्छतु भवती) चारु., भासनाटक., गाथा-5/4, पृष्ठ 244

मुसिद musida मुषित < विशेषण/ भूतकालिक कृदन्त [Adjective/ Past Participle] बर्बाद, धोखा दिया गया, लूटा गया, चोरी किया गया, अपहृत, अपहरण किया गया, छीन कर ले जाया गया, वंचित, मुक्त, ठगा गया deprived of cheated, deceived, etc. {शौ.} (विदूषक-) अविहा णिव्वाविदो दीवो दाणिं। *मुसिदो* म्हि। (अविहा निर्वापितो दीप इदानीम्। मुषितोऽस्मि) चारु., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 230

मुह muha मुख< संज्ञा (नपुं.) [Noun] मुख, चेहरा, मुखमण्डल, अग्रभाग, मुख्य, प्रधान mouth, face, front, facade, etc. {म.} अत्थस्स कारणेणं चुंबंति *मुहाइ* वंकविरसाइं। (अर्थस्य कारणेन चुम्बन्ति मुखानि वक्त्रविरसानी) वज्जालग्गं, वेसावज्जा, पृष्ठ 196/572

मुहकमल muha-kamala मुखकमल< संज्ञा (पु. नपुं.) [Noun] मुखकमल, कमल के समान मुख lotus-like face, pretty face, etc. {शौ.} (विदूषक-) जइ भोदीए मुहकमलं पेक्खिस्सदि तदो णिअत्तिस्सदि त्ति। (यदि भवत्या मुखकमलं प्रेक्षिष्यते ततो निवर्तिष्यति इति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक-2, पृष्ठ 153

मुहणिग्गह muha-ṇiggaha मुखनिग्रह < संज्ञा (पुं.) [Noun] मुँह बन्द होना, मुख बांधना close mouthed, to silence, silent, etc. {शौ.} (विदूषक-) भो गणदास! संगीतपदं लम्भिअ सरस्सईए उवाअणमोदआणं खादमाणस्स किं देव *मुहणिग्गहेण* विवादेण। (भो गणदास! संगीतपदं लब्ध्वा सरस्वत्या उपायनमोदकान् खादतः किं ते मुखनिग्रहेण विवादेन) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-16/1, पृष्ठ 253

मुहरसिय (मुहरसिअ) muharasiya (muharasia) मुखरसिक < विशेषण [Adjective] मुख को सुख देने वाला, मुख में स्वाद उत्पन्न करने वाला lovely face, gestation facial attraction, tasty, etc. {म.} वण्णड्ढा *मुहरसिया* नेहविहूणा वि लग्गए कंठं। (वर्णाढ्या मुखरसिका स्नेहविहीनापि लगति कण्ठम्) वज्जालग्गं, वेसावज्जा, पृष्ठ 192/561

मुहराग (मुहराअ/ मुहराय) muha-rāga (muha-rāa/ muha-rāya) मुखराग < संज्ञा (पुं.) [Noun] मुख का रंग, मुखराग face colour, facial luster {म.} *मुहरागो* च्चिय पयडइ जो जस्स पिओ किमेत्थ भणिएण। (मुखराग एव प्रकटयति यो यस्य प्रिय: किमत्र भणितेन) वज्जालग्गं, पियाणुरायवज्जा, पृष्ठ 136/403

मुहलावण्ण muha-lāvaṇṇa मुखलावण्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मुख लावण्य, मुख की कांति face to bloom with joy, to be delighted {म.} नासइ *मुहलावण्णं* देहि त्ति परं भणंतस्स। (नश्यति मुखलावण्यं देहीति परं भणत:) वज्जालग्गं, दीणवज्जा, पृष्ठ 46/136

मुहुत्त (मुहुत्ताग) muhutta (muhuttāga) मुहूर्त < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] मुहूर्त, समय, दो घड़ी का काल, अड़तालीस मिनट का समय a unit of 48 minutes, an auspicious omen {शौ.} (कुरङ्गी-) हळा! इमस्सिं सिळादळे, *मुहुत्तअ* उवविसामि। (हला! अस्मिन् शिलातले मुहुर्तकमुपविशामि) अविमार., भास., गाथा-13/3, पृष्ठ 134

मुहुत्तअ muhutta-a मुहूर्तक< संज्ञा (पुं.) [Noun] मुहूर्त, समय का अल्पांश, दो घड़ी का काल, किसी विशेष कार्य के लिए चुना

गया विशेष समय, 48 मिनट का समय a moment, portion of time, an instant, a period, time, a period of 48 minutes, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) एत्थ एव्व दाव *मुहुत्तअं* चिट्ठ। (अत्रैव तावन्मुहूर्तकं तिष्ठ) अभि. शाकु., पृष्ठ 136/1

मूअल्लिअ (मूअल्लइअ) [देशज] **mūallia (mūallaia)** मूकायित < विशेषण [Adjective] मूक बना हुआ, चुप कराया हुआ silenced, made quiet {म.} जाओ खणेण *मूअल्लिओ* व्व कोऊहला लोओ। (जातः क्षणेन मूकीकृत इव कौतूहलाल्लोकः) गउडवहो, गाथा-177, पृष्ठ 177

मूढ mūḍha मूढ/ मूर्ख < विशेषण [Adjective] मूर्ख, मुग्ध foolish/stupid person, illiterate, ignorant {म.} मा झिज्जसु अणुदियहं करणिविओएण *मूढ* करिणाह। (मा क्षीयस्वानुदिवसं करिणीवियोगेन मूढ करिनाथ) वज्जालग्गं, गयवज्जा, पृष्ठ 66/193

मूल mūla मूल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] जड़, मूली, निबन्धन, कारण, समीप, व्याख्येय ग्रन्थ root, radish, origin, original text, etc. {म.} नेहेण नवरि छेयत्तणस्स *मूला* खणिज्जंति। (स्नेहेन केवलं छेकत्वस्य मूलानि खन्यन्ते) वज्जालग्गं, पेम्मवज्जा, पृष्ठ 118/349

मूलिया (मूलिगा) mūliyā (mūligā) मूलिका< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] जड़ी-बूटी, औषधि विशेष medicinal root, medicinal herb {म.} मग्गंती *मूलियमूलियाइ* मा भमसु घरहरं पुत्ति। (मार्गयमाणा मूलिका-मूलिका मा भ्रम गृहगृहं पुत्रि) वज्जालग्गं, बालासंवरणवज्जा, पृष्ठ 190/553

मूळकन्द (मूलकन्द) mūḷakanda (mūlakanda) मूलकन्द < संज्ञा (पुं.) [Noun] मूलकन्द, कन्द विशेष, जमीकन्द, सूरन, शकरकन्द, गाजर, लहसुन आदि a kind of bulbous root {मा.} (शकार-) वडुअ! माळिश! इदं च भणाहि- मा दाशीएपुत्त! वारावदगळप्पविट्ठं विअ *मूळकन्दं* शीशकवाळं मडमडाइश्शं। (बटुक! मारिष! इदं च भण- मा दास्याः पुत्र! पारावतगलप्रविष्टमिव मूलकन्दं शीर्षकपालं मडमडायिष्यामि) चारु. भासनाटक., गाथा-26/1, पृष्ठ 208

मूसअ (मूसग / मूसय) mūsaa (mūsaga / mūsaya) मूषक < संज्ञा (पुं.) [Noun] मूषक, चूहा rat {शौ.} (नेपथ्ये-) अविहा। अविहा। अहं अत्त भवन्तं पेक्खामि । तुमं मं ण पेक्खासि। विडालग्गहीदो *मूसओ* विअ णरासो म्हि जीविदे संवुत्तो। (अविहा। अविहा। अहमत्राभवन्तं पश्यामि। त्वं मां न पश्यति। विडालगृहीतो मूषक इव निराशोऽस्मि जाविते संवृत्तः) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-27/6, पृष्ठ 114

मेच्छबल meccha-bala म्लेच्छबल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] म्लेच्छबल, असभ्य लोगों का बल, विदेशी बल alien power, power of impolite, foreign power, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) तदो पभूदसारसाहण-समेदेण दूरो णिक्कमिअ अज्जचाणक्केण पडिवण्णं अराअलोअं असेसं *मेच्छबलं*। (ततः प्रभूतसारसाधनसमेतेनेतो निष्क्रम्यार्य-चाणक्येन प्रतिपन्नमराज-लोकमशेष म्लेच्छबलम्) मुद्रा., श्लोक 1,पृष्ठ 82/6

मेणआ (मेणक्का) meṇaā (meṇakkā) मेनका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] स्वर्ग की एक अप्सरा शकुन्तला की माता का नाम, हिमालय की पत्नी का नाम the wife of Himalaya, mother of Śhakuntalā, etc. {शौ.} (अदिति-) दुहिदुवच्छला *मेणआ* इह एव्व उपचरन्ती चिट्ठदि। (दुहितृवत्सला मेनकेहैवोपचरन्ती तिष्ठति) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 33, पृष्ठ 135/7

मेत्ती mettī मैत्री < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मैत्री, दोस्ती friendship, amity, cordiality, alliance {म.} *मेत्ति* व्व पमुहरसिआ णिव्वोढुं होइ दुक्करं कव्वकहा। (मैत्रीव प्रमुखरसिका निर्वोढुं भवति दुष्करं काव्यकथा) सेतुबन्धं, गाथा-9/1, पृष्ठ 10

मोअ moa √ मोचय् < क्रिया [सक.] [Verb] छुड़वाना to get released, to cause, to give up, etc. {शौ.} (उर्वशी) सहि चितलेहे! *मोआवेहि* दाव णं। (सखि चित्रलेखे! मोचय तावदेनाम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17/1, पृष्ठ 149

मोक्ख mokkha मोक्ष < संज्ञा (पुं.) [Noun] मुक्ति, छुटकारा, मोचन, परममुक्ति, आवागमन अर्थात् पुर्नजन्म के चक्कर से आत्मा की मुक्ति, चार पुरुषार्थों में से अन्तिम, बन्धन मुक्त करना (किसी ऋणादि का) परिशोध करना, ग्रहणग्रस्त ग्रह की

मुक्ति (ज्योतिष शास्त्र में) liberation from the bondage of Karma, salvation, deliverance, emancipation, etc. {मा.} (प्रथम-) तेण शव्ववज्झाणं *मोक्खे* होदि। (तेन सर्ववध्यानां मोक्षो भवति) मृच्छ., पृष्ठ 559/10

मोण moṇa मौन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मौन, चुप्पी silent, speechless, mute, quiet {म.} जाणंतस्स य भणियं *मोणं* च अयाणमाणस्स। (जानतश्च भणितं मौनं चाजानत:) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा, पृष्ठ 50/147

मोत्तिय (मोत्तिअ / मुत्तिअ) mottiya (mottia / muttia) मौक्तिक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मोती pearl {म.} करिणो हरिणहर-वियारियस्स दीसंति मोत्तिया कुंभे। (करिणो हरिनखरविदारितस्य दृश्यन्ते मौक्तिकानि कुम्भे) वज्जालग्गं, किविणवज्जा, पृष्ठ 198/581

मोदअ modaa मोदक < संज्ञा (पुं.) [Noun] मोदक, मिठाई, लड्डू, a sweetmeat, etc. {शौ.} (विदूषक-) वज्झन्ति *मोदआ* । (वध्यन्ते मोदका:) मृच्छ., पृष्ठ 236/4

मोर mora मोर < संज्ञा (पुं.) [Noun] मोर, मयूर Peacock {म.} (प्रियंवदा-) उग्गलिअदब्भकवला मिआ परिच्चत्त-णच्चणा *मोरा*। (उद्गलितदर्भकवला मृगाः परित्यक्तनर्तना मयूराः) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 64/4

मोरपिच्छ mora-piccha मयूरपिच्छ < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मोर-पंख, मयूरपिच्छ peacock feather, etc. {शौ.} (विदूषक-) हद्धी हद्धी भो मिलाअमाणकेसरच्छविणा *मोरपिच्छेण* विप्पलद्धो म्हि। (हा धिक् हा धिक् भो: म्लायमानकेशरच्छविना मयूरपिच्छेन विप्रलब्धोऽस्मि) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19/2, पृष्ठ 171

मोह moha मोह< संज्ञा (पुं.) [Noun] मोह, बेहोश, मूर्छा, मूढता, विपरीत ज्ञान, चित्त की व्याकुलता, राग, मोहनीय कर्म fascination, infatuation, illusion, ignorance, spell, etc. {शौ.} (प्रतिहारी-) जेदु कुमारो। इयं वुत्तन्तं सुणिअ जेट्ठभट्टिणी *मोहं* गआ। (जयतु कुमारः। इमं वृत्तान्तं श्रुत्वा जेष्ठभट्टिनी मोहं गता) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-16/6, पृष्ठ 310

य

य ya य < संज्ञा (पुं.) [Noun] तालु स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular palatal consonant {म.} कगतदयवाणं णिच्चं वीयम्मि ठिओ सरो होइ। (कगतद*य*वानां नित्यं द्वितीये स्थितः स्वरो भवति) नाट्य., श्लोक 10/17, पृष्ठ 543

यणवद yaṇavada जनपद < संज्ञा (पुं.) [Noun] जनपद, जनसमुदाय, राजधानी, साम्राज्य, वसा हुआ देश district, capital, kingdom, etc. ज-द्य-यां *यः* / हेम. 4/292, पृष्ठ 582

यदि yadi यदि <अव्यय [Indeclinable] यदि, अगर, जो if, that . {शौ.} ((चर-) यदि सुणंतं जाणंतं अ जणं लहे। (यदि श्रृण्वन्तं जानन्तञ्च जनं लभे) मुद्रा., श्लोक 19/1, पृष्ठ 32

या (याण) yā (yāṅa) √ ज्ञा < क्रिया [सक.] [Verb] जानना, समझना to know, to understand {म.} ताहं चिय पणमामो पढिऊण य जे वि *याणंति* । (तेभ्यश्चैव प्रणमामः पठितुं च येऽपि जानन्ति) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 12/31

याच yāca √ याच् < क्रिया [सक.] [Verb] याचना करना, माँगना, निवेदन करना, प्रार्थना करना, अनुरोध करना, अनुनय विनय करना to demand, begging, etc. {म.} (नेपथ्ये-) भो कण्ण! महत्तरं भिक्खं *याचेमि*। (भोः कर्णः! महत्तरां भिक्षां याचे) कर्णभार., भासनाटक., श्लोक-14/1, पृष्ठ 482

र

र ra र < संज्ञा (पुं.) [Noun] मूर्धा स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a retroflex consonant {म.} उप्परहुत्त रआरो हेटाहुत्तौ अ पाअए णत्थि। (उपरिस्थो रकारो ह्यधस्थः च प्राकृते नास्ति) नाट्य., श्लोक-9/17, पृष्ठ 543

रंखोलिय [देशज] **raṅkholiya** दोलित< विशेषण [Adjective] कम्पित stirred, shiver {म.} जलआणिल-*रंखोलिअ*-हरिअंकुर-सिसिर-पाअव-तलाइं। (जलदानिलकम्पितहरिताङ्कुरशिशिरपादप तलानि) गउडवहो, गाथा-394, पृष्ठ 61

रंभा rambha रम्भा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] केले का पेड़/ गाछ, कदली, देवांगना विशेष, एक अप्सरा a plantain tree, etc. {म.} *रंभा*-गब्भत्तणमणह-परिअरं उरुदंडाण। (रम्भागर्भत्वमनघपरिकरमूरुदण्डानाम्) गउडवहो, गाथा-755, पृष्ठ 113

रअण (रदण) raaṇa (radaṇa) रत्न < संज्ञा (नपुं.) [Noun] रत्न, अलंकार a gem, jewel {प्राच्या} (विदूषक-) इदो वि छट्ठे पओट्ठे अमुं दाव सुवण्ण-*रअणाणं* कम्मतोरणाइं णील-रअण-विणिक्खित्ताइं इन्दाउहट्ठाणं विअ दरिसअन्ति। (इतोऽपि षष्ठे प्रकोष्ठे अमूनि तावत् सुवर्णरत्नानां कर्म्मतोरणानि नील-रत्नविनिक्षिप्तानि इन्द्रायुधस्थानमिव दर्शयन्ति) मृच्छ., पृष्ठ 239/4

रअणी (रयणी) raaṇī (rayaṇī) रजनी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] रात्रि, निशा, ईशानेन्द्र के लोकपाल की पटरानी, चमरेन्द्र की अग्रमहिषी (जैन परम्परानुसार), मध्यम ग्राम या षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना (संगीत में) night, etc. {म.} (नेपथ्य-) चक्कवाकवहुए! आमंतेहि सहअरं उवट्ठिआ *रअणी।* (चक्रवाकवधूः! आमन्त्रयस्व सहचरम् उपस्थिता रजनी) अभि. शाकु., पृष्ठ 249/3

रइ rai रवि < संज्ञा (पुं.) [Noun] सूर्य, दिनकर, रवि the sun {म.} कमलायराण *रइणा* किं कज्जं जे वियसंति। (कमलाकराणां रविणा किं कार्यं येन विकसन्ति) वज्जालग्गं, नेहवज्जा, पृष्ठ 28/79

रइद (रइअ) raida (raia) रचित < विशेषण [Adjective] बनाया हुआ, निर्मित formed, created, constructed, composed, made {शौ.} (मागधिका-) हला! जाणामि दे अलसत्तण। दिवसरइदाणि भणासि *रइदाणि* त्ति। (हला! जानामि तेऽलसत्वम्। दिवसरचितानि भणासि रचितानीति) अविमार., भास., गाथा-13/3, पृष्ठ 133

रक्ख rakkha √ रक्ष् < क्रिया [सक.] [Verb] रक्षण या पालन करना to protect, guard, take care of {म.} *रक्खइ* धीराण मणं आसन्नभयाउलो दइवो। (रक्षति धीराणां मन आसन्नभयाकुलं दैवम्) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 38/110

रक्खस rakkhasa राक्षस < संज्ञा (पुं.) [Noun] राक्षस, निशाचर, दुष्ट प्रकृति के

जीव, पिशाच, भूतप्रेत, बैताल, दानव, शैतान, हिंदु-धर्म शास्त्रों में प्रतिपादित विवाह के आठ भेदों में से एक प्रकार जिसमें दुल्हन के सम्बधियों को युद्ध में परास्त कर कन्या को बलात् उठाकर ले जाया जाता है। ज्योतिष विषयक एक योग, monster, demon, an evil spirit, a goblin, one of the eight forms of marriage in Hindu law in which a girl fiend forcibly seized and carried away after destruction of the relatives, etc. {शौ.} (नन्दिलक-) एत्थ विभीषणकेरआ *रक्खसा*। (अत्र विभीषणसम्बन्धिनो राक्षसः) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-7, पृष्ठ 311

रक्खसराअ rakkhasa-rāa राक्षसराज < ज्ञा (पुं.) [Noun] राक्षसों का राजा a demon king {शौ.} (विदूषक-) तवच्चरणकिलेस-विणिज्जिदेण रक्खसराओ रावणो पुप्फकेण विमाणेण गच्छदि। (तपश्चरणक्लेश-विनिर्जितेन राक्षसराज्ञः रावणः पुष्पकेण विमानेन गच्छति) मृच्छ., पृष्ठ 228/4

रक्खदि rakkhida रक्षति < विशेषण [Noun] बचाया हुआ, रक्षा किया हुआ protected, guarded {शौ.} (विदूषक-) एसो रक्खसादो *रक्खदी* म्हि। (एष राक्षसाद्रक्षतीऽस्मि) अभि.शाकु., पृष्ठ 203/2

रग्गअ [देशज] **raggaa** कुसुंभवस्त्र < संज्ञा (नपुं.) [Noun] कुसुम्भ वस्त्र, कुसुम रंग में रंगा कपड़ा, कौसुम्भ वस्त्र a cloth dyed with safflower, etc. {म.} उग्गंध-मइल-वसुहा सहंति णिव्वडिअ-*रग्गअ*-च्छाया। (उद्गन्धमलिनवसुधा शोभन्ते निर्वर्तित-कौसुंभवस्त्रच्छायाः) गउडवहो, गाथा-403, पृष्ठ 62

रघुवई raghuvaī रघुपति < संज्ञा (पुं.) [Noun] रघुपति, राम Raghupati, Ram, son of Daśaratha {म.} सोअइ अ णं *रघुवई* विरलंगुलिगलिअकिरणधारावअरं। (शोचति चैनं रघुपतिर्विरलाङ्गुलिगलित-किरणधाराप्रकरम्) सेतुबन्धं, गाथा-41/1,पृष्ठ 29

रच्छा racchā रथ्या < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गली, वीथी, वीथिका alley, a place where many roads meet, street, lane {शौ.} (विदूषक-) अरे! *रच्छा*। (अरे! रथ्या) मृच्छ., पृष्ठ 171/5

रण raṇa रण < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] संग्राम, युद्धक्षेत्र, आवाज़ fighting, combat, war, battle, sound {म.} छिन्ने *रणम्मि* बहु पहु पसायमालापडिच्छिरे सीसे। (छिन्ने रणे बहु प्रभुप्रसादमालाग्राहिणि शीर्षे) वज्जालग्गं,सुहउवज्जा,पृष्ठ 60/176

रणरणअ (रणरणय / रणरण) [देशज] **raṇaraṇaa (raṇaraṇaya / raṇaraṇa)** रणरणक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] बेचैनी, उद्वेग, पीड़ा, अधृति, उत्कण्ठा, औत्सुक्य, निःश्वास anxiety, uneasiness, etc. {म.} जाआइं दुलह-दइआणुराअ-*रणरणअ*-मुक्कथामाण। (जातानि दुर्लभदयितानुराग-रणरणकमुक्तस्थाम्नाम्) गउडवहो, गाथा-1133,पृष्ठ 167

रणाइर raṇāira रणाजिर < विशेषण [Adjective] लड़ाई का मैदान battle field, quarrel field {म.} णीसंदइ जस्स *रणाइरेसु* कीलालिओ गअ-मएण। (निःष्यन्दते यस्य रणाजिरेषु कीलालितो गजमदेण) गउडवहो, गाथा-102,पृष्ठ 18

रत्त ratta रक्त< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] लाल रंग, कुंकुम, सिंदूर, खून, राग, आसक्त, रंगा हुआ, लाल रंग वाला, अनुराग युक्त red, saffron-colored, blood, attached, engrossed, etc. {म.} *रत्ते* रत्ता कसणम्मि कसणया धवलयम्मि तह धवला। (रक्ते रक्ता: कृष्णे कृष्णा धवले तथा धवला:) वज्जालग्गं, बालासंवरण-वज्जा, पृष्ठ 188/551

रदि radi रति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] रति, काम-क्रीड़ा, कामदेव की स्त्री, प्रेम, कर्म-विशेष sex, sexual passion, estrus heat, corpulation, love, name of the wife of kāma (the god of love){शौ.} (नलिनिका-) एसो खु संवच्छरो अदिक्कन्दो भट्टिदारिआए अविच्छिण्णसुहसम्भोएण *रदिं* करिअ। (एष खलु संवत्सरोऽतिक्रान्तो भर्तृदारिकाया अविच्छिन्नसुखसम्भोगेन रतिं कृत्वा) अविमार., भास., अंक-4, पृष्ठ 148

रध radha रथ < संज्ञा (पुं.) [Noun] रथ, लकडी के पहिये वाला राजाओं का वाहन, यान chariot, a carriage, vehicle {शौ.} (दौवारकि-) सज्जो *रधो* भट्टिणो विजअप्पत्थाणं अवेक्खदि। (सज्जो रथो भर्तुर्विजय-प्रस्थानमपेक्षते) अभि.शाकु., पृष्ठ 203/2

रमण ramaṇa रमण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] रमण, क्रीड़ा, संभोग dalliance, amorous activity, erotic playfulness {म.} सयणम्मि नावगूहइ *रमणं* भण केण कज्जेण। (शयने नावगूहति रमणं भण केन कार्येण) वज्जालग्गं, हियालीवज्जा, पृष्ठ 212/619

रमणिज्ज (रमणीअ) ramaṇijja (ramaṇīa) रमणीय < विशेषण [Adjective] सुहावना, आनंदप्रद, प्रिय, मनोहर, सुन्दर pleasant, enjoyable, lovely, beautiful, etc. {शौ.} (विदूषक-) तं खु *रमणिज्जं* जं भवदो वि विम्हअं उप्पादेदि। (तत्खलु रमणीयं यद्भवतोऽपि विस्मयमुत्पादयति) अभि.शाकु., पृष्ठ 188/2

रमिय (रमिअ) ramiya (ramia) रमित < विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] रमाये हुऐ रमाया हुआ engrossed, got absorbed, roam about {म.} जीवंति जीवसेसा जे *रमिया* पोढमहिलाहिं। (जीवन्ति जीवशेषा ये रमिता: प्रौढमहिलाभि:) वज्जालग्गं, पियाणुरायवज्जा, पृष्ठ 136/404

रय raya रत < विशेषण [Adjective] रत, आसक्त, अनुरक्त, लीन, तत्पर engaged, busy, occupied with loving, etc. {म.} पट्ठीइ तिलयमालं वहंत कह से *रयं* पत्तो। (पृष्ठे तिलकमालां वहन् कथं तस्या रतं प्राप्त:) वज्जालग्गं, हियाली-वज्जा, पृष्ठ 212/620

रयण rayaṇa रत्न < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] रत्न, माणिक्य, मणि आदि, विशिष्ट पत्थर, स्वजाति में श्रेष्ठ precious stone, gem, the most talented and outstanding person of a class, etc. {म.} झणझणइ कणयडोरो तुट्टइ हारो गलंति *रयणाइं*। (झणझणायते कनककाञ्ची त्रुट्यति हारो गलन्ति रत्नानि) वज्जालग्गं, सुरयवज्जा, पृष्ठ 110/327

रयणत्तय rayaṇa-ttaya रत्नत्रय < संज्ञा (पुं.) [Noun] सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र इन तीनों गुणों को रत्नत्रय कहते हैं इनकी एकता मोक्षमार्ग है, जैन - बौद्ध धर्म में इनका विशेष महत्व हैं three spiritval jewels, right truth, right knowledge and right conduct, Gem-trio, etc. {शौ.} *रयणत्तयमेव* गणं, गच्छं गमणस्स मोक्खमग्गस्स। (रत्नत्रयमेव

गणः, गच्छो गमनस्य मोक्षमार्गस्य) समणसुत्तं, पृष्ठ 10/26

रयणायर rayaṇāyara रत्नाकर< संज्ञा (पुं.) [Noun] समुद्र, सागर, रत्नों की खान the ocean, sea, a mine of jewels {म.} *रयणायरम्मि* महिए हरस्स भाए विसं जायं। (रत्नाकरे मथिते हरस्य भागे विषं जातम्) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 46/132

रयणिमज्झ rayaṇi-majjha रजनीमध्य< संज्ञा (नपुं.) [Noun] मध्यरात्रि, आधी रात midnight {म.} दट्ठूण *रयणिमज्झे* बहु विहकरणेहि निब्भरं सुरयं। (दृष्टवा रजनिमध्ये बहु बिधकरणैर्निर्भरं सुरतम्) वज्जालग्गं, सुरयवज्जा, पृष्ठ 110/322

रसाअण (रसायण) rasāaṇa (rasāyaṇa) रसायन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] रसायन, औषध-विशेष, रस से सम्बन्धति, पारद से सम्बन्धति chemical, solution, alchemy etc. {शौ.} (नटी-) अज्जेण अत्तव्वं *रसाअणं* सव्वं अत्थि ति। (आर्येण अत्तव्यं रसायनं सर्वमस्तीति) मृच्छ., पृष्ठ 14/1

रहस्स rahassa रहस्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] रहस्य, गुह्य, गोपनीय, एकान्त में उत्पन्न, अपवाद स्थान secret, mystery, secrecy, etc. {शौ.} (कुरङ्गी-) हं विदिदं *रहस्सं*। (हं विदितं रहस्यम्) अविमार., भास., गाथा-13,पृष्ठ 134/3

रहिय rahiya रहित < विशेषण [Adjective] रहित, परित्यक्त, शून्य, एकाकी without, devoid of, bereft of, etc. {म.} कुद्दालेण य रहियं कह उड्डो आणए उययं। (कुद्दालेन च रहितं कथं खनक आनयत्युदकम्) वज्जालग्गं, उड्डवज्जा, पृष्ठ 200/587

राअ (रण्णा) rāa (raṇṇā) राजन् < (राज्ञः) संज्ञा (पुं.) [Noun] राजा, भूपति, नरेश, स्वामी a king, emperor, ruler etc. {शौ.} (चन्दनक-) तुमं तन्तिलो सेणावई *रण्णो* पच्चईदो। (त्वं तन्त्रिलः सेनापतिः राज्ञः प्रत्ययितः) मृच्छ., पृष्ठ 343/6

राअउळ (राअउल / राउल) rāauḷa (rāaula / rāula) राजकुल < संज्ञा (नपु.) [Noun] राजकुल, राजा का कुल, राज समूह, राजाओं का यूथ, राजा का वंश, राजगृह, दरबार royal dynasty or family {शौ.} (विदूषक-) अवत्थासदिसं *राअउळं* पविसामि।

(अवस्थासदृशं राजकुलं प्रविशामि) अविमार., भास., गाथा-7/2, पृष्ठ 128

राअकज्ज rāa-kajja राजकार्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] राज कार्य, सरकारी कार्य public or state affairs, official work, governance, etc. {शौ.} (देवी-) जइ *राअकज्जेसु* ईरिसी उवाअणिउणदा अज्जउत्तस्स तदो सोहणं भवे। (यदि राजकार्येस्वीदृश्युपायनिपुणतार्यपुत्रस्य ततः शोभनं भवेत्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19/1, पृष्ठ 255

राअकुमार rāakumāra राजकुमार < संज्ञा (पुं.) [Noun] राजकुमार, राजा का पुत्र prince, son of king {शौ.} (चेटी-) अज्जुए! इच्छामि पुच्छिदुं बहुमाणो विअ रमणीओ कोच्चि *राअकुमारो।* (अज्जुके! इच्छामि प्रष्टुं बहुमान इव रमणीयः कश्चिद् राजकुमारः) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 213

राअसेहर rāasehara राजशेखर < संज्ञा (पुं.) [Noun] एक राजा, एक कवि (कर्पूरमंजरीकार) a king, a poet (author of the Karpūrmañjarī) {शौ.} (सूत्रधार-) पण्होत्तरं क्खु एदं/ *राअसेहरो* । (प्रश्नोत्तरं खलु एतत्/ राजशेखरः) कर्पूर., पृष्ठ 9/1

राआ rāā राजा/ राजन् < संज्ञा (पुं.) [Noun] राजा भूपति, नरेश, स्वामी, मालिक king, emperor, realer, etc. {शौ.} (वासवदत्ता-) अत्थि उज्जइणीए *राआ* पज्जोदो णाम। (अस्त्युज्जयिनीयां राजा प्रद्योतो नाम) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-16/2, पृष्ठ 14

राइ rāi रात्रि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] रात्रि, रात night {म.} अणियत्तासु वि *राईसु* पुत्तिं किं दड्ढमाणेण। (अनिवृत्तास्वपि रात्रिषु पुत्रि किं दग्धमानेन) वज्जालग्गं, माणवज्जा, पृष्ठ 120/354

राएसि rāesī राजर्षि < संज्ञा (पुं.) [Noun] राजाओं में ऋषि, श्रेष्ठ राजा, सन्त समान राजा, क्षत्रिय जाति का पुरुष जिसनें अपने पवित्र जीवन तथा साधनामय भक्ति से ऋषि का पद प्राप्त किया हो a king who lives as a sage, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) जदो पहु दि मम दंसणपहं आअदो सो तवोवणरक्खिदा *राएसी*। (यतः प्रभृति मम दर्शनपथमागतः स तपोवनरक्षिता राजर्षिः) अभि.शाकु., पृष्ठ 224/3

राजघर rāja-ghara राजगृह < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] राजप्रासाद, राजगृह, राजा का गृह, राजमहल palace, royal mansion {म.} कत्तो तं *रायघरेसु* विलसियं जं घरम्मि वाहस्स (कुतस्तद्राजगृहेषु विलसितं यद्गृहे व्याधस्य) वज्जालग्गं, वाहवज्जा, पृष्ठ 70/205

राढाइत्त [देशज] **rāḍhāitta** भव्यात्मा < विशेषण [Adjective] भव्य आत्मा noble soul {म.} गंजणरहिओ जम्मो *राढाइत्ताण* संपडइ। (कलङ्करहितं जन्म भव्यात्मनां संपद्यते) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 32/90

रामाअण (रामायण) rāmāaṇa (rāmāyaṇa) रामायण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] राम का चरित like sketch of Rāma, the epic describing the life of Rama {शौ.} (विदूषक-) अत्थि *रामाअणं* णाम णट्टसत्थं। (अस्ति रामायणं नाम नाट्यशास्त्रं) अविमार., भास., गाथा-5/2, पृष्ठ 119

रायकज्ज rāya-kajja राजकार्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] राजकार्य, सरकारी कार्य royal work, government work, etc. {शौ.} (प्रतिहारी-) एसो उण वाहतओ अमच्चो विण्णवेदि-*राअकज्जं* बहु मंतदव्वं दंसणेण अणुग्गहं इच्छामि त्ति। (एष पुर्नाहतकोऽमात्यो विज्ञापयति- राजकार्यं बहु मन्त्रयितव्यं दर्शनेनानुग्रह-मिच्छामीति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-4, पृष्ठ 296/4

रालयमंजरि rālaya-mañjari रालकमञ्जरि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] धान्य की मंजरियाँ grain blossoms {म.} निप्पन्ना *रालयमंजरीउ* सेवा सुहं कुणउ। (निष्पन्ना रालकमञ्जर्यः सेवा सुखं करोतु) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 54/160

राविअ rāvia रञ्जित < विशेषण [Adjective] रंजित, रंगा हुआ coloured or tinged red {म.} जय-गअ-कुंभप्फालण-फुरंत-सिंदूर-*राविओ* जाण। (जय-गज-कुम्भास्फालन-स्फुरत्सिन्दूर-रञ्जितो येषाम्) गउडवहो, गाथा-419, पृष्ठ 65

राहु rāhu राहु << संज्ञा (पुं.) [Noun] ग्रह विशेष, प्राचीन ज्योतिष के अनुसार बारह ग्रहों में से एक ग्रह one of the twelve principal planets known to ancient astrologers, ascending mode of the moon {म.} जेणुत्तमंगमेत्तेण *राहुणा*

कवलिओ चंदो। (येनोत्तमाङ्गमात्रेण राहुणा कवलितचन्द्रः) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 36/107

रिउ riu रिपु < संज्ञा (पुं.) [Noun] रिपु, शत्रु an enemy, a foe {म.} तं होउ तुह *रिऊणं* अहवा ताणं पि मा होउ। (तद्भवतु तव रिपूणामथवा तेषामपि मा भवतु) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा,पृष्ठ 52/151

रिउपक्ख riu-pakkha रिपुपक्ष < संज्ञा (नपुं.) [Noun] रिपुपक्ष, शत्रु दल enemy side, foe wing, etc. {शौ.} (चर-) सुण्णदु अज्जो। पढमो दाव *रिउपक्खे* बद्धपक्खवादो खवणओ। (शृणोत्वार्यः। प्रथमं तावदार्यस्य रिपुपक्षे बद्धपक्षपातः क्षपणकः) मुद्रा., श्लोक-19/1, पृष्ठ 8

रिट्ठ riṭṭha अरिष्ट < संज्ञा (पुं.) [Noun] अरिष्टासुर, दैत्य विशेष, दुरित, काक Arishhtasura, demon special, crow, etc. {म.} *रिट्ठस्स* विसमवलिअं कण्ठं दुक्खेण जीविअं बोलीणं। (अरिष्टस्य विषमवलितं कण्ठं दुःखेन जीवितं व्यतिक्रान्तम्) सेतुबन्धं, गाथा-3/1,पृष्ठ 7

रुइद (रुइअ) ruida (ruiya) रुचित < विशेषण [Adjective] पसन्द, रुचित liked, selected, etc. {शौ.} (नलिनिका-) जं भट्टिदारिआए रुइदं होदु। (यद् भर्तृदारिकायै रुचितम् भवतु) अविमार., भासनाटक., गाथा-1/5, पृष्ठ 163{शौ.} (मागधिका-) णं भट्टिदारिआए रुइदं। (यद् भर्तृदारिकायै रुचितम्) अविमार., भास., गाथा-13/3, पृष्ठ 134

रुक्ख rukkha वृक्ष संज्ञा (पुं.) [Noun] पेड़, वृक्ष a tree {शौ.} (शकुन्तला-) एसो वादेरिदपल्लवंगुलीहि तुवरेदि विअ मं केसर *रुक्खओ*। (एष वातेरितपल्लवाङ्गुलीभिस्त्वरयतीव मां केसरवृक्षकः) अभि.शाकु., पृष्ठ 136/1

रुण्ण ruṇṇa रुदित विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] रोया हुआ, रुदित weep, crying {म.} न मए *रुण्णं* न कयं अमंगलं होंतु सयलसिद्धीओ। (न मया रुदितं न कृतममङ्गलं भवन्तु सकलसिद्धयः) वज्जालग्गं, पवसियवज्जा, पृष्ठ 126/370

रुद्द rudda रुद्र < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] शिव का एक नाम, क्रूर,

भयानक, भयंकर, डरावना, ध्यान का एक प्रकार (जैन परम्परानुसार) the fearful Shiva, Rudra, dreadful, terrific, etc. {म.} (स्थापक-) आमूलं पूरिआए तुहिणकरकलारुप्पसिप्पीअ रुद्दो। (आमूलं पूरितया तुहिनकरकलारुप्यशुक्त्या रुद्रः) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 5/4

रुद्ध ruddha रुद्ध विशेषण [Adjective] बन्द, रुका हुआ stagnant, choked, obstructed, stopped, etc. {शौ.} (नलिनिका-) हरिणिए! हरिणिए! कहं दुवारं रुद्धं। (हरिणिके! हरिणिके! कथं द्वारं रुद्धम्) भासनाटक., अविमार., गाथा-4/5,पृष्ठ 168

रुरु ruru रुरु < संज्ञा (पुं.) [Noun] हिरण की जाति विशेष, वनस्पति विशेष, एक अनार्य मनुष्य जाति a kind of deer, etc. {म.} भूमीओ भमिअव्वाओ पविरलं रुरु-सिंगवईओ। (भूमयः भ्रमितव्याः प्रविरलं रुरुशृङ्गवत्यो) गउडवहो,गाथा-549,पृष्ठ 83

रुववदी (रूववई) rūva-vadī (rūva-vaī) रूपवती < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] रूपवती, सुन्दर स्त्री beautiful, pretty, lovely, etc. {शौ.} (विदूषक-) जइ एव्वं पच्चादेसो दाणिं रुववदीणं। (यद्येवम् प्रत्यादेश इदानीं रूपवतीनाम्) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक 9, पृष्ठ 31/2

रूव rūva रूप <संज्ञा (नपुं.) [Noun] आकृति, सूरत, शक्ल, पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक इन्द्र का लोकपाल (जैन परम्परानुसार) form, figure, appearance, etc. {शौ.} (अनसूया-) तदो वसंतोदारसमए से उम्मादइत्तअं *रूवं* पेक्खिअ। (ततो वसन्तोदारसमये तस्या उन्मादयितृ रूपं प्रेक्ष्य) अभि.शाकु., पृष्ठ 150/1

रूवजोव्वण rūva-jovvaṇa रूपयौवन < संज्ञा (पुं.) [Noun] रूप यौवन, तरुणाई young beauty, good looks, youthfulness, adulthood, etc. {शौ.} (विलासिणी-) पिअं भट्टिदारिआए *रूवजोव्वणं* सफळं संवुत्तं त्ति। (प्रियं भर्तृदारिकाया रूपयौवनं सफलं संवृत्तमिति) अविमार., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 135

रेवा revā रेवा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] नर्मदा नदी, रेवा the river Narmadā {म.} सा *रेवा* ताइ पाणियाइ ते च्चेव करिणिसंघाया। (सा रेवा तानि पानीयानि ते चैव करिणीसंघाता:) वज्जालग्गं, विंझवज्जा, पृष्ठ 64/187

रेहा rehā रेखा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] रेखा, लकीर, चिन्ह विशेष line, sign, mark {म.} दो तिन्नि तह च्चिय चोरियाइ *रेहा* फुसिज्जंति। (द्वे तिस्रस्तथैव चौरिकया रेखा: प्रोञ्छयन्ते) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 128/378

रोअ roa √ रुच् (रुअ) < क्रिया [सक.] [Verb] इच्छा करना, पसन्द करना, चाहना to take interest, to like {शौ.} (चेटी-) जधा दे *रोअदि* । (यथा ते रोचते) मृच्छ., पृष्ठ 194/4

रोअणा roaṇā रोचना < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गोरोचन a kind of yellow pigment {म.} दिट्ठी सचंदणेसुं आरोविअ-*रोअणेसु* रमणीणं। (दृष्टिः सचन्दनेषु आरोपितरोचनेषु रमणीनाम्) गउडवहो, गाथा-211, पृष्ठ 34

रोआवत्था roāvasthā रोगावस्था < संज्ञा (स्त्री.)[Noun] रोगावस्था, रोग की दशा state of illness, etc. {शौ.} (कुरङ्गी-) मम *रोआवत्थं* पुच्छिदुं आअदो परिजणो मं णिब्बन्धिअ णिवेदेदि। (मम रोगावस्थां प्रष्टुमागतः परिजनो मां निर्बध्य निवेदयति) भासनाटक., अविमार., गाथा-1/5, पृष्ठ 162

रोग (रोअ) roga (roa) रोग < संज्ञा (पुं.) [Noun] रोग, बीमारी illness, disease {म.} सीलं वरं कुलाओ दालिद्दं भव्वयं च *रोगाओ*। (शीलं वरं कुलात् दारिद्र्यं भव्यं च रोगात्) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 30/85

रोमंच romañca रोमाञ्च < संज्ञा (पुं.) [Noun] रोमांच भय या हर्ष से रोओं का उठ जाना, पुलक foosebumps horripilation, thrill, erection of the hair of the body (in joy or terror) {म.} सीआपरिमट्ठेण व वूढो तेण वि णिरन्तरं *रोमञ्चो*। (सीतापरिमृष्टेनेव व्यूढस्तेनापि निरन्तरं रोमाञ्चः) सेतुबन्धं, गाथा-42/1, पृष्ठ 29

रोह roha रोह < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्ररोह, शाखाऐं, व्रण आदि का सूख जाना a shoot, growth, etc. {म.} *रोह*-णिरंतर-ताली वणम्मि जाओ महीं-णाहो। (रोहनिरन्तरतालीवने यातो महीनाथः) गउडवहो, गाथा-284, पृष्ठ 45

रोहिणी rohiṇī रोहिणी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] गाय, नक्षत्र विशेष, चन्द्र की पत्नी, औषधि विशेष a cow, moon's wife, medicine, etc {म.} कह वि जडाअव-परिभोअ-मंथरं *रोहिणी*-जूहं। (कथमपि

जडातपपरिभोग-मन्थरं रोहिणीयूथम्) गउडवहो, गाथा-275, पृष्ठ 44

रोहिणीसंजोअ rohiṇī-sañjoa रोहिणी-संयोग < संज्ञा (पुं.) [Noun] रोहिणी के साथ संयोग, रोहिणी के साथ में association with one of the fourth constellation, etc. {शौ.} (देवी-) हंजे णिउणिए! एसो रोहिणीसंजोएण अहिअं सोहदि भअवं मिअलंछणो। (हञ्जे निपुणिके! एष रोहिणीसंयोगेनाधिकं शोभते भगवान् मृगलाञ्छनः) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-11/3, पृष्ठ 183

ल

ल la ल < संज्ञा (पुं.) [Noun] मूर्धा स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular retroflex consonant र-सोर्ल-शौ। हेम., 4/288, पृष्ठ 581

लंघिद laṅghida लङ्घित< भूतकालिक कृन्दत/ विशेषण [Past Participle/ Adjective] आ घेरना, प्रभावित करना, ऊपर से कूदा हुआ, पार गया हुआ अतिक्रान्त, उल्लंघन किया हुआ, यात्रा द्वारा पार किया हुआ, अवज्ञात, अपमानित, अनादृत cross over, passed over, traversed, transegressed, to influenced, impressed, affected, viotated, disregarded, insulted, disrespected, attacked, seized, afflicted, etc. {शौ.} (विदूषक-) लंघिदो एसो भूओ वि सउन्दलावाहिणा। ण आणे कहं चिकिच्छिदव्वो भविस्सदि त्ति। (लङ्घित एष भूयोऽपि शकुन्तला व्याधिना न जाने कथं चिकित्सतिव्यो भविष्यतीति) अभिज्ञान शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-37/6, पृष्ठ 97

लक्ख lakkha लक्ष < विशेषण [Adjective] लाख की संख्या lakh, a hundred thousand {म.} एक्कं मोत्तूण पिय *लक्खेवि* न लक्खए लक्खं। (एकं मुक्त्वा प्रियं लक्षयित्वा न लक्षयति लक्षम्) वज्जालग्गं, पियाणुराय-वज्जा, पृष्ठ 138/410

लक्ख lakkha लक्षय् < क्रिया [सक.] [Verb] जानना, पहचानना, देखना recognize, to know, to see, etc. {म.} एक्कं मोत्तूण पिय लक्खेवि न लक्खए लक्खं। (एकं मुक्त्वा प्रियं लक्षयित्वा न लक्षयति लक्षम्) वज्जालग्गं, पियाणुराय-वज्जा, पृष्ठ 138/410

लक्खशी (रक्खसी) lakkhaśī (rakkhasī) राक्षसी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] राक्षसी, राक्षस कुल की स्त्री a female demon, etc. {मा.} (शकार-) भावे! भावे! मलेशि मलेशि पवहणाधिलूढा लक्खशी चोले वा पडिवशदि। (भाव! भाव! म्रियसे म्रियसे प्रवहणाधिरुढा राक्षसी चौरो वा प्रतिवसति) मृच्छ., पृष्ठ 396/8

लग्ग lagga लग्न < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] लग्न, जुड़ा हुआ, संलग्न, विवाह आदि के लिए निकाली जाने वाली लग्न मेष आदि राशि का उदय attached, adhered or clung to, stuck, held fast, an auspicious moment for performing a ceremony (especially marriage), etc. {म.} सुक्कक्कमेण रहियं न हु लग्गं सोहणं होइ। (शुक्रक्रमेण रहितं न खलु लग्नं शोभनं भवति) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 170/504

लच्छी lacchī लक्ष्मी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] लक्ष्मी, सम्पत्ति, धन, कान्ति, वैभव की देवी, विष्णु की पत्नी, रावण की पत्नी (जैन परम्परानुसार) fortune, prosperity, wealth, the goddess Lakṣmī (wife of viṣṇu and goddess of good fortune and wealth), etc. {म.} छिज्जउ सीसं अह होउ बंधणं चयउ सव्वहा लच्छी। (छिद्यतां शीर्षमथ भवतु बन्धनं त्यजतु सर्वथा लक्ष्मी:) वज्जालग्गं, मित्तवज्जा, पृष्ठ 24/71

लच्छीसअंवर lacchīsaaṁvara लक्ष्मी-स्वयंवर < संज्ञा (नपुं.) [Noun] लक्ष्मी स्वयंवर, देवी लक्ष्मीजी का स्वयंवर goddess Laxmi svayamvara, selection of husband {शौ.} (पेलव-) तस्सिं उण सरस्सईकिदकव्वबंधे लच्छीसअंवरे तेसु तेसु रसंतरेसु तम्मई आसी। (तस्मिन्पुनः सरस्वतीकृतकाव्यबन्धे लक्ष्मीस्वयंवरे तेषु तेषु रसान्तरेषु तन्मयी आसीत्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., अंक2, पृष्ठ 174

लज्ज lajja √ लज्ज् < क्रिया [अक.] [Verb] लजाना, शरमाना to be abashed, to feel shy {म.} रे भसल किं न *लज्जसि* चुंबंतो इयरकुसुमाइं। (रे भ्रमर किं न लज्जसे चुम्बन्नितरकुसुमानि) वज्जालग्गं, सुरतरुविसेसवज्जा, पृष्ठ 86/253

लज्जा lajjā लज्जा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] लज्जा, लाज, शरम, संयम shame, shyness, bashfulness, etc. {म.} ता रूवं ताव गुणा लज्जा सच्चं कुलक्कमो ताव। (तावद्रूपं

तावद्गुणा लज्जा सत्यं कुलक्रमस्तावत्) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 46/134

लज्जिर lajjira लज्जित < (लज्जाशील) विशेषण [Adjective] लज्जित, लजाया हुआ, शर्मिंदा, शर्मसार, लज्जाशील ashamed, shame-faced, etc. {म.} अह चिंतेइ न जंपइ अह जंपइ *लज्जिरो* होइ। (अथ चिन्तयति न जल्पत्यथ जल्पति लज्जितो भवति) वज्जालग्गं, सज्जण-वज्जा, पृष्ठ 12/34

लट्ठि laṭṭhi यष्टि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] यष्टि, लाठी, छड़ी a stick, a stalk, a branch, etc. {म.} *लट्ठि* वि सुप्पमाणा किं जंतिय अणयं वहसि। (यष्टिरपि सुप्रमाणा किं यान्त्रिकोनकं वहसि) वज्जालग्गं, जंतियवज्जा, पृष्ठ 182/534

लट्ठिअ laṭṭhia राष्ट्रिय < विशेषण [Adjective] राष्ट्रिय, देश से सम्बन्धित national {मा.} (भिक्षु-) जाव एदं *लट्ठिअ*-शालकाहकेलके उज्जाणे पविशिअ पोक्खलिणी पक्खालिअ लहुं लहुं उवक्कमिश्शं।(यावदेतत् राष्ट्रियश्यालकस्य संबद्धे उद्याने प्रविश्य पुष्करिण्यां प्रक्षाल्य लघु लघु उपक्रमिष्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 374/8

लडह [देशज] **laḍaha** रम्य < विशेषण [Adjective] रम्य, सुकुमार, चतुर, प्रधान, मुख्य charming, graceful {म.} हरइ परिकोमलुव्वूढवेस-लडहं परिब्भमिअं। (हरति परिकोमलोव्यूढवेषरम्यं परिभ्रमितम्) गउडवहो, गाथा-367, पृष्ठ 57

लतागेह latā-geha लतागृह < संज्ञा (नपुं.) [Noun] लतागृह, लतामंडप pergola, etc. {शौ.} (देवी-) हंजे णिउणिए! सच्चं तुए भणिदं इमं *लदागेहं* पविसंतो अज्जमाणवअसहाओ अज्जउत्तो दिट्ठो त्ति। (हञ्जे निपुणिके! सत्यं त्वया भणितमिदं लतागेहं प्रविशन्नार्य-माणवकसहाय आर्यपुत्रो दृष्ट इति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-18/2, पृष्ठ 169

लत्ति latti रात्रि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] रात, रात्रि, निशा, रजनी night {मा.} (चेट-) एदं तं शुवण्णभण्डअं मम दिवा, तुह *लत्तिं* च, ता गेण्ह। (एतत् तत् सुवर्णभाण्डं मम दिवा, तव रात्रौ च, तद् गृहाण) मृच्छ., पृष्ठ 154/3

लदा (लया) ladā (layā) लता < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] लता, वल्ली, वेल, यष्टि creeper, creeping, plant musk creeper, a whip or the lash of a whip, a string of pearls, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) ओसरिअ-पण्डुपत्ता मुअंति अस्सू विअ *लदाओ* । (अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 64/4

लद्ध laddha लब्ध < विशेषण [Adjective] प्राप्त got, obtained {शौ.} (नटी-) ळद्धं णाम एदं। (लब्धं नामैतत्) चारु., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 192

ललिअ (ललिय) lalia (laliya) ललित < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] ललित, सुन्दर, मधुर, अभिलषित, शोभा युक्त, विलास, लीला, प्रसन्नता, अंग विन्यास विशेष elegant, fine, pretty, pleasant, agreeable, etc. {म.} देसियसद्दपलोट्टं महु रक्खरछंदसंठियं *ललियं* । (देशीयशब्द-प्रवृत्तं मधुराक्षरच्छन्दः संस्थितं ललितम्) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 10/28

ललिअ lalia ललित < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] ललित, सुन्दर, मधुर, अभिलषित, क्रीड़ा प्रधान, विलास, लीला, अंग विन्यास विशेष, प्रसन्नता amorous pastime, dalliance, etc. {म.} अणुबज्झंताइं व से गुणेहिं सोहंति *ललिआइं*। (अनुबध्यमानानीवास्य गुणैः शोभन्ते ललितानि) गउडवहो,गाथा-772,पृष्ठ 115

लह laha √ लभ् < क्रिया [सक.] [Verb] हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना to get, to obtain, to gain, to receive {शौ.} (प्रियंवदा-) अवि णाम एव्वं अहं पि अत्तणो अणुरूववरं *लहेअ* ति। (अपि नामैवमहमप्यात्मनोऽनुरूपवरं लभेयेति) अभि.शाकु., पृष्ठ 138/1

लहश्श (लहस्स / रहस्स) lahaśśa (lahassa / rahassa) रहस्य < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] रहस्य, गुह्य, गोपनीय, एकान्त में उत्पन्न, एकान्त का, सत्व, तात्पर्य, भावार्थ, अपवाद स्थान secret, mystery, secrecy, etc. {मा.} (क्षपणक-) शावगा ण *लहश्शं* एदं। तहवि ण कहिश्शं। (श्रावक न रहस्यमेतत्। तथापि न कथयिष्यामि) मुद्रा., श्लोक-5, पृष्ठ 67/5

लहु य (लहु अ / लहु) lahuya (lahua / lahu) लघुक/ लघु < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/

Noun] लघु, निस्सार, छोटा, हल्का, तुच्छ, एक मात्रिक स्वर small, insignificant, light, reduced, etc. {शौ.} (विदूषक-) तेण हि *लहु* परित्तायदु णं भवं। (तेन हि लघु परित्रायतामेनां भवान्) अभि.शाकु., पृष्ठ 190/2 {म.} गाहे भज्जिहिसि तुमं अहवा *लहु यत्तणं* वि पाविहिसि। (गाथे भङ्क्ष्यसे त्वमथवा लघुत्वमपि प्राप्स्यसि) वज्जालग्गं, गाहावज्जा, पृष्ठ 6/16

लाअउल lāa-ula राजकुल < संज्ञा (नपुं.) राजकुल, राजघराना a royal family, a king's family {ठक्की/ढक्की} (द्यूत-) *लाअउलं* गदुअ णिवेदेम्ह ? (राजकुलं गत्वा निवेदयाम: ?) मृच्छ., पृष्ठ 126/2

लावण्ण (लायण्ण) lāvaṇṇa (lāyaṇṇa) लावण्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] लावण्य, शरीर की कान्ति, लावण्यत्व loveliness, etc. {म.} अंगेसु अमायंतं रंखोलइ तीइ *लावण्णं।* (अङ्गेष्वमादितस्ततश्चलति तस्या लावण्यम्) वज्जालग्गं, लावण्ण-वज्जा, पृष्ठ 108/316

लावण्णमई lāvaṇṇa-maī लावण्यमयी < विशेषण [Adjective] लावण्यमयी, मनोहरी, सौन्दर्यमयी naturally beautiful lady, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) केवलं *लावण्णमई* छाया तुमं ण मुंचदि। (केवलं लावण्यमयी छाया त्वां न मुञ्चति) अभि.शाकु., पृष्ठ 221/3

लाह lāha लाभ< संज्ञा (पु.) [Noun] लाभ, उपलब्धि, प्राप्ति, नफा, ब्याज, मुनाफा, फायदा, सुखोपभोग profit, gain, benefit, advantage, etc. {शौ.} (क्षपणक-) पाविहि दीहं *लाहं* चन्दश्श बलेण गश्चन्ते। (प्राप्नुहि दीर्घे लाभं चन्द्रस्य बलेन गच्छन्) मुद्रा., श्लोक 19, पृष्ठ 61/4

लिहिअ (लिहिद) lihia (lihida) लिखित < विशेषण/ भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] लिखा हुआ, उल्लिखित, उकेरा हुआ written, sketched, etc. {शौ.} (कायस्थ-) अज्ज! लिहिदं। (आर्य! लिखितम्) मृच्छ., पृष्ठ 466/9

लुंचपलुंच luñca-pa-luñca लुञ्चप्रलुञ्च< विशेषण [Adjective] नोंच खरोंच scratching, tearing, etc. {म.} कीरइ लुंचपलुंचा जह गाई मंददोहेहिं। (क्रियते लुञ्चप्रलुञ्चा यथा गौर्मन्ददोग्धृभि:) वज्जालग्गं, गाहावज्जा, पृष्ठ 6/15

लुद्ध luddha लुब्ध < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] लालची, लोलुप, लोभ, व्याध allured, charmed, attracted {शौ.} (गणिका-) *लुद्धति* मं तुळअदि। (लुब्धेति मां तुलयति) चारु., भासनाटक., गाथा-5/4, पृष्ठ 244

लेक्खअ lekkhaa लेखक < संज्ञा/विशेषण [Noun/Adjective] लिखने वाला, लिपिकार writer, author, scribe {मा.} (प्रथम-) लेक्खअं कलेम्ह। (लेखकं कुर्मः) मृच्छ., पृष्ठ 558/10

लेट्ठुअ (लेट्ठु) leṭṭhua (leṭṭhu) लेष्टुक < संज्ञा (पुं.) [Noun] मिट्टी का ढेला a piece of clay, concrete, clod {शौ.} (विदूषक-) गणिआ णाम, पादुअन्तर-प्पविट्ठा विअ लेट्ठुआ दुक्खेण उण णिराकरीअदि। (गणिका नाम, पादुकान्तरप्रविष्टा इव लेष्टुका, दुःखेन पुनर्निराक्रियते) मृच्छ., पृष्ठ 263/5

लेह (लेख) leha (lekkha) लेख< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] लेख, लेख्य, लेखक, लिखना, पत्र, लिपि writing, hand writing, article, essay, paper, deed, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) अअं सो सअडदासेण लिहिदो *लेहो*। (अयं सः शकटदासेन लिखितो लेखः) मुद्रा.,श्लोक-19/1,पृष्ठ 12

लेहकर leha-kara लेखकर < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] लेखक, लिपि लिखने वाला writer, etc. {शौ.} (सारसिक-) मंगलघरे आसणत्था भविअ विदब्भ-विसआदो भादुणा वीरसेणेण पेसिदं लेहं *लेहकरेहि* वाइअमाणं सुणादि। (मङ्गलगृहे आसनस्था भूत्वा विदर्भविषयाद् भ्राता वीरसेनेन प्रेषितं लेखं लेखकरैर्वाच्यमानं शृणोति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., अंक-5, पृष्ठ 312

लेहणी lehaṇī लेखनी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] लेखनी, कलम pen, etc. {म.} मसि मलिऊण न याणसि *लेहणि* गहिऊण मूढ खलिओ सि। (मषीं मर्दितुं न जानासि लेखनीं गृहीत्वा मूढ स्खलितोऽसि) वज्जालग्गं, लेहयवज्जा, पृष्ठ 174/508

लोअण loaṇa लोचन < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] आँख, नेत्र, लोचन eye {शौ.} (उर्वशी-) णं समदुक्खगदो पिवीअदि *लोअणेहिं*। (ननु समदुःखगतः पीयते

लोचनाभ्याम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10/1, पृष्ठ 145

लोअवाअ (लोअवाय) loa-vāa (loa-vāya) लोकवाद < संज्ञा (पुं.) [Noun] लोकवाद, कहावत, जनश्रुतिpopulism, rumour, etc. {शौ.} (इरावती-) हंजे णिउणिए! सुणामि बहुसो मदो किल इत्थिआजणस्स विसेसमंडणं त्ति। अवि सच्चो एसो *लोअवाओ*। (चेटि निपुणिके! श्रृणोमि बहुशो मदः किल स्त्रीजनस्य विशेषमण्डनमिति। अपि सत्य एष लोकवादः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 276/3

लोअव्वहार loa-vvahāra लोकव्यवहार < संज्ञा (पुं.) [Noun] लोक व्यवहार, सांसारिक कार्य व्यापार public behaviour, popular dealings, etc. {शौ.} (विदूषक-) भोदि! एसो *लोअव्ववहारो*। (भवति! एष लोकव्यवहारः) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-17/5, पृष्ठ 327

लोट्ठगुडिआ loṭṭha-guḍiā लोष्टगुटिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] मिट्टी का ढेला, मिट्टी का गोला a pellet of clay, a soil round {शौ.} (चेट-) भोदु, अवराए *लोट्ठगुडिआए* पुणो वि ताडइस्सं। (भवतु, अपरया लोष्टगुटिकया पुनरपि ताडयिष्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 269/5

लोय (लोअ) loya (loa) लोक < संज्ञा (पुं.) [Noun] लोक, दुनिया, संसार, पृथ्वी, भूलोक विश्व का एक प्रभाग (स्थूल रूप से यदि कहा जाए तो लोक तीन हैं- स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल लोक अधिक विस्तृत वर्गीकरण के अनुसार लोक चौदह हैं सात तो पृथ्वी से आरंभ करके ऊपर क्रमश: एक दूसरे के ऊपर अर्थात् भूर्लोक, भुवर्लोक the world, a division of the universe, but according to further classification the lokas are fourteen, seven higher regions rising from the earth one above the other and seven lower regions, descending from the earth one below the other, universe (divided {म.} पेच्छामि सयललोए ते मह *लोया* न पेच्छंति। (प्रेक्षे सकललोकास्ते मां लोका न प्रेक्षन्ते) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा, पृष्ठ 48/139 {म.} हियए जाओ तत्थेव वड्ढिओ नेय पयडिओ *लोए*। (हृदये जातस्तत्रैव वर्धितो नैव प्रकटितो लोके) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 40/115

ळाअषाषण (लाअसासण / रायसासण) ḷāaṣāṣaṇa (lāsāsaṇa / rāyasāsaṇa)

राजशासन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] राजशासन, राजा के शासन government, royal regime, kingship, etc. {मा.} (नन्दगोप-) मम गुणषहष्षं किदं, दुक्खे दुक्खइ, षुहे षुहिणो होदि, तहवि षुमळामि *ळाअषाषणेण* किदं एक्कबन्धणं। (मम गुणसहस्रं कृतं, दुःखे दुःख्यति, सुखे सुखी भवति, तथापि स्मरामि राजशासनेन कृतमेकबन्धनम्) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 518

ळावण (लायण / रावण) ḷāvaṇa (lāyaṇa / rāvaṇa) रावण < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] प्रसिद्ध लंका का राजा रावण राक्षसों का मुखिया, दस सिर और बीस भुजाऐं थी इसीलिये दशग्रीव, दशवदन आदि कहलाता है। रावण ने ब्रह्मा की दस हजार वर्ष तक कठोर साधना की तथा प्रति हजार वर्ष पर अपना सिर ब्रह्मा जी को चढ़ाता गया प्रसन्न होकर उसे वरदान मिला पशु न देवता king of Laṅkā and the chief of the Rākṣhasas, of a celebrated demon, ten heads and twenty arms. He is represented to have practised the most austere penance and offared his head in every ten thousand years in order to propitiate the god Brahma {मा.} (सीता-) हं *ळावणो* णाम। (हं रावणो नाम) प्रतिमा., भासनाटक., गाथा-16/5, पृष्ठ 299

ळावणअ (लावाणअ) ḷāvāṇaa (lāvāṇaa) लावणक < संज्ञा (पुं.) [Noun] मगध के निकट एक जिले का नाम (वत्सराज के राज्य में एक ग्राम) a district near Magadha {शौ.} (वासवदत्ता-) हा *ळावणअं* णाम। ळावाणअसंकित्तणेण पुणो णवीकिदो विअ मे सन्दावो। (हा लावाणकं नाम। लावाणकसंकीर्तनेन पुनर्नवीकृत इव मे संतापः) स्वप्न., भासनाटक., श्लोक-12/1, पृष्ठ 8

ळेणु (लेणु / रेणु) ḷeṇu (leṇu / reṇu) रेणु < संज्ञा (पु., स्त्री.) [Noun] रेणु, धूल, धूलकण, रेत आदि, पराग, पुष्परज sand, dust, particle of sand, etc. {शौ.} (सर्वे-) हा हा मादुळ! अदिमहन्तं *ळेणुं* उप्पदिदो। (हा हा मातुल! अतिमहान् रेणुरुत्पतितः) पञ्चरात्रम्., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 391/2

ळेह (लेह) ḷeha (leha) लेख < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] लेख, लिखना, पत्र, लिपि, लेख्य, लेखक writting, handwriting, article, essay, paper, etc.

{शौ.} (नलिनिका-) तदो एवं सव्वं सुणिअ तस्स *ळेहस्स* अवसाणं पेक्खिअ अय्यभूदिएण सह गओ किळ महाराओ तं अण्णेसिदुं। (तत् एतत् श्रुत्वा तस्य लेखस्यावसानं प्रेक्ष्यार्यभूतिकेन सह गतः किल महाराजस्तमत्वेषितुम्) भासनाटक., अविमार., अंक-6, पृष्ठ 175

व

व va व < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत वर्णमाला का व्यंजन है। इसका उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ है a particular dental and labial consonant {म.} कगदयवाणं णिच्चं वीयम्मि ठिओ सरो होइ। (कगतदयवानां नित्यं द्वितीये स्थितः स्वरो भवति) नाट्य., श्लोक-10/17, पृष्ठ 543

व va वा < अव्यय [Indeclinable] विकल्प, समुच्चय alternative, a complete set {म.} गामम्मि जणाइणो, सुण्णे रण्णे व ण विसेसो। (ग्रामे जनाकीर्णे, शून्येऽरण्ये वा न विशेषः) समण., गाथा- 491/29, पृष्ठ 154

व va इव < अव्यय [Indeclinable] समान, उपमावाचक अव्यय similar, alike {म.} बाले य मन्दिए मूढे, बज्झइ मच्छिया व खेलम्मि। (बालश्च मन्दितः मूढ, वध्यते मक्षिकेव श्लेष्मणि) समण., गाथा-50/5, पृष्ठ 15

वंक (पंक) vaṅka (paṅka)पङ्क < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] पंक, कर्दम, कीचड़ mud {म.} आयाम-परिट्ठिअ-*वंक*-विअड-लिंगा थलाहोआ। (आयाम-परिष्ठितपङ्क-विकटलिङ्गाः स्थलाभोगाः) गउडवहो, गाथा-676, पृष्ठ 101

वंक vaṅka वक्र < विशेषण [Adjective] वक्र, बाँका, कुटिल crooked, curved, twisted, tortuous {म.} जे भग्गा विहवसमीरणेण *वंकं* ठवंति पयमग्गं। (ये भग्ना विभवसमीरणेन वक्रं स्थापयन्ति पदमार्गम्) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा,पृष्ठ 48/142

वंचणवअण vañcaṇa-vaaṇa वञ्चनावचन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] चिकनी चुपड़ी बातें, ठगने वाली बातें, चातुर्यपूर्णबातें to flatter, to cajole, etc. {शौ.} (इरावती-) अविस्सणीआ पुरिसा। अत्तणो *वंचणवअणं* पमाणीकरिअ अक्खिताए वाहजणगीद-गहीदचित्तताए विअ हरिणीए एदं ण विण्णादं

मए । (अविश्वासनीयाः पुरुषाः। आत्मनो वञ्चनावचनं प्रमाणीकृत्याक्षिप्तया व्याधजनगीतगृहीतचित्तयैव हरिण्यैतन्न विज्ञातं मया) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19, पृष्ठ 285/3

वंचिद (वंचिअ) vañcida (vañcia) वञ्चित< विशेषण [Adjective] वंचित, रहित deprived, deceived, cheated, swindled, tricked {शौ.} (सुदर्शना-) अणन्तरं अय्याए *वंचिदाए* चळदी विअ मे हिअअं कोद्दूहळेण तुस्सदि। (अनन्तरमार्यया वञ्चितया चलतीव मे हृदयं, कौतूहलेन तुष्यति) भासनाटक., अविमार., गाथा-14/6, पृष्ठ 184

वंजुल vañjula वञ्जुल < संज्ञा (पुं.) [Noun] वेंत वृक्ष, अशोक वृक्ष, पक्षि विशेष bamboo tree, Ashoka tree, special type of bird {म.} पुव्वेण सणं पच्छेण *वंजुला* दाहिणेण वडविडवो। (पूर्वेण शणः पश्चाद् वञ्जुला दक्षिणेन वटविटपः) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 160/474

वंदणीअ vandaṇīa वन्दनीय < विशेषण [Adjective] अभिवादन के योग्य, प्रणाम के योग्य, अभिनन्दनीय respectable, worthy for salutation, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) सम्पदं तुमं ज्जेव *वंदणीआ* संवुत्ता। (साम्प्रतं त्वमेव वन्दनीया संवृत्ता) मृच्छ., पृष्ठ 223/4

वंस vaṁsa वंश < संज्ञा (पुं.) [Noun] बाँसुरी, बाँस, मुरली, जाति, परिवार, कुटुम्ब, परंपरा, लाठी, संग्रह, लम्बाई नापने का विशेष माप (दस हाथ के बराबर) flute, bamboo, cane, cross beam, cast, family, dynasty, etc. {शौ.} (स्थापक-) एसो वंसो ठाविदो ठाणे। (एष वंशः स्थापितो स्थाने) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 6/4

वंसकर vaṁsa-kara वंशकर < विशेषण [Adjective] पुत्र, कुलप्रवर्तक, वंशस्थापक son, an ancestor, founder of a family, etc. {शौ.} (उर्वशी-) जदा सो मे पिअसही राएसी तुइ समुप्पण्णस्स *वंसकरस्स* मुहं पेक्खिस्सदि तदा तुए भूओ वि मम समीवं आअंतव्वं त्ति। (यदा स मे प्रियसखी राजर्षिस्त्वयि समुत्पन्नस्य वंशकरस्य मुखे प्रेक्षिष्यते तदा त्वया भूयोऽपि मम समीपमागन्तव्यमिति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15/5, पृष्ठ 230

वअ (वय / वद) vaa (vaya / vada) व्रत < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] व्रत, धार्मिक प्रतिज्ञा fast, pledge, vow, etc. {शौ.} (देवी-) होहि वा मा वा। जधाणिद्दट्ठं संपादिदं मए पिआणुप्पसादणं णाम *वदं।* (भव वा मा वा। यथानिर्दिष्टं संपादितं मया प्रियानुप्रसादनं नाम व्रतम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-14/3, पृष्ठ 187

वअण (वयण) vaaṇa (vayaṇa) वदन < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] वदन, मुख face, features {म.} वअणे विमलुज्जोअं दररोत्तूण सल्लिञ्जलिं व णिमेन्तो। (वदने विमलोद्योतं दररुदित्वा सलिलाञ्जलिमिव नियोजयन्) सेतुबन्धं, गाथा-41/1, पृष्ठ 29

वअण vaaṇa वचन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] वचन, भाषण, उद्गार, उच्चारण करने वा कहने की क्रिया, पाठ करना, आदेश, उपदेश, घोषणा, वचन (एकवचन आदि) the word, speech, saying, uttering, the act of pronunciation, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) ण वो *वअणं* सुणिस्सं। (न युवयोर्वचनं श्रोष्यामि) अभि.शाकु., पृष्ठ 148/1

वक्क vakka वक्र < विशेषण [Adjective] कुटिल shrewd, cunning {शौ.} (प्रियंवदा-) सहि! पकिदि-*वक्को* सो कस्स अणुणअं पडिगेण्हदि ? (सखि! प्रकृतिवक्रः सः कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति ?) अभि.शाकु., पृष्ठ 262/4

वक्कल vakkala वल्कल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] वल्कल, वृक्ष की छाल bark of a tree, etc. {शौ.} (विदूषक-) संपदं तक्केमि अत्तभवदा *वक्कलं* गेण्हिअ तवोवणं गंदव्वं त्ति। (साम्प्रतं तर्कयाम्यत्रभवता वल्कलं गृहीत्वां तपोवनं गन्तव्यमिति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15/5, पृष्ठ 230

वक्कळ vakkaḷa वल्कल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] वल्कल, वृक्ष की छाल bark of tree, etc. {शौ.} (अवदातिका-) परिहासेण वि इमं *वक्कळं* उवणअन्तीए मम एत्तिअं भअं आसी, किं पुण ळोभेण परधणं हरन्तस्स। (परिहासेनापीमं वल्लकल-मुपनयन्त्या ममैतावद् भयमासीत्, किं पुनर्लोभेन परधनं हरतः) प्रतिमा., भासनाटक., अंक-1, पृ. 251

वक्खाण vakkhāṇa व्याख्यान < संज्ञा (नपुं.) [Noun] व्याख्यान, बखान करना,

विशद रूप से अर्थ प्ररूपण lecture, speech, exposition, interpretation, elaboration {शौ.} (मागधिका-) भट्टिदारिए! कहेमि *वक्खाणं।* (भर्तृदारिके! कथयामि व्याख्यानम्) अविमार., भास., गाथा-13/3, पृष्ठ 134

वग्घ vaggha व्याघ्र < संज्ञा (पुं.) [Noun] शेर, रक्त एरण्ड का पेड़, करञ्ज वृक्ष tiger, etc. {शौ.} (वृद्धगोपालक-) एत्थ *वग्घा* वराहा हत्थिण्णे पाणीअं पिबिअ तहिं तहिं एव्व विमरन्ति। (अत्र व्याघ्रा वराहा हस्तिन: पानीयं पीत्वा तत्र तत्रैव विम्रियन्ते) बाल., भासनाटक., श्लोक-4/3, पृष्ठ 545

वच्च vacca √ व्रज् < क्रिया [सक.] [Verb] जाना, गमन करना to go {म.} मा *वच्चह* वीसंभं पमुहे बहु कूडकवड भरियाणं। (मां व्रजत विश्रम्भं प्रमुखे बहु कूटकपटभृतानाम्) वज्जालग्गं, दुज्जण-वज्जा, पृष्ठ 22/61

वच्छ vaccha वक्षस् < संज्ञा (पुं., नपुं.) [noun] वक्ष, छाती the breast, bosom, chest {म.} न महु महणस्स वच्छे मज्झे कमलाण नेय खीरहरे। (न मधुमथनस्य वक्षसि मध्ये कमलानां नैव क्षीरगृहे) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 40/118

वज्ज (वइर) vajja (vaira) वज्र < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] वज्र, रत्न विशेष, हीरा, इन्द्र का अस्त्र, बिजली, कोकिलाक्ष वृक्ष, श्वेत कुशा, वज्रपुष्प, एक प्रकार का लोहा, ज्योतिष का एक योग a thunderbolt, a diamond in general, a kind of kuśa grass, etc. {म.} नयणाण पडउ वज्जं अहवा *वज्जाउ* वड्डिलं किं पि। (नयनयो: पततु वज्रमथवा वज्रादधिकं किमपि) वज्जालग्गं, नयणवज्जा, पृष्ठ 102/299

वज्जिअ vajjia वर्जित < विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] रहित, वर्जित forbidden, tabooed, inhibited, etc. {म.} सद्दपलोट्टं दोसेहि *वज्जियं* सुललियं फुडं महु रं। (शब्दपर्यस्तं दोषैर्वर्जितं सुललितं स्फुटं मधुरम्) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 8/24

वज्झट्ठाण vajjha-ṭṭhāṇa वध्यस्थान< संज्ञा (नपुं.) [Noun] वध्यस्थान, वध्यभूमि, मारने का स्थान to the peace of execution, to be killed or slain place, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) वअस्स को जीवलोए जीविदुकामो अज्जचाणक्कस्स आणत्तिं पडिऊलेदि। ता एहि। चण्डालवेसधारिणो

भविअ चन्दणदासं *वज्झट्ठाणं* णआम। (वयस्य को जीवलोके जीवितुकाम आर्यचाणक्यस्याज्ञप्तिं प्रतिकूलयति। तदेहि। चण्डालवेषधारिणौ भूत्वा चन्दनदासं वध्यस्थान नयावः) मुद्रा., श्लोक 3, पृष्ठ 83/6

वट्ट vaṭṭha √ वृत् < क्रिया [अक.] [Verb] वर्तना, होना, आचरण करना to happen, occur, to behave, etc. {शौ.} (चित्रलेखा-) सहि! अच्छरोवारपज्जाएण इह भअवदो सुज्जस्स पादमूलोवट्टाणे *वट्टदि* त्ति बलिअं क्खु उव्वसीए उक्कंठिदम्हि। (सखि! अप्सरोवार पर्यायेणेह भगवतः सूर्यस्य पादमूलोपस्थाने वर्तत इति बलवत्खलु उर्वश्यामुत्कण्ठितास्मि)विक्रमो., कालिदास ग्रन्था.,श्लोक-2/3,पृष्ठ194

वडही (वलहि / वलही) vaḍahī (valahi / valahī) वलभी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वलभी, छज्जा, बरामदा, महल का अग्रस्थ भाग, कठियाबाड़ का प्राचीन नगर the terrace, etc. {म.} णीसद्दाओ वि इह झत्ति घडिअ-सद्दाओ *वडहीओ*। (निःशब्दा अपीह झटिति घटितशब्दा बलभ्यः) गउडवहो, गाथा-684, पृष्ठ 103

वड्ढिद (वड्ढिअ) vaḍḍhida (vaḍḍhia) वर्धित < विशेषण [Adjective] वर्धित, बढ़ाया हुआ increased, raised, etc. {शौ.} (विदूषक-) एव्वं मन्तअन्तेण मे *वड्ढिदं* कोदूहलं। (एवं मन्त्रयता मम वर्धितं कौतूहलम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2/2, पृष्ठ 155

वड्ढ vaḍḍha √ वृध् < क्रिया [अक.] [Verb] वृद्धि होना, बढ़ना to grow, to increase, etc. {शौ.} (विदूषक-) *वड्ढदु* भवं। (वर्द्धतां भवान्) मृच्छ., पृष्ठ 25/5

वणजोसिणी vaṇa-josiṇī वनज्योत्सना< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पुष्प, एक प्रकार की चमेली a kind of jasmine {शौ.} (प्रियंवदा-) जाणासि किं सउंदला *वणजोसिणिं* अदिमेत्तं पेक्खदि त्ति। (जानासि किं शकुन्तला वनज्योत्स्ना-मतिमात्रं पश्यतीति) अभि. शाकु., पृष्ठ 138/1

वणराइ vaṇarāi वनराजि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वनराजि, वृक्ष समूह a grove or long row of trees, group of trees, etc. {शौ.} (सख्यौ-) हद्धी हद्धी, अंतर्हिदा सउन्दला *वणराईए*। (हा धिक् हा धिक्

अन्तर्हिता शकुन्तला वनराज्या) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-22, पृष्ठ 78/4

वणिजदारअ vaṇija-dāraa वणिग्दारक< संज्ञा (पुं.) [Noun] बनिये का पुत्र, बनिया का बच्चा trader's son, son of shopkeeper {शौ.} (चेटी-) किण्णु हु *वणिजदारओ* कोच्चि आगन्तुओ। (किन्नुखलु वणिग्दारकः कश्चिदागन्तुकः) चारु., भासनाटक., अंक-2, पृष्ठ 214

वण्णपरिअअ vaṇṇa-pariaa वर्णपरिचय< संज्ञा (पुं.) [Noun] वर्णपरिचय, स्वर साधना, स्वरों का अभ्यास करना, राग अलापना skill in song or music, etc. {शौ.} (विदूषक-) जाणे तत्तहोदी हंसवदिआ *वण्णपरिअअ* करोदित्ति। (जाने तत्रभवती हंसपदिका वर्णपरिचयं करोतीति) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., पृष्ठ 72/5

वण्णावर vaṇṇāvara वर्णावर < विशेषण [Adjective] दूसरे वर्ण वाला, दूर का other class, distant, etc. {शौ.} (वकुलावलिका-) अत्थि देवीए *वण्णावरो* भादा वीरसेणो णाम। (अस्ति देव्या वर्णावरो भ्राता वीरसेनो नाम) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-5/4, पृष्ठ 244

वण्णिआ baṇṇiā वर्णिका < संज्ञा (पुं.) [Noun] लेखनी pencil, pen {शौ.} (सूत्रधार-) का वि हु वण्णिआओ पट्टए घट्टेदि। (काऽपि खलु वर्णिका पट्टे वर्त्तयति) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 6/4

वत्तमाण vattamāṇa वर्तमान < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] वर्तमान, चलता काल, विद्यमान, विद्यमानता present, existing, current, etc. {शौ.} (प्रतिहारी-) अय्य! णिच्चं भट्टिपादमूले वत्तमाणस्स जणस्स अदिट्ठपुरुवो अअं सम्भमो। (आर्य! नित्यं भर्तृपादमूले वर्तमानस्य जनस्यादृष्टपूर्वोऽयं संभ्रमः) अभिषेक., भासनाटक., श्लोक-1/3, पृष्ठ 338

वत्तुकाम vattukāma वक्तुकाम< विशेषण [Adjective] बोलने की चाह वाला/वाली, कहने की चाह वाला/वाली desire of speaking {शौ.} (वासवदत्ता-) अय्य! ण हि एव्वं *वत्तुकामा,* अहं वि णाम उस्सारइदव्वा होमि त्ति। (आर्य! न ह्येवं वक्तुकामा, अहमपि

नामोत्सारयितव्या भवाभीति) स्वप्न., भासनाटक., गाथा 3, पृष्ठ 2/1

वत्थु vatthu वस्तु < संज्ञा (नपुं.) [Noun] वस्तु, पदार्थ thing, object, material substance {म.} जह जह वड्ढंति थणा तह तह झिज्जंति पंच *वत्थूणि* । (यथा यथा वर्धते स्तनौ तथा तथा क्षीयन्ते पञ्च वस्तूनि) वज्जालग्गं, वाहवज्जा, पृष्ठ 70/208

वयण vayaṇa वचन < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] वचन, उक्ति, संख्या बोधक व्याकरण speech, words, recitation, a command, the signification or meaning of a word, number (in grammar), etc. {म.} देहि त्ति कह नु भण्णइ सुपुरिसववहारवाहिरं *वयणं।* (देहीति कथं नु भण्यते सुपुरुष व्यवहारबहिर्भूतं वचनम्) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 54/158

वरं (परं) vara (paraṁ) परम् < अव्यय [Indeclinable] बाद, उपरान्त, किन्तु, केवल last, end, but, only, etc. {शौ.} (देवी-) हं इदो *वरं* किण्णु खु भविस्सदि। (अहम् इतः परं किन्नु खलु भविष्यति) अविमार., भासनाटक., अंक-1, पृष्ठ 112

वरकामिणी vara-kāmiṇī वरकामिनी < विशेषण [Adjective] श्रेष्ठ कामिनी, श्रेष्ठ प्रिया charming lady, beautiful delicate woman {म.} *वरकामिणि* व्व गाहा गाहिज्जंती रसं देइ। (वरकामिनीव गाथा गीयमाना (गाह्यमाना) रसं ददाति) वज्जालग्गं, गाहावज्जा, पृष्ठ 4/12

वरणअ (वरणय) varaṇaa (varaṇaya) वरणक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] तृण विशेष a kind of grass {म.} णव-*वरणअ*-गोरंतर-हिंसी-वण-मत्त-लावअ-कुलाओ। (नववरणक-गौरान्तरहिंसी वनमत्तलावककुलाः) गउडवहो, गाथा-396, पृष्ठ 61

वरण्ड (वरंड) [देशज] **varaṇḍa** वरण्ड < संज्ञा (पुं.) [Noun] तृण पुञ्ज, तृण समूह, प्राकार, गाल पर लगाई जाती कस्तूरी आदि की छटा, समूह a heap of grass, a multitude group, etc. {शौ.} (सूत्रधार-) अहं चण्डप्पवादळण्डुओ विअ वरण्डी पव्वदादो दूरं आरोविअ पाडिदो म्हि। (अहं चण्डप्रवातलण्डित इव वरण्डः पर्वताद् दूरमारोप्य पतितोऽस्मि) चारु.,भासनाटक., अंक-1,पृष्ठ 192

वराअ (वराय / वरय) varāa (varāya / varaya) वराक < विशेषण [Adjective] बेचारा, दीन poor, miserable, unhappy, unfortunate {म.} किं करइ किर वराओ साहसववसायमाण-गरुओ वि। (किं करोति किल वराक: साहस व्यवसायमानगुरुरपि) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 44/130

वराई varāī वराकी < विशेषण [Adjective] दीन, बेचारी unfortunate, helpless {म.} गाहा रुअइ *वराई* सिक्खिज्जंती गवारलोएहिं। (गाथा रोदिति वराकी शिक्ष्यमाणा ग्रामीणलोकै:) वज्जालग्गं, गाहावज्जा, पृष्ठ 6/15

वरिस varisa वर्ष < संज्ञा (नपुं., पुं.) [Noun] साल, वर्ष, संवत्सर, वृष्टि a year, era (as vikrami), raining {म.} छणवंचणेण *वरिसो* नासइ दिवसो कुभोयणे भुत्ते। (क्षणवञ्चनेन वर्षो नश्यति दिवस: कुभोजने भुक्ते) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 30/89

वरिस varisa √ वृष् < क्रिया [सक.] [Verb] बरसना, वृष्टि करना to rain, etc. {म.} (नेपथ्ये-) जाव णु णवतडसामलि, धाराहरु वरिसेइ। (यावन्नु नव तडिच्छ्यामलो धाराधरो वर्षति) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-8/4, पृष्ठ 197

वलय valaya वलय < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] कंकण, वलय, पृथ्वी-वेष्टन, घनवात, नदी आदि के बाँक से वेष्टित भू-भाग, वलयाकार, वृक्ष, नारिकेल a bracelet, armlet, a ring, coal, circle, circumference tree, coconut, etc. {म.} सुम्मइ *वलयाण* रवो नेउरसद्दो वि निब्भरो जाओ। (श्रूयते वलयानां रवो नूपुरशब्दोऽपि निर्भरो जात:) वज्जालग्गं, सुरयवज्जा, पृष्ठ 108/321

वल्लह vallaha वल्लभ < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] प्रिय, पति dear one, favourite, beloved, husband {म.} सो नवरि माणुसाणं देवाणं वि वल्लहो होइ। (स न केवलं मानुषाणां देवानामपि वल्लभो भवति) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 30/88

वल्लहजण vallaha-jaṇa वल्लभजन < संज्ञा (पुं.) [Noun] वल्लभजन, प्रियतम, इष्टजन beloved, hasband, ete. {शौ.} (विदूषक-) तदो सा देवीए पुच्छिदा। किं णु ओलोइदो *वल्लहजणो* त्ति। (तः सा देव्या

पृष्टा। किन्ववलोकितो वल्लभजन इति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., पृष्ठ 290/4

वळक्कार (वलकार) vaḷakkāra (valakāra) बलात्कार < संज्ञा (नपुं.) [Noun] बलपूर्वक, बलात्कार rape, eriminal assault, ravishment, violence, oppression {मा.} (शकार-) माळिश! वडुअ! माळिश! भणेहि तं दलिद्दशत्थवाहपुत्रं चाळुदत्तवडुअं मम वअणेण-ळाअशाळे शण्ठाणे शवट्टेण शीशेण अणुवन्ध भणादि-णाडअइत्थिआ वशञ्चशेणिआ णाम गणिकादारिआ शुवण्णवण्णा दुवेहि अम्मेहि *वळक्कारेण* णीअमाणा महन्तेण शुबण्णाळङ्कारेण तव गेहं पविट्ठा। (मारिष! वटुक! मारिष! भण तं दरिद्रसार्थवाहपुत्रं चारुदत्तवटुकं मम वचनेन- राजश्यालः संस्थानकः सपट्टेन शीर्षेणानुवन्ध भणति-नाटकस्त्री वसन्तसेना नाम गणिकादारिका सुवर्णवर्णा द्वाभ्यामावाभ्यां बलात्कारेण नीयमाना महता सुवर्णलङ्कारेण तव गेहं प्रविष्टा) चारु. भासनाटक., गाथा-26/1, पृष्ठ 208

वळ्ळह vaḷḷaha वल्लभ < संज्ञा (पुं.) [Noun] वल्लभ, पति, स्वामी, नाथ dear one, beloved, lover, husband, favourite, etc. {शौ.} (नलिनिका-) को तुवं, मम सव्वाभरणं गह्मिअ *वळ्ळहो* जादो। (कस्त्वं, मम सर्वाभरणं गृहीत्वा वल्लभो जातः) भासनाटक., अविमार., गाथा-5/5, पृष्ठ 171

ववसाय vavasāya व्यवसाय < संज्ञा (पुं.) [Noun] व्यवसाय, व्यापार, कार्य, उद्यम, अनुष्ठान business, occupation, effort, action, employment following a particular profession or trade {म.} जइ विसइ विसमविवरं लंघइ उयहिं करेइ *ववसायं*। (यदि विशति विषमविवरे लङ्घयत्युदधिं कुरुते व्यवसायम्) वज्जालग्गं, दिव्ववज्जा, पृष्ठ 42/122

ववसिद (ववसिअ / ववस्सिअ) vavasida (vavasia / vavassia) व्यवसित < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] कार्य, कर्म, प्रयत्न, चेष्टित, उद्यत, त्यक्त, पराक्रमी, निश्चयवाला work, attemet, undertaken, resolved, settled, devised, planned, contrivance, etc. {शौ.} (चेटी-) किं अय्यमिस्सेहि *ववसिदं* । (किमार्यमिश्रैर्व्य-वसितम्) चारु., भासनाटक., गाथा-23/1, पृष्ठ 206

ववहार vavahāra व्यवहार < संज्ञा (पुं.) [Noun] व्यवहार, व्यापार, नय-विशेष, मुमुक्षुकी प्रवृत्ति-निवृत्ति का कारण-भूत ज्ञान विशेष, जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष, दोष के नाशार्थ किया जाने वाला प्रायश्चित, विवाद, फैसला, कामकाज, जीवराशि-विशेष conduct, behavior, action, occupation, nature, etc. {शौ.} (रदनिका-) जाद! कुदो अम्हाणं सुवण्ण-*ववहारो* ? (जात! कुतोऽस्माकं सुवर्णव्यवहारः ?) मृच्छ., पृष्ठ 318/6

वषुदेव (वसुदेव) vaṣudeva (vasudeva) वसुदेव < संज्ञा (पुं.) [Noun] श्रीकृष्ण और बलदेव के पिता father of Shri Kriṣṇā and Valadeva {मा.} (नन्दगोप-) अम्मो षळयोगेण भट्टा वषुदेव त्ति जाणामि। (अम्मो स्वरयोगेन भर्ता वसुदेव इति जानामि) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 518

वसंत vasanta वसन्त < संज्ञा (पुं.) [Noun] वसन्त, ऋतु विशेष, चैत्र और वैशाख मास का समय, चैत्र मास, संगीत में एक राग, कामदेव का मास the spring, vernal season, comprising the two months chaitra and vaiśākha, name of a musical rāga, spring personified as a deity and regarded as a companion of Kāmadeva, etc. {म.} मन्न जियंतो पेच्छसि पउरा रिद्धी *वसंतस्स* । (मन्ये जीवन् पश्यसि प्रचुरा ऋद्धीर्वसन्तस्य) वज्जालग्गं, इंदिंदिरवज्जा, पृष्ठ 84/244

वसंतावदार vasantāvadāra वसन्तावतार< संज्ञा (पुं.) [Noun] वसन्त का अवतार, वसन्त का आगमन arrival of spring season, the time or season of spring, etc. {शौ.} (विदूषक-) पेक्खदु भवं वसंतावदार सूअअं अहिरामत्तणं पमदवणस्स। (प्रेक्षतां भवान्वसन्तावतार-सूचकमभिरामत्वं प्रमदवनस्य) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-6/2, पृष्ठ 157

वसण vasaṇa व्यसन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] कष्ट विपत्ति, राजादि कृत उपद्रव, द्यूत, मद्यपान आदि बुरी आदत misfortune, addiction, passion, wretched, etc. {म.} तं मित्तं कायव्वं जं किर वसणम्मि देसकालम्मि। (तन्मित्रं कर्त्तव्यं यत् किल व्यसने देशकाले) वज्जालग्गं, मित्तवज्जा,पृष्ठ 24/68

वसदि vasadi वसति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] भवन, घर, निवास स्थान, शिविर, पडाव, रहना, निवास करना, आधार a house, dwelling residence, habitation, camp, halting place, Jain monastery, etc. {शौ.} (उर्वशी-) सहि! मदणो क्खु तुमं आणवेदि। ता सिग्घं णेवि मं तस्स सुहअस्स *वसदिं*। (सखि! मदन: खलु त्वामाज्ञापयति। तच्छीघ्रं नय मां तस्य सुभगस्य वसतिम्) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-9/3, पृष्ठ 180

वसह vasaha वृषभ < संज्ञा (पुं.) [Noun] बैल, उत्तम, वृष राशि, ज्ञानी साधु, ऋषभदेव (जैन परम्परानुसार प्रथम तीर्थंकर) bull, bullock, Taurus (the second sign of the zodiac), first jain Tīrthaṅkar, etc. {म.} पेच्छह *वसहेण* समं हरेण वोलाविओ अप्पा। (प्रेक्षध्वं वृषभेण समं हरेणातिक्रामित आत्मा) वज्जालग्गं, मित्तवज्जा, पृष्ठ 24/70

वसीकरण vasīkaraṇa वशीकरण< विशेषण [Adjective] वशीकरण, वश में करने के लिए किया जाने वाला मन्त्र आदि का प्रयोग enchantment, mantra to entice or possess, etc. {म.} छंदाणुवत्तणं पिययमस्स एयं *वसीकरणं*। (छन्दानुवर्तनं प्रियतमस्यैतद्वशीकरणम्) वज्जालग्गं, कुट्टिसिक्खावज्जा, पृष्ठ 190/553

वसुआअ [देशज] **vasuāa** शुष्क/ उद्वात < विशेषण [Adjective] शुष्क parched, dried up {म.} आवंडु-सलिल-लंघिअ-*वसुआआ* मलिण-सेवल-सिहाओ। (आपाण्डुसलिल-लङ्घितशुष्कामलिनशैवलशिखाः) गउडवहो, गाथा-385, पृष्ठ 160

वसुहा vasuhā वसुधा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पृथ्वी, धरती, जमीन the earth, producing wealth, etc. {शौ.} बंधो णिरओ संतो सस्सं खंडेदि तह य *वसुहं* पि। (बंधात् निरत: सन् सस्यं खंडयति तथा च वसुधामपि) अट्ठपाहुड लिंगपाहुड पृष्ठ 366/16

वह vaha वध < संज्ञा (पुं., स्त्री.) [Noun] वध, हत्या, मारना killing, murder, slaughter, etc. {शौ.} (पुरुष-) अत्थि दाव एत्थ पढमं चन्दउत्तहदएण अज्जसअ-उदासस्स *वहो* आणत्तो। (अस्ति तावदत्र प्रथमं चन्द्रगुप्तहतकेनार्यशकटदासस्य वध आज्ञप्तः) मुद्रा., श्लोक 19, पृष्ठ 91/6

वहू vahū वधू < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वधू, पुत्रवधू, नववधू, पाणिगृहीता, पत्नी,

भार्या, नारी daughter-in-law, bride, wife, etc. {म.} उत्तुंगथोरथणवट्टसालसा जं *वहू* सुवइ। (उत्तुंगपृथुस्तनपट्टसालसा यद्वधूः स्वपिति) वज्जालग्गं, वाहवज्जा, पृष्ठ 72/213

वाअ (वाय) vāa (vāya) वात < संज्ञा (पुं.) [Noun] वात, हवा, एक देव विमान (जैन परम्परानुसार) air, wind, etc. {म.} *वाएण* किं न नीयं अप्पाणं पत्थणभएण। (वातेन किं न नीतं आत्मानं प्रार्थनभयेन) वज्जालग्गं, दीणवज्जा, पृष्ठ 46/135

वाअविहव vāa-vihava वाग्विभव < संज्ञा (पुं.) [Noun] वाणी का सामर्थ्य speech magnificence, speech greatness {शौ.} (विदूषक-) पसंसिदुं णत्थि मे *वाअविहवो* । (प्रशंसितुं नास्ति मे वाग्विभवः) मृच्छ., पृष्ठ 246/4

वाअस vāasa वायस < संज्ञा (पुं.) [Noun] कौवा, सुगन्धित अगर की लकड़ी, अगरुकाष्ठ, तारपीन a crow, fragrant aloe-wood, turpentine {शौ.} (विदूषक-) सदहिणा कलमोदणेण पलोहिदा ण भक्खन्ति *वाअसा* वलिं सुधाशवण्णदाए। (सदध्ना कलमोदनेन प्रलोभिता न भक्षयन्ति वायसा बलिं सुधासवर्णतया) मृच्छ., पृष्ठ 231/4

वाइद (वाइअ) vāida (vāia) वादित विशेषण [Adjective] बजाया हुआ, वादित rung, beat (a durm) produce a sound, extolled worshipped {शौ.}(वृद्धगोपालक-) षुट्ठु *वाइदं*। (सुष्ठु वादितम्) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 540

वाउहय vāu-haya वायुहत < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] वायु से आहत broken down by wind {म.} अमरतरुकुसुममंजरि *वाउहया* महु यरेण जं रसिया। (अमरतरुकुसुममञ्जरी वायुहता मधुकरेण यद्रसिता) वज्जालग्गं, सुरतरुविसेसवज्जा, पृष्ठ 88/256

वाओली (वाओलि) vāolī (vāoli) वातालीं/ वातालि < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] चक्रवाक, पवन समूह a whirlwind {म.} *वाओलीसु* वि जाआ इह विरल-रआओ भूमीओ। (वातालीष्वपि जाता इहविरलरजस्का भूमयः) गउडवहो, गाथा-555, पृष्ठ 84

वाचंजम vācañjama वाचंयम < संज्ञा (नपुं.) [Noun] वाणी का ठहरना, चुप होना to stop voice, to be silent/quit, etc.

{शौ.} (विदूषक-) अइ भो! उवट्ठिदा देवी। ता *वाचंजमो* होहि। (अयि भोः! उपस्थिता देवी। तद्वाचंयमो भव) विक्रमो., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-10/3, पृष्ठ 182

वाचाड (वायाड) vācāḍa (vāyāḍa) वाचाट < विशेषण [Adjective] वातूनी, वाचाल loquacious talkative, chattering, outspoken {शौ.} (कुरङ्गी-) *वाचाडे*! किं अण्णो वि अत्थि। (वाचाटे! किमन्योऽप्यस्ति) अविमार., भास., गाथा-13/3, पृष्ठ 133

वाच्चल vāaccala वाक्छल < विशेषण [Adjective] वाक् छल, शब्दों के द्वारा बेईमानी, टालमटूल उत्तर, गोलमाल equivocation, prevarication, quibble, etc. {म.} (चन्दनदास-) अज्ज एत्तिअं अत्थि मे *वाअच्चलं*। (आर्य एतावदस्ति मे वाक्छलम्) मुद्रा., श्लोक-21, पृष्ठ 16/1

वाडिआ vāḍiā वाटिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] बगीचा, वाटिका a garden, an orchard {शौ.} (वसन्तसेना-) अज्ज! का तुम्हाणं सुक्ख-रुक्ख-*वाडिआ* वुच्चदि ? (आर्य! का युष्माकं शुष्क-वृक्ष-वाटिका उच्यते ?) मृच्छ., पृष्ठ 296/5

वाणल (वाणर) vāṇala (vāṇara) वानर < संज्ञा (पुं.) [Noun] बन्दर, विद्याधर मनुष्यों का वंश, वानर वंश में उत्पन्न मनुष्य monkey, ape, etc. {मा.} (संवाहको भिक्षु-) इध *वाणला* विलुप्पंति। (इह वानरा विलुम्पन्ति) मृच्छ., पृष्ठ 445/8

वाणिअ vāṇia वणिज्/ वणिक् < संज्ञा (पुं.) [Noun] बनिया, व्यापारी, सौदागर a merchant, trader, dealer, a man engaged in business {शौ.} (विदूषक-) दाणिं विक्किणिद-पण्णो विअ *वाणिओ* अहं सुहं सुविस्सं। (इदानीं विक्रीतपण्य इव वणिक् अहं सुखं स्वप्स्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 170/3

वाणिज्ज (वणिज) vāṇijja (vaṇija) वाणिज्य< संज्ञा (नपुं.) [Noun] वाणिज्य, व्यापार commerce, trade, a jain ascetic clan, etc. {शौ.} (चन्दनदास-) अज्ज! अध इं, अज्जस्स प्पसाएण अखण्डिदा मे *वाणिज्जा*। (आर्य! अथ किम्, आर्यस्य प्रासादेन अखण्डिता मे वाणिज्याः) मुद्रा., श्लोक-21, पृष्ठ 14/1 {म.} असि-मसि-कसि-*वाणिज्ज*-सिप्पसंगया। (असि-मसि-

कृषि-वाणिज्य-शिल्पसंगता) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 3

वाणिय (वणि) vāṇiya (vaṇi) वणिज्/ वणिक् < संज्ञा (पुं.) [Noun] बनिया, व्यापारी, सौदागर a merchant, trader, dealer, a man engaged in business {म.} कतो *वाणिय* अम्हं मयचम्मपरिग्गहो नत्थि। (कुतो वणिजास्माकं मृगचर्मपरिग्रहो नास्ति) वज्जालग्गं, वाहवज्जा, पृष्ठ 74/214

वाणी vāṇī वाणी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वाणी, भाषण, वचन, भाषा, बोलने की शक्ति, ध्वनि, विद्या की देवी सरस्वती voice, speech, language, words, goddess of speech, Saraswati, etc. {म.} अण्णाणं पि परं पअट्टउ वरा *वाणी* छइल्लप्पिआ। (अन्येषामपि परं प्रवर्ततां वरा वाणी विदग्धप्रिया) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 1/1

वाद (वाय) vāda (vāya) √ वादय् < क्रिया [सक.] [Verb] बजाना to play upon a musical instrument, to beat (a dram) to ring (a bell), etc.{शौ.} (मल्लौ-) अङ्घो! *वादेथ वादेथ* सङखपटहाणि। (अङ्घो! वादयत वादयत शङ्खपटहान्) बाल., भासनाटक., अंक-5, पृष्ठ 553

वाद vāda √ वाद < क्रिया [verb] वादित, बजाया हुआ, वन्दित to produce a sound, to beat (a duram) to ring (a bell), to perform{शौ.} (विदूषक-) वीणा *वादीअन्ति*। (वीणा वाद्यन्ते) चारु., भासनाटक., गाथा-5/4, पृष्ठ 243

वाधि vādhi व्याधि < संज्ञा (पुं., स्त्री.) [Noun] व्याधि, रोग disease, ailment, malady, etc. {मा.} (वज्रलोमा-) होदि पुलिशश्श *वाधी* मलणं वा शेविदे अपश्छम्मि। (भवति पुरुषस्य व्याधिर्मरण वा सेवितेऽपथ्ये) मुद्रा., श्लोक 1, पृष्ठ 93/7

वाम vāma वाम < विशेषण [Adjective] बायाँ, वाम, प्रतिकूल left, reverse, refractory {म.} दाहिणकरेण खग्गं *वामेण* सिरं धरेइ निवडंतं। (दक्षिणकरेण खड्गं वामेन शिरो धारयति निपतत्) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 56/167

वामपाद vāma-pāda वामपाद < संज्ञा (नपुं.) [Noun] बॉया पैर, वामपाद left feet, left foot, etc. {मा.} (वृद्धगोपालक-)

तदो तं पि जाणिअ भट्टिदामोदळेण तष्ष *वामपादं* गह्णिअ उक्खिविअ पादिदाणि ताळफळाणि। (ततस्तमपि ज्ञात्वा भतृर्दामोदरेण तस्य वामपादं गृहीत्वोत्क्षिप्य पातितानि तालफलानि) बाल., भासनाटक., अंक-3, पृष्ठ 536

वामलूर [देशज] **vāmalūra** वामलूर < संज्ञा (पुं.) [Noun] वल्मीक, दीमक an ant hill {म.} संबूअ-चुण्ण-सबला इह णिहसण-मसिण-*वामलूराओ*। (शंबूकचूर्णशबला इह निघर्षणमसृणवल्मीकाः) गउडवहो,गाथा-529, पृष्ठ 80

वालग्गाहि vālaggāhi व्यालग्राहिन् < विशेषण [Adjective] व्यालग्राही, सँपेरा dragon, snake charmer, etc. {शौ.} अमन्तोसहिकुसलो *वालग्गाही* मत्तो मअंग आरोहो जिदकासी राअउलसेवओ त्ति एदे तिण्णि विणाससमणुहोन्ति। (अमन्त्रौषधि-कुशलो व्यालग्राही मत्तो मतङ्गजारोहो जितकाशी राजकुलसेवक इत्येते त्रयो विनाशमनुभवन्ति) मुद्रा., श्लोक-1, पृष्ठ 21/1

वावादिद vāvādida व्यापादित< भूतकालिक कृदन्त [Past Participle] मारा जाना, वध किया हुआ, कत्ल किया हुआ, विनष्ट किया हुआ, बर्वाद, घायल, चोटिल killed, slain, ruined destroyed, injured, hurt {शौ.} (ब्राह्मणी-) ण परिक्खदो ण *वावादिदो* अय्यउत्तो अय्यमेत्तेओ वा। (न परिक्षतो न व्यापादित आर्यपुत्र आर्यमैत्रेयो वा) चारु., भासनाटक., गाथा-15, पृष्ठ 232/3

वावी vāvī वापी< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वापी, चतुष्कोण जलाशय विशेष, कूप, वावडी step-well, etc. {म.} उड्डो लद्धप्फरिसो भरियं पि न मेल्लए *वाविं*। (खनको लब्धस्पर्शो भृतामपि न त्यजति वापीम्) वज्जालग्गं, उड्डवज्जा, पृष्ठ 200/588

वासहर vāsa-hara वासगृह < संज्ञा (नपुं.) [Noun] शयन गृह, सोने का कमरा sleeping room, bedroom, bedchamber {म.} ओ सुम्मइ *वासहरे* विवरीयरयाइ पोढमहिलाए। (अहो श्रूयते वासगृहे विपरीतरताया: प्रौढमहिलाया:) वज्जालग्गं, सुरयवज्जा, पृष्ठ 110/324

वासिय (वासिद) vāsiya (vāsida) वासित< विशेषण [Adjective] महकाया हुआ, सुगंधित, बासी (अन्न आदि), भावित,

संस्कारित, निवासित perfumed, scented, etc. {म.} तह *वासियं* वणं मालईइ कुसुमेहि निब्भरं सरए। (तथा वासितं वनं मालत्या कुसुमैर्निर्भरं शरदि) वज्जालग्गं, मालईवज्जा, पृष्ठ 80/232

वाह vāha व्याध < संज्ञा (पुं. स्त्री.) [Noun] व्याघ, शिकारी, लुब्धक, बहेलिया hunter, fowler, etc. {म.} (कुटुम्बिनी-) *वाहाण* मुद्धहरिणं हन्तुं को णाम णिब्बन्धो। (व्याधानां मुग्धहरिणं हन्तुं को नाम निर्बन्धः) मुद्रा., श्लोक 4, पृष्ठ 94/7

वाहअ vāhaa वाहक < संज्ञा (पुं.) [Noun] हाँकने वाला, ले जाने वाला carter, cartman, coachman {शौ.} (वीरक-) अरे पवहण-*वाहआ* ! मा दाव एदं पवहणं *वाहेहि*। (अरे प्रवहणवाहक! मा तावदेतत् प्रवहणं वाहय) मृच्छ., पृष्ठ 339/6

वाहगरुअ vāha-garua वाष्पगरुक< विशेषण [Adjective] अधिक वाष्प के साथ, अश्रुपूर्ण नेत्र, अधिक अश्रुपात, अत्यअधिक रोते हुए much flow of tears, etc. {शौ.} (चन्दनदास-) एदे अह्म पिअवअस्सा अंसुपादमेत्तकेण किदपदीआरा सरीरेहिं णिवट्टमाणां परिवत्तिदसोअदीणवअणा *वाहगरुआए* दिट्ठीए मं अणुगच्छन्ति। (एतेऽस्माकं प्रियवयस्या अश्रुपात मात्रेण कृतप्रतीकाराः शरीरैर्निवर्तमानाः परिवर्तित-शोकदीनवदना वाष्पगुरुकया दृष्टया मामनुगच्छन्ति) मुद्रा., श्लोक 3, पृष्ठ 94/7

वाहलिया (वाहली) vāhaliyā (vāhalī) क्षुद्रनदी< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] क्षुद्र नदी, छोटा जल प्रवाह small river, flow of water {म.} तह वि हु किं सेविज्जइ *वाहलिया* रायहंसेहिं। (तथापि खलु किं सेव्यते क्षुद्रनदी राजहंसैः) वज्जालग्गं, हंसवज्जा, पृष्ठ 88/259

वाहवहू vāha-vahū व्याधवधू < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] व्याधवधू, बहेलिया की स्त्री fowler's wife, hunter's wife {म.} अज्ज कयत्थो दियहो वाहवहू रूवजोव्वणुम्मइया। (अद्य कृतार्थो दिवसो व्याधवधू रूपयौवनोन्मत्ता) वज्जालग्गं, वाहवज्जा, पृष्ठ 70/206

वाहि vāhi व्याधि < संज्ञा (पुं. स्त्री.) [Noun] व्याधि, रोग disease, ailment, malady {म.} सच्चं जरए कुसलो

सरसुप्पन्नं य लक्खसे *वाहिं* । (सत्यं ज्वरे कुशल: स्वरसोत्पन्नं च लक्षसे व्याधिम्) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 174/512

विंझ viñjha विन्ध्य < संज्ञा (पुं.) [Noun] विन्ध्याचल पर्वत, व्याध, बहेलिया Vindhya mountain, fowler, etc. {म.} जइ *विंझो* च्चिय न सहइ ता करिणो कत्थ वच्चंति। (यदि विन्ध्यम् एव न सहते तत् करिण: कुत्र व्रजन्ति) वज्जालग्गं, विंझवज्जा, पृष्ठ 64/186

विंभिय vimbhiya विस्मित < विशेषण [Adjective] विस्मित, चकित surprised, amazed, astonished, wonderstruck {म.} ओ धुणइ दीवओ *विंभिओ* व्व पवणाहओ सीसं। (अहो धुनोति दीपो विस्मित इव पवनाहत: शीर्षम्) वज्जालग्गं, सुरयवज्जा, पृष्ठ 110/322

विआर viāra विकार < संज्ञा (पुं.) [Noun] विकृत, प्रकृतिभिन्न, परिवर्तन, बीमारी change of form or nature, transformation, deviation form the natural state, etc. {शौ.} (अनसूया-) *विआरं* खु परमत्थदो आजाणिअ अणारंभो पडिआरस्स। (विकारं खलु परमार्थतो-ऽज्ञात्वाऽनारम्भ: प्रतीकारस्य) अभि. शाकु., पृष्ठ 220/3

विउल viula विपुल < विशेषण [Adjective] विस्तीर्ण, प्रभूत, प्रचुर, विस्तीर्ण, उत्तम, अगाध, गम्भीर, विपुल large, big, wide, long, abundant, colossal, etc. {म.} *विउलं* फलयं थोरा सलायया तुं पि गणय कुसलो सि। (विपुलं फलकं दीर्घा शलाका त्वमपि गणक कुशलोऽसि) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 170/502

विएस viesa विदेश < संज्ञा (पुं.) [Noun] विदेश, परदेश, दूसरा देश foreign land or country, other country, etc. {म.} मज्झ पई य *विएसे* को तुज्झ वसेरयं देह। (मम पतिश्च विदेशे कस्तव वासं ददाति) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 166/492

विओअ vioa वियोग < संज्ञा (पुं.) [Noun] वियोग, जुदाई, विछोह, विप्रलंभ separation, disunion, etc. {शौ.} (श्रेष्ठिकायस्थौ) कधं एदाइं ताए *विओअं* गदाइं ? (कथमेतानि तस्या वियोगं गतानि?) मृच्छ., पृष्ठ 510/9

विक्किण vikkiṇa वि √क्री [विक्रीय]< क्रिया [सक.] [Verb] बेचना to sell {शौ.} (माथुर-) मादरं विक्किणिअ पअच्छ। (मातरं विक्रीय प्रयच्छ) मृच्छ., पृष्ठ 112/2

विज्ज (वेज्ज) vijja (vejja) वैद्य < संज्ञा (पुं.) [Noun] वैद्य, चिकित्सक, हकीम Ayurvedic doctor, physician {म.} एयं पुणो वि अंगं *विज्ज* विडंगेहि पन्नत्तं। (इदं पुनरप्यङ्गं वैद्य विडङ्गै: प्रज्ञप्तम्) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 174/512

विज्जा vijjā विद्या< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] विद्या, सम्यक् ज्ञान, अवगम, शिक्षा, विज्ञान, मंत्र (विद्या चौदह मानी गई हैं- चार वेद, छः वेदांग, धर्म, मीमांसा, तर्क या न्याय, पुराण) knowledge, learning, study, science, a particular skill or act, etc. {म.} *विज्जा* रज्जाउ वरं खमा वरं सुद्ध वि तवाओ। (विद्या राज्याद्वरं क्षमा वरं सुष्ठवपि तपसः) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 30/85

विज्जुआ (विज्जु) vijjuā (vijju) विद्युत् < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] बिजली, बलि नामक इन्द्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक-एक पटरानी, धरणेन्द्र की अग्रमहिषी (जैन परम्परानुसार) electricity, current, etc. {शौ.} (विदूषक-) अणज्जो दाणि सि तुमं, जं अत्तभोदिं *विज्जुआए* भाअवेसि। (अनार्य इदानीमसि त्वम्, यदत्रभवतीं विद्युता भावयसि) मृच्छ., पृष्ठ 310/5

विडंबणा viḍambaṇā विडम्बना < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] विडंबना, अनहोनी, तिरस्कार, दुःख disguise, imitation, the impossible, censure, contempt, sorrow {म.} अदिट्ठे रणरणओ दिट्ठे ईसा *विडंबणा* नाह। (अदृष्टे रणरणको दृष्ट ईर्ष्या विडम्बना नाथ) वज्जालग्गं, पेम्मवज्जा, पृष्ठ 114/337

विडप्प (विडय) viḍappa (vidaya) राहु [देशज] < संज्ञा (पुं.) [Noun] राहु ग्रह one of the twelve principal planets known to ancient astrologers, ascending mode of the moon {म.} रे रे *विडप्प* मा मुयसु दुज्जणं गिलसु पुण्णिमायंदं। (रे रे राहो मुञ्च दुर्जनं गिल पूर्णिमाचन्द्रम्) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 162/483

विढप्प (विढव) (आदेश) **viḍhappa (viḍhava)** √अर्ज् < क्रिया [सक.] [Verb] उपार्जन करना, अर्जित करना to earn, etc. {म.} नमिऊण जं *विढप्पइ* खलचलणं तिहुयणं पि किं तेण। (नत्वा यदर्ज्यते

खलचरणं त्रिभुवनमपि किं तेन) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 34/100

विणट्ठ viṇaṭṭha विनष्ट < विशेषण [Adjective] विनाश को प्राप्त spoiled, destroyed {शौ.} (विदूषक-) तं क्खु कज्जं *विणट्ठं* । (तत् खलु कार्यं विनष्टम्) मृच्छ., पृष्ठ 262/5

विणय viṇaya विनय < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] विनय-युक्त, शान्त, जितेन्द्रिय, प्रणाम आदि भक्ति, शुश्रूषा, शिष्टता, नम्रता, संयम, शिक्षा, अनुनय politeness, humbleness, humility, prayer, request, paying reverence, respect, courtesy, etc. {म.} किं वा कुलेण कीरइ किं वा *विणएण* किं वा रूवेण। (किं वा कुलेन क्रियते किं वा विनयेन किं वा रूपेण) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा, पृष्ठ 48/142

विणविद (विण्णत्त) viṇavida (viṇṇatta) विज्ञप्त < विशेषण [Adjective] निवेदित, निवेदन, अनुरोधित Informed, made known, reported, etc. {शौ.} (पुरुष-) तदो जिह्नु दासेण वअस्ससिणेहसरिसं अज्ज *विण्णविदो* चन्दउत्तो। (ततो जिष्णुदासेन वयस्यस्नेह सदृशमद्य विज्ञप्तश्चन्द्रगुप्तः) मुद्रा., श्लोक 15, पृष्ठ 88/6

विणास viṇāsa विनाश < संज्ञा (पुं.) [Noun] विनाश, विध्वंस utter loss, annihilation, ruin, disaster {म.} पेम्मुप्पलस्स माए माणतुसारो च्चिय *विणासो* । (प्रेमोत्पलस्य मातर्मानतुषार एव विनाशः) वज्जालग्गं, माणवज्जा, पृष्ठ 122/359

विणिक्खित्त vi-ṇikkhitta विनिक्षिप्त < विशेषण [Adjective] फेंका हुआ thrown {शौ.} (मदनिका-) स य तस्स अज्जस्स हत्थे *विणिक्खित्तो* । (स च तस्य आर्यस्य हस्ते विनिक्षिप्तः) मृच्छ., पृष्ठ 213/4

विणिमअ (विणिमय) viṇimaa (viṇimaya) विनिमय < विशेषण [Adjective] विनिमय, अदला-बदली, परिवर्तन, वस्तु के बदले वस्तु का लेनदेन, न्यास, धरोहर, अमानत exchange, barter system, reciprocity, etc. (पुरुष-) ता एदिणा *विणिमएण* मुच्चिज्जदु पिअवअस्से चन्दणदासो त्ति। (तदेनेव विनिमयेन मुच्यतां प्रियवयस्यश्चन्दनदास इति) मुद्रा., श्लोक 15, पृष्ठ 89/6

विणोदवुत्तंत viṇoda-vuttanta विनोदवृत्तान्त < संज्ञा (पुं.) [Noun] विनोदवृत्तान्त, मन बहलाना, हँसी मज़ाक diversion talk, jesting, etc. {शौ.} (इरावती-) विस्ससणीओसि। मए विण्णादं ईरिसं *विणोदवुत्तन्तं* अज्जउत्तेण उवलद्ध त्ति। (विश्वसनीयोऽसि। न मया विज्ञातं ईदृश विनोदवृत्तान्तं आर्यपुत्रेणोपलब्ध इति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19, पृष्ठ 286/3

विण्णत्ति viṇṇatti विज्ञप्त < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] विज्ञप्ति, विज्ञापन, ख्यापन, निवेदन, विज्ञानa request, a communique, knowledge,statement, an announcement, idea {मा.} (शकार-) शुणु मम *विण्णत्तिं।* (श्रृणु मम विज्ञप्तिम्) मृच्छ., पृष्ठ 404/8

विण्णव viṇṇava वि √ज्ञपय् < क्रिया [सक.] [Verb] निवेदन करना, प्रार्थना करना, मालूम करना, कहना to request, to pray, to know, to say, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) अमच्च *विण्णवणीअं* किं वि अत्थि। (अमात्य विज्ञापनीयं किमप्यस्ति) मुद्रा., श्लोक-23, पृष्ठ 32/2

विण्णाद vi-ṇṇāda विज्ञात [वि √ज्ञा+क्त] < विशेषण/भू.कृ. [Adjective/ Past Participle] प्रत्यक्ष किया हुआ, विदित, जाना हुआ, विश्रुत, प्रसिद्ध known, understood, well- known, famous {मा.} (संवाहक-) अणाचक्खिदे ज्जेव कधं अज्जआए *विण्णादं*? (अनाख्याते एव कथमार्यया विज्ञातम् ?) मृच्छ., पृष्ठ 129/2

विण्णाविद viṇṇāvida विज्ञापित< भूतकालिक कृन्दत [Past Participle] प्रार्थना करना, शिष्टाचारपूर्वक कहा हुआ या संवाद दिया हुआ, प्रार्थित, संसूचित, शिक्षित respectfully told or communicated, requested, informed, instructed, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) जदा णिवत्तिदं ण इच्छदि तदा *विण्णाविदो* मए। (यदा निवर्तितुं नेच्छति तदा विज्ञापितो मया) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-1, पृष्ठ 54/4

विण्णास vi-ṇṇāsa विन्यास < संज्ञा (पुं.) [Noun] रचना, स्थापना करना, रखना construction, deposit, order, setting {शौ.} (विदूषक-) एसो से अम्हाणं *विण्णासो*? (एषोऽस्या अस्माकं विन्यास:?) मृच्छ., पृष्ठ 89/1

वित्ति vitti वृत्ति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] जीविका, पेशा, व्यवसाय, कामधंधा, रोजगार, जीवनचर्या, संपोषण, मज़दूरी, किसी वृत्त या पहिये की परिधि, जटिल रचना जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता पड़े, शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा किसी अर्थ का अभिधान profession, occupation, business, state, condition, movement, function, course, method, employment ,wage, a complex formation requiring resolution or explanation, etc. {शौ.} अथ कदरं उण अज्जो *वित्तिं* उवजीवदि। (अथ कतरा पुनरार्यो वृत्तिमुपजीवति) मुद्रा., श्लोक-1, पृष्ठ 20/2

वित्थिण्ण vitthiṇṇa विस्तीर्ण < विशेषण [Adjective] विस्तार-युक्त, विस्तृत, फैलाया हुआ spread out, extended wide, large {मा.} (चेट-) एत्थ *वित्थिण्णे* आशणे णिशीदन्तु अज्जा। (अत्र विस्तीर्णे आसने निषीदतमार्यौ) मृच्छ., पृष्ठ 152/3

विदिअ vidia विदित< विशेषण [Adjective] ज्ञात, समझा हुआ, सीखा हुआ, विश्रुत, विख्यात comprehensible, known, understood, learnt, etc. {शौ.} (अनसूया-) जह वि णाम विसयपरम्मुहस्स वि जणस्स एदं ण *विदिअं* तह वि तेण रण्णा सउन्दलाए अणज्जं आअरिअं। (यद्यपि नाम विषयपराङ्ग-मुखस्यापि जनस्यैतन्न विदितं तथापि तेन राज्ञा शकुन्तलायामनार्यमाचरितम्) अभि.शाकु., पृष्ठ 267/4

विप्पिअ (विप्पिय) vippia (vippiya) विप्रिय < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] विप्रिय, अप्रिय, अपराध unpleasant, disliked, unlovable {म.} असईणं *विप्पिय* रे गव्वं मा वहसु पुण्णिमायंदं। (असतीनां विप्रिय रे गर्वं मा वह पूर्णिमाचन्द्रं) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 164/489

विबुज्झ vi-bujjha वि √बुध् [विबुध्] < क्रिया [अक.] [Verb] जागना, विशेष रुप से जानना to know, to wake up, etc. {शौ.} (चेटी-) कधं अज्ज वि अज्जआ ण *विबुज्झदि* । (कथमद्यापि आर्या न बिबुध्यते) मृच्छ., पृष्ठ 314/6

विब्भम vibbhama विभ्रम < संज्ञा (पुं.) [Noun] स्त्री श्रृंगार के अंग-भूत चेष्टा विशेष,

विलास, विशेष भ्रान्ति, संदेह, काम-विकार any amorous or sportive action, beauty, charm, doubt, confusion, etc. {म.} गाहाण रसा महिलाण *विब्भमा* कइजणाण उल्लावा। (गाथानां रसा महिलानां विभ्रमा: कविजनानामुल्लापा:) वज्जालग्गं, गाहावज्जा, पृष्ठ 6/13

विमुक्क vi-mukka विमुक्त < विशेषण [Adjective] विमुक्त, बन्धन रहित, परित्यक्त, नि:संग acquitted, liberated, exempted, released, given up, etc. {म.} गिलओ जेण *विमुक्को* असईणं दूसओ चंदो। (गिलितो येन विमुक्तोऽसतीनां दूषकश्चन्द्र:) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 164/484

विमुक्कपुक्कार vimukka-pukkāra विमुक्तपूत्कार< संज्ञा (नपुं.) [Noun] विमुक्त रूप से चिल्लाना, फूट पड़ना, जोर-जोर से चीखना/ रोना weep bitterly, etc. {म.} संभरिऊण य रुण्णं तीइ तुमं तह *विमुक्कपुक्कारं* (संस्मृत्य च रुदितं तया त्वां तथा विमुक्तपूत्कारम्) वज्जालग्गं, ओलग्गावियावज्जा, पृष्ठ 144/428

वियक्खण viyakkhaṇa विचक्षण < विशेषण [Adjective] विचक्षण, बुद्धिमान, चतुर, विद्वान, दीर्घदर्शी, सावधान, स्पष्टदर्शी wise, clever, expert, skilful, able, etc. {म.} दालिद्द रे *वियक्खण* ताण तुमं साणुराओ सि। (दारिद्रय रे विचक्षण तेषां त्वं सानुरागमसि) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा, पृष्ठ 48/140

वियड viyaḍa विकट < विशेषण [Adjective] विकट, कठिन, दुस्साध्य, दुष्कर, भीम, भीषण, भयप्रद, विशाल, दुर्गम, वक्र, कुटिल huge, horrible, monstrous, dreadful, deformed, ugly, hideous, etc. {म.} *वियडं* सो परिसक्कउ सामिपसायं च सो समुव्वहउ। (विकटं च परिक्रामतु स्वामिप्रसादं च स समुद्वहतु) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 58/171

वियप्प viyappa विकल्प< संज्ञा(पुं.) [Noun] विकल्प, प्रकार, भेद option, choice, alternative, uncertainty {म.} सामा खामा न सहेइ मद्दणं विज्ज किं *वियप्पेणं*। (श्यामा क्षामा न सहते मर्दनं वैद्य किं विकल्पेन) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 174/514

वियल (विअल / विगल) viyala (viala / vigala) विकल < विशेषण [Adjective]

विकल, विह्वल, असंपूर्ण, हीन, रहित confused, restless, agitated, depressed, devoid of, etc. {म.} अत्थं धरंति वियला न देंति पूयंति सयलभूयाइं। (अर्थं धरन्ति *विकला* न ददति पूजयन्ति सकलभूतानि) वज्जालग्गं, किविणवज्जा, पृष्ठ 200/584

विरस virasa विरस < विशेषण [Adjective] रस हीन हो जाने पर, स्वाद रहित, फीका, नीरस, अप्रिय, अरुचिकर, पीड़ाकर testless, insipid, juiceless, lacking flavor, boring, etc. {म.} वियलियदलं पि गंधोज्झियं पि *विरसं* पि मालईविडवं। (विगलितदलोऽपि गन्धोज्झितोऽपि विरसोऽपि मालतीविटप:) वज्जालग्गं, इंदिंदिरवज्जा, पृष्ठ 86/250

विरह viraha विरह < संज्ञा (पुं.) [Noun] वियोग, विरह, व्यवधान separation from the loved one, parting, etc. {म.} आजम्म एक्कमेक्केहि जेहि *विरहो* च्चिय न दिट्ठो। (आजन्मैकैकाभ्यां याभ्यां विरह एव न दृष्ट:) वज्जालग्गं, मित्तवज्जा, पृष्ठ 22/65

विरहावत्था virahāvatthā विरहावस्था < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] विरह दग्ध, विरह की अवस्था pangs of separation, parting condition {म.} उम्मूलिए वि विंझे *विरहावत्था* तह च्चेय। (उन्मूलितेऽपि विन्ध्ये विरहावस्था तथैव) वज्जालग्गं, गयवज्जा, पृष्ठ 66/197

विरहिद virhida विरहित < भूतकालिक कृदन्त [Past Participle] छोड़ा जाना/ हुआ, परित्यक्त, त्यागा हुआ, वियुक्त, अकेला, एकाकी, हीन, शून्य, मुक्त deserted, abandoned, separated from, lonely, solitary, bereft of, devoid or destitute of, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) दाणिं पि मए *विरहिदं* तुमं तादो चिन्तइस्सदि। (इदानीमपिं मया विरहितं त्वां तातचिन्तयिष्यति) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-14, पृष्ठ 66/4

विराअ (विराग) virāa (virāga) विराग< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] राग रहित, वैराग्य detachment, renunciation, indifference, etc. {म.} मुहवंचणो *विराओ* एए दोसा पढंतस्स। (मुखवञ्चनो विराग एते दोषा: पठत:) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 10/27

विरोह viroha विरोध < संज्ञा (पुं.) [Noun] विरोध, दुश्मनी, बैर, विरुद्धता opposition, antagonism, hostility, resistance, objection, protest, contradiction, etc. {शौ.} (चन्दनदास-) संतं पावं। कीदिसो उण तिणाणं अग्गिणा सह *विरोहो* । (शान्तं पापम्। कीदृशः पुनस्तृणानामग्निना सह विरोधः) मुद्रा., श्लोक-21, पृष्ठ 15/1

विलया vilayā वनिता < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वनिता, स्त्री, महिला, नारी woman, lady, etc. {म.} उब्भेउ अंगुलिं सा *विलया* जा मह पइं न कामेइ। (ऊर्ध्वीकरोत्वङ्गुलिं सा वनिता या मम पतिं न कामयते) वज्जालग्गं, सईवज्जा, पृष्ठ 154/456

विलीण vi-līṇa विलीन < विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] विलीन, पिघला हुआ, विनष्ट, चिपकने वाला, अनुपयुक्त, मृत, नष्ट, अन्तर्हित, ओझल dissolved, sticking to, absorbed, merged, vanished, disappeared, dead, infused in to the mind, etc. {म.} सरसो मुणालकवलो गयस्स हत्थे च्चिय *विलीणो* । (सरसो मृणालकवलो गजस्य हस्त एव विलीनः) वज्जालग्गं, गयवज्जा, पृष्ठ 66/195

विवर vivara विवर < संज्ञा (नपुं.) [Noun] विवर, बिल, छिद्र, गुहा, एकान्त hole, cave, sinus, cavity, etc. {म.} जाई रूवं विज्जा तिन्नि वि गच्छंतु कंदरे *विवरे* । (जाती रूपं विद्या त्रीण्यपि गच्छन्तु कन्दरे विवरे) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा, पृष्ठ 50/144

विवाह (विआह) vivāha (viāha) विवाह < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] विवाह, शादी, पाणिग्रहण संस्कार, विविध प्रवाह, विशिष्ट संतान वाला marriage, wedding, matrimony, etc. {शौ.} (सर्वे-) आअच्छ भट्टा! आअच्छ! अम्हाणं कण्णआणं सह तुए *विवाहो* होदु। (आगच्छ भर्तः! आगच्छ! अस्माकं कन्यकानां त्वया सह विवाहो भवतु) बाल., भासनाटक., श्लोक-2/2, पृष्ठ 526

विवित्त vivitta विविक्त < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] एकान्त, निर्जन, [वि.] रहित lonely, separated {मा.} (शकार-) अण्णं च *विविते* उज्जाणे इध मालन्तं को तुमं पेक्खिश्शदि। (अन्यच्च विविक्ते उद्याने इह मारयन्तं कस्त्वां प्रेक्षिष्यते ?) मृच्छ., पृष्ठ 411/8

विशकञ्ञा (विसकण्णा) viśa-kaññā (visa-kṇṇā) विसकन्या < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] विषकन्या a woman, surcharged with poison to kill a person who embraces her or copulates with her, etc. {मा.} (क्षपणक-) शन्तं पावं। शावगा! चाणक्को *विशकञ्ञाए* णामवि ण शुदं। (शान्तं पापम्। श्रावक! चाणक्यो विषकन्याया नामापि न श्रुतम्) मुद्रा., श्लोक 9, पृष्ठ 68/5

विस visa विष < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] विष, जहर poison, venom {म.} उप्पज्जइ हरह *विसं* कण्हस्स घणत्थणा लच्छी। (उत्पद्यते हरस्य विषं कृष्णस्य घनस्तनी लक्ष्मी:) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 44/131

विसम visama विषम < विशेषण [Adjective] विषम, असमान, ऊँचा-नीचा, अतुल्य, दारुण, कठिन, संकट, संकीर्ण, एकी संख्या जैसे- एक, तीन, पाँच, सात आदि uneven, unbalanced, strange, dire, odd, etc. {म.} तवधम्मणियममइए *विसमा* वि दसा समा होइ। (तपोधर्मनियममये विषमापि दशा समा भवति) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 30/84

विसाल visāla विशाल < विशेषण [Adjective] विशाल, विस्तीर्ण, बड़ा large, big, spacious, vast, colossal {म.} तुंगो थिरो *विसालो* जो रइओ मणपव्वओ तीए। (तुङ्ग स्थिरो विशालो यो रचितो मानपर्वतस्तया) वज्जालग्गं, माणवज्जा, पृष्ठ 122/361

विसुमर visumara विस्मर [वि √स्मृ] < क्रिया [सक.] [Verb] भूल जाना, भूलना to forget {शौ.} (शकुन्तला-) तदा अत्ताणं पि *विसुमरिस्सं* । (तदात्मानमपि विस्मरिष्यामि) अभि.शाकु., पृष्ठ 138/1

विस्सम vi-ssama विश्राम < संज्ञा (पुं.) [Noun] आराम, चैन, विश्रांति, सुकून rest, calm, etc. {शौ.} (विदूषक-) जदि एव्वं पि णाम *विस्समं* लहेअं। (यद्येवमपि नाम विश्रामं लभेय) अभि.शाकु., पृष्ठ 170/2

विस्ससणिज्ज vissasaṇijja विश्वसनीय < संभाव्य कृदन्त [Potential Participle] विश्वसनीय, विश्वास किये जाने के योग्य, विश्वास पात्र, जिस पर भरोसा किया जा सके, विश्वास उत्पन्न करने के योग्य reliable, trustweerthy, dependable, believable, etc. {शौ.} (वकुलावलिका-) सहि! बहु सोक्खु

भट्टा विप्पलद्धो। ता तुए अत्ता *विस्ससणिज्जो* करीअदु। (सखि! बहु शः किल भर्ता विप्रलब्धः। तत्त्वयात्मा विश्वसनीयः क्रियताम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-8, पृष्ठ 301/4

विहव vihava विभव < संज्ञा (पुं.) [Noun] सम्पत्ति, ऐश्वर्य, समृद्धि, वैभव, मोक्ष growth, wealth, glory, salvation etc. {ठक्की/ ढक्की} (माथुर-) मए एसु *विहवु* । (मम एष विभवः) मृच्छ., पृष्ठ 120/2

विहाल (विहार) vihāla (vihāra) विहार < संज्ञा (पुं.) [Noun] बौद्धों का मंदिर, विचरण, गति, देव मंदिर, मुनि चर्या (जैन परम्परानुसार) monastery, a temple in general, etc. {मा.} (भिक्षु-) एदश्शिं विहाले मम धम्मबहिणिआ चिट्ठदि। (एतस्मिन् विहारे मम धर्म्मभगिनी तिष्ठति) मृच्छ., पृष्ठ 449/8

विहि vihi विधि < संज्ञा (पुं.) [Noun] विधाता, ब्रह्मा, विधि, शास्त्रोक्त विधान, क्रम, रीति, आज्ञा, हाथी के खाने का अन्न, व्याकरण का सूत्र विशेष destiny, providence, the creator and lord of destiny, Brahmā, etc. {म.} चंदणतरुव्व सुयणा फलरहिया जइ वि निम्मिया *विहिणा।* (चन्दनतरुरिव सुजनाः फलरहिताः यद्यपि निर्मिताः विधिना) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 16/48

विहिय (विहिअ) vihiya (vihia) विहित < विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/Past Participle] कृत, अनुष्ठित, चेष्टित, शास्त्रोक्त prescribed, authorized, ordained, enjoined {म.} तं विहिणा वि न *विहियं* जं न हु नायं छइल्लेहिं। (तद्विधिनापि न विहितं यन्न खलु ज्ञातं विदग्धैः) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 94/278

विहिवस vihi-vasa विधिवश < विशेषण [Adjective] भाग्यवश, विधिवश by providence, by luck {म.} जह जह न समप्पइ *विहिवसेण* विहडंतकज्ज-परिणामो। (यथा यथा न समाप्यते विधिवशेन विघटमानकर्मपरिणामः) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 38/113

विहिविहिय vihi-vihiya विधिविहित < विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] विधि का विधान, धर्मकृत, कर्मकृत, स्वाभाविक विधि established by law, prescribed or ordained by law, valid

{म.} तह वि गिलिज्जइ चंदो *विहिविहियं* को निवारेइ। (तथापि गिल्यते चन्द्रो विधिविहितं को निवारयति) वज्जालग्गं, चंदवज्जा, पृष्ठ 92/269

विहुर (विहुल) vihura (vihula) विधुर< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] संकट-ग्रस्त, पीड़ित, व्याकुल, ऐसा पुरुष जिसकी पत्नी का निधन हो चुका हो, विकल, क्षीण, विसदृश, वियुक्त, विह्वलता troubled, distressed, widower, agitated, etc. {म.} अज्ज वि *विहुरो* सुपहू अज्ज वि पहरंति सुहडसंघाया। (अद्यापि विधुरः सुप्रभुरद्यापि प्रहरन्ति सुभटसंघाताः) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 58/168

वीअअ vīaa वीजय् < क्रिया [सक.] [Verb] पंखा करना, हवा करना to fan {शौ.} (शकुन्तला-) किं *वीअअन्ति* मं सहीओ ? (किं वीजयतो मां सख्यौ ?) अभि.शाकु., पृष्ठ 218/3

वीणा vīṇā वीणा संज्ञा (स्त्री.) [Noun] सारंगी, वीणा veena, lyre, Indian lute or harp {शौ.} (सूत्रधार-) इअं *वीणा* पडिसारीअदि। (इयं वीणा प्रतिसार्यते) कर्पूर., पृष्ठ 6/1

वीसत्थ vīsattha विश्वस्त < विशेषण [Adjective] विश्वासयुक्त, विश्वासी trusted, confident, reliable {शौ.} (वीरक-) अरे अहं तुए *वीसत्थो* राअण्णत्तिं करेन्तो सहसा केसेसुं गेण्हिअ पादेण ताडिदो। (अरे! अहं त्वया विश्वस्तो राजाज्ञप्तिं कुर्वन् सहसा केशेषु गृहीत्वा पादेन ताडितः) मृच्छ., पृष्ठ 353/6

वीसद्ध vīsaddha विश्रब्ध < विशेषण [Adjective] विश्वास किया गया, विश्वस्त faithful, trustful {शौ.}(प्रियंवदा-) *वीसद्धा* होहि। (विस्रब्धा भव) अभि.शाकु., पृष्ठ 258/4

वीसर (विस्सर) vīsara (vissara) वि √स्मृ< क्रिया [सक.] [Verb] भूलना, भूल जाना to omit, to forget, to miss (the way) {म.} अम्हारिसीण दिट्ठे पियम्मि अप्पा वि *वीसरइ* । (अस्मादृशीनां दृष्टे प्रिय आत्मापि विस्मर्यते) वज्जालग्गं, पियाणुरायवज्जा, पृष्ठ 138/406

वुत्तंत vuttanta वृतांत< संज्ञा (पुं.) [Noun] समाचार, हकीकत, संवाद news, reality, etc. {शौ.} (अनसूया-) अह केण सूइदो तादकस्सवस्स *वुत्तंतो* ? (अथ केन

सूचितस्तातकाश्यपस्य वृत्तान्त:?) अभि. शाकु., पृष्ठ 272/4

वेअण (वेयण / विअणा) veaṇa (veyaṇa / viaṇā) वेदना < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वेदना, पीड़ा, संताप, विवाह, सुख-दुःख का अनुभव, ज्ञान agony, anguish, pain, ache, etc. {शौ.} (मालविका-) ण जाणे अप्पडिआरगरुअं वेअणं केत्तिअं कालं मअणो मं णइस्सदि त्ति। (न जानेऽप्रतिकारगुरुकां वेदनां कियन्तं कालं मदनो मां नेष्यतीति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-5, पृष्ठ 272/3

वेदस (वेडस) vedasa (veḍasa) वेतस संज्ञा (पुं.) [Noun] वेंत का गाछ a cane, cane stick, etc. {शौ.} (विदूषक-) भो वअस्स! जं *वेदसो* कुज्जलीलं विडंवेदि तं किं अत्तणो पहावेण उद णईवेअस्सा। (भो वयस्य! यद्वेतसः कुब्जलीलां विडम्बयति तत्किमात्मनः प्रभावेण उत नदीवेगस्य) अभि.शाकु., कालिदासग्रन्था., पृष्ठ 26/2

वेदुरिअ (वेरुलिय) veduria (veruliya) वैडूर्य/ वैदूर्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] मणि की एक जाति, वैडूर्य, नीलम precious gem {शौ.} (विदूषक-) *वेदुरिअ* मोत्तिअपवाल-पुप्फराअ-इन्द-णील-कक्केतरअ-पदमराअ-मरगअ-पहु दिआइं रअणविसेसाइं अण्णोण्णं वियारेन्ति सिप्पिणो। (वैदूर्य-मौक्तिक-प्रवाल-पुष्परागेन्द्र-नील-कर्केतरक-पद्मराग-मरकतप्रभृतीनि रत्नविशेषाणि अन्योन्यं विचारयन्ति शिल्पिन:) मृच्छ.,

वेयणा veyaṇā वेदना < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वेदना, पीड़ा, व्यथा, यातना, संताप, अनुभव agony, anguish, pain, ache, feeling, etc. {म.} उद्धच्छि *वेयणाइ* वि नमंति चरियाइ वि गुणेहिं। (ऊर्ध्वाक्षि वेदना अपि नमन्ति चरिता अपि गुणै:) वज्जालग्गं, कुट्टिसिक्खावज्जा, पृष्ठ 190/555

वेयार (विआर) veyāra (viāra) वि √कृ = कारय् < क्रिया [सक.] [Verb] धोखा करना, विकृत करना, छल करना to play false and loose, to alter, to change, etc. {म.} को जुण्ण मंजरं कंजिएण *वेयारिउं* तरइ। (को जीर्णमार्जारं कांजिकेन विकारयितुं शक्नोति) वज्जालग्गं, कुट्टिसिक्खावज्जा, पृष्ठ 190/556

वेल्ली (वेल्लि / वल्लि) vellī (velli / valli) वल्ली < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वेली, वेल,

लता a creeping plant, etc. {म.} अन्नेहिं पि न पत्ता पत्तलकरहेहि करह सा *वेल्ली* । (अन्यैरपि न प्राप्ता कृशकरभैः करभ सा वल्ली) वज्जालग्गं, करहवज्जा, पृष्ठ 78/226

वेस vesa द्वेष्य < विशेषण [Adjective] अप्रीतिकर, विरोधी hateful, malicious, detestable, abhorrent {म.} अप्पा वि जाण *वेसो* को ताण परो पिओ होइ। (आत्मापि यासां द्वेष्यः कस्तासां परः प्रियो भवति) वज्जालग्गं, वेसावज्जा, पृष्ठ 196/572

वेसा (वेस्सा) vesā (vessā) वेश्या < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वेश्या, गणिका prostitute, harlot {म.} पच्छा करइ वियारं बलहट्ठु यसारिसा *वेसा* । (पश्चात् करोति विकारं चणकरोटिकासदृक्षा वेश्या) वज्जालग्गं, वेसावज्जा, पृष्ठ 192/561

श

श śa श < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत वर्णमाला में प्रयुक्त नहीं होता है। कुछ अपवादों में प्रयोग मिलता है it is not used in Prakrit alphabet but there are exceptions तुस-य-र-व-*श*-ष-सां दीर्घः हेम., 1/43, पृष्ठ- 435

शअड śaaḍa शकट < संज्ञा (पुं.) [Noun] गाड़ी, वाहन a cart, carriage {मा.} (स्थावरकश्चेट-) ओशालिदा मए *शअडा,* ता जाव गच्छामि। (अपसारिता मया शकटाः, तद् यावद् गच्छामि) मृच्छ., पृष्ठ-326/6

शअल (सअल / सयल) śaala (saala / sayala) सकल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] सकल, संपूर्ण, सब gross, all round, total, all, whole, entire, etc. {मा.} (वज्रलोमा-) लायावश्छे उण शेविदम्मि *शअल*-कुलं मलदि। (राजापथ्ये पुनः सेविते सकलं कुलं म्रियते) मुद्रा., श्लोक-1, पृष्ठ 93/7

शग्ग / सग्ग śagga / saga स्वर्ग < संज्ञा (पुं, नपुं.) [Noun] स्वर्ग, देवों का निवास स्थान paradise, heaven, the abode of gods {मा.} (प्रथम-) भणिदो म्हि पिदुणा *शग्गं* गच्छन्तेण। (भणितोऽस्मि पित्रा स्वर्गं गच्छता) मृच्छ., पृष्ठ 558/10 {म.} मेरू तिणं व *सग्गो* घरंगणं हत्थछित्तं गयणयलं। (मेरुस्तृणमिव स्वर्गो गृहाङ्गणं

हस्तस्पष्टं गगनतलम्) वज्जालग्गं, धीरवज्जा,

शणिआल (सणिकाल) śaṇiāla (saṇikāla) सनिकार < संज्ञा (नपुं.) [Noun] अपमान सहित, अपमानित disgracefully, insulted, slighted, etc. (क्षपणक-) तदो हगे लक्खशस्स मित्तं कदुअ चाणक्कहदएण *शणिआलं* णअलादो णिव्वाशिदे। (ततोऽहं राक्षसस्य मित्रं कृत्वा चाणक्यहतकेन सनिकारं नगरान्निर्वासितः) मुद्रा., श्लोक 5, पृष्ठ 67/5

शमणक (समणक) śamaṇaka (samaṇaka) श्रमणक< संज्ञा (पुं.) [Noun] संन्यासी, बौद्ध तथा जैन संन्यासी an ascetic, a Buddhist and Jaina ascetic {मा.} (शकार-) पुत्तका! हडक्का! भट्टके! पुत्तके! एशे *शमणके* अवि णाम किं गच्छदु। (पुत्रक! हृदय! भट्टारक! पुत्रक! एष श्रमणकः अपि नाम किं गच्छतु) मृच्छ., पृष्ठ 381/8

शमाशादिद śamāśādida समासादित< विशेषण [Adjective] प्राप्त किया हुआ received, approached {मा.} (शकार-) तेण हि अपुव्वा शिली *शमाशादिदा* । (तेन हि अपूर्वा श्रीः समासादिता) मृच्छ., पृष्ठ 404/8

शम्पधालिद (संपधारिय) śampadhālida (sampadhāriya) संप्रधारित < भू.कृ/ विशेषण [Past Participle/ Adjective] सम्यक् रूप से धारण किया हुआ, निर्णीत determined, decided {मा.} (शकार-) भावे! *शम्पधालिदं* मए हडक्केण शह। (भाव! सम्प्रधारितं मया हृदयेन सह) मृच्छ., पृष्ठ 381/8

शल śala स्वर < संज्ञा (पुं.) [Noun] स्वर (ध्वनि), संस्कृत वर्णमाला की सोलह मात्रकिाऐं जो व्यंजन से इतर हों, संगीत के सुर sound, voice, vowel (in grammar) etc. {मा.} (चेट-) अज्जमित्तेआह *शल*-शञ्जोए शुणीअदि। (आर्यमैत्रेयस्य स्वर-संयोगः श्रूयते) मृच्छ., पृष्ठ 152/3

शलण (सरण) śalaṇa (saraṇa) शरण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] आश्रय, शरण protection, shelter {मा.} (भिक्षु-) ता कहिं अशलणे *शलणं* गमिश्शं ? (तत् कुत्र अशरणः शरणं गमिष्यामि?) मृच्छ., पृष्ठ 375/8

शलणागद (सरणागद) śalaṇāgada (saraṇāgada) शरणागत < विशेषण [Adjective] शरण में आया हुआ one

who seeks shelter or protection {मा.} (भिक्षु-) *शलणागदम्हि*। (शरणागतोऽस्मि) मृच्छ., पृष्ठ 382/8

शलशंजोअ śalaśñjoa स्वरसंयोग < संज्ञा (पुं.) [Noun] सुरों का मिल जाना, ध्वनि या स्वरों का मेल the mixture of vowels, the union of notes or sounds {मा.} (चेट-) भिण्ण-कंश-खड्खणाए चण्डालवाआए *शलशंजोए* जधा अ एशे उक्खालिदे वज्झडिण्डिमशद्दे पडहाणं अ शुणीअदि। (भिन्न-कांस्यखड्खनाया: चाण्डालवाचाया: स्वरसंयोग: यथा च एष उत्खालित: बध्यडिण्डिमशब्द: पटहानाञ्च श्रूयते) मृच्छ., पृष्ठ 546/10

शव्वहा śavvahā सर्वथा < अव्यय [Indeclinable] सर्वथा, हर प्रकार से, सब तरह से by all means, always, etc. {मा.} (शकार-) *शव्वहा* दुक्खडे कडे। (सर्वथा दुष्करं कृतम्) चारु., भासनाटक., श्लोक-25, पृष्ठ 207/1

शालील (सारीर) śālīla (sārīra) शारीर< विशेषण [Adjective] शरीर का, शरीर सम्बन्धी anatomical, etc. {मा.} (शकार-) एदश्श दलिद्दचालुदत्तश्श *शालीले* दण्डे धालीअदु। (एतस्य दरिद्रचारुदत्तस्य शारीरो दण्डो धार्यताम्) मृच्छ., पृष्ठ 513/9

शाहा (साहा) śāhā (sāhā) शाखा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वृक्ष की डाली, वेद का एक देश, एक आचार्य की संतति परम्परा a branch, a school or traditional recension of the Veda, etc. {मा.} (संवाहक भिक्षु-) किं णु क्खु *शाहाए* शुक्खावइश्शं ? (किं नु खलु शाखायां शोषयिष्यामि ?) मृच्छ., पृष्ठ 445/8

शुकिद (सुकय) śukida (sukaya) सुकृत < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] पुण्य, उपकार, [वि.] अच्छी तरह निर्मित well done, good deed, etc. {मा.} (चेट-) भट्टके! *शुकिद*-दुक्किदश्श पलिणामे। (भट्टक! सुकृत-दुष्कृतस्य परिणाम:) मृच्छ., पृष्ठ 415/8

शुण्ण (सुन्न / सुण्ण) śuṇṇa (sunna / suṇṇa) शून्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] शून्य, निर्जन, रहित, व्योम, सिफ़र void, vacant, hollow, absent-minded, space, etc. {मा.} (उभौ-) एदिणा किल अकज्जकालिणा गणिआ वशंतशेणा अत्थकल्लवत्तश्श कालणादो *शुण्णं*

पुप्फकलण्डअजिण्णुज्जाणं पवेशिअ बाहु पाशवलक्कालेण मालिदे त्ति। (एतेन किल अकार्यकारिणा गणिका वसन्तसेना अर्थकल्यवर्त्तस्य कारणात् शून्यं पुष्पकरण्डकजीर्णोद्यानं प्रवेश्य बाहु पाश- बलात्कारेण मारितेति) मृच्छ., पृष्ठ 528/10

शुमल / सुमर śumala / sumara √ स्मृ< क्रिया [सक.] [Verb] स्मरण करना, याद करना to remember {मा.} (शकार-) *शुमल* गब्भदाशि! *शुमल*ा (स्मर गर्भदासि! स्मर) मृच्छ., पृष्ठ 429/8

शूल (सूर) śūla (sūra) शूर < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] वीर, पराक्रमी brave, heroic {मा.} (शकार-) इत्थिआणं शदं मालेमी शूले हगे। (स्त्रीणां शतं मारयामि शूरोऽहम्) मृच्छ., पृष्ठ 45/1

शोहण {सोहण} śohaṇa {sohaṇa} शोभन< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] शोभायुक्त, सुन्दर graceful, befitting, glamorous {चाण्डाली} (चाण्डालौ-) *शोहणं* भणादि। (शोभनं भणति) मृच्छ., पृष्ठ 551/10

ष

ष ṣa ष < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्राकृत वर्णमाला में प्रयुक्त नहीं होता है। कुछ अपवादों में प्रयोग मिलता है not used prakrit alphabet some places used स-षो: संयोगे सोग्रीष्मे। 4/289, हेम., पृष्ठ 581

षळयोग ṣaḷayoga स्वरयोग< संज्ञा (पुं.) [Noun] स्वरयोग, स्वर के संयोग से voice conjunction, svarayoga {मा.}(नन्दगोप-) अम्मो *षळयोगेण* भट्टा वषुदेव त्ति जाणामि। (अम्मो स्वरयोगेन भर्ता वसुदेव इति जानामि) बाल., भासनाटक., श्लोक-19/1, पृष्ठ 518

षळिळधाळा सलिलधारा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] सलिल धारा, जल धारा saline strem {मा.} (नंदगोप-) पंखुणि मग्गमाणष्षा धळणीं भिन्दिअ जुगप्पमाणा *षळिळधाळा* उट्ठिदा। (पांसून् मार्गयतो धरणीं भित्वा युगप्रमाणा सलिलधारोत्थिता) बाल., भासनाटक., श्लोक-20, पृष्ठ 521/1

षुक्खलुक्ख ṣukkha-lukkha शुष्कवृक्ष < संज्ञा (पुं.) [Noun] सूखा वृक्ष, शुष्क वृक्ष dry tree, etc. {मा.} (वृद्धगोपालक-) किण्णुहु

एषो वाअषो *षुक्खळुक्खं* आळुहिअ षुक्खषाखाणिघट्टिअतुण्डं आदिच्चाहिमुहं विष्षळं विळवदि। (किं नु खल्वेष वायसः शुष्कवृक्षमारुह्य शुष्कशाखानिघट्टित-तुण्डमादित्याभिमुखं विस्वरं विलपति) पञ्चरात्रम्., भासनाटक., अंक-2,पृष्ठ 389

स

स sa स< संज्ञा (पुं.) [Noun] दन्त्य स्थानीय व्यंजन वर्ण विशेष a particular dental consonant {शौ.} (कौसल्या-) कहं सविण-अणिसमिदगिट्ठिवअणो विसज्जिदासेससरिसदारओ इतोहिमुहं अवसरिदो एव्व स वच्छो। (कथं सविनयनिशमितगृष्टि वचनोविसर्जिता-शेषसदृशदारक इतोभिमुखमपसृत एव स वत्सः) उत्तर., श्लोक 20/4 पृष्ठ, 161 {म.} रुक्खं दुरुहइ सवसो, विगलइ स परव्वसो तत्तो। (वृक्षमारोहति स्ववशः, विगलति स परवशः ततः) समण., गाथा-60/6, पृष्ठ 20

संकप्प saṅkappa संकल्प < संज्ञा (पुं.) [Noun] संकल्प, भाव, विचार, निश्चय, अवधारणा, अध्यवसाय, विशिष्ट मन्त्रपूर्वक दान resolution, resolve, determination, volition, animus, etc. {म.} तल्लद्धरसेण कओ *संकप्पो* सेसकुसुमाणं। (तल्लब्धरसेन कृतः संकल्पः शेषकुसुमानाम्) वज्जालग्गं, सुरतरुविसेसवज्जा, पृष्ठ 88/256

संकहा saṅkahā संकथा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] बातचीत, वार्तालाप, संभाषण conversation, negotiation, etc. {शौ.} (इरावती-) णं *संकहा* णाम होदु। किंति अत्ताणं आआसइस्सं। (ननु संकथा नाम भवतु किमित्यात्मानमायासयिष्यामि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19, पृष्ठ 286/3

संकिद saṅkida शङ्कित < भूतकालिक कृदन्त [Past Participle] शंकित, खटका, संदिग्ध, आशंकायुक्त, त्रस्त, शंकालु, आशंका करने वाला, अविश्वासपूर्ण, अनिश्चित, भयपूर्ण, सशंक, आतंकित doubted, suspected, feared, suspicious, suspecting, distrustful, uncertain doubtful, opprehensive, etc. {शौ.} (इरावती-) ठाणे क्खु *संकिदं* मे हिअअं। गहीदत्था अणंतरं चिन्तइस्सं। (स्थाने खलु शङ्कितं मे हृदयम्। गृहीतार्थानन्तर चिन्तयिष्यामि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-14, पृष्ठ 281/3

संकुय saṅkuya सं √कुच् < क्रिया [अक.] [Verb] सकुचना, संकोच करना to feel shy, to hesitate {म.} *संकुयइ संकुयंते* वियसइ वियसंतयम्मि सूरम्मि। (संकुचति संकुचति विकसति विकसति सूर्ये) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा, पृष्ठ 50/146

संगाम saṅgāma सङ्ग्राम < संज्ञा (पुं.) [Noun] संग्राम, युद्ध battle, war {म.} पहरइ कयावराहो व्व निब्भओ को वि *संगामे।* (प्रहरति कृतापराध इव निर्भय: कोऽपि संग्रामे) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 56/165

संचिय (संचिअ) sañciya (sañcia) सञ्चति < विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] संचित, संगृहीत, इकट्ठा किया हुआ accumulated, collected, gathered, etc. {म.} अम्हाण तिणंकुर-भोयणाण न हु किंचि *संचियं* दविणं। (अस्माकं तृणाङ्कुरभोजनानां न खलु किमपि सञ्चितिं द्रविणम्) वज्जालग्गं, हरिणवज्जा, पृष्ठ 74/216

संजम sañjama संयम < संज्ञा (पुं.) [Noun] संयम, विरति, हिंसादि पाप-कर्मों से निवृत्ति, सम्यक् रुप से नियंत्रित करना, धारणा-ध्यान समाधि की एकनिष्ठता, काबू करना, दस धर्मों में धर्म का एक प्रकार (जैन परम्परानुसार) self-control, etc. {म.} खमा-मद्दवऽज्जवमुत्ति-तव-*संजम*-सच्च-सोयाऽऽकिंचन्न-बंभचेरपहाणा। (क्षमा-मार्दवाऽऽर्जव-मुक्ति-तप:-संयम-सत्य-शौचाऽऽकिञ्चन्य-ब्रह्मचर्यप्रधाना) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 3

संजमिद sañjamida संयमित < भूतकालिक कृदन्त [Past Participle] संयमित, नियंत्रित, बद्ध, बेड़ा से जकड़ा हुआ, निरुद्ध, रोका हुआ disciplined, not self-indulgent, to stop, clasp to bind, etc. {शौ.} (पुरुष-) जेदु जेदु देवो। अज्ज एसो खु भद्दभडभाउराअणप्पमुहेहिं *संजमिदो* मलअकेदू पडिहारभूमीए उवट्ठाविदो। (जयतु जयतु देवः। आर्य एष खलु भद्रभरभागुरायणप्रमुखैः संयमितो मलयकेतुः प्रतीहार भूमावुपस्थापितः) मुद्रा., श्लोक 6, पृष्ठ 101/7

संजोअ sañjoa संयोग < संज्ञा (पुं.) [Noun] संयोग, मेल मिलाप (सं+योजय) संयुक्त, सम्बन्ध, मिश्रण, अवसर coincidence, intimate, union, occasion,

etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) जाणामि अ *संजोएण* गेहस्स संवुदं पक्खदुआरअं। (जानामि च संयोगेन गेहस्य संवृतं पक्षद्वारकम्) मृच्छ., पृष्ठ 57/1

संणिवाय saṇṇivāya सन्निपात < संज्ञा (पुं.) [Noun] सन्निपात, सम्बन्ध, संयोग, सम्यक् रूप से डूब जाना falling down, descent, meeting, confluence, union, conjunction {म.} अव्वो दूसहणिज्जो पियविरहो *संणिवाओ* व्व। (अहो दुःसहनीयः प्रियविरहः सन्निपात इव) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 130/383

संत santa शान्त < विशेषण [Adjective] शान्त, क्रोध रहित cool, placid, quiet, quiescent tranquil, still, peaceful, etc. {शौ.} (चन्दनदास-) *संतं* पावं। (शान्तं पापम्) मुद्रा., श्लोक-21, पृष्ठ 15/1

संतव santava सम् √तप् < क्रिया [अक.] [Verb] तपना, पीड़ित होना to distress, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) अवि *संतप्पदि* चारुदत्तस्स परिअणो ? (अपि सन्तप्यते चारुदत्तस्य परिजनः?) मृच्छ., पृष्ठ 316/6

संदाव (संताव) sandāva (santāva) संताप< संज्ञा (पुं.) [Noun] संताप, मन का खेद, ताप suffering, sorrow, grief, woe, etc. {शौ.} (अनसूया-) बलवं खु दे *संदावो* । (बलवान्खलु ते संतापः) अभि.शाकु., पृष्ठ 219/3

संदेस sandesa संदेश < संज्ञा (पुं.) [Noun] संदेश, सूचना a message, information {शौ.} (चेटी-) अत्ताए अज्जआसआसं *संदेसेण* पेसिदम्हि। (माता आर्य्यासकाशं सन्देशेन प्रेषितास्मि) मृच्छ., पृष्ठ 94/1

संदेह sandeha संदेह < संज्ञा (पुं.) [Noun] संशय, शंका, संदेह doubt, uncertainty, suspense, etc. {म.} साहसमवलंबंतो पावइ हियइच्छियं न *संदेहो* । (साहसमवलम्बमानः प्राप्नोति हृदयेप्सितं न सन्देहः) वज्जालग्गं, साहसवज्जा,पृष्ठ 36/107

संधि sandhi संधि < संज्ञा (पुं.) [Noun] छेद, संधि, मेल-मिलाप, सुलह, व्याकरण-प्रसिद्ध दो अक्षरों के संयोग से होने वाला वर्ण-विकार, हाड़ो (हड्डियों) का संयोग स्थान,

सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति, चारित्रमोहनीय कर्म का क्षयोपशम (जैन परम्परानुसार) hole, union, combination, connection, etc. {शौ.} (विदूषक-) *संधी* विअ दिस्सदि। (संधिरिव दृश्यते) मृच्छ., पृष्ठ 167/3

संपइ sampai संप्रति < अव्यय [Indeclinable] इस समय, अधुना, अब at random, at present, now ता नियसु मज्झ अंगे *संपइ* सेओ समुप्पन्नो। (तत् पश्य ममाङ्गे संप्रति स्वेदः समुत्पन्नः) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 176/517

संपदं (शम्पदं) saṁpadaṁ (śampadaṁ) सांप्रतम् < अव्यय [Indeclinable] इस समय, उचित, अब now, at this time, properly, at this moment {शौ.} (वधू-) *संपदं* उज्जइणीए जणो एव्वं मन्तइस्सदि। (साम्प्रतमुज्जयिन्यां जन एवं मन्त्रयिष्यति) मृच्छ., पृष्ठ 182/3 {मा.} (शकार-) *शम्पदं* पादेशुं पडिअ पशादेमि। (साम्प्रतं पादयोः पतित्वा प्रसादयामि) मृच्छ., पृष्ठ 404/8

संपादअ (संपायग) samādaa (samāyaga) संपादक < विशेषण [Adjective] संपादक, संपादन कर्ता, निर्वाहक, जीविका के साधन accomplisher, fulfiller, editer, etc. {शौ.} जीविआए *संपादआ* सप्पा। (जीविकायाः संपादका सर्पाः) मुद्रा., श्लोक-1, पृष्ठ 21/1

संपुण्ण sam-puṇṇa संपूर्ण < विशेषण [Adjective] संपूर्ण, पूर्ण whole, entire, finished, complete {म.} फलिहमणि व्व छइल्ला हुंति जणे पुति *संपुण्णा* । (स्फटिकमणिरिव च्छेका भवन्ति जने पुत्रि संपूर्णाः) वज्जालग्गं, बालासंवरणवज्जा, पृष्ठ 188/551

संभम (शम्भम) sambhama (śambhama) संभ्रम < संज्ञा (पुं.) [Noun] सम्यक् रुप से भ्रम, भ्रमित, संभ्रम confusion, etc. {मा.} (चेट-) महन्ते णअलीए *शंभमे* उप्पण्णं, ता तुलिदं तुलिदं गमिश्शं। (महान् नगर्यां सम्भ्रम उत्पन्नः, तत् त्वरितं त्वरितं गमिष्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 327/6

संभावणा sambhāvaṇā संभावना < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] संभावना, सत्कार possibility, likelihood, probability, etc. {शौ.} (इरावती-) महदी क्खु से *संभावणा* । (महती खल्वस्याः संभावना) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 278/3

संभूअ sambhūa संभूत < विशेषण [Adjective] उत्पन्न born, produced {म.} सुमणो उण कहसु महं न याणिमो कत्थ *संभूओ।* (सुजन: पुन: कथय मम न जानीम: क्व संभूत:) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 12/32

संसय saṁsaya संशय < संज्ञा (पुं.) [Noun] संदेह, शंका doubt, suspicion {शौ.} (वीरक-) कधं दे *संसओ* ? (कथं ते संशय: ?) मृच्छ., पृष्ठ 347/6

संसार saṁsāra संसार < संज्ञा (पुं.) [Noun] संसार, जगत्, एक जन्म से जन्मान्तर में गमन the world, etc. {म.} हियइच्छिओ रमिज्जइ *संसारे* इत्तियं सारं। (हृदयेप्सितो रम्यते संसार एतावत्सारम्) वज्जालग्गं, पंचमवज्जा, पृष्ठ 98/290

सअडिआ (सगडिया) saaḍiyā (sagaḍiyā) शकटिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] छोटी गाड़ी a small cart, a toy-cart {शौ.} (रदनिका-) एदिणा पडिवेसिअ-गहवइ-दारअ-केरिआए सुवण्ण*सअडिआए* कीलिदं। (एतेन प्रतिवेशिक-गृहपति-दारकीयया सुवर्णशकटिकया क्रीडितम्) मृच्छ., पृष्ठ 319/6

सइद (सइय) saida (saiya) शायित < विशेषण [Adjective] सुप्त, सोया हुआ a sleep, dormant latent, etc. {शौ.} (इरावती-) हञ्जे णिउणिए! सच्चं तुमं परिगदत्था चन्दिआए समुद्दघरअलिन्द-*सइदो* एआई अज्जगोदमो दिट्ठो त्ति। (हञ्जे निपुणिके! सत्यं त्वं परिगतार्था चन्द्रिकया। समुद्रगृहालिन्दशयित एकाकी आर्यगौतमो दृष्ट इति) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-12, पृष्ठ 304/4

सक्क sakka √ शक् < क्रिया [अक.] [Verb] सकना, समर्थ होना to be able, to do or deal with {म.} संते पाइयकव्वे को *सक्कइ* सक्कयं पढिउं। (सति प्राकृतकाव्ये क: शक्नोति संस्कृतं पठितुम्) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 10/29

सक्कद (सक्कय) sakkada (sakkaya) संस्कृत< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] पुरातन भारतीय भाषा का नाम (संस्कृत भाषा), संस्कार युक्त, परिष्कृत the name of the classical Indian Language (Sanskrit), polished, modified {शौ.} (विदूषक-) इत्थिआ दाव *सक्कदं* पठन्ती।

(स्त्री तावत् संस्कृतं पठन्ती) मृच्छ., पृष्ठ 148/3

सच्च sacca सत्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] सत्य, सच्चा, सही, यथार्थ, अहोरात्र का दसवाँ मुहूर्त जैन परम्परानुसार दस धर्मों में एक धर्म (पांचवाँ) truth, real, genuine, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) वामदो तस्स गेहं ति जं *सच्चं।* (वामतस्तस्य गेहमिति यत्सत्यम्) मृच्छ., पृष्ठ 94/1

सच्चवयण sacca-vayaṇa सत्यवचन< संज्ञा (नपुं.) [Noun] सत्यवचन, सच्ची बात, वास्तविक कथन truthful saying, original statement {म.} ओ दूइ *सच्चवयणेण* तं सि पारं गया अज्ज। (हे दूति सत्यवचनेन त्वमसि पारं गताद्य) वज्जालग्गं, दूईवज्जा, पृष्ठ 140/415

सच्छंद sacchanda स्वच्छन्द < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] स्वाधीन, स्वेच्छानुसार free, unrestrained, self willed, unfettered {म.} *स्वच्छंदं* बोलिज्जइ किज्जइ जं णियमणस्स पडिहाइ। (स्वच्छन्दं कथ्यते क्रियते यन्निजमनसः प्रतिभाति) वज्जालग्गं, पहु वज्जा, पृष्ठ 50/148

सज्ज (शज्ज) sajja (śajja) सज्ज < विशेषण [Adjective] तैयार, सुशोभित get ready, prepared, etc. {शौ.} (रदनिका-) अज्जए! एसो वड्ढमाणओ विण्णवेदि पक्खदुआरए *सज्जं* पवहणं ति। (आर्ये! एषः वर्धमानको विज्ञापयति पक्षद्वारके सज्जं प्रवहणम् इति) मृच्छ., पृष्ठ-322/6

सज्जण sajjaṇa सज्जन < संज्ञा (पुं.) [Noun] भद्रपुरुष, सज्जन a good or noble man, a gentleman of good family {म.} *सज्जण* तुज्झ सहावो न याणिमो कस्स सारिच्छो। (सज्जन तव स्वभावो न जानीमः कस्य सदृक्षः) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 14/40

सट्टअ (सट्टय / सट्ट) saṭṭaa (saṭṭaya / saṭṭa) सट्टक < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] एक तरह का नाटक a kind of minor drama in Prakrit {शौ.} (पारिपार्श्विक-) भाव! *सट्टअं* णच्चिदव्वं। (भाव! सट्टकं नर्तितव्यम्) कर्पूर., पृष्ठ 8/1

सठ (सढ) saṭha (saḍha) शठ < विशेषण [Adjective] शठ, धूर्त, मायावी, कपटी, कुटिल, वक्र, धतूरा wicked, knave,

cunning, crafty, sly, etc. {शौ.} (इरावती-) *सठ* ! अविस्ससणीअहिअओसि। (शठ! अविश्वसनीयहृदयोऽसि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-19, पृष्ठ 286/3

सत्तम (सत्त) sattama (satta) सप्तम/ सप्त < विशेषण [Adjective] सातवाँ, सात seventh, seven {शौ.} (विदूषक-) हीही भो! इदो वि *सत्तमे* पओट्ठे सुसिलिट्ठ-विहंग-वाडीसुह-णिसण्णाइं अण्णोण्ण-चुम्बणपराइं सुहं अणुभवन्ति पारावद-मिहुणाइं। (हीही भो! इतोऽपि सप्तमे प्रकोष्ठे सुश्लिष्ट-विहङ्गवाटी-सुखनिषण्णानि अन्योन्य-चुम्बनपराणि सुखमनुभवन्ति पारावत-मिथुनानि) मृच्छ., पृष्ठ 241/4

सत्ती satti शक्ति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] शक्ति, सामर्थ्य, अस्त्र विशेष, त्रिशूल, विद्या विशेष owner, strength, energy, pretend, goddess of power, etc. {शौ.} (सिद्धाथक-) ता अमुद्दालाञ्छिदं वि मं णिक्कमन्तं कस्स *सत्ति* णिवारेदुं। (तस्मादमुद्रालाञ्छितमपि मां निष्क्रामन्तं कस्य शक्तिर्निवारयितुम्) मुद्रा., श्लोक 2, पृष्ठ 63/5

सत्थत्थ satthattha शास्त्रार्थ < संज्ञा (पुं.) [Noun] शास्त्रार्थ, शास्त्र-चर्चा discussion or debate on the śāsatra, debate on a religious subject, a scriptural precept or statement {म.} *सत्थत्थे* पडियस्स वि मज्झेणं एइ किं पि तं कज्जं। (शास्त्रार्थे पतितस्यापि मध्येनैति तत् किमपि कार्यम्) वज्जालग्गं, दिव्ववज्जा, पृष्ठ 42/121

सत्थहाव sattha-hāva स्वस्थभाव/ शस्तभाव < संज्ञा (पुं.) [Noun] प्रशस्तभाव, स्वस्थ भाव, प्रशंसनीय रूप या स्वरूप की अवस्था वाले healthy nature, etc. {म.} सुयणो व्व *सत्थहावा* सुहडो व्व समुट्ठिया थणया। (सुजन इव स्वस्थभावौ (शस्तभावौ) सुभट इव समुत्थितौ स्तनौ) वज्जालग्गं, थणवज्जा, पृष्ठ 102/303

सद्द sadda शब्द < संज्ञा (पुं., नपुं.) शब्द, ध्वनि, कलरव word, sound, term, etc. {म.} (पारिपार्श्विक-) अत्थणिवेसा ते चिअ *सद्दा* ते चेअ परिणमंता वि। (अर्थनिवेशास्त एव शब्दास्त एव परिणमन्तोऽपि) कर्पूर., प्रथमजवनिका, पृष्ठ 10/7

सद्दूल saddūla शार्दूल < संज्ञा (पुं.) [Noun] शार्दूल, बाघ, श्वापद पशु की एक

जाति a tiger, etc. {शौ.} (विदूषक-) अअं मओ अअं वराहो अअं *सद्दूलो* त्ति मज्झणो वि गिम्हविरलपाअवच्छाआसु वणराईसु आहिंडीअदि अडवीदो अडवी। (अयं मृगोऽयं वराहोऽयं शार्दूल इति मध्याह्नेऽपि ग्रीष्मविरल पादपच्छायासु वनराजीष्वाहिण्ड्यतेऽटवीतोऽटवी) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., पृष्ठ 14/2

सप्प sappa सर्प < संज्ञा (पु., स्त्री.) [Noun] सर्प Snake, etc. {शौ.} (आहितुण्डिक-) भद्द अहं खु आहितुण्डिओ। इच्छामि अमच्चस्स पुरदो *सप्पेहिं* खेलिदुं। (भद्र अहं खल्वाहितुण्डिकः। इच्छाम्यमात्यस्य पुरतः सर्पैः खेलितुम्) मुद्रा., श्लोक-10, पृष्ठ 22/2

सब्भाव sabbhāva सद्भाव < संज्ञा (पुं.) [Noun] सद्भाव, हित, शुभ, हितैषणा-षिता, निष्कपटता, सरलता, ऋजुता kind feeling, good will, good faith, etc. {म.} *सब्भावे* पहु हियए जीए सग्गे जसे जए सयले। (सद्भावे प्रभुहृदये जीवे स्वर्गे यशसि जगति सकले) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 60/175

समत्थ (समट्ठ) samattha (samaṭṭha) समर्थ < विशेषण [Noun] समर्थ, सक्षम, संगत अर्थ, शक्त, शक्तिमान capable, competent, fit, able, powerful, etc. {म.} पच्छा सो वि पसन्नो अन्नह करिउं न हु *समत्थो।* (पश्चात्सोऽपि प्रसन्नोऽन्यथा कर्तुं न खलु समर्थः) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 44/129

समप्पिअ samappia समर्पित < विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] समर्पित, पूर्णतः सौंपा गया dedicated, surrendered {म.} पियसंगो जेहि कओ दुक्खाण *समप्पिओ* अप्पा। (प्रियसङ्गो यैः कृतो दुःखेभ्यः समर्पित आत्मा) वज्जालग्गं, पेम्मवज्जा, पृष्ठ 114/339

समर (सबर) samara (sabara) शबर < संज्ञा (पुं.) [Noun] एक अनार्य जाति, किरात, भील tribe, cast, etc. {म.} *समरा* डहंति विंझं खलाण मग्गो च्चिय अउव्वो। (शबरा दहन्ति विन्ध्यं खलानां मार्ग एवापूर्वः) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 22/62

समस्सिअ samassia समाश्रित < विशेषण [Adjective] आश्रित, आश्रय में स्थित dependent {शौ.} (समृद्धार्थक-) वअस्स भद्दभडप्पमुहा किल देवस्स चन्दसिरिणो अवरत्ता मलअकेदुं *समस्सिदा* त्ति लोए मन्तीअदि। (वयस्य भद्रभटप्रमुखाः किल देवाच्छ्रीचन्द्रादपरक्ता मलयकेतु समाश्रिता इति लोके मन्त्र्यते) मुद्रा., श्लोक 1, पृष्ठ 82/6

समादिट्ठ samādiṭṭha समादिष्ट < विशेषण [Adjective] आदेशित किया हुआ, फरमाया हुआ, समादिष्ट commanded, commissioned, etc. {शौ.} (स्थापक-) ता केण *समादिट्ठा* पउंजध? (तत् केन समादिष्टाः प्रयुङ्ग्ध्वम्?) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 14/10

समारुह samāruha सम+आ √रुह् < क्रिया [अक.] [Verb] आरोहण करना, चढ़ना to ride, to ascend or mount on, lift up {म.} अगणियसमविसमाणं साहसतुंगे *समारुहंताणं* । (अगणितसमविषमाणां साहसतुङ्गे समारोहताम्) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 38/110

समासादिद samāsādida समासादित < विशेषण [Adjective] प्राप्त किया हुआ received, approached {शौ.} (विदूषक-) भो! पुच्छामि णं कुदो एदं *समासादिदं* ति ? (भोः! पृच्छामि ननु कुतः एतत् समासादितमिति ?) मृच्छ., पृष्ठ 302/5

समीव samīva समीप < अव्यय [Indeclinable] निकट, पास ही, सटा हुआ, नज़दीक near, close by, etc.{शौ.} (रदनिका-) अज्जआ-वसन्तसेणाए *समीवं* उवसप्पिस्सं (आर्यावसन्तसेनायाः समीपमुपसर्पिष्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 318/6 {शौ.} (उभे-) पुहवीए जो सरणं सो तुह समीवे वट्टइ। (पृथिव्या यः शरणं सः तव समीपे वर्तते) अभि.शाकु., पृष्ठ 243/3

समुज्जलिद samujjalida समुज्ज्वलित< विशेषण [Adjective] प्रदीप्त, प्रज्वलित, अत्यन्त उज्ज्वलshining brightly, bright, effulgent, brilliant, etc. {शौ.} (पुरुष-) तदो चन्दउत्तहदएण कीस एसो पमादो किदो त्ति अज्जसअडदासे *समुज्जलिदो* कोववह्नी घादअजणगिहणेण णिव्वाविदो। (ततचन्द्र-गुप्तहतकेन कस्मादेष प्रमादः कृत इत्यार्यशकटदासे

समुज्ज्वलितः कोपवह्निर्घातकजननिधनेन निर्वापितः) मुद्रा., श्लोक-19, पृष्ठ 91/6

समुद्द samudda समुद्र < संज्ञा (पुं.) [Noun] समुद्र, सागर sea, ocean {म.} वाहलिया य *समुद्दा* साहसवंताण पुरिसाणं। (क्षुद्रनद्यश्च समुद्राः साहसवतां पुरुषाणाम्) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 36/105

समुद्दघर samudda-ghara समुद्रगृह < संज्ञा (नपुं.) [Noun] समुद्रघर, पानी में घर house in the ocean, home in the water, etc. {शौ.} (विदूषक-) एदु भवं। एदं *समुद्दघरं।* (एतु भवान्। एतं समुद्रगृहम्) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-6, पृष्ठ 298/4

समुप्पण्ण samuppaṇṇa समुत्पन्न < विशेषण [Adjective] उत्पन्न, समुत्पन्न born, produced {शौ.} (वीरक-) चन्दणआ! एत्थ मह संसओ *समुप्पण्णो* । (चन्दनक! अत्र मम संशयः समुत्पन्नः) मृच्छ., पृष्ठ 347/6

समुव्वह samuvvaha समुद् √वह् < क्रिया [सक.] [Verb] धारण करना, ढोना to bear, to hold, to contain, to put on, etc. {शौ.} (चन्दनदास-) जाद अव्वस्सं भविदव्वे विणासे मित्तकज्जं *समुव्वहमाणो* विणासं अणुभवेहि। (जाद अवश्य भवितव्ये विनाशे मित्रकार्ये समुद्वहन् विनाशमनुभव) मुद्रा., श्लोक 4, पृष्ठ 96/7

समुह (संमुह) samuha (sammuha) सम्मुख < विशेषण [Adjective] सामने आया हुआ to come in front of, to come face to face {म.} जो रिउघडाण *समुहो* परंमुहो परकलत्ताणं। (यो रिपुघटानां सम्मुखः पराङ्मुखः परकलत्रेभ्यः) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 58/170

समोणय samoṇaya समवनत< विशेषण [Adjective] अति नमा हुआ, अति झुका हुआ bowed or bent down {म.} फलसंपत्तीइ *समोणयाइ* तुंगाइ फलविपत्तीए। (फलसंपत्त्या समवनतानि तुङ्गानि फलविपत्त्या) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 40/114

सम्पत्ति sampatti संपत्ति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] बड़ा ऐश्वर्य, समृद्धि, संसिद्धि, संपत्ति prosperity, wealth, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) अअं पि णाम पर*सम्पत्तीए* सन्तप्पदि। (अयमपि नाम परसम्पत्त्या सन्तप्यते) मृच्छ., पृष्ठ 320/6

सयण sayaṇa शयन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] शयन, वसति, स्थान, शय्या, बिछौना, निद्रा sleep, sleeping, lying down, etc. {म.} ए पहिय रत्तिअंधय मा मह *सयणे* निमज्जिहिसि। (हे पथिक रात्र्यन्ध मा मम शयने निमंक्ष्यसि) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 168/496

सयल sayala सकल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] संपूर्ण, सब, सकल all, whole {म.} तं नत्थि तं न हूयं न हु होसइ तं च तिहुयणे *सयले* । (तन्नास्ति तन्न भूतं न खलु भविष्यति तच्च त्रिभुवने सकले) वज्जालग्गं, छइल्लवज्जा, पृष्ठ 94/278

सया (सइ) sayā (sai) सद < अव्यय [Indeclinable] हमेशा, सदैव always, even {म.} को एत्थ *सया* सुहिओ कस्स व लच्छी विराइ पेम्माइं। (कोऽत्र सदा सुखितः कस्य वा लक्ष्मीः स्थिराणि प्रेमाणि) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 44/127

सरअ (सरय / सरद) saraa (saraya / sarada) शरद् < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] शरदऋतु, आश्विन तथा कार्तिक मास autumn, comprising the two months-āśvina and kārtika {म.} झायंतो च्चिय मरिहिसि कत्तो ते मालई *सरए* । (ध्यायन्नेव मरिष्यसि कुतस्ते मालती शरदि) वज्जालग्गं, इंदिंदिरवज्जा, पृष्ठ 84/246

सरवर saravara सरोवर < संज्ञा (पुं.) [Noun] सरोवर, तालाब lake, pond {म.} अज्ज वि संभरइ गओ मज्जंतो *सरवरम्मि* लीलाए। (अद्यापि संस्मरति गजो मज्जन् सरोवरे लीलया) वज्जालग्गं, गयवज्जा, पृष्ठ 64/191

सरस्सई sarassaī सरस्वती < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] सरस्वती, वाणी, वाणी और ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी जिसका वर्णन ब्रह्मा की पत्नी के रूप में किया गया है (हिन्दू परम्परानुसार), बोली, स्वर, वचन, एक नदी का नाम (जो कि मरुस्थल के रेत में लुप्त हो गई है) Saraswati, goddess of speech and learning, speech, words, a river, etc. {म.} भद्दं होउ *सरस्सईअ* कइणो णंदंतु वासाइणो। (भद्रं भवतु सरस्वत्याः कवयः नन्दन्तु व्यासादयः) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 1/1

सरिस sarisa सदृश < विशेषण [Adjective] समान, तुल्य like,

resembling, similar, fit of the same rank {शौ.} (वसन्तसेना-) जं *सरिसं* वेसभावस्स। (यत् सदृशं वेशभावस्य) मृच्छ., पृष्ठ 448/8

सरीर sarīra शरीर < संज्ञा (नपुं.) [Noun] देह, काया the body, the physique {शौ.} (वधू-) वरं दाणिं सो *सरीरेण* परिक्खदो, ण उण चारित्तेण। (वरमिदानीं स शरीरेण परिक्षत: न पुनश्चारित्रेण) मृच्छ., पृष्ठ 182/3 {शौ.} (अनसूया-) उज्झिआए *सरीर*संवड्ढणादिहिं तादकस्सवो से पिदा। (उज्झिताया: शरीरसंवर्धनादिभिस्तात-काश्यपोऽस्या: पिता) अभि.शाकु., पृष्ठ 149/1

सल्लइ (सल्लई) sallai (sallaī) सल्लकी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] वृक्ष विशेष a kind of tree {म.} सा *सल्लइ* सल्लइ गयवरस्स विंझं मुयंतस्स। (सा सल्लकी शल्यायते गजवरस्स विन्ध्यं मुञ्चत:) वज्जालग्गं, विंझवज्जा, पृष्ठ 64/187

सविअ (सव) savia (sava) √ शप् (शस्वा)< क्रिया/ भू. कृ. [Verb/ Past Participle] शाप देना to curse {शौ.} (प्रियंवदा-) तह *सविअ* वेअबलुप्फुल्लाए दुव्वाराए गईए पडिणिवुत्तो। (तथा शस्वा वेगबलोत्फुल्लया दुर्वारया गत्या प्रतिनिवृत्त:) अभि. शाकु., पृष्ठ 262/4

सवण (समण) savaṇa (samaṇa) श्रमण < संज्ञा (पुं.) [Noun] साधु, भिक्षु, संन्यासी, तापस, यति, निर्ग्रन्थ मुनि saint, Jain and Buddhist monk, etc. {शौ.} पेसुणाहासमच्छरमायाबहुलेण *सवणेण* । (पैशून्यहासमत्सरमायाबहुलेन श्रमणेन) अट्ठपाहुड, भावपाहुड, पृष्ठ 203/69

सवत्ती (सवत्तिया / सवत्तिणी) savattī (savattiyā / savattiṇī) सपत्नी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] सपत्नी, पति की दूसरी पत्नी co-wife, etc. {म.} अव्वो न हुंति थणया मज्झ सरीरे *सवत्तिणा* जाया। (अहो न भवत: स्तनौ मम शरीरे सपत्नौ जातौ) वज्जालग्गं, थणवज्जा, पृष्ठ 106/310

सव्व savva सर्व < सर्वनाम [Pronoun] सर्व, सभी all, total {शौ.} (नटी-) *सव्वं* अत्थि। (*सर्वमस्ति*) मृच्छ., पृष्ठ 14/1

ससंक sasaṅka सशङ्क < विशेषण [Adjective] सशंक, शंका सहित doubtful, etc. {शौ.} (मदनिका-) *ससंको* विअ

लक्खीअसि। (सशङ्क इव लक्ष्यसे) मृच्छ., पृष्ठ 199/4

ससि sasi शशि < संज्ञा (पुं.) [Noun] चन्द्रमा, चन्द्रनाड़ी, वामनाड़ी, एक नक्षत्र the moon, left/ right nostril stars, etc. {म.} राहु मुहम्मि वि *ससिणो* किरणा अमयं चिय मुयंति। (राहु मुखेऽपि शशिन: किरणा अमृतमेव मुञ्चन्ति) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 12/34

ससुर sasura श्वशुर < संज्ञा (पुं.) [Noun] ससुर, पत्नी/ पति का पिता father-in-law {शौ.} (विदूषक-) भो तुम्हाणं सव्वाणं मज्झे अहं एक्को कालक्खरिओ जस्स मे *ससुरससुरो* परघरे पोत्थअभारं वहन्तो आसि। (युष्माकं सर्वेषां मध्येऽहमेक: कालाक्षरिक:, यस्य मे श्वशुरस्य श्वशुर: परगृहे पुस्तकभारं वहन्नासीत्) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 28/18

सह saha सह < अव्यय [Indeclinable] साथ, युगपत् with, support, to be able, to satisfy, to tolerate {शौ.} (वसन्तसेना-) कधं एसा केणावि पुरिसकेण *सह* मन्तअन्ती चिट्ठदि। (कथमेषा केनापि पुरुषकेण सह मन्त्रयन्ती तिष्ठति) मृच्छ., पृष्ठ 198/4

सहसा sahasā सहसा < अव्यय [Indeclinable] सहसा, अकस्मात्, अचानक, जबरदस्ती, एकायक, बिना सोचे विचारे, बलपूर्वक, उतावली के साथ, अंधाधुंध suddenly, all of a sudden unexpectedly, etc. {शौ.} (मालविका-) भट्टा! मा दाव *सहसा* णिक्कम। सप्पो त्ति भणीअदि। (भर्त:! मा तावत्सहसा निष्काम। सर्प इति भण्यते) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-15, पृष्ठ 306/4

सही sahī सखी < संज्ञा (स्त्री., पुं.) [Noun] सहेली, सहचरी, नायिका की सहेली a friend or companion, etc. {शौ.} (शकुन्तला-) इदो इदो *सहीओ* । (इत इत: सख्यौ) अभि.शाकु., पृष्ठ 132/1

सहोयरा (सहोअरा / सहोदरी) sahoyarā (sahoarā / sahodarī) सहोदरा/ सहोदरी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] सहोदरा, समान उदर से उत्पन्न बहिन sibling, sister {म.} रयणायरम्मि जम्मो हरसिरतिलओ *सहोयरा* लच्छी। (रत्नाकरे जन्म हरशिरस्तिलक:

सहोदरा लक्ष्मी:) वज्जालग्गं, चंदवज्जा, पृष्ठ 92/268

साअद sāada स्वागत < संज्ञा (नपुं.) [Noun] स्वागत welcome, happy arrival {शौ.} (सूत्रधार-) अज्जे! *साअदं* दे। (आर्ये! स्वागतं ते) मृच्छ., पृष्ठ 13/1

साअर sāara सागर < संज्ञा (पुं.) [Noun] समुद्र, सागर, एक राजा, समय का एक परिमाण-विशेष the ocean, sea, a king, the peculiar measurement of time {शौ.} (प्रियंवदा-) दिट्ठिआ अणुरूवो दे अहिणिवेसो *साअरं* उज्झिअ कहिं वा महाणई ओदरइ? (दिष्ट्यानुरूपस्तेऽभिनिवेश: सागरमुज्झित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति ?) अभि.शाकु., पृष्ठ 226/3

सामन्न (सामण्ण) sāmanna (sāmaṇṇa) सामान्य< विशेषण [Adjective] साधारण, सामान्य normal, general {म.} एत्थ *सामन्नओ* चत्तारि कहाओ हवंति। (अत्र सामान्यत: चतस्र: कथा: भवन्ति) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 3

सामल sāmala श्यामल < विशेषण [Adjective] श्यामल, काला darkish, dark complexioned {म.} जत्थ गओ तत्थ गओ *सामलि* सीहो न जुप्पइ हलम्मि। (यत्र गतस्तत्र गत: श्यामले सिंहो न युज्यते हले) वज्जालग्गं, बालासंवरणवज्जा, पृष्ठ 186/544

सामा sāmā श्यामा < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] श्यामवर्ण वाली darkish, dark-complexioned {म.} *सामा* सामन्न-पयावइणो रेह च्चिय न होइ। (श्यामा सामान्यप्रजापते रेखैव न भवति) वज्जालग्गं, लावण्णवज्जा, पृष्ठ 106/315

सामि (सामिअ) sāmi (sāmia) स्वामिन् < संज्ञा (पुं.) [Noun] नायक, अधिपति, ईश्वर, मालिक, प्रभु, राजा, भर्ता a proprietor, an owner, a lord, master, king, a husbad, a spiritual preceptor, etc. {शौ.} (वीरक-) णं *सामि*-णिओओ। (ननु स्वामिनियोग:) मृच्छ., पृष्ठ 348/6

सामिभत्ति sāmi-bhatti स्वामिभक्ति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] स्वामिभक्ति, स्वामी की सेवा loyalty, fealty, faithfulness, etc. {मा.} (सिद्धार्थक-) अह्मारिसजणणीए णमो णमो *सामिभत्तीए*। (अस्मादृशजनन्यै नमो नमः स्वामिभक्त्यै) मुद्रा., श्लोक 9, पृष्ठ 69/5

सारदिअ sāradia शारदिक, शारदीय< विशेषण [Adjective] शरद् ऋतु का autumnal {शौ.} (सख्यौ-) को दाणिं सरीरणिव्वावतिअं *सारदिअं* जोसिणं पडंतेण वारेदि ? (क इदानीं शरीरनिर्वापयित्रीं शारदीं ज्योत्स्नां पटान्तेन वारयति ?) अभि.शाकु., पृष्ठ 230/3

सारिच्छ (सारिक्ख) sāriccha (sārikkha) सदृक्ष विशेषण [Adjective] समानता, सरीखाई similarity, equality, etc. {म.} तं जंपंति तह च्चिय पिसुणा जह होइ *सारिच्छं।* (तज्जल्पन्ति तथैव पिशुना यथा भवति सदृक्षम्) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 20/54

सालत्तअ sālattaa सालक्तक < विशेषण [Adjective] महावर, आलता, माहुर lac paste used by women to paint their feet {म.} सालत्तयं पयं अरुएसु तह कज्जलं च चलणेसु। (सालक्तकं पदमूर्वोस्तथा कज्जलं च चरणयो:) वज्जालग्गं, हियालीवज्जा, पृष्ठ 212/620

सावित (साविअ) sāvida (sāvia) शापित < विशेषण [Adjective] जिसको शाप या सौगन्ध दिया गया हो accursed, imprecated {शौ.} (विदूषक-) *साविदोसि* गोबम्हणकामाए, जइ एदं सुवण्णभण्डअं ण गेण्हसि। (शापितोऽसि गोब्राह्मणकामया, यदि एतत् सुवर्णभाण्डं न गृह्णासि) मृच्छ., पृष्ठ 168/3

सावेक्ख (साविक्ख) sāvekkha (sāvikkha) सापेक्ष < विशेषण अपेक्षा युक्त relative, conditional {म.} *सावेक्खा* उभयलोएसु। (सापेक्षा उभयलोकेषु) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 5

सास sāsa श्वास < संज्ञा (पुं.) [Noun] सांस, प्राणशक्ति, श्वास-रोग breath, sigh, a fissur, etc. {म.} आसासिज्जइ *सासा* जाव न सासा समप्पंति। (आश्वास्यते श्वासा यावन्न श्वासा: समाप्यन्ते) वज्जालग्गं, पवसियवज्जा, पृष्ठ 136/402

साहण sāhaṇa साधन < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] साधन, उपाय, कारण, सिद्ध करने वाला denoting, accomplishing, effecting, procuring, conjuring up {म.} भग्गे वि बले वलिए वि *साहणे* सामिए निरुच्छाहे। (भग्नेऽपि बले वलितेऽपि साधने स्वामिनि निरुत्साहे) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 56/163

साहस sāhasa साहस < संज्ञा (नपुं.) [Noun] साहस, विचारे अथवा विना विचारे किया जाने वाला काम courage, boldness, an inconsiderate or reckless act {म.} तं किं पिं *साहसं* साहसेण साहंति साहससहावा। (तत् किमपि साहसं साहसेन साधयन्ति साहसस्वभावा:) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 38/108

साहीण sāhīṇa स्वाधीन विशेषण [Adjective] स्वाधीन, स्वायत्त independent, free, self-sufficient {म.} जुण्णसुरा *साहीणा* असई मा होउ किं मरउ। (जीर्णसुरा स्वाधीनासती मा भवतु किं म्रियताम्) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 160/476

साहु sāhu साधु < संज्ञा/ अव्यय/ विशेषण [Noun/ Indeclinable/ Adjective] अच्छा, उत्तम, योग्य, उचित, भला, गुणी, सही, सुखद, संन्यासी good, excellent, perfect, fit, a monk, etc. {शौ.} (वसन्तसेना-) *साहु*, हज्जे! (साधु हज्जे!) मृच्छ., पृष्ठ 128/2

सिंगार siṅgāra शृंगार < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] रस विशेष, शृंगार, वेशभूषा आदि की सजावट, सिंदूर, हाथी का भूषण, अलंकार, अतिशय शोभा वाला erotic sentiment, elegant make-up, etc. {म.} ललिए महु रक्खरए जुवईजणवल्लहे स-*सिंगारे*। (ललिते मधुराक्षरे युवतिजन-वल्लभे सशृंगारे) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 10/29

सिंही siṁhī सिंही < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] सिंहनी a female lion {म.} एक्केण वि गयघडदारणेण सिंही सुहं सुवइ। (एकेनापि गजघटादारकेण सिंही सुखं स्वपिति) वज्जालग्गं, सीहवज्जा, पृष्ठ 68/200

सिअअ (सिचय) siaa (sicaya) सिचय < संज्ञा (नपुं.) [Noun] वस्त्र, कपड़ा cloth, garment {शौ.} (सूत्रधार-) जदो एक्का पत्तोच्चिआइं *सिअआइं* उच्चिणेदि। (यत् एका पात्रोचितानि सिचयानि उच्चिनोति) कर्पूर., पृष्ठ 6/1

सिआल siāla श्रृगाल/ सृगाल/ शृगाल < संज्ञा (पुं.) [Noun] सियार a jackal {शौ.} (शकार-) जहिं दाव शुणका शिआला पाणिअं पिअन्ति। (यस्मिन् तावत् शुनका: श्रृगाला: पानीयं पिबन्ति) मृच्छ., पृष्ठ 378/8

सिक्खिद sikkhida शिक्षित विशेषण/ भू.कृ [Adjective/ Past Participle] अधिगत, अधीत, सीखा हुआ, साक्षर learned, instructed, etc. {शौ.} (संवाहक-) सुउमारा खलु कला *सिक्खिदा* अज्जेण। (सुकुमारा खलु कला शिक्षिता आर्येण) मृच्छ., पृष्ठ 127/2

सिग्घं siggham शीघ्रम् < अव्यय [Indeclinable] जल्दी, शीघ्रता युक्त quickly, soon, hurry, immediate {म.} *सिग्घं* आरुह कज्जं पारद्धं मा कहं पि सिढिलेसु। (शीघ्रमारोह कार्यं प्रारब्धं मा कथमपि शिथिलय) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 92/32

सिज्झ sijjha √ सिध् < क्रिया [अक.] [Verb] पूर्ण होना, निष्पन्न होना, पकना, मुक्त होना, मंगल होना, गति करना, जाना [सक.] शासन करना to complete, to be accomplished or fulfilled, etc. {म.} पारद्धसिढिलियाइं कज्जाइ पुणो न *सिज्झंति* (प्रारब्धशिथिलितानि कार्याणि पुनर्न सिध्यन्ति) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 32/92

सिद्ध siddha सिद्ध < संज्ञा/ विशेषण [Noun / Adjective] सिद्ध, कर्म, विद्या, मंत्र, शिल्प आदि में जिससे पूर्णता प्राप्त की हो वह, मनुष्य, मुक्त, निर्वाण प्राप्त, शाश्वत, कार्यान्वित, वैध, न्याय, तैयार a semi-divine being supported to be of great purity and holiness, and said to be particularly characterized by light supernatural facilities called siddhis, accomplished, effected, performed, achieved, gained, obtained, succeeded, proved, valid, admitted to {शौ.} (करभक-) अमच्चस्स पसाएण *सिद्धं* । (अमात्यस्य प्रसादेन सिद्धम्) मुद्रा., श्लोक-8, पृष्ठ-54/4

सिप्पि sippi शिल्पिन् < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] शिल्पी, कारीगर artist, sculptor {शौ.}(विदूषक-) विचारेन्ति *सिप्पिणो*। (विचारयन्ति शिल्पिनः) मृच्छ., पृष्ठ 239/4

सिर sira शिरस् < संज्ञा (नपुं.) [Noun] सिर, मस्तक, प्रधान, श्रेष्ठ, अग्र head, skull, highest part or point, top, apex, pinnacle {म.} तं तं *सिरम्मि* निवडइ नरस्स दिव्वे पराहुत्ते। (तत्तच्छिरसि निपतति नरस्य दैवे

पराग्भूते) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 42/125

सिलाअल silāala शिलातल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] शिलाखण्ड, पाषाण a stone surface, rock {शौ.} (विदूषक-) भो! इमं असक्कार-रमणीअं *सिलाअलं* उवविसदु भवं। (भो:! इदमसंस्काररमणीयं शिला-तलमुपविशतु भवान्) मृच्छ., पृष्ठ 359/7

सिलापट्ट silā-patta शिलापट्ट < संज्ञा (पुं.) [Noun] पत्थर की पटिया, शिलापट्ट slab, stele, etc. {शौ.} (मालविका-) जाव एदस्स पच्छाअसीदले *सिलापट्टए* णिसण्णा अप्पाणं विणोदेमि। (यावदस्य प्रच्छायशीतले शिलापट्टके निषण्णात्मानं विनोदयामि) मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-8, पृष्ठ 273/3

सिलोअ (सिलोग) siloa (siloga) श्लोक < संज्ञा (पु.) [Noun] श्लोक, कविता, काव्य का एक प्रकार या काव्य बनाने की कला, प्रशंसा, यश praising in verse, extolling, a human or verse of praise, celebrity, fame, renown, a proverb or saying, a stanza or verse in general{शौ.} (करभक-) करभअ कुसुमपुर गच्छिअ मह वअणेण भणिदव्वो तुए वेआलिओ, थणकलसो जह चाणक्कहदएण तेसु तेसु अण्णाभङ्गेसु अणुचिट्ठीअमाणेसु चन्दउत्तो समुत्तेअण-समत्थेहि *सिलोएहि* उवसिलोअइदव्वो त्ति। (करभक कुसुमपुरं गत्वा मम वचनेन भणितव्यस्त्वया वैतालिकः स्तनकलशो यथा चाणक्यहतकेन तेषु तेष्वाज्ञाभङ्गेष्व-नुष्ठीयमाणेषु चन्द्रगुप्तः समुत्तेजनसमर्थैः श्लोकैरूपश्लोकयितव्य इति) मुद्रा., श्लोक-8, पृष्ठ-54

सिवा sivā शिवा< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] शिवा, श्रृगाली, श्रेष्ठ स्त्री female jackal {म.} वरकामिणि व्व चुंबइ उरे निसन्ना *सिवा* वयणं। (वरकामिनीव चुम्बत्युरसि निषण्णा शिवा वदनम्) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 60/178

सिविण (सुमिण) siviṇa (sumiṇa) स्वप्न < संज्ञा (पुं.) [Noun] स्वप्न dream {शौ.} *सिविणे* वि ण रुच्चइ पुण जीवा अच्छंति भवगहणे। (स्वप्नेऽपि न रोचते पुन: जीवा: तिष्ठन्तिभवगहने) अट्ठपाहुड भावपाहुड पृष्ठ 309/47

सिसिर sisira शिशिर < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] जाड़े का मौसम (माघ और फाल्गुन की सर्दी), ओस, तुषार या पाला, ठंडा, शीतल, सर्द the cold season (comprising the two months Māgha and Phālguna), dew, frost, etc. {म.} *सिसिरे* रोरकुडुंबं पंकयलीलं समुव्वहइ। (शिशिरे दरिद्रकुटुम्बं पङ्कजलीलां समुद्वहति) वज्जालग्गं, दारिद्दवज्जा, पृष्ठ 50/145

सिहंडअ sihaṇḍaa शिखण्डक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] चोटी, चूड़ाकर्म संस्कार के अवसर पर सिर पर रखी गई चोटी, सिर के पार्श्व भागों में छोड़े गऐ बाल (क्षत्रियों के लिये यह तीन या पाँच होते है), कलंगी, बालों का गुच्छा, चूड़ा या शेखर, मयूर पुच्छ a lock of hair left on the crown of the head at tonsure, locks or tufts of hair left on the sides of the head, a crest, tuft, plume one who attains a particular degree of emancipation, etc. {शौ.} (विदूषक-) जं भवं आणवेदि। भो वअस्स! गहीदस्स ताए परकीएहिं हत्थेहिं *सिंहडए* ताडीअमाणस्स अच्छराए वीदराअस्स विअ णत्थि दाणिं मे मोक्खो। (यद् भवानाज्ञापयति। ओ वयस्य! गृहीतस्य तथा परकीयैर्हस्तैः शिखण्डिके ताड्य-मानस्याप्सरसा वीतरागस्येव नास्तीदानीं में मोक्षः) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-2, पृष्ठ 73/5

सिहर sihara शिखर < संज्ञा (नपुं.) [Noun] पर्वत के ऊपर का भाग श्रृङ्ग, अग्रभाग, अठाईस दिनों का उपवास (जैन परम्परानुसार) peak of a mountain, top, summit, 28 days fast (Jain tradition) {म.} हिययाइ सुपुरिसाणं महातरूणं व *सिहराइं।* (हृदयानि सुपुरुषाणां महातरूणामिव शिखराणि) वज्जालग्गं, साहसवज्जा, पृष्ठ 40/114

सीअल sīala शीतल < विशेषण [Adjective] शीतल, ठंडा cool, cold, frigid {म.} (वैतालिक-) गुंफंता णेह गण्ठिं मलअसिहरिणो *सीअला* वंति वाआ। (गुम्फन्तः स्नेहग्रन्थिं मलयशिखरिणः शीतला वान्ति वाताः) कर्पूर., प्रथम जवनिका, पृष्ठ 20/15

सील sīla शील < संज्ञा (नपुं.) [Noun] शील, ब्रह्मचर्य, प्रकृति, सदाचार, चरित्र virtue, modesty, chastity, disposition, morality {म.} *सीलं* वरं कुलाओ कुलेण किं होइ विगयसीलेण। (शीलं वरं कुलात् कुलेन

किं भवति विगतशीलेन) वज्जालग्गं, नीइवज्जा, पृष्ठ 30/86

सीस sīsa शीर्ष< संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] मस्तक, शीर्ष, सिर, सबसे उच्च, गुच्छा, छन्द विशेष the head, apex, top, deck, vertex, headline etc. {म.} ते भमुहाखग्गणिवाडियं पि *सीसं* न लक्खंति। (ते भ्रूखड्गनिपातितमपि शीर्षं न लक्षयन्ति) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 10/30

सीहासण sīhāsaṇa सिंहासन < संज्ञा (नपुं.) [Noun] सिंहासन, सिंहाकार आसन, सिंहाङ्कित आसन, राजासन royal throne, etc. {शौ.} (प्रतीहारी-) देव एदं *सीहासणं।* उवविसदु देवो। (देव एतत् सिंहासनम्। उपविशतु देवः) मुद्रा., श्लोक-10, पृष्ठ 39/3

सुंदर sundara सुन्दर < विशेषण [Adjective] सुन्दर, आकर्षक, प्रिय, मनोज्ञ beautiful, lovely, charming, handsome {म.} जो भंजिऊण अवयं अन्नपयं *सुंदरं* देइ। (यो भङ्क्त्वा अपदम् अन्यपदं सुन्दरं ददाति) वज्जालग्गं, कव्ववज्जा, पृष्ठ 10/26

सुअर suara सुकर < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] सरल, जो आसानी से किया जा सके easy, practicable, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) सिग्घंति *सुअरं* । (शीघ्रमिति सुकरम्) अभि.शाकु., पृष्ठ 227/3

सुकइ su-kai सुकवि < संज्ञा (पुं.) [Noun] सुकवि, अच्छा कवि good poet {म.} *सुकइव्व* अत्थलुद्धा वेसं दट्ठूणवंदामि। (सुकविरिवार्थलुब्धा वेश्यां दृष्ट्वा वन्दे) वज्जालग्गं, वेसावज्जा, पृष्ठ 192/560

सुकय su-kaya सुकृत < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] सुकृत, पुण्य, उपकार, अच्छी तरह निर्मित good deed, righteous act, virtuous deed {म.} एयं विहिणा *सुकयं* सुयणा जं निम्मिया भुवणे। (एतद्विधिना सुकृतं सुजना यन्निर्मिता भुवने) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 12/36

सुक्क sukka शुक्र < संज्ञा (पुं., नपुं.) [Noun] शुक्र, ग्रह विशेष, वीर्य, शरीरस्थ धातु विशेष the planet venus, special planet, etc. {म.} जाणइ *सुक्कस्स* गइं गणइ जइ गण्णवए को वि। (जानाति शुक्रस्य गतिं यदि गणयति कोऽपि) वज्जालग्गं, जोइसियवज्जा, पृष्ठ 168/497

सुगइ su-gai सुगति < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] अच्छी गति, सन्मार्ग happy state, salvation, beatitude {म.} ते किंचि सत्तिया मज्झिम-पुरिसा चेव आसयविसेसओ *सुगइ* दुग्गइवत्तिणीए। (ते किञ्चित् सात्त्विका मध्यमपुरुषाश्चैव आशयविशेषतः सुगति-दुर्गतिवर्तिन्याम्) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ 5

सुगहीद su-gahīda सुगृहीत < विशेषण [Adjective] भली भाँति पकड़ा हुआ, अच्छी तरह समझा हुआ, समुचित रूप से या शुभरीति से प्रयुक्त properly acquired, procured, etc. {शौ.} (विदूषक-) तेण हि अअं *सुगहीदो* खणो। (तेन ह्ययं सुगृहीतः क्षणः) अभि.शाकु., पृष्ठ 178/2

सुजण su-jaṇa सुजन < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] भला पुरुष, सद्गुणी, परोपकारी gentlemen, good people, etc. {म.} *सुजणो* सुद्धसहावो मइलिज्जंतो वि दुज्जणजणेण। (सुजनः शुद्धस्वभावो मलिनीक्रियमाणोऽपि दुर्जनजनेन) वज्जालग्गं, सज्जणवज्जा, पृष्ठ 12/33

सुज्ज / शुज्ज sujja / śujja सूर्य < संज्ञा (पुं.) [Noun] सूरज, सूर्य, दिनकर the sun {मा.} (चेट-) मज्झण्हिके *शुज्जे* (माध्याह्निकः सूर्यः) मृच्छ., पृष्ठ 391/8

सुज्जोदअ sujjodaa सूर्योदय < संज्ञा (नपुं.) [Noun] सूर्योदय, सूर्य का उदय काल sunrise, sun's dawn, etc. {शौ.} (प्रियंवदा-) एसा सुज्जोदए एव्व सिंहामज्जिदा पडिदिट्ठीणीवारहत्थाहिं सोत्थिवाअणिकाहिं तावसीहिं अहिण दीअमाणा सउन्दला चिट्ठइ। (एषा सूर्योदय एव शिरनामाज्जता प्रतिष्ठितानिवार हस्ताभिः स्वस्ति-नागनिकाभिस्तापसार्भिरभिनधमानां शकुन्तला तिष्ठति) अभि.शाकु., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-4, पृष्ठ 59/4

सुट्ठु suṭṭhu सुष्ठु < अव्यय [Indeclinable] अच्छा, शोभन well, excellently, rightly {मा.} (चेट-) अले तुमं पि दाणिं इन्द-मह-कामुको विअ *सुदठु* किं काकाअसि 'का का' त्ति। (अरे! त्वमपीदानीमिन्द्रमखकामुक इव सुष्ठु किं काकायसे 'का का' इति ?) मृच्छ., पृष्ठ 270/5

सुण / सुअ suṇa / sua √ श्रु < क्रिया [सक.] सुनना to hear, to listen {शौ.} (वसन्तसेना-) ता ण *सुणिस्सं* । (तत् न श्रोष्यामि) मृच्छ., पृष्ठ 199/4 {शौ.} (वीरक-) एदं *सुणिअ* अज्जमिस्सा पमाणं। (एतत् श्रुत्वा आर्यमिश्रा: प्रमाणम्) मृच्छ., पृष्ठ 492/9

सुणअ (सुणह) suṇaa (suṇaha) शुनक < संज्ञा (पुं.) [Noun] कुत्ता, शुनक, छन्द-विशेष dog, a metre, etc. {शौ.}(चन्दनक-) किं तुए *सुणअ*-सरिसेण ? (किं त्वया शुनक सदृशेन?) मृच्छ., पृष्ठ 353/6 {म.} निव्वत्तियकज्जपरंमुहाण *सुणयाण* व खलाणं। (निर्वर्तितकार्यपराङ्मुखानां शुनकानामिव खलानाम्) वज्जालग्गं, दुज्जणवज्जा, पृष्ठ 22/61

सुण्णहिअआ suṇṇa-hiaā शून्यहृदया < विशेषण [Adjective] शून्य हृदय, सही गलत के निर्णय से रहित, सोच समझ से परे हृदय वाली absent minded, unpredictable, etc. {शौ.} (अनसूया-) जेण असच्चसंघे जणे *सुण्णहिअआ* सहीपदं कारिदा। (येनासत्यसंघे जने शून्यहृदया सखीपदं कारिता) अभि.शाकु., पृष्ठ 269/4 {शौ.} (अनसूया-) कस्सिं पि पूआरुहे अवरद्धा *सुण्णहिअआ* सउंदला। (कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला) अभि.शाकु., पृष्ठ 262/4

सुण्हा suṇhā स्नुषा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] पुत्र-वधू daughter-in-law {म.} तह तह *सुण्हा* विप्फुल्लगंडविवरुम्मुही हसइ। (तथा तथा स्नुषा विफुल्लगण्डविवरोन्मुखी हसति) वज्जालग्गं, वाहवज्जा, पृष्ठ 72/210

सुपत्त su-patta सुपात्र/सुपत्र < विशेषण [Adjective] योग्य या सक्षम व्यक्ति, उत्तम पत्र, किसी पद के समुपयुक्त व्यक्ति, समर्थ व्यक्ति, अच्छा या उपयुक्त बर्तन, योग्य भाजन a fit or competent person, good leaf, an able person, a good or suitable vessel, worthy receptacle, etc. {म.} हिट्ठट्ठे जडणिवहं तह य *सुपत्ताइ* उत्तमंगेसु। (अधोऽधो मूलनिवहं (जडनिवहं) तथा च सुपत्राणि (सुपात्राणि) उत्तमाङ्गेषु) वज्जालग्गं, पहु वज्जा, पृष्ठ 52/150

सुप्प suppa √स्वप् < क्रिया [अक.] [Verb] सोना, शयन करना to sleep {म.} अह *सुप्पइ* पियमालिंगिऊण उत्तुंगथोरथणवट्टे। (अथ सुप्यते प्रियामालिङ्गयोत्तुङ्ग-

पृथुस्तनपृष्ठे) वज्जालग्गं, धीरवज्जा, पृष्ठ 34/98

सुमण sumaṇa सुमनस्< संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] पुष्प, अच्छे मन से, सज्जन, हर्षवान्, सुखी flower, well-minded, etc. {शौ.} (सूत्रधार-) अवरा *सुमणाइं* गुंफेदि। (अपरा सुमनानि गुम्फति) मृच्छ., पृष्ठ 15/1

सुयदेवी suya-devī श्रुतदेवी < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] श्रुतदेवी, सरस्वती Saraswati, goddess of voice {म.} सव्वन्नुवयण-पंकयणिवासिणिं पणमिऊण *सुयदेविं* (सर्वज्ञवदनपङ्कजनिवासिनीं प्रणम्य श्रुतदेवीम्) वज्जालग्गं,पृष्ठ 2/1

सुरय suraya सुरत < संज्ञा (नपुं.) [Noun] सुरत, सम्भोग, काम व्यापार amorous dalliance, sexual enjoyment, love-play {म.} मरुमरुमार त्ति भणंतियाइ *सुरयम्मि* केलिसंगामे। (मरुमरुमार इति भणन्त्या: सुरते केलिसंग्रामे) वज्जालग्गं, सुरयवज्जा, पृष्ठ 108/320

सुरवहू sura-vahū सुरवधू < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] देवांगना, सुर-बालाएँ goddess, etc. {म.} नेच्छइ सग्गग्गमणं कुवइ भडो *सुरवहू हि* निज्जन्तो। (नेच्छति स्वर्गगमनं कुप्यति भट: सुरवधूभिर्नीयमान:) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 58/169

सुरहि (सुरभि) surahi (surabhi) सुरभि संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] वसंत ऋतु, चैत्र मास, सुगन्धि युक्त the spring (season), fragrance, aroma, perfume, scent (प्रथम वैतालिका-) सुहाअ दे भोदु *सुरहि*समारम्भो। (सुखाय ते भवतु सुरभिसमारम्भ:) कर्पूर., पृष्ठ 19/14

सुलह su-laha सुलभ < विशेषण [Adjective] सुलभ, सहज सुखपूर्वक प्राप्त easy, accessible, easily available, handy {म.} संपत्तियाइ कालं गमेसु *सुलहाइ* अप्पमुल्लाए। (संपत्रकिया (बालया) कालं गमय सुलभयाल्पमूल्यया) वज्जालग्गं, वेसावज्जा, पृष्ठ 194/570

सुलहकोव sulaha-kova सुलभकोप < विशेषण [Adjective] शीघ्र क्रुद्ध हो जाने वाला aggressive, short tempered {शौ.} (प्रियंवदा-) एसो दुव्वासो सुलहकोवो महेसी। (एष दुर्वासा सुलभकोपो महर्षि:) अभि.शाकु., पृष्ठ 262/4

सुव suva √ स्वप् < क्रिया [अक.] [Verb] सोना, शयन करना to sleep {म.} ओ सुवइ सामिकयकज्जणिब्भरो दंतपल्लंके। (अहो स्वपिति स्वामिकृतकार्यनिर्भरो दन्त-पल्यङ्के) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 58/173

सुवण्ण (शुवण्णअ) suvaṇṇa (śuvaṇṇaa) सुवर्ण/ स्वर्णक< विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] सोना, सुवर्ण, सुंदर, रम्य, वर्ण, रंग, कुलीन, अभिजात gold, of good or beautiful colour, golden, etc. {ठक्की/ ढक्की} (माथुर-) भूदाइं सुवण्णाइं। (भूतानि सुवर्णानि) मृच्छ., पृष्ठ 126/2

सुवण्णभण्डअ suvaṇṇa-bhaṇḍaa स्वर्णभाण्डक < संज्ञा (नपुं.) [Noun] सोने का पात्र a golden pot, a golden utensil {शौ.} (विदूषक-) मए तं *सुवण्णभण्डअं* विस्सम्भादो अत्तणकेरकेत्ति कदुअ जूदे हारिदं। (मया तत् सुवर्णभाण्डकं विस्रम्भादात्मीयमिति कृत्वा द्यूते हारितम्) मृच्छ., पृष्ठ 251/4

सुसदिसी su-sadisī सुसदृशी < विशेषण [Adjective] सदृशतम, समान, एकाकृतिक, अच्छी तरह से समानता रखने वाली similar, well analogy, etc. {शौ.} (मदनिका-) *सुसदिसी।* (सुसदृशी) मृच्छ., पृष्ठ-191/4

सुसिय (सुसिअ) susiya (susia) शोषित < विशेषण/ भू. कृ. [Adjective/ Past Participle] शोषण किया हुआ, सुखाया हुआ exploited, sweated, desiccated, dried {म.}उज्जग्गिरस्स तणुयत्तणस्स *सुसियस्स* दीहरुण्णस्स। (उज्जागरस्य तनुत्वस्य शोषितस्य दीर्घरुदितस्य) वज्जालग्गं, माणवज्जा, पृष्ठ 124/364

सुह suha सुखसंज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] सुख, आनंद, चैन, आराम, निर्वाण happiness, pleasure, comfort, relief, etc. {ठक्की/ढक्की} (माथुर-) *सुहं* तुए होदु। (सुखं तव भवतु) मृच्छ., पृष्ठ 133

सुहड suhaḍa सुभट < संज्ञा (पुं.) [Noun] योद्धा, सुभट fighter, combatant, warrior {म.} बलिबंधविलसियं महु महस्स आलंबए *सुहडो।* (बलिबन्धविलसितं मधुमथनस्या-लम्बते सुभटः) वज्जालग्गं, सुहडवज्जा, पृष्ठ 58/172

सुहासिय suhāsiya सुभाषित < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] सुभाषित, सम्यग् उक्त, सुन्दर वचन, सूक्त pithy or quotable saying, etc. {म.} धम्माइ-तिवग्गजुयं सुयणाण *सुहासियं* वोच्छं। (धर्मादित्रिवर्गयुतं सुजनानां सुभाषितं वक्ष्यामि) वज्जालग्गं, पृष्ठ 2/1

सूर sūra सूर्य < संज्ञा (पुं.) [Noun] सूर्य, ग्रह विशेष, सत्रहवें जिनदेव के पिता (जैन परम्परानुसार), सूर्य अपने सात घोड़ों के रथ में बैठकर घूमता है; अरुण इस रथ का सारथि है तथा वह रथ में बैठे हुए सब लोकों तथा उनके शुभाशुभ कर्मों को देखते हैं (हिन्दू परम्परानुसार) the sun, special planet, (mythology) sun is represented as moving in a chariot drawn by seven horses, with Aruṇa for his charioteer. He is also represented as all-seeing, the constant beholder of the good and bad deeds of mortals, etc. {म.} खंडिज्जइ विहिणा ससहरो वि *सूरस्स* होइ अत्थमणं। (खण्ड्यते विधिना शशधरोऽपि सूर्यस्य भवत्यस्तमनम्) वज्जालग्गं, विहिवज्जा, पृष्ठ 44/126

सूसुअ sū-sua सुश्रुत < विशेषण/ संज्ञा [Adjective/ Noun] सुश्रुत, अच्छी तरह सुना हुआ, अच्छी तरह ज्ञात, वैद्यक ग्रन्थ विशेष most heard of, well known, name of medicine book, etc. {म.} विज्जस्स *सूसुओ सूसुओ* वि सहसत्ति पन्नट्ठो। (वैद्यस्य सुश्रुतः सुश्रुतोऽपि सहसा प्रनष्टः) वज्जालग्गं, विज्जवज्जा, पृष्ठ 176/519

सेअ sea स्वेद < संज्ञा (पुं.) [Noun] पसीना, स्वेद sweat, perspiration {म.} खणमेत्तं संतावो *सेओ* सीयं तहेव रोमंचो। (क्षणमात्रं संतापः स्वेदः शीतं तथैव रोमाञ्चः) वज्जालग्गं, विरहवज्जा, पृष्ठ 130/383

सेज्जा sejjā शय्या < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] शय्या, सेज, शयन, घर, वसति, स्थान bed, very comfortable bed, sleeping, etc. {म.} ता कीस मुद्धडमुही हसिऊण पलोअए *सेज्जं*। (तत् कस्मान्मुग्धमुखी हसित्वा प्रलोकयति शय्याम्) वज्जालग्गं, हियालवज्जा, पृष्ठ 212/622

सेल्ल (सेल) sella (sela) शैल < संज्ञा (पुं. नपुं.) [Noun] शैल, पर्वत, पाषाण, पत्थरों

का समूह rock, hill, mountain, etc. {म.} न हु खिज्जइ ताण मणं *सेल्लं* मिव सलिलपूरेणं। (न खलु खिद्यते (क्षीयते) तेषां मनःशैल इव सलिलपूरेण) वज्जालग्गं, बालासंवरणवज्जा, पृष्ठ 186/546

सेवय sevaya सेवक < संज्ञा/ विशेषण [Noun/ Adjective] सेवक, नौकर, सेवक कर्त्ता a servant, worker, dependant, worshipper {म.} जं *सेवयाण* दुक्खं चारित्तविवज्जियाण नरणाह। (यत्सेवकानां दुःखं चारित्र्यविवर्जितानां नरनाथ) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 52/151

सेवा sevā सेवा < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] सेवा, परिचर्या, ख़िदमत, दासता, पूजा, भक्ति, अभ्यास, प्रयोग, चापलूसी, उपभोग, पर्युपासना, आराधन service, to attend on use, honour, worship, etc. {म.} किं गाहा अह *सेवा* अहवा गाहा वि सेवा वि । (किं गाथाथ सेवा अथवा गाथापि सेवापि) वज्जालग्गं, पृष्ठ 6/18

सोंडीर soṇḍīra शौण्डीर्य < संज्ञा (नपुं.) [Noun] गर्व, पराक्रम pride, heroism {म.} मा जाणह जह तुंगत्तणेण पुरिसाणं होइ *सोंडीरं*। (मा जानीत यथा तुङ्गत्वेन पुरुषाणां भवति शौण्डीर्यम्) वज्जालग्गं, सीहवज्जा, पृष्ठ 68/202

सोक्ख (सुक्ख) sokkha (sukkha) सौख्य< संज्ञा (नपुं.) [Noun] सुख, सौख्य pleasure, satisfaction, happiness, felicity, enjoyment, convenience, easiness, etc. {म.} *सोक्खं* न होइ कस्स वि निरंतरं एत्थ संसारे। (सौख्यं न भवति कस्यापि निरन्तरमत्र संसारे) वज्जालग्गं, गयवज्जा, पृष्ठ 66/193

सोक्खसंपत्ति sokkha-sampatti सौख्यसम्पत्ति/ सौख्यसंप्राप्ति संज्ञा (स्त्री.) [Noun] सुख संप्राप्ति, सुख की प्राप्ति, सुख संपत्ति getting relief, pleasure, happiness and prosperity, plenty {म.} हत्थप्फंसेण वि पिययमस्स जा होइ *सोक्खसंपत्ती*। (हस्तस्पर्शेनापि प्रियतमस्य या भवति सौख्यसंपत्तिः) वज्जालग्गं, पियाणुरायवज्जा, पृष्ठ 138/407

सोत्तिअ sottia श्रोत्रिय संज्ञा (पुं.) [Noun] वेदाभ्यासी ब्राह्मण a Vedic Brāhamaṇa {प्राच्या} (विदूषक-) *सोत्तिओ* विअ सुहोवविट्ठो णिद्दाअदि दोवारिओ। (श्रोत्रिय

इव सुखोपविष्टो निद्राति दौवारिकः) मृच्छ., पृष्ठ 231/4

सोत्थि (सत्थि / सोवत्थिअ) sotthi (satthi / sovatthia)स्वस्ति< अव्यय [Indeclinable] कल्याण, मंगल, पुण्य, स्वस्ति welfare, blessing, etc. {शौ.} (विदूषक-) *सोत्थि* भोदीए। (स्वस्ति भवत्यै) मृच्छ., पृष्ठ 89/1

सोयार soyāra श्रोतृ (श्रोतार) < संज्ञा (पुं.) [Noun] सुनने वाला, छात्र listener, student {म.} संते पउंजमाणे *सोयारा* दुल्लहा हुंति। (सति प्रयुञ्जाने श्रोतारो दुर्लभा भवन्ति) वज्जालग्गं, सोयारवज्जा, पृष्ठ 2/6

सोवण्णसअडिआ sovaṇṇa-saaḍiyā सौवर्णशकटिका < संज्ञा (स्त्री.) [Noun] सोने की गाड़ी a golden small cart {शौ.} (वसन्तसेना-) ता गेण्ह एदं अलंकारअं *सोवण्णसअडिअं* घडावेहि। (तद् गृहाणैतमलङ्कारकम् सौवर्णशकटिकां घटय) मृच्छ., पृष्ठ 321/6

सोह soha √ शोभय् < क्रिया [सक.] [Verb] शोभित होना, शोभा युक्त करना to embellish, to behave {म.} सव्वो छुहिओ *सोहइ* मढदेउलमंदिरं च चच्चरयं। (सर्वो धवलितः शोभते मठदेवकुलमन्दिरं च चत्वरम्) वज्जालग्गं, सेवयवज्जा, पृष्ठ 54/161

सोहग्ग (सोभग्ग) sohagga (sobhagga) सौभाग्य< संज्ञा (नपुं.) [Noun] सौभाग्य, सुन्दर भाग्य, सुभगता, लोकप्रियता, पति-प्रियता auspiciousness, fortune or luck, fortunateness (chiefly consisting in a woman's and man's securing the favor and firm devotion of each other), etc. {म.} *सोहग्गं* धणुरुंपच्छलेण रच्छासु विक्खिरइ। (सौभाग्यं धनुरुल्लिखनच्छलेन रथ्यासु विष्किरति) वज्जालग्गं, वाहवज्जा, पृष्ठ 70/206

सोहग्गदेवआ sohagga-devaā सौभाग्य-देवता संज्ञा (पुं.) [Noun] सौभाग्य का देवता a God of fortune {शौ.} (अनसूया-) ण सहीए सउंदलाए सोहग्गदेवआ अच्चणीआ। (न सख्याः शकुन्तलायाः सौभाग्यदेवताऽर्चनीया) अभि. शाकु., पृष्ठ 259/4

सोहा sohā शोभा< संज्ञा (स्त्री.) [Noun] शोभा, दीप्ति beauty, glamour, splendor,

grace, elegance {म.} एक्केण य पासपरिट्ठिएण हंसेण होइ जा *सोहा।* (एकेन च पार्श्वपरिस्थित्या हंसेन भवति या शोभा) वज्जालग्गं, हंसवज्जा, पृष्ठ 90/262

ह

ह ha ह < संज्ञा (पुं.) [Noun] में प्राकृत वर्णमाला व्यंजन वर्ण, सम्बोधन सूचक अव्यय a particular consonant ककुभो *हः*। 1/21, हेम. पृष्ठ 430

ह ha खलु < अव्यय [Indeclinable] निस्सन्देह, निश्चय ही, अवश्य, सचमुच an expression showing anger, Astonishing, used in deposition, an expression showing invitation {म.} सो होदि ह सुचरित्तो, जोई सो लहइ णिव्वाणं। (सः भवति खलु सुचरित्र, योगी सः लभते निर्वाणम्) समण., गाथा 268/20, पृष्ठ 88

हंस haṁsa हंस < संज्ञा (पुं.) [Noun] हंस, राजहंस, मराल, ब्रह्मा का वाहन, कविसमय के अनुसार हंस को दूध और पानी को पृथक्-पृथक् करने वाला विशेष शक्ति सम्पन्न पक्षी माना जाता है (पुराणानुसार) a swan, goose, duck, vehicle of the god Brahmā, according to a very general poetical convention he is represented as being gifted with the peculiar power of separating milk from water (Mythological) {म.} *हंसो* सि महासरमंडणो सि धवलो सि धवल किं तुज्झ। (हंसोऽसि महासरोमण्डनमसि धवलोऽसि धवल किं तव) वज्जालग्गं, हंसवज्जा, पृष्ठ 88/257

हत्थ hattha हस्त < संज्ञा (पुं.) [Noun] हाथ, नक्षत्र विशेष, चौबीस अंगुल का एक परिमाण hand, name of a star, a measure of length, etc. {मा.} (शकार-) जधा तव मम अ *हत्थादो* एशा ण पलिब्भंशदि। (यथा तव मम च हस्ताद् एषा न परिभ्रश्यति) मृच्छ., पृष्ठ 52/1

हत्थपाय hatthapāya हस्तपाद < संज्ञा (नपुं.) [Noun] हाथ और पैर the hands and feet {शौ.} (अनसूया-) ण मे उइदेसु वि णिअकरणिज्जेसु *हत्थपाया* पसरंति। (न मे उचितेष्वपि निजकरणीयेषु हस्तपादौ प्रसरन्ति) अभि.शाकु., पृष्ठ 269/4

हत्थाभरण hatthābharaṇa हस्ताभरण < संज्ञा (नपुं.) [Noun] हाथ का आभूषण hand ornamet, bracelet {शौ.}

(वसन्तसेना-) इमं *हत्थाभरणं* तुमं देहि। (इदं हस्ताभरणं त्वं देहि) मृच्छ., पृष्ठ 132/2

हत्थि hatthi हस्तिन् < संज्ञा (पुं.) [Noun] हाथी elephant {शौ.} (विदूषक-) इदो अ कूरच्चुअतेल्लमिस्सं पिंडं *हत्थी* पडिच्छावीअदि मेत्थपुरिसेहिं आदिसदु भोदी। (इतश्च कूर-च्युत-तैलमिश्रं पिण्डं हस्ती प्रतिग्राह्यते मात्रपुरुषैः आदिशतु भवती) मृच्छ., पृष्ठ 233/4

हत्थिबल hatthi-bala हस्तिबल < संज्ञा (नपुं.) [Noun] हाथियों का बल, हाथियों की ताकत elephant power, etc. {शौ.} (सिद्धार्थक-) एदेसु पढमभणिदा तिण्णि राआणो मलअकेदुणो विसअं इच्छन्ति अवरे *हत्थिबलं* कोसं अ। (एतेषु प्रथमभणितास्त्रयो राजानो मलयकेतोर्विषयमिच्छन्त्यपरे हस्तिबलं कोशं च) मुद्रा., श्लोक 10,पृष्ठ 72/5

हयास hayāsa हताश < विशेषण [Adjective] आशा से रहित, निराश, नीच hopeless, despondent, disappointed, etc. {म.} एक्कं पि वसइ जीयं *हयास* दोण्हं पि य सरीरे। (एकोऽपि वसति जीवो हताश द्वयोरपि च शरीरे) वज्जालग्गं, हरिणवज्जा, पृष्ठ 74/217

हरि hari हरि < संज्ञा/ विशेषण [Noun /Adjective] श्रीकृष्ण, विष्णु, महादेव, ब्रह्मा, इन्द्र, मयूर, भर्तुहरि, ज्योतिषशास्त्र का एक योग, एक छन्द, हरा रंग Shrikrishna, Vishnu, Mahadeva, Brahmma, green, peacock, poet Bhartrihari, the sign of zodiac, etc. {म.} तिहु यणणमिओ वि *हरी* निवडइ गोवालियाइ चलणेसु। (त्रिभुवन-नमितोऽपि हरिर्निपतति गोपालि-कायाश्चरणयोः) वज्जालग्गं, कण्हवज्जा, पृष्ठ 202/583

हरिण hariṇa हरिण < संज्ञा (पुं.) [Noun] हिरन, बारहसिंगा deer, etc. {म.} *हरिणा* जाणंति गुणा रण्णे वसिऊण गेयमाहप्पं। (हरिणाः जानन्ति गुणानरण्य उषित्वा गेयमाहात्म्यम्) वज्जालग्गं, हरिणवज्जा, पृष्ठ 74/215

हरिसदोहल harisa-dohala हर्षदोहद< संज्ञा (पुं.) मन की साध, मनोरथ पूरा होना delighted, fulfilment of desire, etc. {मा.} (इरावती-) ण क्खु इमे मालविआचलणा जा दे *हरिसदोहलं* पूरयिस्सन्ति। (न खल्विमौ मालविका चरणौ यौ ते हर्षदोहदं पूरयिष्यतः)

मालविका., कालिदास ग्रन्था., श्लोक-22, पृष्ठ 287/3

हलिअ halia हालिक< विशेषण [Adjective] हल जोतने वाला, किसान farmer, a man who ploughs {म.} बहु गोधणो वि *हलिओ* नंदइ एक्केण धवलेण। (बहु गोधनोऽपि हालिको नन्दत्येकेन धवलेन) वज्जालग्गं, धवलवज्जा, पृष्ठ 62/184

हार hāra हार < संज्ञा (पुं.) [Noun] हार, माला, अठारह सर की मोती आदि की माला garland, wreath, necklace, etc. {म.} उब्बिंबे थणहारे रेहइ बालाइ घोलिरो *हारो।* (उद्भटे स्तनभारे राजते बालाया घूर्णनशीलो हार:) वज्जालग्गं, थणवज्जा, पृष्ठ 104/306

हाल hāla हाल < संज्ञा (पुं.) [Noun] सातवाहन राजा हाल, गाथासप्तशती के संकलन कर्ता a name of king, a name of poet (compiler of Gāthāsaptasati) {म.} सग्गं गए वि *हाले* न मुयइ गोला पइट्ठाणं। (स्वर्गं गतेऽपि हाले न मुञ्चति गोदा प्रतिष्ठानम्) वज्जालग्गं, सईवज्जा, पृष्ठ 158/468

हिअअ (हिअ / हिअय / हडक्क) hiaa (hia / hiaya / haḍakka) हृदय < संज्ञा (नपुं.) [Noun] हृदय, अन्त:करण, मन, दिल heart, inner-conscious, etc. {शौ.} (विदूषक-) पदोसमन्दमारूदेण पसुबन्धो-वणीदस्स विअ छाअलस्स *हिअअं* । (प्रदोषमन्दमारूतेन पशुबन्धोपनीतस्येव छागलस्य हृदयम्) मृच्छ., पृष्ठ 65/1

हिअअट्ठिअ hiaa-tṭhia हृदयस्थित < संज्ञा (नपुं.) [Noun] हृदय में स्थित, मन में होना taken to heart, mentally assimilated, well understood, etc. {शौ.} (समृद्धार्थक-) *हिअअट्ठिआण* विहव विरहे मित्ताण दूमेन्ति। (हृदयस्थितानां विभवा विरहे मित्राणां दुनन्ति) मुद्रा., श्लोक 1, पृष्ठ 80/6

हेउ heu हेतु < संज्ञा (पुं.) [Noun] हेतु, कार्य की पूर्व अवस्था, अनुमान का साधन cause, purpose, intention, etc. {म.} उयाहरण-*हेउ*-कारणोवेया सा संकिण्णकहा त्ति वुच्चइ। (उदाहरण-हेतु-कारणोपेता सा संकीर्णकथा इति उच्यते) समराइ., चरियसंगहो., पृष्ठ-4

हेमंत hemanta हेमन्त < संज्ञा (पुं.) [Noun] ऋतु विशेष, मार्गशीर्ष या अगहन तथा पूस महिना, शीत काल one of the six seasons, cold or winter season, etc. {म.} इह गामे हेमंतो नवरं गिम्हस्स सारिच्छो। (इह ग्रामे हेमन्त: केवलं ग्रीष्मस्य सदृक्ष:) वज्जालग्गं, असईवज्जा, पृष्ठ 166

हो (हव) ho (hava) √ भू/ भव < क्रिया [अक.] [Verb] होना [सक.], प्राप्त करना to exist, to be present, to achieve, etc. {म.} पडिवन्नपालणे सुपुरिसाण जं *होइ* तं *होउ* । (प्रतिपन्नपालने सुपुरुषाणां यद्भवति तद्भवतु) वज्जालग्गं, मित्तवज्जा, पृष्ठ 24/72

lnHk ikdr xUFkkuØef.kdk&

➢ **dk"k e i;Dr xUFkk dh lph&**

vfHkKku 'kkdUrye& dkfynkl] pronh lhrkjke] idk'kd % mÙkjin'k lLdr lLFkku] y[kuÅ] 1960

vfHkKku 'kkdUrye& dkfynkl] idk'ku % jru idk'ku efnj] fnYyh xV] vkxjk

vfHk"kdukVde& Hkkl] no/kj lh- vkj-] idk'kd % vkfj;UVy cd ,tUlh] iuk 1937

vfoekjde& Hkkl] idk'ku % pk[kEck lLdr lLFkku] okjk.klh

vfoekjde& Hkkl] no/kj lh- vkj-] idk'kd % vkfj;UVy cd ,tUlh] iuk] 1937

v"VikgM&idk'ku % Jh exuyky ghjkyky fn- tu ikjekfFkd n"VkUrxr

Jh ikVuh fn- tu xUFkekyk] ekjkB ¼jkt-½

Å#Hk³xe&Hkkl] no/kj lh- vkj-] idk'kd % vkfj;UVy cd ,tUlh] iuk 1937

mRrjjkepfjre& HkoHkfr] l- feJ Jhfuokl] idk'kd % egky{eh idk"ku] vkxjk 2

dfÙkx;k.kiD[kk&idk'ku % Jh ijeJr iHkkod e.My

dfÙkx;k.kiD[kk& l- egUn dekj ikVuh] Jh fnxEcj tu Lok/;k; efnj VLV] lkux< ¼lkjk"V½ rrh; l- 1979] ohj fuok.k l- 2505

d.kHkkje&Hkkl] no/kj lh- vkj- idk'kd % vkfj;UVy cd ,tUlh] iuk 1937

dijetjh&jkt'k[kj] idk'ku % Kku cd fMik] lHkk"k ckt kj ejB

xmMogk& okDifrjkt] idk'ku % ikdr VDLV lklkbVh] vgenkckn&9] okjk.klh&5

xmMogk& okDifrjkt] dekjh feFky'k feJ] idk'kd % pk[kEck ljHkkjrh idk'ku] okjk.klh] f}rh; lLdj.k 1994

xkFkk llr'krh& gky] idk'ku % pk[kEck lLdr lhjht] okjk.klh

xkFkk llr'krh& vu- fo'oukFk ikBd] ik'oukFk 'kk/k ihB] okjk.klh&5] iFke l- 1995

pk#nÙke & Hkkl] no/kj lh-vkj-] idk'kd % vkfj;UVy cd ,tUlh] iuk 1937

fryk;i..kfÙk& ;fro"kHk] idk'kd % dUnh; lkfgR; HkMkj] Hkkjro"kh; fnxEcj tu egkl Hkk] ,'kckx] y[kuÅ nlo;kfy; lÙk& idk'kd % vkxe idk'ku lfefr] C;koj ¼jktLFkku½] l- e/kdj efu] iFke l- 1985

ukV;"kkL=e& Hkjrefu] xlr vfHkuo] idk'kd % xk;dckM fljht cMknk

ipjk=e&Hkkl] no/kj lh-vkj-] idk'kd % vkfj;UVy cd,tUlh] iuk] 1937

ipkfLrdk; ikHkr& dndnkpk;] idk'kd % Hkkjro"kh; vudkr fo}r ifj"kn

i..kko.kk lÙk& vu- Kkuefu] idk'ku % vkxe idk'ku lfefr] C;koj ¼jkt LFkku½

ifrekuk Vde& Hkk l] no/kj lh- vkj-] idk'kd % vkfj;UVy cd ,tU lh] iuk] 1937

ckypfjre& Hkk l] no/kj lh- vkj-] idk'kd % vkfj;UVy cd ,tU lh] iuk] 1937

Hkkjrh; ijky[kk dk v/;;u& Mk- f'koLo:i lgk;] idk'kd % ekrhyky cukjlhnk l] fnYyh

e/;e 0;k;kx& Hkk l] no/kj lh- vkj-] idk'kd % vkfj;UVy cd ,tU lh] iuk] 1937

ekyfodkfXufe=e& dkfynkl xUFkkoyh] pronh lhrkjke] idk'kd % mÙkj in'k lLdr lLFkku] y[kuÅ&1960

enkjk{kl& fo'kk[knÙk] idk'kd % pk[kEck ljHkkjrh idk'ku] okjk.k lh] iFke lLdj.k&1991

eykpkj&JhenoVVdjkpk;] Hkkjrh; KkuihB] fnYyh] l- dyk'kpUn 'kkL=h] txUekguyky] iUukyky tu] rrh; l- &1999

ePNdfVde& 'knd& feJ txnh'k jko] idk'ku % pk[kEck ljHkkjrh] okjk.k lh] prFk lLdj.k&1993

yhykob&dkÅgy] idk'ku % Hkkjrh; fo|kHkou] ecb

oTtkyXx& t;oYyHk] idk'ku % ik'oukFk fo|kJe 'kk/k lLFkku] okjk.k lh

foØeko'kh;e& dkfynkl xUFkkoyh] pronh lhrkjke] idk'kd % mÙkj in'k lLdr lLFkku] y[kuÅ 1960

o.kh lgkj ukVde& 0;k[;k- i- jkeno >k] vkfnR;ukjk;.k ik.M;] idk'ku % pk[kEck lLdr lhjht] okjk.k lh] 'k'B lLdj.k&1976

le.k lÙk& vu- i- dyk'kpUn th 'kkL=h] efu uFkey th] idk'ku % lo lok l?k] jkt?kkV idk'ku] okjk.k lh] prFk l- 1989

le;lkj& dndnkpk;] idk'ku % Kkulkxj okxFk foe'k dn] C;koj ¼jkt-½

le;lkj& dndnkpk;] idk'kd % Jh fnxEcj tu lfefr ,o ldy fnxEcj

tu lekt] vtej ¼jktLFkku½] rrh; lLdj.k 1994
lejkbPpdgk& gfjHknlfj] idk'ku % Hkkjrh; KkuihB] fnYyh] iFke lLdj.k 1996
flfjdEekiRrpfj;& idk'ku % tu v/;;u ,o fl)kUr 'kk/k lLFkku] tcyij
l;xMxlÙk& l/keLokeh] idk'ku % vkxe idk'ku lfefr] 0;koj ¼jktLFkku½
l;xMxlÙk& l-& vkpk; egkiK] tu fo'oHkkjrh ykMu] f}rh; l- 2002
LoluoklonÙke& Hkkl] no/kj lh- vkj-] idk'kd % vkfj;UVy cd ,tUlh] iuk 1937
gepUn "kCnku"kklu& gepUn] idk'kd % HkMkjdj vkfj;UVy fjlp bULVhV;V] iuk 1980

➢ **lgk;d dk"kxUFk lph**

vfHk/kku jktUndk'k& fot;jktUn lfj] idk'ku% Jh lk/keogrikxPNh; tu 'orkEcj leLr l?k] jryke
ikbv&lí&eg..kok&ifMr gjxkfon nkl Vh- lB] idk'ku % ikdr xFk ifj"kn] okjk.kl h] f}rh; l- 1963] 1986
ikdr fgnh dk'k & Mk- d- vkj- pUn] idk'ku % ikdr tu fo|k fodkl Q.M] vgenkckn 15] lg idk'ku % ik'oukFk fo|kJe 'kk/k lLFkku] okjk.kl h] iFke lLdj.k 1987
ikdr :ijpuk dk'k & Mk- gfj'kdj ik.M;] idk'ku % U; Hkkjrh; cd dkikj'ku] fnYyh
ikdr fgnh dk'k& Mk- mn;pUn tu] idk'ku % U; Hkkjrh; cd dkikj'ku] fnYyh] 2005
Hkxoku egkohj fgnh&vxth tu 'kCndk'k& y- vkf;dk pUnukerh]

idk'ku % fnxEcj tu f=ykd 'kks/k lLFkku tEc}hi] gfLrukij ¼ejB½] iFke l- 2004

Glossary of Jaina Terms. - N.L. Jain, Published by : Jain International, 21 Saumya Ahmedabad

Dictonary of the Prakrit Languages, Published by : Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune 1996

The Practical Sanskrit English Dictionary - V. S. Apte, Published by : Akhila Bharatya Sanskrit Parishad, Lucknow

Dictonary Sanskrit English- Monier Williams, Published by : Akhila Bharatya Sanskrit Parishad, Lucknow

Comprehensive English Hindi Dictionary- Hardeve Bahri, Jnanamandal Limited,Varanasi-1, Pub. 2007

fgnh vxth 'kCndk'k& gjno ckgjh] idk'ku % jktkiky ,.M lUl] fnYyh] l- 2009

lLdr fgUnh dk'k& okeu f'kojke vkIV] idk'ku % ekrhyky cukjlhnkl] l- 2007



पालि-अध्ययन-केन्द्रम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)

Accredited by 'NAAC' with 'A' Grade

(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)

लखनऊ-परिसरः